हमारी दिल्ली

तीसरी कक्षा के लिए

शिक्षक संस्करण

सामाजिक अध्ययन

हमारी दिल्ली

तीसरी कक्षा के लिए
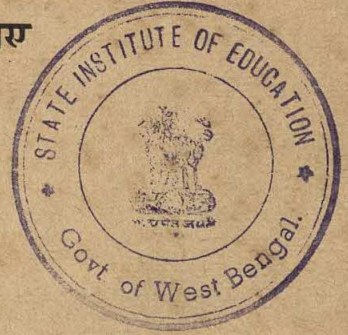
शिक्षक संस्करण

पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्

मार्च, १९६७ : फाल्गुन, १८८८

पाठ्यपुस्तक समिति के सदस्य

प्रो० बिमल घोष (भूतपूर्व विभागाध्यक्ष)
प्रो० त्रिभुवन शंकर मेहता (अध्यक्ष)
श्रीमती आदर्श खन्ना
श्री चन्द्रप्रकाशराय भटनागर
डा० रवीन्द्र दवे (विभागाध्यक्ष)
डा० अल्बर्ट जौन पैरेली
श्री शान्ति स्वरूप रस्तोगी
श्री चन्द्र भूषण

सम्पादन सलाहकार

श्रीमती लौरा टिबेट्स

श्री श्याम मोहन त्रिवेदी

श्री सरदारीलाल बजाज

चित्रकार

श्री केशवचन्द्र

कु० निर्मल बजाज

कृतज्ञता-ज्ञापन

इस पुस्तक में प्रयुक्त विभिन्न फोटोग्राफ नीचे लिखे स्रोतों के सौजन्य से प्राप्त हुए हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग इन फोटोग्राफों के पुन: प्रस्तुतीकरण की आज्ञा के लिए इन सभी स्रोतों के प्रति आभार प्रकट करता है : पी० आई० बी० (सूचना व प्रसारण मंत्रालय) भारत सरकार; नेहरू स्मारक संग्रहालय, नई दिल्ली; बालभवन व राष्ट्रीय बाल संग्रहालय, नई दिल्ली; और नई दिल्ली नगरपालिका प्राथमिक पाठशाला, नेताजी नगर, नई दिल्ली।

प्रकाशन विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
बी-३१ महारानी बाग, नई दिल्ली-१४ द्वारा प्रकाशित और
न्यू जैक प्रिंटिंग वर्क्स प्रा० लिमिटेड, डिलाइल रोड, बम्बई-१३ में मुद्रित।

अध्यापकों से दो शब्द

पाठशाला समाज की एक महत्वपूर्ण संस्था है, जिसे वह एक विशेष ध्येय लेकर स्थापित करता है। वह उसे जागरूक भावी नागरिकों को तैयार करने के एक प्रमुख साधन के रूप में देखता है। अस्तु, बालकों को भावी जीवन के लिए तैयार करना पाठशाला का परम कर्त्तव्य हो जाता है, यद्यपि समाज के अन्य अंग, जैसे परिवार, समुदाय, धार्मिक संस्थाओं आदि पर भी इस कार्य की जिम्मेदारी बनी रहती है। यह स्वाभाविक ही है कि समाज अपने अन्य अंगों की तुलना में शिक्षण संस्थाओं से कुछ अधिक आशाएँ रखे।

पाठशाला का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम और शिक्षण क्रियाएं, वहाँ का वातावरण और जीवन, छात्रों और अध्यापकों के पारस्परिक सम्बन्ध आदि सभी इस उत्तरदायित्व को निभाने में सहयोग देते हैं। स्कूलों में पढ़ाए जानेवाले सभी विषय बालक के सर्वांगीण विकास में मदद करते हैं, पर नागरिकता के विकास में सामाजिक अध्ययन का विशेष हाथ होता है, क्योंकि इस विषय का तो केन्द्रबिन्दु ही 'मनुष्य और समाज' है।

सामाजिक अध्ययन की पाठ्यवस्तु क्या हो? वह कैसे चुनी जाए? उसे पाठशाला के विभिन्न स्तरों के लिए कैसे व्यवस्थित किया जाए? उसे कक्षा में कैसे पढ़ाया जाए? उसे ठीक से पढ़ाने के लिए अध्यापकों को किस प्रकार प्रशिक्षित किया जाए? आदि प्रश्नों को लेकर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के पाठ्यक्रम, पद्धति और पाठ्यपुस्तक विभाग (जिसका वर्तमान नाम पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग है) ने लगभग तीन वर्ष पूर्व एक बहूद्देशीय सामाजिक अध्ययन प्रोजेक्ट का सूत्रपात किया है, जो इन प्रश्नों पर विधिवत शोधकार्य और विचार कर रहा है। इसी प्रोजेक्ट के अन्तर्गत सामाजिक अध्ययन का कक्षा १ से ११ तक का एक विस्तृत पाठ्यक्रम बनाया गया है। यह पाठ्यक्रम जिस मौलिक बात पर आधारित है, वह है हमारा देश और उसकी एकता। साथ ही इसमें हमारी भावी आशाओं और कर्तव्यों पर भी बल दिया गया है।

इस पाठ्यक्रम के कक्षा १ से ५ तक के भाग पर इस पुस्तकमाला की रचना की गई है। इस माला में कक्षा १ और २ के लिए अध्यापक-दर्शिका है, पाठ्यपुस्तक नहीं। कक्षा ३, ४ और ५ के लिए पाठ्यपुस्तकें हैं और साथ में इन पर अध्यापकों के लिए दर्शिकाएँ भी।

पाठशाला के पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों की कुछ सीमाएँ होती हैं। सभी बातें उनमें शामिल नहीं की जा सकतीं। इन सीमाओं के अन्दर पुस्तकों को नए ढंग से लिखने का प्रयत्न किया गया है। अच्छे उपकरणों जैसे चित्र, मानचित्र, अभ्यास आदि का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया गया है, जिससे कि अधिक-से-अधिक जानकारी बच्चों को रोचक ढंग से मिल सके तथा उपयुक्त क्रियाओं की सहायता से उनमें उचित भावनाओं और आदतों की बुनियाद डाली जा सके। सही ढंग से स्वस्थ भावनाओं, विचारों और आदतों की नींव प्रारम्भिक कक्षाओं में ही पड़ जानी चाहिए। अतः सभी कक्षाओं की पुस्तकों में पाठ्यक्रम के आधार-भूत सिद्धान्तों पर विभिन्न पहलुओं से बल दिया गया है। प्रत्येक कक्षा की मुख्य विषय-वस्तु मनोवैज्ञानिक आधार पर चुनी गई है, उद्देश्य है बच्चों के ज्ञान का क्रमबद्ध विकास। यह क्रम इस प्रकार है:

कक्षा १ में : हमारा घर और पाठशाला; कक्षा २ में : हमारा पास-पड़ोस; कक्षा ३ में : हमारा प्रदेश (दिल्ली क्षेत्र); कक्षा ४ में : हमारा देश—भारत; कक्षा ५ में : भारत और संसार।

इस कार्य में कई अनुभवी लोगों ने विभाग को सहायता दी है। हम उन सभी के आभारी हैं।

यह पुस्तकमाला अब आपके हाथों में है। आशा है कि बच्चे इसे रुचि से पढ़ेंगे और सामाजिक अध्ययन के सफल शिक्षण में यह आपकी सहायता कर सकेगी।

नई दिल्ली,
जनवरी २६, १९६७

एल० एस० चन्द्रकान्त

पाठ-सूची

दिल्ली के पड़ोसी राज्य

पृष्ठ संख्या

इतिहास की कहानियाँ

दिल्ली क्षेत्र
उ त्त र प्र दे श
वज़ीराबाद
दिल्ली
ओखला
ह रि या ना

यह है हमारी दिल्ली

तुम अपने घर, पाठशाला और पास-पड़ोस के बारे में बहुतसी बातें जानते हो। तुम्हारी पाठशाला 'दिल्ली-क्षेत्र' के किसी गाँव या शहरी भाग में होगी। इस क्षेत्र के विषय में तुम अब जानना चाहोगे।

सामने के पृष्ठ पर दिल्ली क्षेत्र का मानचित्र दिया गया है। तुम देखते हो कि दिल्ली क्षेत्र के पड़ोस में हरियाना, उत्तर प्रदेश, पंजाब और राजस्थान राज्य हैं। पड़ोसी राज्यों को देखते हुए दिल्ली क्षेत्र बहुत छोटा है।

दिल्ली क्षेत्र का एक बड़ा भाग मैदान है, जिसमें यमुना नदी बहती है। कुछ भाग में छोटी-छोटी पहाड़ियाँ हैं। इस क्षेत्र के एक बड़े भाग में दिल्ली नगर फैला हुआ है।

दिल्ली भारत की राजधानी है। हमारे देश के राष्ट्रपति यहीं रहते हैं। यहाँ बड़े-बड़े सरकारी दफ्तर हैं। नगर में भारत के सभी भागों के लोग तो रहते ही हैं, दूसरे देशों के लोग भी यहाँ आकर रहते हैं। दिल्ली शहर में हमें पूरे भारत की एक झलक दिखाई देती है।

दिल्ली-क्षेत्र हमारे विशाल देश भारत का एक छोटासा अंग है। इस पुस्तक के अगले पाठों में तुम्हें दिल्ली-क्षेत्र के विषय में बहुत-सी बातों की जानकारी होगी।
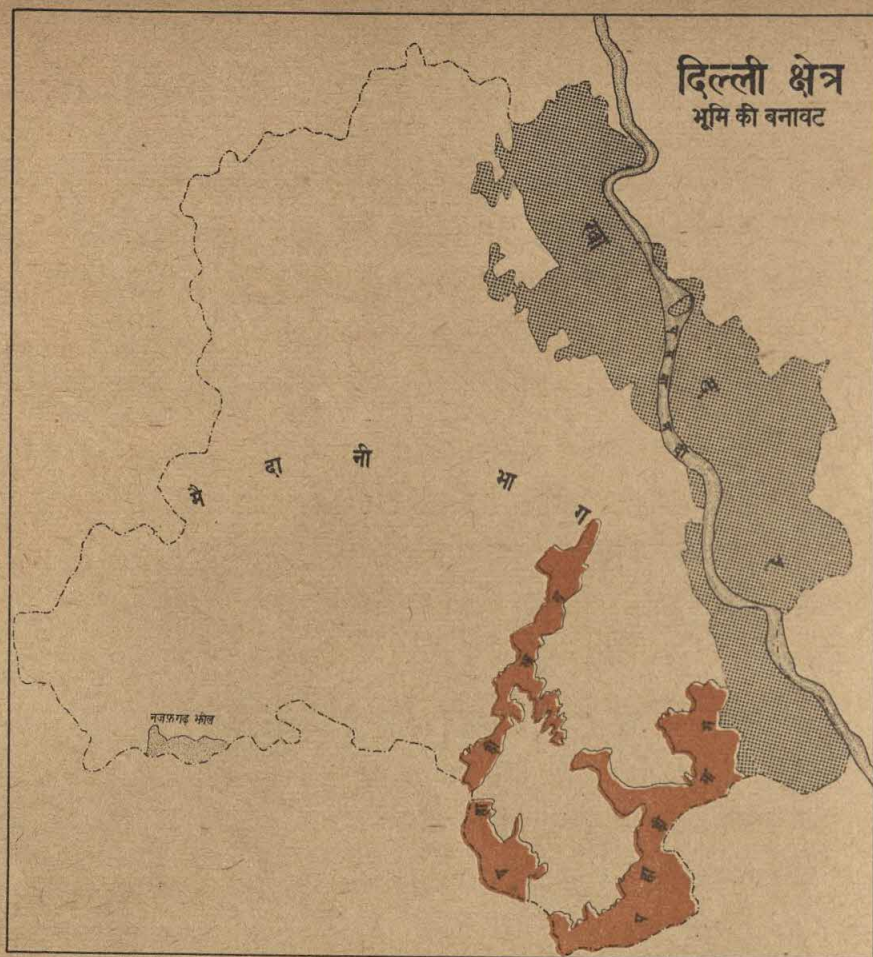
१. दिल्ली-क्षेत्र – एक झाँकी

ऊपर दिए गए मानचित्र को देखो। इसमें दाईं ओर एक मोटी धारी बनाई गई है। यह यमुना नदी है। यमुना नदी दिल्ली क्षेत्र के बीच से होकर बहती है। भारत की राजधानी दिल्ली शहर इसी नदी के किनारे बसा हुआ है। यह शहर दिल्ली क्षेत्र के एक काफ़ी बड़े भाग में फैला हुआ है। शेष भाग में बहुत-से छोटे-बड़े गाँव हैं।

भूमि की बनावट हर जगह एक-जैसी नहीं होती। तुम मानचित्र में देखोगे कि यमुना नदी के आसपास दोनों ओर का भाग काली बिन्दियों से दिखाया गया है। इस भाग की भूमि कुछ नीची और रेतीली है। नदी के आसपास दोनों ओर की नीची और रेतीली भूमि को 'खादर' कहते हैं। वर्षा के दिनों में यमुना नदी में बाढ़ आ जाती है और बाढ़ का पानी सारे खादर में फैल जाता है। बाढ़ का पानी उतर जाने पर भी यहाँ अधिक समय तक नमी बनी रहती है। यहाँ की भूमि उपजाऊ है।

गर्मी के दिनों में तुम जो ककड़ी, खरबूज़े, तरबूज़ आदि खाते हो, वे सब अधिकतर इसी खादर में पैदा होते हैं। लम्बी-लम्बी हरी घास और सरकंडे तो यहाँ काफी पैदा होते हैं। हमारे रोज़ के काम में आनेवाले मूढ़े और टोकरियाँ इसी घास और सरकंडों से बनते हैं। फूँस के बने छप्पर तो तुमने अवश्य देखे होंगे। यह फूँस भी खादर में पैदा होता है।

मानचित्र में हल्के भूरे रंग से दिखाया गया भाग पहाड़ी है। यहाँ की भूमि पथरीली है। जगह-जगह पर छोटी-छोटी पहाड़ियाँ हैं। कालकाजी, महरौली, तुगलकाबाद और नगर की कई नई और पुरानी बस्तियाँ और गाँव इन पहाड़ियों पर ही बसे हुए हैं। आजकल इन पहाड़ियों को तोड़कर सड़कें और मकान बनाए जा रहे हैं। दिल्ली नगर के अन्दर पहाड़ियों के कुछ निशान आज भी कई जगह मिलते हैं। नगर के बाहर तो छोटी-छोटी पहाड़ियाँ साफ दिखाई देती हैं।

इस भाग में अधिकतर काँटेदार झाड़ियाँ, कीकर और बबूल के पेड़ उगते हैं। कहीं-कहीं पर नीम और ढाक के पेड़ भी हैं।

खादर और पहाड़ी भाग को छोड़कर दिल्ली क्षेत्र का शेष भाग मैदानी है। मानचित्र में इसे सफेद रंग से दिखाया गया है। तुम देखते हो कि पूरे दिल्ली क्षेत्र का लगभग आधा भाग मैदानी है। इस भाग की भूमि न तो खादर की तरह नीची है और न पहाड़ी भाग की तरह पथरीली। यहाँ की भूमि लगभग बराबर है और मिट्टी कुछ रेतीली और सूखी है। यह भूमि खेती के लिए बहुत अच्छी है। यहाँ के खेतों में हर साल गेहूँ, चना, जौ, ज्वार, बाजरा और गन्ना खूब पैदा होता है। कहीं-कहीं सब्ज़ियाँ और फल भी होते हैं।
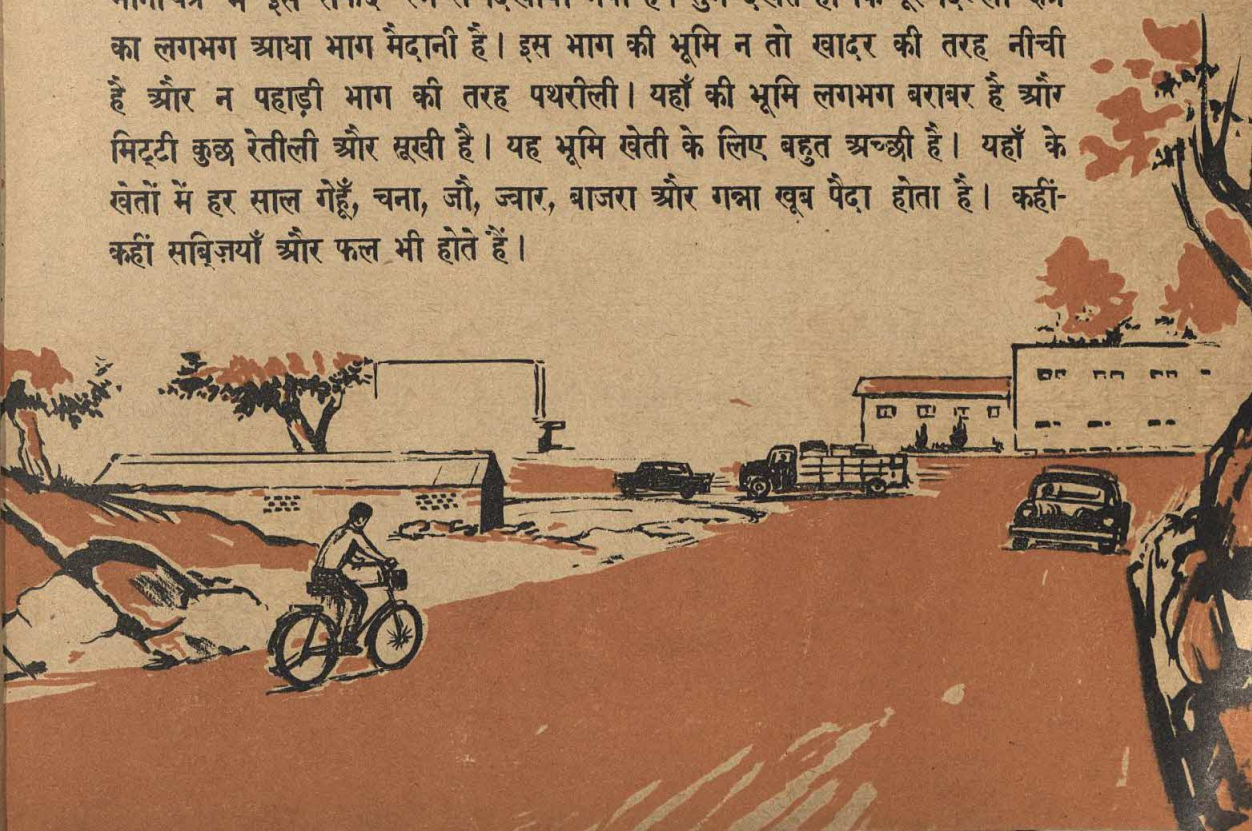
मानचित्र को ध्यान से देखो। मैदानी भाग का कुछ हिस्सा महीन बिन्दियों से दिखाया गया है। यह 'झील नजफगढ़' है। शेष मैदानी भाग को देखते हुए इस झील के आसपास की भूमि कुछ नीची है। इसी कारण वर्षा के दिनों में झील में अधिक पानी भर जाता है और कभी-कभी आसपास के कुछ हिस्सों में बाढ़ आ जाती है।

दिल्ली क्षेत्र के मौसम के बारे में तो तुम बहुत-सी बातें जानते हो। यदि कोई तुमसे पूछे कि दिल्ली में कौन-कौनसे मौसम होते हैं, तो तुम झट उत्तर दोगे, सर्दी, गर्मी और बरसात।

सर्दी के मौसम में दिल्ली में बहुत अधिक सर्दी पड़ती है। दिसम्बर और जनवरी (पौष, माघ) के महीने में तो कड़ाके की ठंड होती है। स्कूलों में बहुत-से लोग ऊनी कपड़े पहने दिखाई देते हैं। लोग रात को कमरों में दरवाज़े बन्द करके सोते हैं। तुमने लोगों को इकट्ठा होकर जगह-जगह पर आग सेंकते हुए भी देखा होगा। दिल्ली में सर्दी का मौसम सबसे अच्छा मौसम समझा जाता है। विदेश से आनेवाले अधिकतर सैलानी इसी मौसम में दिल्ली आते हैं।

सर्दी का मौसम बीत जाने पर गर्मी का मौसम आता है। गर्मी के दिनों में दिल्ली में गर्मी भी बहुत अधिक पड़ती है। मई और जून (ज्येष्ठ, आषाढ़) में तो बड़ी तेज़ धूप होती है, गर्म लू चलती हैं और कभी-कभी आँधियाँ आती हैं। गर्मी और लू से बचने के लिए लोग दोपहर की धूप में घरों से बाहर कम निकलते हैं। हल्के और महीन कपड़े पहनते हैं। लस्सी और शर्बत पीते हैं। स्थान-स्थान पर प्याऊ है। लोग रात को घरों के बाहर या मकानों की छतों पर सोते हैं।
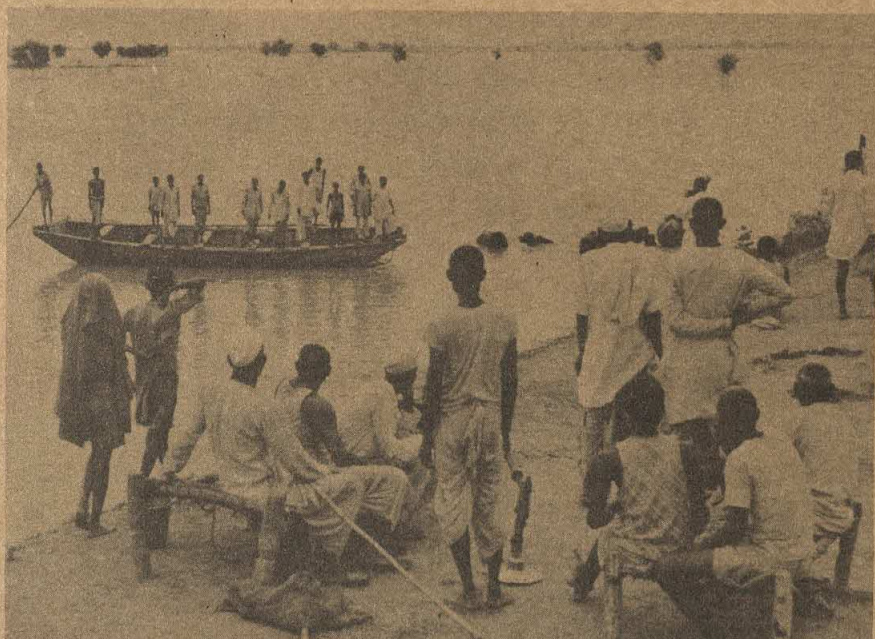
यमुना नदी में बाढ़ का दृश्य

गर्मी के बाद बरसात आती है। दिल्ली-क्षेत्र में जुलाई और अगस्त (सावन, भादों) के महीने में ही अधिक वर्षा होती है। बरसात का मौसम बहुत सुहावना होता है। जिधर देखो लोग छतरी लिए या बरसाती पहने दिखाई देते हैं। चारों ओर हरियाली छा जाती है। बरसात का मौसम थोड़े समय के लिए आता है किन्तु सब लोग इसे पसन्द करते हैं। किसान लोग तो बड़ी आशा से बरसात की बाट देखते हैं। वर्षा अच्छी होने से फसल भी अच्छी होती है।

बरसात में कभी-कभी यमुना में बाढ़ आ जाती है और सारे खादर में बाढ़ का पानी फैल जाता है। पास-पड़ोस के खेत और गाँव डूब जाते हैं। इससे हानि होती है और फसल खराब हो जाती है।

बाढ़ से बचने के लिए आजकल कई स्थानों पर मिट्टी और पत्थरों से बाँध बना दिए गए हैं। इससे बाढ़ का पानी दूर तक नहीं फैल पाता।

अब बताओ

१. पृष्ठ ६ पर दिए गए मानचित्र को देखकर बताओ :
   (क) "दिल्ली-क्षेत्र" के पड़ोसी राज्य कौन-कौनसे हैं ?
   (ख) यमुना नदी का बहाव दिल्ली क्षेत्र में किस दिशा से किस दिशा की ओर है ? (मानचित्र में दिए नामों के आधार पर बताओ।)
   (ग) दिल्ली नगर यमुना नदी के किस किनारे पर बसा है ?
२. 'झील नजफगढ़' दिल्ली क्षेत्र के किस भाग में है ? बरसात में इसमें पानी क्यों बढ़ जाता है ?
३. खादर, मैदानी और पहाड़ी भूमि की क्या पहचान है ?
४. ऐसी दो बातें बताओ जिनसे यह मालूम हो कि
   (क) दिल्ली में दिसम्बर-जनवरी में तेज़ सर्दी पड़ती है।
   (ख) दिल्ली में मई-जून में तेज़ गर्मी पड़ती है।
   (ग) दिल्ली में जुलाई-अगस्त में अधिक वर्षा होती है।
५. यमुना में किस मौसम में बाढ़ आती है ? इससे क्या हानियाँ होती हैं ?

कुछ करने को

१. अपने पास-पड़ोस में भ्रमण के लिए जाओ और नीचे लिखी बातों की जानकारी प्राप्त करो :
   (क) वहाँ की भूमि कैसी है ? समतल या ऊँची-नीची ? पथरीली या रेतीली ?
   (ख) क्या तुम्हारे पास-पड़ोस में कुछ पहाड़ियाँ या पहाड़ियों के निशान हैं ? वहाँ कौन-कौनसे पेड़ पौधे उगते हैं ?
   (ग) तुम दिल्ली-क्षेत्र के किस भाग में रहते हो ? खादर या पहाड़ी या मैदानी ?
२. अपने पास-पड़ोस की भूमि से तरह-तरह के पत्थरों के कुछ नमूने और कुछ फूल पत्तियाँ एकत्र करो।
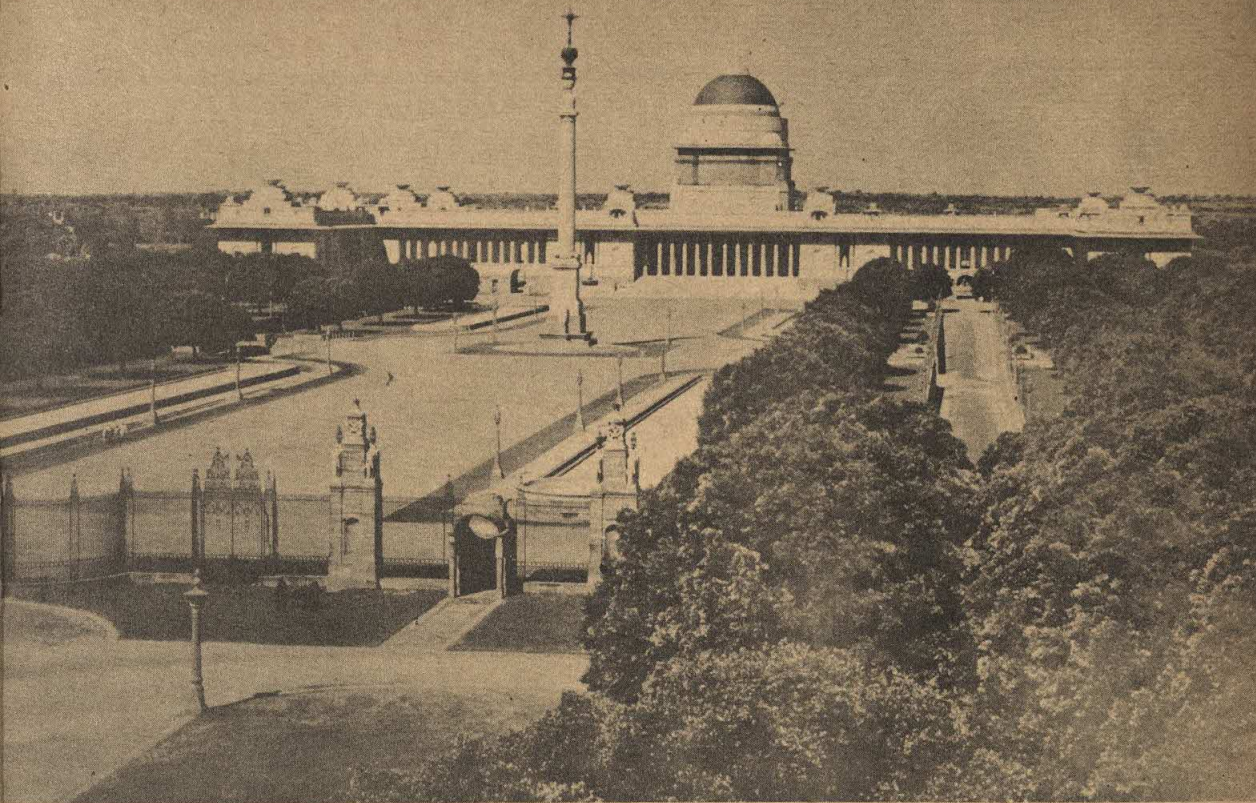
राष्ट्रपति भवन

२. हमारी राजधानी दिल्ली

पिछले पाठ में तुमने दिल्ली-क्षेत्र के बारे में कुछ बातें सीखीं। अब तुम दिल्ली नगर के बारे में पढ़ोगे।

दिल्ली-क्षेत्र के एक बड़े भाग में दिल्ली नगर बसा हुआ है। यहाँ के रहनेवालों की कुल संख्या तीस लाख से भी अधिक है। सारे दिल्ली-क्षेत्र में रहनेवाले प्रत्येक दस में से नौ व्यक्ति दिल्ली शहर में रहते हैं। आज यह एक बहुत बड़ा नगर है, लेकिन यह सदा से ऐसा नहीं रहा। इस नगर की कहानी पुरानी और लम्बी है। यह नगर कई बार बसा है, कई बार उजड़ा है और उजड़कर फिर बसा है। यही नहीं, दिल्ली नगर की कहानी के साथ हमारे पूरे देश की कहानी भी जुड़ी हुई है। पुराने समय के कई किले और महल, मीनार और मकबरे, मन्दिर और मस्जिद, आज भी यहाँ देखे जा सकते हैं। ये सब हमें हमारे देश की बीती कहानी सुनाते हैं।
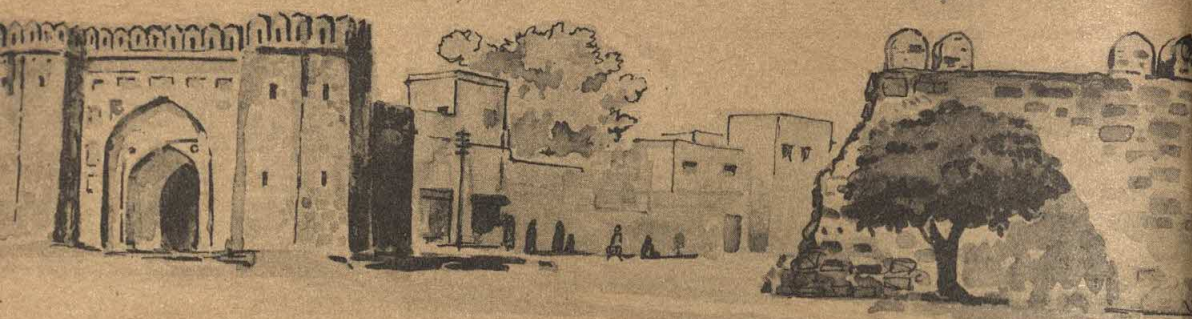
दिल्ली पुराने समय में कई बार हमारे देश की राजधानी रह चुकी है। महाभारत के समय पाण्डवों ने दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया था। उस समय इसका नाम इन्द्रप्रस्थ था। इसके बाद कई राजाओं ने दिल्ली को नए सिरे से बसाया और सबने अपने नए नगर का नया नाम रखा।

नगर का एक भाग पुरानी दिल्ली कहलाता है। इसके चारों ओर एक दीवार है। आज से लगभग तीन सौ वर्ष पहले मुगल सम्राट शाहजहाँ ने इसको बसाया था। शाहजहाँ ने इसका नाम शाहजहानाबाद रखा था। अंग्रेज़ों ने भी दिल्ली नगर को ही राजधानी बनाने के लिए चुना। आज से लगभग पचास वर्ष पहले उन्होंने नई दिल्ली बसाई। आज यह स्वतन्त्र भारत की राजधानी है।

हमारी इस राजधानी दिल्ली में बड़े-बड़े भवन और दफ़्तर हैं। इनमें से कुछ को तुमने भी देखा होगा।

'राष्ट्रपति-भवन' दिल्ली का एक प्रसिद्ध भवन है। हमारे देश के राष्ट्रपति इसी विशाल भवन में रहते हैं। राष्ट्रपति हमारे देश के सबसे बड़े अधिकारी हैं।

देश की सरकार का बड़ा कार्यालय भी दिल्ली में है। इसे 'केन्द्रीय सचिवालय' कहते हैं। इसमें केन्द्रीय सरकार के लाखों कर्मचारी काम करते हैं। हमारे प्रधानमंत्री और अन्य मंत्रियों के दफ़्तर भी इसी भवन में हैं।

केन्द्रीय सचिवालय के पास ही एक और विशाल भवन है। इसका नाम है 'संसद भवन'। यह भवन गोलाई में बना हुआ है। बाहर के बरामदे में बड़े-बड़े खम्बे है। देखने में यह भवन बहुत सुन्दर लगता है। हमारा राष्ट्र-ध्वज इसके ऊपर हमेशा लहराता रहता है।
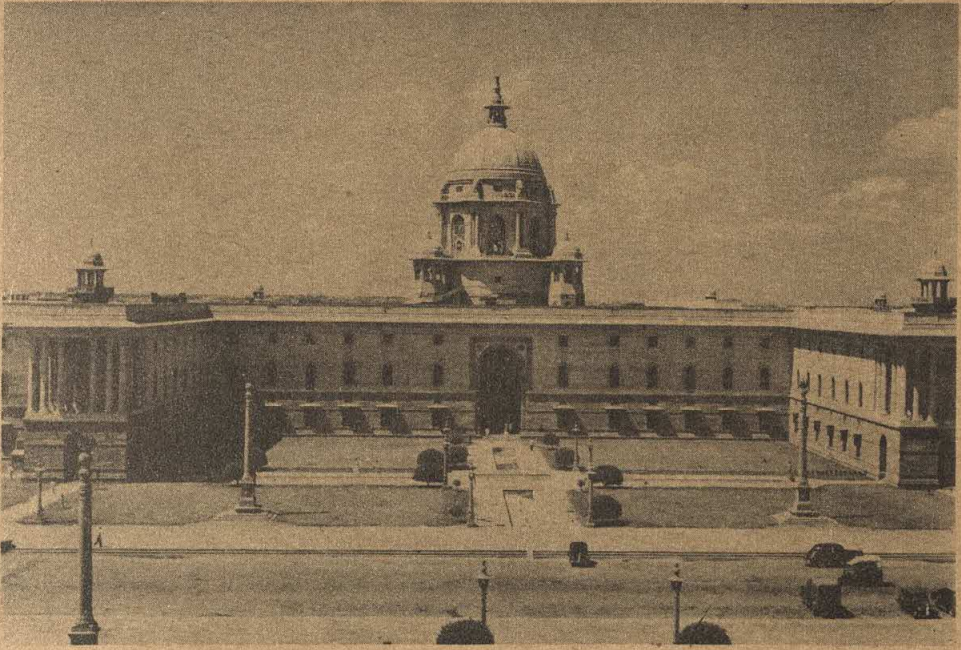
केन्द्रीय सचिवालय का दक्षिण भाग

संसद भवन

दिल्ली नगर में लाखों व्यक्ति रहते है और उनकी संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। सरकारी नौकरी करनेवाले लाखों मनुष्य देश के भिन्न-भिन्न भागों से आकर दिल्ली में रहते हैं। इनके रहन-सहन में अपने-अपने प्रदेश की झलक मिलती है। इस प्रकार हमें राजधानी में पूरे भारत का छोटा-सा सुन्दर रूप दिखाई देता है।

राजधानी दिल्ली की एक और भी विशेषता है। यहाँ पर केवल भारत के ही नहीं, दूसरे देशों के निवासी भी रहते हैं। संसार के बहुत-से देश भारत के मित्र है। इन मित्र-देशों के प्रतिनिधि भारत आते हैं। इनको 'राजदूत' कहते हैं। ये विदेशी राजदूत और उनके कर्मचारी भी राजधानी में ही रहते हैं।

राजदूतों और उनके कर्मचारियों के अतिरिक्त और भी बहुत से विदेशी लोग दिल्ली आते-जाते रहते हैं। रहन-सहन, रंग-रूप, पहनावे और भाषा की दृष्टि से ये विदेशी लोग भारतीयों से भिन्न हैं। ये लोग दिल्ली को और भी अनोखा रूप दे देते हैं। इस रूप में हमें सारे संसार की एक झलक भी दिखाई देती है।

वैसे तो दिल्ली में हर समय ही बड़ी चहल-पहल रहती है लेकिन १५ अगस्त (स्वतन्त्रता दिवस) और २६ जनवरी (गणतन्त्र दिवस) पर इस नगर की रौनक और भी बढ़ जाती है। ये दोनों दिन सारे देश में हर साल राष्ट्रीय त्यौहारों के रूप में मनाए जाते है। राजधानी दिल्ली में इन त्यौहारों को बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। प्रतिवर्ष १५ अगस्त को हमारे प्रधान मन्त्री लालकिले पर हमारे देश का झंडा

दिल्ली में लाल किले पर स्वतन्त्रता दिवस समारोह
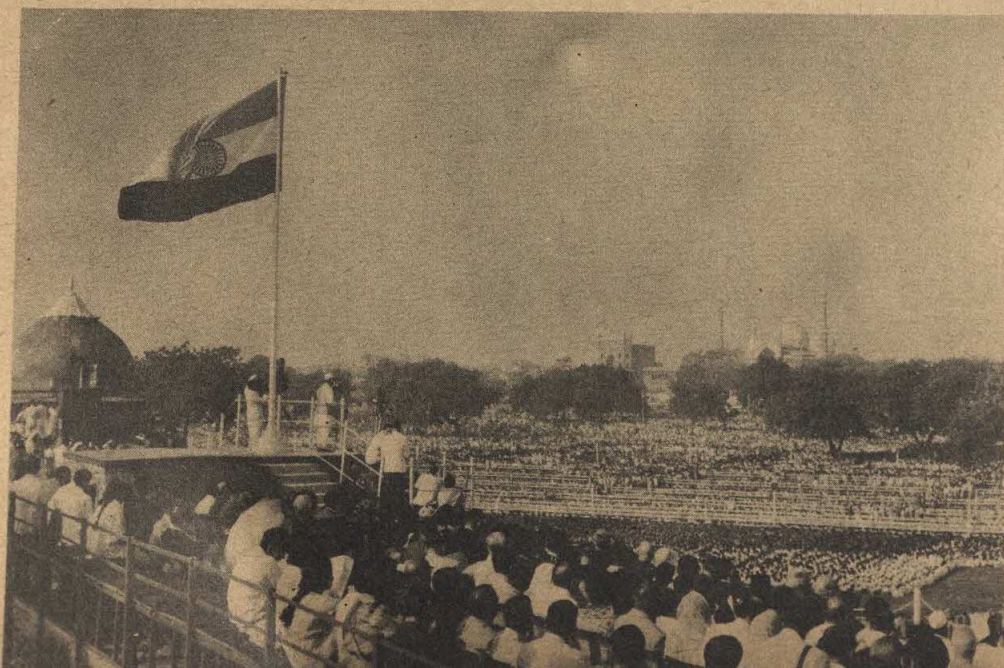
फहराते है और भाषण देते हैं। नगर में स्थान-स्थान पर जलसे किए जाते हैं और देश के स्वतन्त्र होने की खुशी मनाई जाती है।

गणतन्त्र दिवस मनाने के लिए तो राजधानी में महीनों पहले से तैयारियाँ की जाती हैं। २६ जनवरी को सवेरे एक बहुत बड़ा जलूस निकलता है। यह केन्द्रीय सचिवालय के पास विजय चौक से चलता है और 'इंडिया गेट' होता हुआ लाल-किले तक जाता है। इसमें हमारे हथियारबन्द सैनिकों की टुकड़ियाँ, पुलिस के सिपाही और स्कूलों के लड़के-लड़कियाँ, हज़ारों की संख्या में भाग लेते हैं। हमारे राष्ट्रपति इस लम्बी परेड की सलामी लेते हैं। इसके बाद सभी राज्यों की सुन्दर झाँकियाँ निकाली जाती हैं। अन्त में हवाई जहाज़ आते है और राष्ट्रपति को सलामी देकर उड़ते हुए चले जाते हैं।

राजधानी में गणतन्त्र दिवस समारोह की एक झांकी
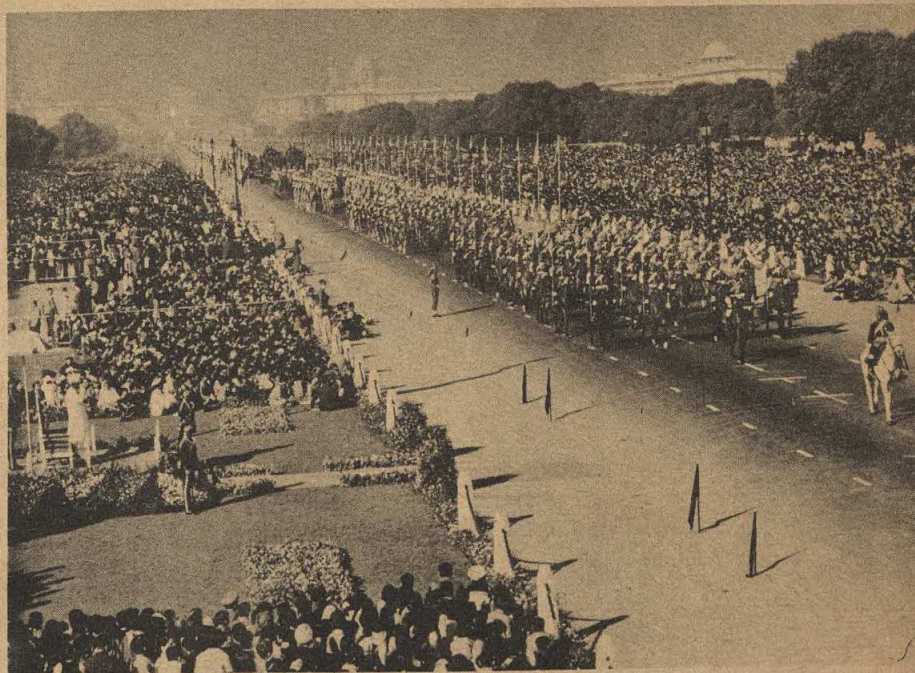
लाखों स्त्री, पुरुष और बच्चे २६ जनवरी का समारोह देखने के लिए दिल्ली आते हैं। नगर में स्थान-स्थान पर खेल-कूद, नाटक और तमाशे होते हैं। रात को राजधानी के मुख्य सरकारी भवनों पर रोशनी की जाती है।

कितनी रंग-बिरंगी है हमारी राजधानी दिल्ली।

अब बताओ

१. शाहजहानाबाद किसने बसाया था? आजकल इसे किस नाम से पुकारते है?

२. नीचे लिखी बातों में से केवल उन पर सही (✓) का निशान लगाओ, जो यह बताती हों कि दिल्ली एक पुराना नगर है:
   (क) यहाँ लाल किला है।
   (ख) यहाँ पुराना किला है।
   (ग) यहाँ राष्ट्रपति भवन है।
   (घ) यहाँ संसद भवन है।
   (ङ) यहाँ कुतुबमीनार है।

३. राष्ट्रपति जिस भवन में रहते हैं उसे क्या कहते हैं?

४. दिल्ली में देश के विभिन्न राज्यों के लोग क्यों दिखाई देते हैं?

५. कोई ऐसी तीन बातें बताओ जिनसे यह मालूम हो कि दिल्ली भारत की राजधानी है।

कुछ करने को

१. राजधानी के कुछ प्रसिद्ध भवनों के नामों की एक सूची बनाओ।

२. राजधानी के कुछ प्रसिद्ध भवनों के चित्र इकट्ठे करो और अपनी कापी पर चिपकाओ।

३. दिल्ली–यातायात का केन्द्र

यदि तुम दिल्ली के बाज़ार में किसी कपड़े या बिसाती की दुकान पर जाकर पूछो कि उसकी दुकान में तरह-तरह के इतने सारे कपड़े और अन्य सामान कहाँ से आए हैं, तो दुकानदार तुम्हें देश के बहुत से स्थानों के नाम बताएगा। शायद कुछ दूसरे देशों के नाम भी बताए।

दिल्ली में बाहर से हज़ारों प्रकार की वस्तुएँ बिकने के लिए आती हैं। इसी तरह दिल्ली में बनी हुई हज़ारों वस्तुएँ दिल्ली से बाहर भेजी जाती हैं। इस सब सामान को ट्रकों और मालगाड़ियों से दिल्ली में लाया जाता है और दिल्ली से बाहर भेजा जाता है। तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि दिल्ली के स्टेशनों पर हर समय बहुतसी माल-गाड़ियाँ आती जाती रहती हैं। दिल्ली व्यापार का एक बड़ा केन्द्र है।

तुम पढ़ चुके हो कि दिल्ली हमारे देश की राजधानी है। इसलिए हज़ारों आदमी प्रतिदिन दिल्ली आते हैं और यहाँ से बाहर जाते हैं। रेलें, बसें और कारें कितने ही स्त्री, पुरुष और बच्चों को हर रोज़ नगर में लाती हैं और बाहर दूसरे स्थानों को ले जाती हैं।

दिल्ली रेलवे स्टेशन के बाहर का एक दृश्य

दिल्ली के बड़े स्टेशन पर तुम अवश्य गए होगे। वहाँ तुमने देखा होगा कि हर रेल-गाड़ी से हज़ारों लोग उतरते हैं और बाहर जाने के लिए रेलगाड़ियों पर चढ़ते हैं। इनमें देश के रहनेवाले भी होते हैं और दूसरे देशों के सैलानी भी। मुसाफिर-खाने में हमेशा भारी भीड़ दिखाई देती है। टिकट-घर की सभी खिड़कियों पर दिन रात टिकट बिकते हैं और हर समय लम्बे 'क्यू' लगे रहते हैं। यहाँ से देश के कोने-कोने को रेलगाड़ियाँ जाती हैं।

दिल्ली में एक ऐसा बस-स्टेंड है जहाँ से हरियाना, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश आदि पड़ोसी राज्यों को जानेवाली बसें मिलती है। इसे 'अन्तर-राज्य बस-स्टेंड' कहते हैं।

शहर के अन्दर और भी कई बस-स्टेंड हैं। प्रत्येक बस-स्टेंड पर यात्रियों की बड़ी भीड़ रहती है। सवारियों से भरी सैंकड़ों बसें आती जाती रहती हैं।

कुछ लोग हवाई जहाज़ से यात्रा करते हैं। दिल्ली में दो हवाई अड्डे हैं—पालम और सफ़दरजंग। पालम पर यात्रियों से भरे हवाई जहाज़ दिन-रात उतरते हैं और देश-विदेश के लिए रवाना होते रहते हैं। यदि तुम कभी किसी हवाई अड्डे पर जाओ तो वहाँ तुम्हें अपने देश के लोग तो मिलेंगे ही, दूसरे देशों के लोग भी मिलेंगे।

इस प्रकार दिल्ली में माल और सवारियों के आने-जाने का ताँता बँधा रहता है। हर समय बहुत-से ट्रक, बसें, मालगाड़ियाँ, सवारी गाड़ियाँ और हवाई जहाज़ आते-जाते रहते हैं।

राजधानी के एक हवाई अड्डे पर यात्रियों की भीड़

सामान और व्यक्तियों के लाने और ले जाने को 'यातायात' कहते हैं।

जिस स्थान पर हर प्रकार के यातायात की अधिकता हो, उसे 'यातायात का केन्द्र' कहते हैं। हमारी दिल्ली यातायात का एक बहुत बड़ा केन्द्र है।

आने जाने और सामान को लाने लेजाने के अच्छे साधन होना हमारे लिए बहुत आवश्यक हैं। यदि ऐसा न हो तो हमारी कठिनाइयाँ बढ़ जाएँगी। हमें भोजन चाहिए, पहनने ओढ़ने के कपड़े चाहिएँ और रहने के मकान बनाने के लिए तरह-तरह के सामान चाहिएँ। इन सभी वस्तुओं को हम रेल, ट्रक आदि यातायात के साधनों द्वारा ही मंगवाते हैं। हमें आवश्यकता की सभी वस्तुएँ समय पर मिल जाता हैं।

विभिन्न दफ्तरों और कारखानों में काम करनेवाले लोग रेलों और बसों से अपने काम के स्थानों पर जाते हैं। यदि यातायात में रुकावट हो जाए तो सभी के काम रुक जाएँगे।

इसीलिए बड़े शहरों में यायायात के अच्छे साधनों का होना आवश्यक है।

अब बताओ

१. 'यातायात' का क्या अर्थ है और 'यातायात का केन्द्र' किसे कहते हैं?
२. दिल्ली में यातायात के कौन-कौनसे साधन प्रयोग में लाए जाते हैं?
३. बड़े शहरों में यातायात के अच्छे साधनों का होना क्यों आवश्यक है?
४. हम दिल्ली को यातायात का एक बड़ा केन्द्र क्यों कहते हैं?
५. दिल्ली आने वाले अपने मित्र को लेने के लिए तुम कहाँ जाओगे?
   (क) यदि वह चण्डीगढ़ से बस द्वारा आ रहा हो।
   (ख) यदि वह बम्बई से हवाई जहाज़ द्वारा आ रहा हो।
   (ग) यदि वह मथुरा से रेल द्वारा आ रहा हो।

कुछ करने को

१. अपने अध्यापक या माता-पिता के साथ दिल्ली का कोई हवाई अड्डा देखने जाओ।
२. रेल-गाड़ी हवाई जहाज़, बस, ट्रक आदि के चित्र बनाओ।

आओ दिल्ली देखें

दिल्ली एक बहुत पुराना शहर है। यहाँ नई-पुरानी बहुतसी बस्तियाँ हैं जिनमें लाखों लोग रहते हैं। ये बस्तियाँ दूर तक फैली हुई हैं। तुम्हें यह जानकर अचरज होगा कि कई बस्तियाँ तो एक दुसरी से बीस या पच्चीस किलोमिटर दूर हैं। शहर में बहुत से छोटे-बड़े बाज़ार हैं जिनमें सभी तरह का सामान बिकता है। वह यहाँ से बाहर भी भेजा जाता है।

अगले पाठों में तुम पढ़ोगे कि दिल्ली में देश के विभिन्न राज्यों के लोग आपस में बड़े मेलजोल से रहते हैं। उनके रहन-सहन अलग-अलग तो हैं, लेकिन वे सब एक देश की सन्तान हैं। वे सब भारतीय हैं। वे अपने अलग-अलग त्यौहारों को मिलजुल कर मनाते हैं।

दिल्ली में बहुतसे देखने योग्य स्थान हैं। देश-विदेश के हज़ारों सैलानी इन स्थानों को देखने जाते हैं। अपनी पुस्तक के इस भाग में तुम्हें दिल्ली के कुछ नए और कुछ पुराने स्थानों की जानकारी भी होगी।

४. नई और पुरानी बस्तियाँ

नवीन और कमल चचेरे भाई हैं। दोनों दिल्ली में रहते हैं। नवीन मोतीबाग में रहता है और कमल दरीबाकलाँ में।

मोतीबाग एक नई बस्ती है। इसके मकान नए ढंग के बने हुए हैं। दरीबा कलाँ एक पुरानी बस्ती है। इसके मकान पुराने ढंग के बने हुए हैं। दिल्ली में इस प्रकार की बहुतसी नई और पुरानी बस्तियाँ हैं।

नवीन और कमल, दोनों तीसरी कक्षा में पढ़ते हैं। अक्टूबर में दशहरे की छुट्टियाँ हुई, तो नवीन अपने भाई कमल के घर दरीबाकलाँ गया। वे एक-दूसरे से मिलकर बहुत खुश हुए। नवीन को रामलीला देखने का बड़ा चाव था। उसने अपने दादाजी से कहा, "दादाजी, हम रामलीला देखेंगे।"

दादाजी बोले, "अच्छा बेटा, शाम को तुम्हें रामलीला मैदान ले चलूँगा। तुम और कमल दोनों तैयार हो जाना।"

नवीन ने कहा, "दादाजी, शाम तो हो गई। अब तो अंधेरा होनेवाला है।"

दादाजी हँसने लगे और बोले, "बेटा, अभी तो चार ही बजे हैं।"

नवीन को बड़ा अचरज हुआ और वह बोला, "लेकिन दादाजी, चार बजे तो हमारे मोतीबाग में धूप ही धूप होती है।"

दादाजी मुस्कराए और कहने लगे, "हाँ भाई, तुम मोतीबाग में रहते हो। वह दिल्ली की एक नई बस्ती है। उसको बसे हुए अभी केवल दस-बारह साल हुए हैं। वहाँ के मकान बहुत हवादार, खुले-खुले और नए ढंग के बने हैं। उनमें हर कमरे में कई खिड़कियाँ और रोशनदान होते हैं। घरों के अन्दर धूप और हवा खूब आती है।"

नवीन बीच में ही बोल पड़ा, "दादाजी, मोतीबाग के सारे मकानों में नहाने के कमरे भी हैं और घरों के सामने घास के मैदान भी हैं।"

दादाजीने कहा, "ठीक है। दिल्ली की नई बस्तियों को बिलकुल नए ढंग से बसाया गया है। सभी मकान लाइनों में बने हुए हैं। एक या दो मंजिल से अधिक
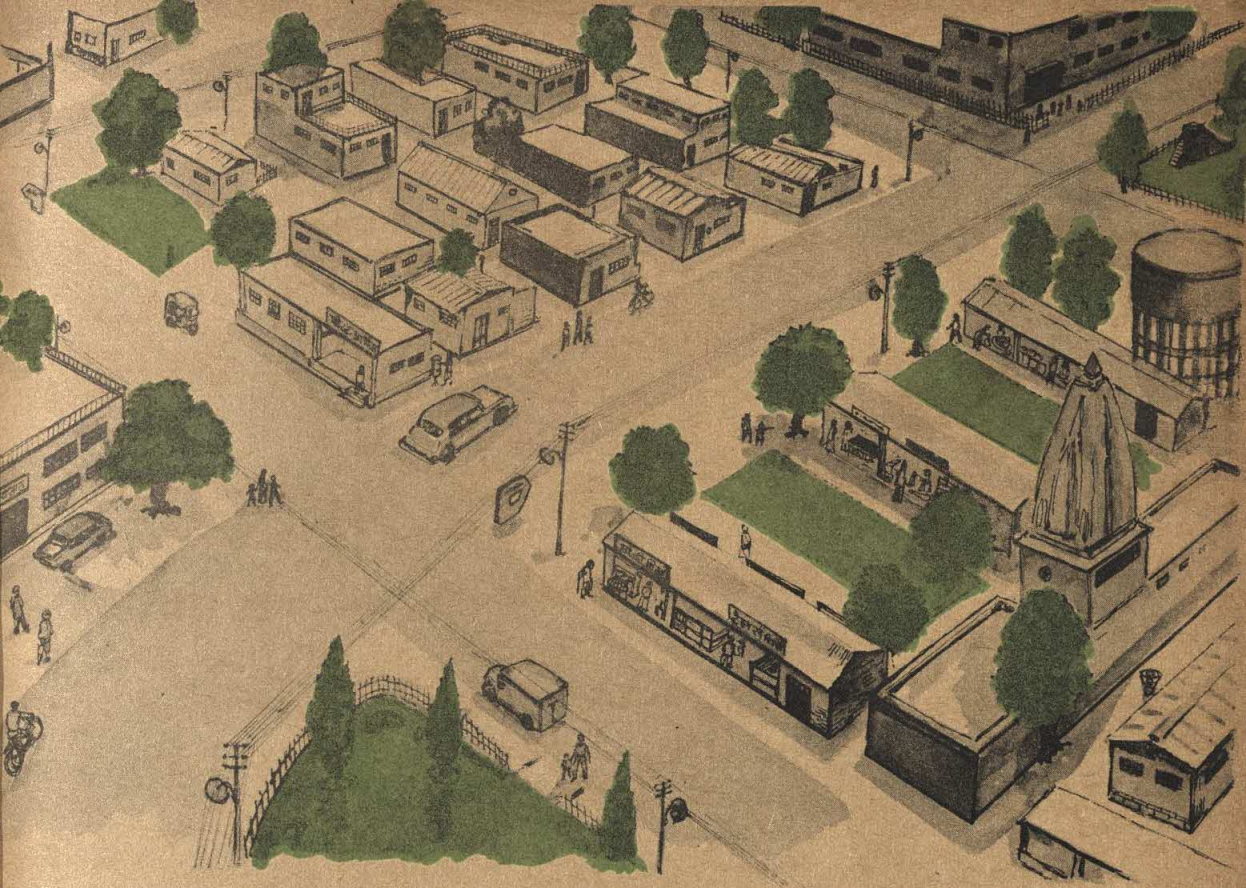
ऊँचे मकान कम बनाए जाते हैं। प्रत्येक बस्ती में कुछ सुविधाएँ प्राप्त हैं, जैसें बाज़ार, स्कूल, अस्पताल, डाकघर, पार्क, खेल के मैदान आदि।"

कमल पास बैठा हुआ सब बातें ध्यान से सुन रहा था। वह कहने लगा, "दादाजी, ये सब बातें तो हमारे दरीबाकलाँ में भी है।"

दादाजी समझाने लगे, "वह तो ठीक है, बेटा। मनुष्य जहाँ भी रहते हैं, वे अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ बना लेत हैं। फिर भी दिल्ली की नई और पुरानी बस्तियों में कुछ अन्तर है। दरीबाकलाँ को ही ले लो। यह बस्ती कई सौ साल पुरानी है। जिस मकान में तुम बैठे हो, यह एक पुरानी हवेली है। इसकी पाँच मंज़िलें हैं। इसमें लगभग पचास कमरे हैं जिनमें बीस-बाईस परिवार रहते हैं। खिड़कियाँ और रौशनदान बहुत ही कम हैं। नीचे की मंज़िलों के कई कमरों में अँधेरा रहता है। धूप और ताज़ा हवा बहुत कम आती है।"

नवीन कहने लगा, "यही कारण है कि यहाँ पर चार बजे से ही अँधेरा हो जाता है। ऐसा लगता है कि रात होनेवाली है।"

दादाजी ने बताया, "यही नहीं, बेटे। पुरानी बस्तियों की गलियाँ भी बहुत तंग और टेढ़ीमेढ़ी हैं। नई बस्तियों में सड़कें चौड़ी-चौड़ी और सीधी बनाई गई हैं। सड़कों के दोनों ओर छायादार पेड़ भी लगाए गए हैं।"

शामको इसी तरह बातें करते-करते वे रामलीला मैदान की ओर चल दिए। रास्ते में नवीन ने पूछा, "कमल भैया, रामलीला मैदान यहाँ से कितनी दूर है?"

कमल ने उत्तर दिया, "बस थोड़ी दूर है। यह जामा मास्जिद है। दो-तीन गलियाँ पार करने पर तुर्कमान गेट आएगा और बस फिर उसके आगे रामलीला मैदान है।"

टेढ़ी-मेढ़ी तंग गलियों में से होकर वे सब थोड़ी देर में तुर्कमान गेट आ पहुँचे। यह पत्थर का बना एक ऊँचा दरवाज़ा है। नवीन ने कहा, "दिल्ली गेट भी बिल्कुल तुर्कमान गेट की तरह है। मैं ने बस में आते समय देखा था।"

"ठीक कहा तुमने।" दादाजी बोले, "पुरानी दिल्ली के चारों ओर पत्थर की एक ऊँची दीवार थी। उसमें इस प्रकार के कई दरवाज़े बने हुए थे। सैंकड़ों वर्ष बीतने पर यह दीवार लगभग टूट चुकी है। फिर भी इसके टूटे भाग कहीं-कहीं पर आज भी देखे जा सकते हैं।"

ज़रा आगे चले तो देखा कि सामने रामलीला का पंडाल था। बहुत लोग पंडाल में जा रहे थे। नवीन और कमल भी अपने दादाजी के साथ पंडाल में पहुँच गए। पंडाल में दूर-दूर तक बड़ी भीड़ थी। हज़ारों स्त्री, पुरुष और बच्चे रामलीला देखने आए हुए थे। नवीन और कमल ने इतनी बड़ी भीड़ कभी नहीं देखी थी।
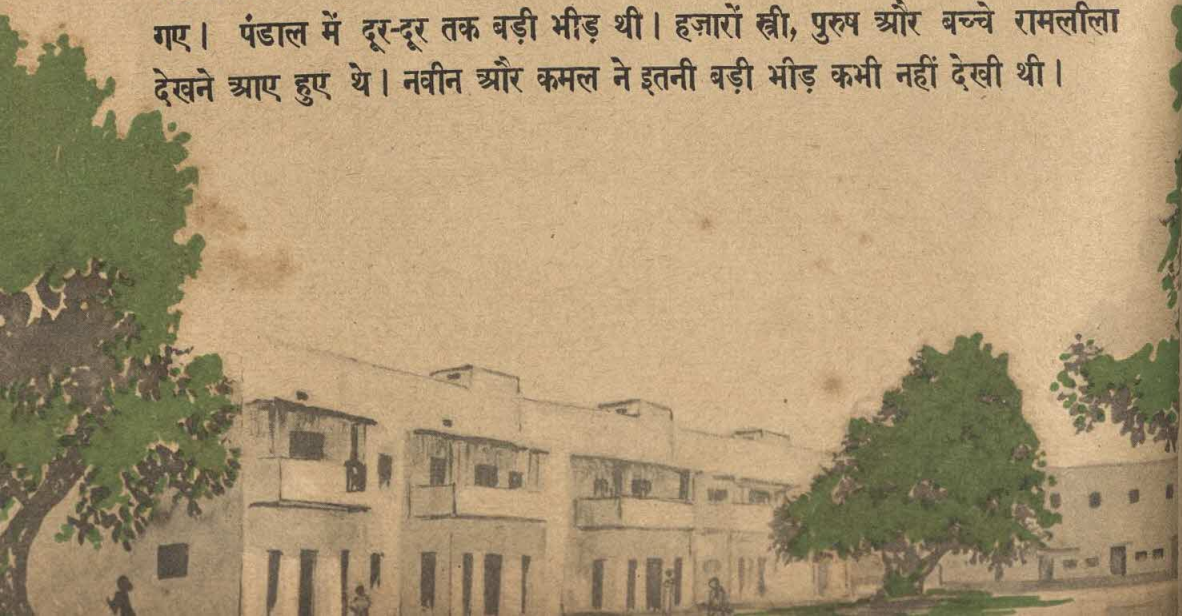
रामलीला आरम्भ होने में अभी कुछ देर थी। दादाजी ने बताया, "आज से बीस-बाईस वर्ष पहले रामलीला में इतनी भीड़ नहीं हुआ करती थी। भीड़ के बढ़ने का कारण यह है कि अब दिल्ली में उस समय से लगभग तिगुने लोग रहते हैं।"

कमल ने पूछा, "दादाजी, आपको यह कैसे मालूम हुआ कि अब पहले से इतने अधिक लोग दिल्ली में रहते हैं?"

दादाजीने समझाया, "हर दसवें साल सारे देश में जनगणना होती है। इससे यह पता चलता है कि किस स्थान की जनसंख्या कितनी है। पिछली जनगणना १९६१ में हुई थी।"

नवीन बोल उठा, "इसीलिए तो दिल्ली नगर में नई-नई बस्तियाँ बसाई जा रही हैं। नए-नए मकान बनाए जा रहे हैं।"

कमल ने कहा, "लेकिन फिर भी बहुतसे लोगों के पास मकान नहीं हैं। बहुत से परिवार केवल एक ही कमरे में रहते हैं। कुछ लोग तो झुग्गी-झोंपड़ियों में ही रहते हैं।"

दादाजी ने कहा, "यह बात केवल दिल्ली के लिए ही अनोखी नहीं है। सभी बड़े शहरों में रहने के मकानों की बहुत कमी है।"

इतनी देर में रामलीला आरम्भ हो गई। सब लोग रामलीला देखने लगे।

अब बताओ

१. नए ढंग के बने मकानों में क्या-क्या खास बातें होती हैं ?
२. पुराने ढंग के बने मकानों में क्या-क्या कमियाँ होती है ?
३. दिल्ली नगर में नई-नई बस्तियाँ और मकान बानए जा रहे हैं। फिर भी रहने के मकानों की कमी है। इसका क्या कारण है ?
४. कैसे मालूम हुआ कि अब दिल्ली में बीस साल पहले से तिगुने लोग रहते हैं ?
५. नई बस्तियों में रहनेवलों को कौन-कौनसी सुविधाएँ प्राप्त हैं ?

कुछ करने को

१. अपनी बस्ती तथा पास-पड़ोस की बस्तियों के मकानों को देखने जाओ और यह जानकारी प्राप्त करो :
   (क) क्या वहाँ के मकान पुराने ढंग के बने हुए हैं ?
   (ख) क्या वहाँ के मकान नए ढंग के बने हुए हैं ?
   (ग) क्या वहाँ पर नए व पुराने दोनों प्रकार के मकान हैं ?
२. सब मिलकर नए ढंग की एक बस्ती का माडल बनाओ।

५. दिल्ली नगर के रहनेवाले

तुम पढ़ चुके हो कि दिल्ली हमारे देश की राजधानी है, इसलिए यहाँ पर देश के सभी राज्यों के लोग रहते हैं। तुम इन लोगों के बारे में बहुत सी नई-नई बातें अवश्य जानना पसन्द करोगे। आओ, नई दिल्ली के एक पार्क में चलें। पास-पड़ोस की बस्तियों के रहनेवाले प्रतिदिन सुबह शाम इस पार्क में घूमने जाते हैं। यहाँ तुम्हें राजधानी में रहनेवाले भाँति-भाँति के लोगों को पास से देखने का अवसर मिलेगा।

वह देखो, पार्क के उस कोने में एक बूढ़े सज्जन बैठे हैं। वह कुर्ता और धोती पहने हुए है। शायद बंगाली हैं। आओ, इनके पास चलें।

"नमस्ते, श्रीमानजी।"

"नमस्कार, नमस्कार।"

सुना तुमने उनका उत्तर? बंगाल राज्य के रहनेवाले इसी प्रकार एक दूसरे का अभिवादन करते हैं। ये लोग अधिकतर धोती कुर्ता पहनते हैं। चावल और मछली इनका मनपसन्द भोजन है।

उधर देखिए, सलवार, कमीज़ और पगड़ी पहने सफ़ेद दाढ़ी-मूँछवाले सरदारजी चले आ रहे हैं। अरे, वह तो इन्हीं बंगाली सज्जन की ओर आ रहे हैं।

"सत् सिरी अकाल।" उन्होंने ठेट पंजाबी भाषा में अभिवादन किया। बंगाली सज्जन ने हाथ जोड़कर 'नमस्कार' कहा और दोनों साथ-साथ पार्क में घूमने निकल पड़े।

आओ, अब हम उस ओर चलें। साड़ी पहने कुछ स्त्रियाँ पार्क में घूम रही हैं। उधर से कुछ दूसरी स्त्रियाँ और बच्चे भी उनसे आ मिले। ये लोग 'वाणक्कम्' 'वाणक्कम्' कह रहे हैं। ऐसा जान पड़ता है कि ये लोग मद्रास राज्य के रहनेवाले हैं। वहाँ के लोग तमिल भाषा बोलते हैं। 'वाणक्कम्' तमिल में 'नमस्ते' के लिए प्रयोग होता है।

ज़रा इधर भी देखो। सलवार, कमीज़ और दुपट्टा पहने कुछ लड़कियाँ झूला झूल रही हैं। वे पंजाबी भाषा का कोई गीत गा रही हैं। इनके कपड़ों और इनकी बोली से पता चलता है कि ये अवश्य ही पंजाब राज्य की रहनेवाली हैं।

सामने की सड़क पर कुछ स्त्रियाँ लहँगे पहने हुए जा रही हैं। ऐसे कपड़े राजस्थान की स्त्रियाँ पहनती हैं। ये अवश्य ही राजस्थानी हैं।

कमीज़ या कोट और पतलून पहनने वाले लोग तो तुम्हें यहाँ बहुत अधिक मिलेंगे। इसी प्रकार चूड़ीदारपायजामा, अचकन और गाँधी टोपी पहनने का रिवाज भी सारे देश में चल पड़ा है।

ध्यान से सुनो तो तुम्हें यहाँ कई भाषाएँ सुनने को मिलेंगी। अधिकांश लोग हिन्दी, उर्दू और पंजाबी बोलते हैं। बंगाली, मराठी, गुजराती, तमिल, मलियालम आदि भाषाएँ भी कुछ लोग बोलते हैं। ज़रा सोचकर बताओ कि तुम अपने घर और स्कूलमें कौन-कौनसी भाषाएँ बोलते हो।
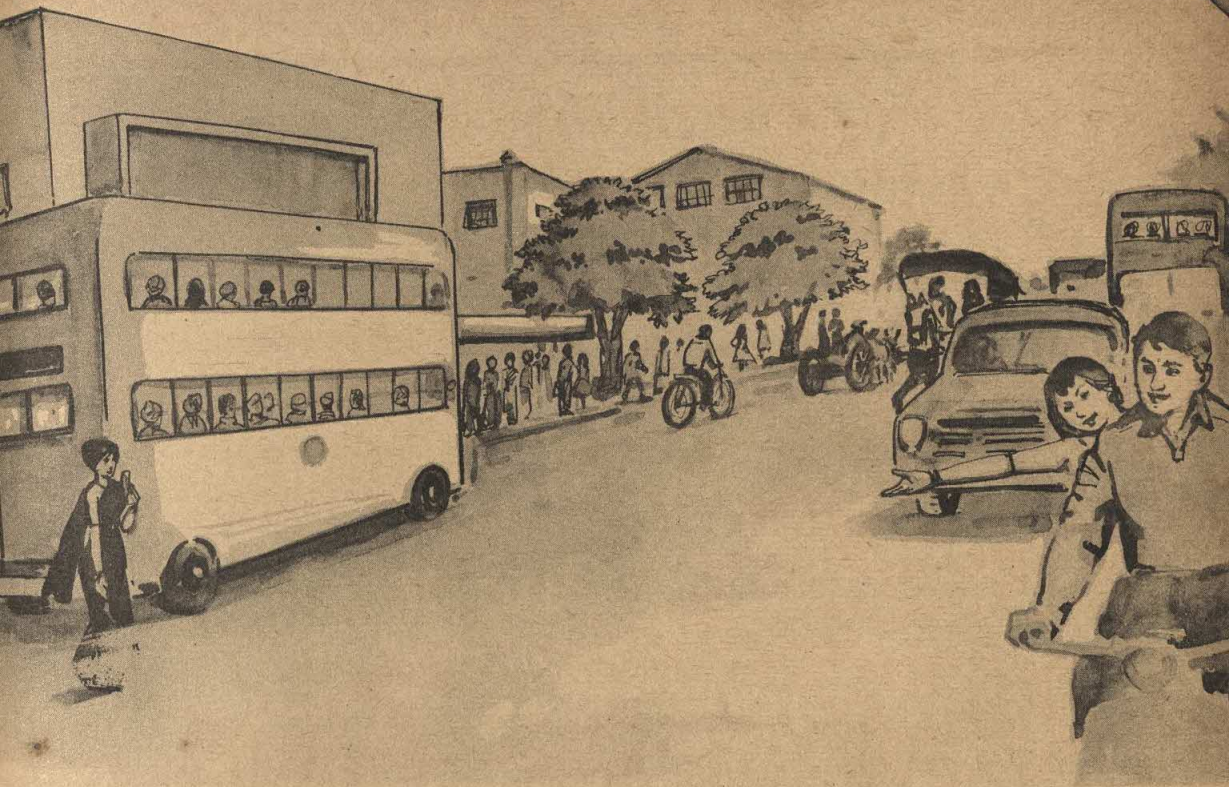
दिल्ली में हिन्दुओं के मन्दिर भी हैं और मुसलमानों की मस्जिदें भी। सिखों के गुरुद्वारे भी हैं और ईसाइयों के गिरजाघर भी। बौद्ध, जैन और पारसी लोगों के पूजास्थान भी यहाँ पर हैं। सब लोग अपने अपने त्यौहारों को बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। पंजाब के लोग 'लोहड़ी' और 'गुरुपूरब' मनाते हैं। बंगालियों का बड़ा त्यौहार 'दुर्गा पूजा' है। मुसलमान लोग 'ईद' मनाते हैं और ईसाई 'बड़ा दिन' या 'क्रिसमस' मनाते हैं। दशहरे पर दिल्ली में 'रामलीला' होती है। दिल्ली के रहने-वाले इन सभी त्यौहारों को मिलजुल कर मनाते हैं।

प्रातः नौ-दस बजे के लगभग तुमको दिल्ली की सड़कों पर एक अनोखा दृश्य देखने को मिलेगा। इस समय हज़ारों लोग साईकिलों, स्कूटरों और मोटरों में बैठकर दफ़्तरों को जाते हैं। यदि तुम अपनी बस्ती के 'बस-स्टाप' पर जाओ तो बहुत से लोग लम्बे 'क्यू' में खड़े मिलेंगे। ये सब प्रतिदिन इसी प्रकार अपने दफ़्तरों, कारखानों और स्कूलों में नौकरी करने जाते हैं।

शहर के बहुत से लोग व्यापार करते हैं। इनमें बड़े व्यापारी भी हैं और छोटे दुकानदार भी हैं। कितने ही लोग ऐसे भी हैं जो मज़दूरी करके अपना पेट भरते हैं।

खेती-बाड़ी करनेवालों की संख्या बहुत ही कम है। शहर के कुछ बाहरी हिस्सों में थोड़ी बहुत खेती होती है। यही कारण है कि दिल्लीवालों को अपनी आवश्यकता की बहुतसी वस्तुएँ, जैसे अनाज, दूध, फल, सब्ज़ियाँ आदि आसपास के गाँवों और पड़ोसी राज्यों से मँगवानी पड़ती हैं।

अब तुम जान गए होगे कि दिल्ली में देश के लोग मिल जुलकर रहते हैं। यहाँ पर हमें सभी राज्यों के मिले-जुले जीवन की झलक दिखाई देती है।

दिल्ली शहर वास्तव में एक छोटासा भारत ही है।

अब बताओ

१. दिल्ली शहर में अलग-अलग प्रकार के बहुत से पूजास्थान हैं, जैसे मन्दिर, मास्जिद, गुरुद्वारा और गिरजाघर। ऐसा क्यों है?
२. दिल्ली के रहनेवाले लोग कौन-कौनसे काम-धन्धे करते हैं?
३. दिल्ली शहर में खेती-बाड़ी करनेवालो की संख्या कम क्यों है?
४. खाली स्थान भरो:
   (क) अधिकांश दिल्ली निवासी—बोलते हैं।
   (ख) मद्रास के लोग 'नमस्ते' के लिए—शब्द का प्रयोग करते हैं।
   (ग) मुसलमान लोग—मनाते हैं और ईसाई—मनाते हैं।
   (घ) दिल्ली वाले अपनी आवश्यकता की बहुतसी वस्तुएँ जैसे—, फल,—, दूध आदि बाहर से मंगवाते हैं।
५. हम कैसे कह सकते हैं कि दिल्ली में सारे भारत के मिले जुले जीवन की झलक दिखाई देती है? केवल तीन कारण बताओ।

कुछ करने को

१. भारत के राज्यों के अभिवादन करने के अलग-अलग ढंगों को सीखो।
२. दिल्ली शहर के किसी बाज़ार, पार्क या अन्य स्थान का भ्रमण करने जाओ और लोगों के पहनने के कपड़ों को देखकर उनकी एक सूची बनाओ।

६. कुछ दर्शनीय स्थान

दिल्ली हमारी राजधानी है। यह एक पुराना नगर है और एक नया नगर भी। यहाँ कई ऐसे स्थान हैं जिनको देखने के लिए दूर दूर से लोग आते हैं। अपने देश के कोने-कोने से तो लोग आते ही हैं, बहुत से दूसरे देशों से भी हर साल हज़ारों स्त्री, पुरुष और बच्चे आते है। दिल्ली में रहनेवाले लोग अक्सर छुट्टी के दिन इन दर्शनीय स्थानों को देखने जाते हैं।

एक दिन एक प्राथमिक पाठशाला की तीसरी कक्षा के बच्चे अपने अध्यापक के साथ दिल्ली के कुछ दर्शनीय स्थानों की सैर करने गए। सब बच्चे स्कूल की बस में सवार हुए और प्रातः आठ बजे ही 'राजघाट' जा पहुँचे।

राजघाट दिल्ली का एक प्रमुख दर्शनीय स्थान है। यहाँ महात्मा गाँधी की समाधि है। उनका नाम तो तुमने अवश्य सुना होगा। लोग उन्हें प्यार से 'बापू' कहकर भी पुकारते हैं। उन्होंने हमें आज़ादी दिलाई थी, इसलिए उन्हें हम 'राष्ट्रपिता' कहते हैं।

गाँधी समाधि, राजघाट
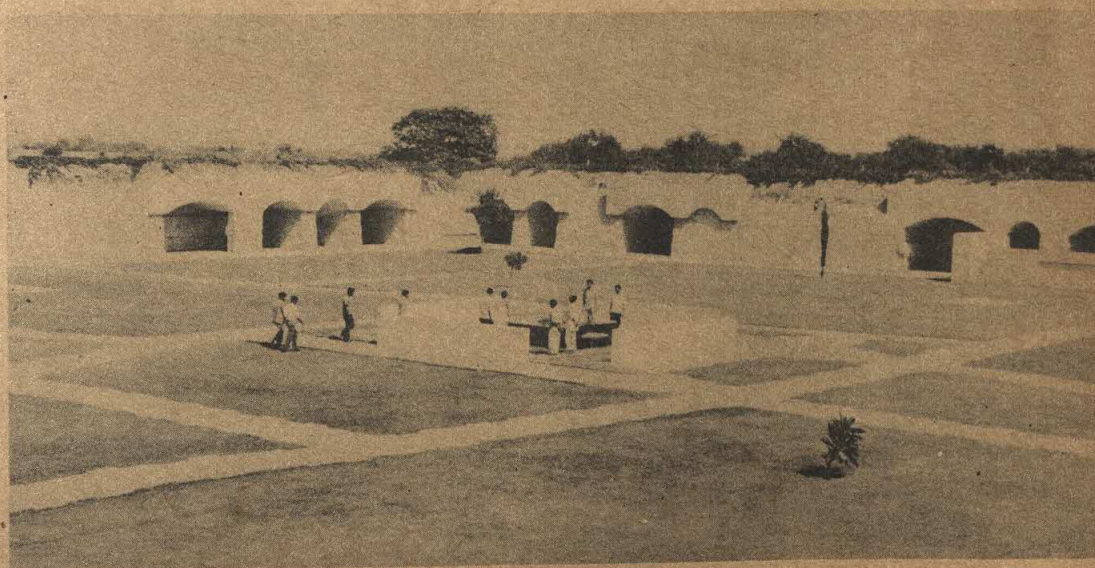
राजघाट पर गाँधीजी की समाधि एक सादे चबूतरे के रूप में बनी हुई है। प्रतिदिन बहुत से लोग यहाँ आते हैं और इस समाधि पर फूल चढ़ाते हैं। भारत-यात्रा पर आनेवाले विदेशों के सभी बड़े नेता और सैलानी राजघाट अवश्य जाते हैं, बापू की समाधि पर फूल चढ़ाते हैं और इस तरह अपना आदर प्रकट करते हैं।

जानते हो समाधि के ऊपर फूलों से क्या लिखा है? 'हे राम'। यही शब्द तो बापू ने ३० जनवरी सन् १९४८ को अपनी मृत्यु के समय कहे थे।

सभी बच्चों ने बापू की समाधि के सामने सिर झुकाया, उस पर फूल चढ़ाए और साथवाले बड़े पार्क की सैर करने के बाद दूसरे स्थान के लिए चल पड़े।

थोड़ी देर में उनकी बस तीन मूर्ति जा पहुँची। तीन मूर्ति का नेहरू 'संग्रहालय' सभी बच्चे देखना चाहते थे। यहाँ हमारे देश के पहले प्रधान मंत्री रहते थे। बच्चे उन्हें प्यार से 'चाचा नेहरू' कहकर पुकारते थे। उनकी मृत्यु के बाद इस स्थान को उनकी याद में नेहरू संग्रहालय बना दिया गया है।

देखो, सैंकड़ों लोग संग्रहालय देखने के लिए आए हुए हैं। कितनी लम्बी लाइन बनी हुई है। भवन में अन्दर जाते ही चाचा नेहरू का बड़ा चित्र दिखाई देता है। ऐसा लगता है कि बच्चों के प्रिय चाचा नेहरू अपने घर में बच्चों का स्वागत कर रहे हैं।

जब जवाहरलाल नेहरू हमारे प्रधान मंत्री थे तो वे १७ वर्ष तक इसी भवन में रहते रहे। इस विशाल भवन में चाचा नेहरू के सोने का कमरा, पढ़ने का कमरा और

नेहरू स्मारक संग्रहालय, तीन मूर्ति

स्व० जवाहर लाल नेहरू

अन्य कई कमरे आज भी उसी अवस्था में हैं, जिस अवस्था में उस समय थे। कई कमरों में नेहरूजी के बहुतसे चित्र लगे हैं और उनको विदेशों से मिले हुए उपहार, आदि सजे हुए हैं। भवन के पीछे की ओर जवाहर-ज्योति हर समय जलती रहती है। संग्रहालय की एक-एक चीज़ हमें चाचा नेहरू की याद दिलाती है।

नेहरू संग्रहालय देखने के बाद बच्चों की बस बुद्ध पार्क जा पहुँची।

बुद्ध पार्क एक बहुत बड़ा पार्क है। इसे बुद्ध-विहार भी कहते हैं। यह शहर के पश्चिमी भाग की पहाड़ी पर बनाया गया है। इसमें हरी-हरी कोमल घास के कई छोटे और बड़े मैदान है। सैंकड़ों प्रकार के पेड़-पौधे और फूल लगे हुए हैं। पानी की एक छोटीसी नहर इस पार्क के बीचोंबीच बहती है। प्रतिदिन लोग सैर-सपाटे के लिए यहाँ आते हैं। छुट्टी के दिन तो यहाँ बड़ी भीड़ रहती है।

आज भी यहाँ बहुतसे लोग पिकनिक करने और घूमने आए हैं। इनमें बहुत से तुम्हारी तरह स्कूलों के विद्यार्थी हैं। कुछ लोग छायादार पेड़ों के नीचे बैठे कैरम खेल रहे हैं और कुछ आराम कर रहे हैं। कुछ तो एक साथ बैठकर भोजन कर रहे हैं। कुछ लोग पार्क में इधर-उधर घूम रहे हैं और रंग-बिरंगे सुन्दर फूलों और पेड़-पौधों का आनन्द ले रहे हैं। कैसी अनोखी बहार है। बुद्धपार्क की सैर करने के

बाद बच्चे चिड़ियाघर जाने के लिए बड़े उतावले हो रहे थे। थोड़ी देर में उनकी बस चिड़ियाघर जा पहुँची।

दिल्ली का चिड़ियाघर पुराने किले के पास है। इसमें अन्दर जाने के लिए २० पैसे का टिकट लगता है। बच्चे आधे टिकट पर अन्दर जा सकते हैं। बच्चों ने टिकट लिए और अन्दर चले गए।

उन्होंने देखा कि चिड़ियाघर के एक भाग में पक्षियों के बाड़े हैं। बड़े-बड़े कटघरों में बन्द यहाँ पर अनेक प्रकार के रंग-बिरंगे पक्षी चहचहा रहे हैं। इनमें से कुछ के नाम तो तुम भी अवश्य जानते होगे, जैसे तोता, मैना, कौवा, मोर, बुलबुल, नीलकंठ, तीतर, उल्लू आदि। यहाँ पर मीठी बोली बोलने वाली कोयलें भी हैं और काँव-काँव करते कौवे भी। तुमने काले रंग के ही कौवे देखे होंगे, यहाँ पर सफ़ेद रंग के कौवे भी हैं। सड़क के एक ओर लगे हुए

पिंजरों में तरह-तरह के रंग-बिरंगे तोते हैं। सभी पक्षियों के लिए जगह-जगह पर दाना रखा हुआ है और पीने का पानी भी है।

पानी के पक्षियों के लिए यहाँ एक बनावटी झील है। तुम देखते हो इस झील में कई प्रकार के पक्षी हैं, जैसे सारस, बगुला, पन-कौवा, लगलग, जलमुर्गी आदि। ये पानी में से ढूँढ-ढूँढ कर मछलियाँ खा रहे हैं।

पास ही यहाँ पर पशुओं के बाड़े हैं। इनमें हिरन, खरगोश, बारह-सिंघा, बन्दर, लंगूर आदि बहुत से पशु अलग-अलग रखे गए हैं। कई कटघरों में बिल्लियाँ हैं। देखो, यह सुनहरे रंग की बिल्ली कितनी सुन्दर लगती है। ये सब पशु भारत के अलग-अलग भागों में पाए जाते हैं।

यह लम्बी गर्दनवाला हिरन जैसा पशु 'कंगारू' है। इसके अगले पाँव छोटे और पिछले पाँव बड़े हैं। इसका मुँह कितना छोटासा है और सींग तो हैं ही नहीं। यह पशु भारत में नहीं होता। यह आस्ट्रेलिया में पाया जाता है।

अब हम शेर, चीता आदि जंगली जानवरों के रहने के स्थान पर आ गए हैं। इनके बाड़े पत्थर की दीवारों और लोहे के मज़बूत सींखचों से बनाए गए हैं। सभी शेर और चीते बड़े-बड़े कटघरों में बन्द हैं। देखो, चीता कितनी तेज़ी से इधर-उधर

टहल रहा है। इसके साथवाले कटघरे में एक सफेद रंग की मादा चीता और उसके बच्चे बैठे हुए है। इनके शरीर पर ये काली धारियाँ कितनी सुन्दर लग रही हैं। मादा चीता अपने बच्चों को प्यार से चाट रही है। बच्चे अपनी माँ के शरीर पर चढ़-चढ़कर खेल रहे हैं। ऐसे सफेद चीते केवल मध्य प्रदेश के रीवा के जंगलों में ही पाए जाते हैं। इनको चिड़ियाघर के लिए विशेष रूप से लाया गया है।

अब ज़रा शेरों की ओर भी देखो। कितनी ज़ोर-ज़ोर से दहाड़ रहे हैं! इनके कटघरों में पानी और कच्चा मांस रखा हुआ है। यही इन जानवरों का भोजन है।

पास ही रीछों के रहने का स्थान है। तुमने काले भालू का खेल कभी न कभी अवश्य देखा होगा। हमारे देश में काले रंग के भालू बहुत होते हैं। यहाँ पर एक सफेद रंग का भालू भी है। यह भालू रूस से मंगवाया गया है। इसे हमारे देश की गर्मी में बड़ा कष्ट होता है। इसीलिए इसके रहने के स्थान को बर्फ से ठंडा किया जाता हैं। गर्मियों में इसे किसी ठंडे स्थान पर भेज देते हैं।

यह बन्दर जैसी सूरत का काले रंग का पशु 'चिम्पांज़ी' है। चिम्पांज़ी अफ्रीका के जंगलों में पाया जाता है। इसकी पूँछ नहीं होती, और यह आदमी की तरह कई काम कर सकता है। यह बड़ा समझदार होता है। देखो, वह ताली बजा रहा है।

चलो अब हाथियों को देखें। कितने बड़े डील-डौल का जानवर होता है हाथी! कुछ बच्चे हाथी पर सवारी कर रहे हैं। वे कितने खुश दिखाई दे रहे हैं।

अरे, यह इतना बड़ा भैंसे जैसा कौन जानवर है? यह तो कीचड़ और पानी में लिपटा हुआ है। इसे गैंडा कहते हैं। गैंडा बड़ा खतरनाक जानवर होता है। इसे हमारे असम राज्य के जंगलों से लाया गया है। इसके पास ही मगर-मछ का बाड़ा है। इसके बाड़े में पानी से भरा तालाब है।

चिड़ियाघर की सैर करने के बाद बच्चों ने एक स्थान पर कुछ आराम किया और फिर बस में बैठकर बाल भवन जा पहुँचे।
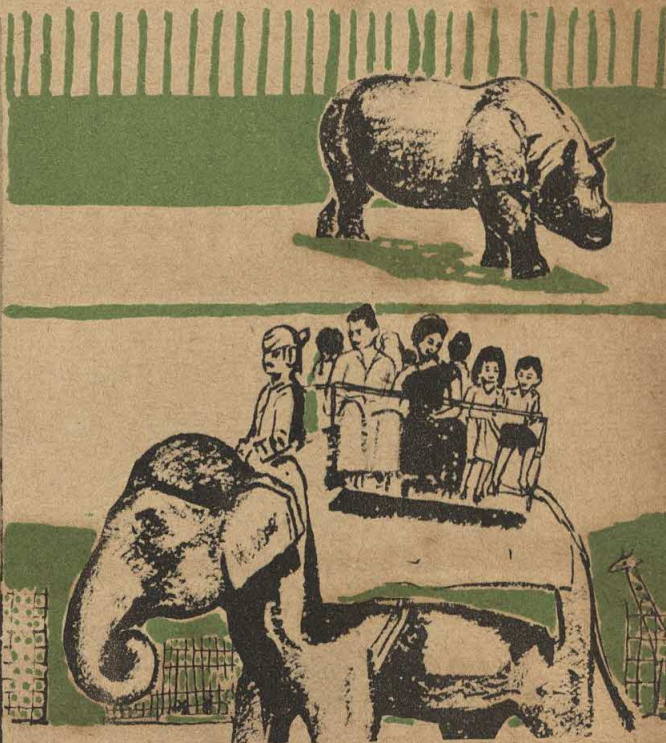
खेल गाँव स्टेशन पर बच्चों की रेल

बालभवन के नाम से ही मालूम हो जाता है कि यह स्थान बालकों के लिए है। दिल्ली के बहुत से बालक-बालिकाएँ बालभवन में जाते हैं।

बालभवन में बच्चों के लिए तरह-तरह के खेलों और क्रियाओं का प्रबन्ध है। वे अपनी पसन्द के अनुसार गाने, बजाने, नाचने, चित्रकारी तथा हाथ के भिन्न-भिन्न कामों में भाग ले सकते हैं। यहाँ पर बच्चों का एक संग्रहालय भी है, जिसमें बच्चों की बनाई गई वस्तुएँ रखी जाती है।

और देखो, यह है बालभवन का सबसे रोचक स्थान खेलगाँव रेलवे स्टेशन। टिकट बाँटने से लेकर रेल चलाने तक इस रेलवे स्टेशन का सारा प्रबन्ध बच्चे ही करते हैं। यह खड़ी है बच्चों की रेल। सब बच्चे टिकट लेकर रेल में बैठ गए हैं। गार्ड ने हरी झंडी दिखाई और रेल सीटी देकर चल पड़ी। रास्ते में बच्चों की रेल एक पुल के नीचे से और एक सुरंग के बीच में से गुज़री।

थोड़ी देर के बाद बच्चों की रेल वापस खेलगाँव स्टेशन पर आ गई। बालभवन की सैर और रेल की सवारी करके सभी बच्चे बहुत खुश थे।

अब बताओ

१. राजघाट क्यों प्रसिद्ध है ?
२. नेहरू संग्रहालय किसकी याद में बनाया गया है ?
३. बुद्ध पार्क कहाँ बनाया गया है ? इस पार्क में लोग किसलिए जाते हैं ?
४. क्या तुम बालभवन जाना चाहोगे ? क्यों ?
५. नीचे चिड़ियाघर के कुछ पशुओं के नाम दिए गए हैं। इनके आगे सोचकर लिखो कि यह पशु हमारे देश के हैं या विदेश से लाए गए हैं :

पशु	देशी या विदेशी
(क) हाथी	
(ख) कंगारू	
(ग) सफेद चीता	
(घ) चिम्पांज़ी	
(ङ) शेर	
(च) गेंडा	

कुछ करने को

१. अपने अध्यापक या माता-पिता के साथ दिल्ली के कुछ प्रसिद्ध दर्शनीय स्थानों की सैर करो और उनके चित्र एकत्र करके अपनी कापी में चिपकाओ।
२. चिड़ियाघर में पट्टियों पर पशुओं के नाम और स्थान लिखे रहते हैं। इसकी सहायता से भारत में पाए जानेवाले और विदेशों से आए जानवरों के नामों की अलग अलग सूची बनाओ।

७. दिल्ली के कुछ स्मारक

तुम पढ़ चुके हो कि दिल्ली हमारे देश का एक बहुत पुराना नगर है। पाण्डवों के समय से लेकर आज तक यह नगर कितने ही राजाओं की राजधानी रहा है। यहाँ बहुतसे राजा और बादशाह तो हुए ही हैं, कई बड़े प्रसिद्ध साधु-सन्त और फकीर भी हुए हैं। यदि तुम कभी दिल्ली नगर और उसके आसपास की सैर करो तो यहाँ तुम्हें पुराने समय के कई किले और मीनारें, मन्दिर और मस्जिद, दरगाह और मकबरे देखने को मिलेंगे। शायद ऐसे कुछ स्मारक तुमने देखे भी होंगे और तुम इनके बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करना अवश्य पसन्द करोगे।

आओ, दिल्ली के कुछ प्रसिद्ध स्मारकों की सैर करें। सबसे पहले हम कुतुब मीनार चलेंगे। इसे कुतुब की लाट भी कहते हैं। जानते हो कितनी ऊँची है यह मीनार? लगभग ७३ मीटर। तुम इसे बहुत दूर से देख सकते हो। इसके पास खड़े होकर इसकी चोटी की तरफ देखो तो तुम्हारी टोपी सिर से गिर जाएगी। इसकी पाँच मंज़िलें हैं।

कुतुब मीनार के ऊपर चढ़ने के लिए घुमावदार सीढ़ियाँ हैं। सबसे ऊँची मंज़िल पर पहुँचने के लिए लगभग ३७८ सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। हर मंज़िल पर बाहर की ओर सुन्दर छज्जे बने हुए हैं। इन छज्जों पर खड़े होकर दूर-दूर का दृश्य दिखाई देता है। मीनार के ऊपर से तो बहुत दूर तक दिल्ली नगर का दृश्य देखा जा सकता है।

कुतुब मीनार संसार की एक अनोखी इमारत है। देश-विदेश से बहुतसे स्त्री, पुरुष और बच्चे इसे देखने आते हैं। इसे आज से लगभग आठ सौ वर्ष पहले दिल्ली के एक बादशाह कुतुबुद्दीन ने बनवाया था।
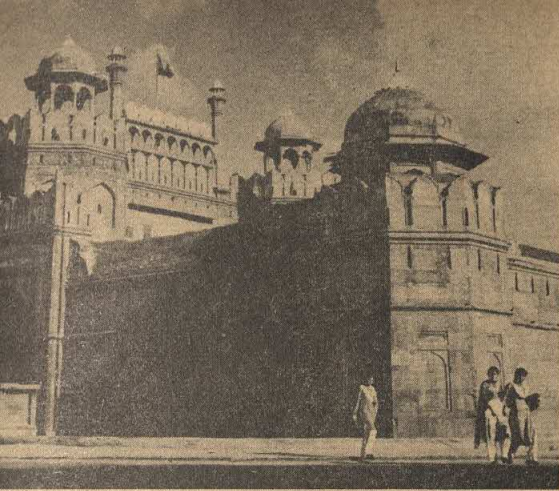
लाल किला
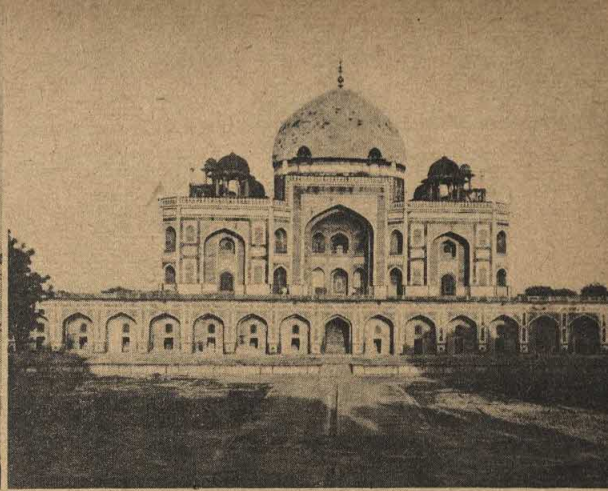
हुमायूँ का मकबरा

आओ, अब लाल किले चलें। तुम में से बहुतसे बच्चों ने लाल किला देखा होगा। हमारे प्रधान मंत्री प्रति वर्ष स्वन्त्रता दिवस पर इसी लाल किले पर झंडा फहराते हैं। यह किला यमुना नदी के दाएँ किनारे पर आज से लगभग तीन सौ वर्ष पहले शाहजहाँ ने बनवाया था। जैसा कि इसके नाम से पता चलता है, लाल किला गहरे लाल रंग के पत्थर का बना हुआ है। इसकी बाहरी दीवार के साथ-साथ एक चौड़ी खाई है। दीवार के ऊपर बड़े सुन्दर कंगूरे बनाए गए हैं।

लाल किले के दो बड़े दरवाज़े हैं, लाहौरी दरवाज़ा और दिल्ली दरवाज़ा। आजकल किले के अन्दर लाहौरी दरवाज़े से जाते हैं।

किले के अन्दर जाते ही तुम्हें बहुतसी बड़ी-बड़ी इमारतें दिखाई देंगी। सबसे पहले दीवान-ए-आम की विशाल इमारत है। इस स्थान पर बादशाह शाहजहाँ अपना खुला दरबार किया करता था।

एक और इमारत 'दीवान-ए-ख़ास' है। यह इमारत सफेद पत्थर की बनी हुई है। लाल किले के अन्दर बनी इमारतों में यह सबसे सुन्दर है। इसकी छत में और दीवारों पर जड़े हुए हीरे जवाहरात के स्थान आज भी देखे जा सकते हैं। इसी में बादशाह का विशेष दरबार लगता था और सामने की ओर वह तख्त-ए-ताऊस पर बैठता था। तख्त-ए-ताऊस मोर की शक्ल का एक सिहाँसन था जिसमें हीरे-जवाहरात जड़े हुए थे।

दीवान-ए-आम के पास ही रंग महल है। यह महल बहुत बड़ा है। पहले इसके सामने एक सुन्दर बाग था। किले में कई छोटे छोटे तालाब और नहरें थीं। इनमें बहता हुआ पानी रंग महल में आया करता था।

लाल किले में एक संग्रहालय भी है। इसमें मुगल बादशाहों के समय के हथियार, तस्वीरें, शाही पोशाकें, सिक्के और ऐसी ही बहुत सी वस्तुएँ रखी गई हैं। इनसे हमें उस समय के लोगों के रहन-सहन के बारे में बहुतसी बातों का पता चलता है।

अब हम तुम्हें एक ऐसे स्मारक पर ले चलेंगे, जहाँ से कुतुब मीनार और लाल किला, दोनों का दृश्य दिखाई देता है। वह स्मारक है हुमायूँ का मकबरा ।

यह मकबरा दिल्ली के चिड़ियाघर से थोड़ी दूरी पर है। जानते हो मकबरे का अर्थ क्या होता है? किसी व्यक्ति के मरने के बाद उसकी कब्र पर बनी हुई इमारत को मकबरा कहते है। यह मकबरा मुगल बादशाह हुमायूँ की मृत्यु के बाद उसकी बेगम ने बनवाया था। इस मकबरे में बादशाह हुमायूँ और शाही परिवार के बहुत से लोगों की कबरें हैं।

तुम देख सकते हो कि हुमायूँ का मकबरा ऊँचे स्थान पर एक बड़े बगीचे के अन्दर है। इसके दो दरवाज़े हैं जिनसे तुम अन्दर जा सकते हो। चारों कोनों पर अठकोने मंडप बने हैं। मकबरे की इमारत लाल पत्थर की बनी हुई है, लेकिन बड़ा गुंबद सफेद पत्थर से बनाया गया है। गुंबद के ऊपर एक छोटासा कलश भी है।

यदि तुम मकबरे की दीवारों को ध्यान से देखोगे तो तुम्हें लगेगा कि दीवारों पर किसी प्रकार की खुदाई की गई है, लेकिन ऐसा नहीं है। इसकी दीवारों पर सफेद पत्थर की सुन्दर पच्चीकारी की गई है। बनावट और कारीगरी को देखते हुए हुमायूँ का मकबरा बहुत सुन्दर इमारतों में गिना जाता है।

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया
के 'उर्स' का एक दृश्य

हुमायूँ के मकबरे के निकट ही हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह है। निज़ामुद्दीन औलिया दिल्ली के एक बहुत प्रसिद्ध सन्त हुए हैं। हज़ारों हिन्दू मुसलमान इनके चेले थे। उस समय के कई बादशाह भी उनको मानते थे। आज भी बहुतसे लोग उनके उपदेशों का आदर करते हैं। उनकी दरगाह के आसपास की बस्ती का तो नाम ही निज़ामुद्दीन पड़ गया है।

दरगाह की छोटीसी इमारत है, जो सफेद पत्थर की बनी हुई है। इसके पास ही एक चबूतरा है, जिसे यारों का चबूतरा कहते हैं। हज़रत निजामुद्दीन इसी चबूतरे पर बैठकर अपने शिष्यों को उपदेश दिया करते थे। आज भी यहाँ वर्ष में एक बार एक बड़ा मेला लगता है। इसे हज़रत निजामुद्दीन का उर्स कहते हैं। यह उर्स तीन दिन तक चलता है और लोग दूर-दूर से आकर इसमें भाग लेते हैं। इस उर्स में रातभर भजन और गाने होते हैं। इसमें हिन्दू और मुसलमान सभी शामिल होते हैं।

अब बताओ

१. लोग कुतुबमीनार देखने क्यों जाते हैं?

२. लाल किला किसने बनवाया था? उस किले की कुछ इमारतों के नाम बताओ।

३. मकबरा किसे कहते है? हुमायूँ के मकबरे की बनावट में क्या विशेषता है?

४. हज़रत निज़ामुद्दीन कौन थे? उनकी दरगाह पर लगनेवाले उर्स में क्या होता है?

५. खाली स्थान भरो:

(क) कुतुबमीनार की ऊँचाई लगभग —— मीटर है।

(ख) ——एक मोर की शक्ल का सिंहासन था जिसमें हीरे जड़े थे।

(ग) हज़रत निज़ामुद्दीन की दरगाह के पास एक चबूतरा है जिसे —— कहते है।

(घ) बादशाह शाहजहाँ —— में अपना खुला दरबार किया करता था।

कुछ करने को

१. दिल्ली के कुछ प्रसिद्ध स्मारकों को देखने जाओ।

२. शाहजहाँ की बनवाई हुई इमारतों की सूची तैयार करो।

८. बड़े-बड़े बाज़ार और व्यापारिक केन्द्र

आज नवीन और कमल दादाजी के साथ बाज़ार की सैर करने जा रहे हैं।

अभी वे कुछ ही दूर गए थे कि एक गली आ गई। इस गली में कुछ दुकानें थीं। दुकानदार अपनी-अपनी दुकानों पर बैठे थे और वस्तुएँ बेच रहे थे। नवीन ने पूछा, "दादाजी, यह कौनसा बाज़ार है?"

दादाजी बोले, "बेटा, इस बाज़ार का कोई विशेष नाम नहीं है। यह इस बस्ती का बाज़ार है। यहाँ के रहनेवाले रोज़ काम में आनेवाली चीज़े इसी बाज़ार से मोल लेते हैं।"

कमल पूछने लगा, "रोज़ काम में आनेवाली चीज़े क्या होती हैं?"

दादाजी कुछ कहने ही वाले थे कि नवीन बोल उठा, "जैसे आटा, चावल, घी, दूध, सब्ज़ी, मिठाई, तेल, साबुन आदि।"

"शाबाश, तुमने ठीक कहा," दादाजी बोले। "ये चीज़े हमें रोज़ ही चाहिएँ। हम ऐसी वस्तुएँ बाज़ारों से लेते हैं। इसीलिए प्रत्येक बस्ती में एक बाज़ार होता है, जहाँ से हमें ये चीज़े मिल सकती हैं।"

"लेकिन, दादाजी, बाज़ारों में बिकनेवाली इतनी सारी वस्तुएँ आती कहाँ से हैं?" नवीन ने पूछा।

दादाजी ने कमल की ओर इशारा किया। वह पहले तो चुप रहा, फिर कुछ सोचकर बोला, "कुछ वस्तुएँ तो खेतों में पैदा होती हैं, जैसे गेहूँ, चावल, दाल, सब्ज़ी और फल।"

दादाजी मुस्कराए और बोले, "तुमने बिल्कुल ठीक कहा। बाज़ारों में बिकनेवाली बहुतसी वस्तुएँ खेतों में पैदा होती हैं। ऐसी सभी वस्तुएँ आस-पास या दूर के गाँवों से आती है। इसके अलावा हाथ और मशीनों से बनी हुई बहुतसी वस्तुएँ भी बाज़ारों में बिकती हैं।"

नवीन और कमल दादाजी की बातें बड़े ध्यान से सुन रहे थे। थोड़ी दूर चलकर वे सब एक चौड़ी सड़क पर आ निकले।

दादाजी ने बताया, "यह चाँदनी चौक है।"

उन्होंने देखा कि चाँदनी चौक एक बहुत बड़ा और चौड़ा बाज़ार है। दोनों ओर बहुत बड़ी-बड़ी दुकानें हैं। चारों ओर भीड़ है। बहुतसे लोग दुकानों से ज़रूरत की चीज़ें खरीद रहे हैं। हज़ारों स्त्री, पुरुष और बच्चे बाज़ार में इधर से उधर आ-जा रहे हैं। बहुत से लोग ताँगों, रिक्शों और साइकिलों पर जा रहे हैं।

चाँदनी चौक में फतहपुरी के पास भीड़ का एक दृश्य
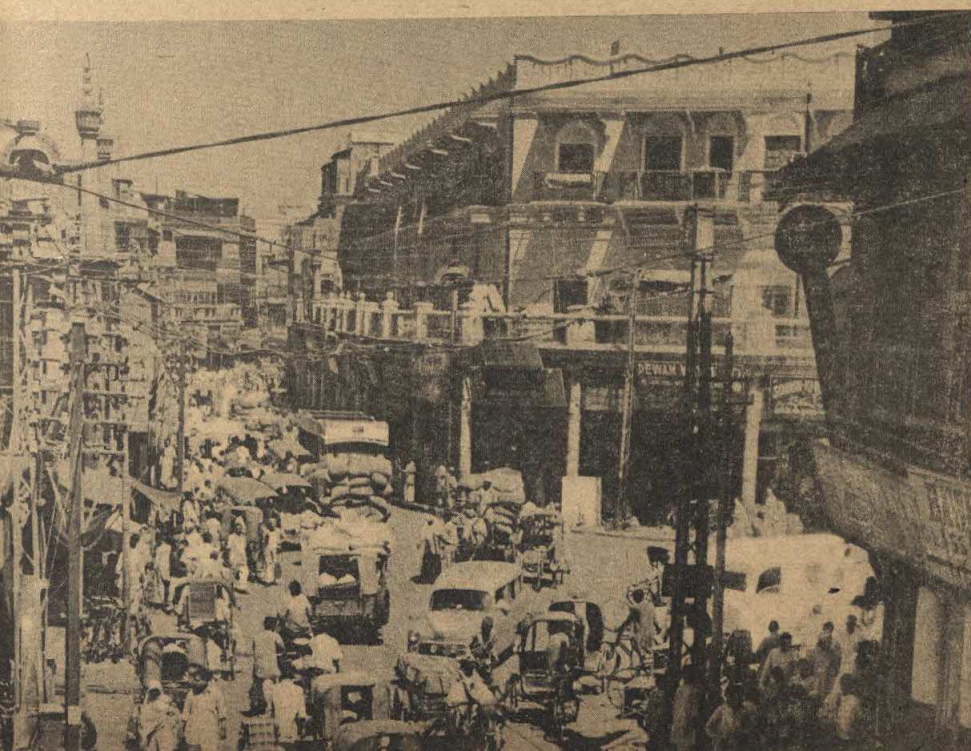
दादाजी ने बताया, "चाँदनी चौक दिल्ली का बहुत पुराना और प्रसिद्ध बाज़ार है। यह लाल किले से लेकर फतहपुरी तक फैला हुआ है। इस बाज़ार में सैंकड़ों दुकानें हैं, बहुतसे जलपान-गृह, सिनेमाघर, बैंक और दफ़्तर हैं। यहाँ की दुकानों पर ऊनी, सूती व रेशमी कपड़े, बिसारत का सामान, सोने चाँदी के गहने, घड़ियाँ और दवाईयाँ बिकती हैं।"

यहाँ पर वस्तुएँ थोक में भी बिकती हैं और फुटकर में भी। प्रतिदिन लाखों रुपये का व्यापार होता है। तुम यदि किसी दुकान के सामने ज़रा रुको तो देखोगे कि दुकानदार अपने ग्राहकों को बड़ी फुर्ती से अपना सामान दिखाता है और फिर सामान को सफाई से बाँधकर देता है। सामान की कीमत का हिसाब तो वह बातों-बातों में लगा देता है।

कुछ और आगे चले तो दादाजी ने कहा, "दिल्ली में कई और भी बड़े बाज़ार हैं, लेकिन वे सब इतने बड़े नहीं हैं। चाँदनी चौक तो दूर-दूर तक प्रसिद्ध है। आसपास के गाँवों, शहरों और पड़ोसी राज्यों के लोग यहाँ सामान खरीदने आते हैं।"

नवीन ने कहा, "दादाजी, कनाट प्लेस भी तो दिल्ली का एक बहुत बड़ा बाज़ार हैं?"

"हाँ," दादाजी बोले। "चाँदनी चौक की भाँति कनाट प्लेस भी एक बहुत बड़ा बाज़ार है, लेकिन यह बाज़ार चाँदनी चौक से भिन्न है। यह नए ढंग का बना हुआ है। यहाँ दो बड़ी सड़कें दो बड़े गोल दायरों में बनी हुई हैं। एक भीतरी दायरा है और दूसरा बाहरी दायरा। सभी इमारतें और दुकानें इन दोनों दायरों के बीच में और बाहर की ओर बनी हुई हैं। दुकानें बहुत खुली-खुली और बड़ी-बड़ी हैं। सब दुकानों के सामने चौड़े-चौड़े बरामदे हैं। सड़कें भी चौड़ी-चौड़ी हैं। स्थान-स्थान पर घास के मैदान और पार्क हैं। मोटरें, स्कूटर और साइकिलें रखने के लिए अलग-अलग स्थान हैं।"

कमल ने पूछा, "दादाजी, कनाट प्लेस की दुकानों पर क्या-क्या चीज़ें बिकती हैं?"

दादाजी ने उत्तर दिया, "बेटे, कनाट प्लेस में सैंकड़ों दुकानें हैं जिनमें हर

प्रकार की चीज़ें बिकती हैं। चाँदनी चौक की तरह यहाँ पर फुटकर और थोक, दोनों प्रकार का व्यापार होता है। यहाँ दूसरे राज्यों के व्यापारी भी आते हैं और वस्तुएँ खरीदकर अपने यहाँ बेचने के लिए ले जाते हैं। कुछ व्यापारी ऐसे भी हैं जो विदेशों से वस्तुएँ मंगवाते हैं और अपने देश की वस्तुएँ विदेशों को भेजते हैं।"

दादाजी ने आगे बताया, "कनाट प्लेस में शाम को बड़ी रौनक होती है। यहाँ बहुत से लोग घूमने आते हैं। इनमें विदेशी भी होते हैं। यहाँ पर बहुंत से होटल, जलपानगृह और सिनेमाघर हैं, जिनमें हर ममय भीड़ लगी रहती है। यहाँ के सुपर बाज़ार में तो एक ही स्थान पर बहुत तरह की चीज़ें बिकती हैं।"

बातों ही बातों में दरीबाकलाँ का बड़ा बाज़ार आ गया। इस बाज़ार में बड़ी चहल-पहल थी। दुकानों में बिजली की तेज़ रोशनी हो रही थी। अलमारियों में सोने-चाँदी के गहने सजे हुए थे। बहुत से स्त्री-पुरुष सोने-चाँदी के गहने मोल ले रहे थे।

नवीन ने पूछा, "दादाजी, इस बाज़ार में और क्या-क्या वस्तुएँ बिकती हैं?"

दादाजी बोले, "बेटे, तुम देख रहे हो, इस बाज़ार में बहुतसी दुकानें सोने-चाँदी के गहनों की हैं और इन्हीं के लिए यह बाज़ार प्रसिद्ध है। दिल्ली में ऐसे कई बाज़ार हैं जो कुछ विशेष प्रकार की चीज़ों के लिए प्रसिद्ध हैं। सब्ज़ी मंडी इनमें मे एक है। यहाँ पर हर प्रकार की सबज़ियाँ और फल थोक में बिकत है। नगर की बस्तियों और आसपास के गाँवों और शहरों के छोटे दुकानदार इन विशष बाज़ारों से थोक में वस्तुएँ मोल ले जाते हैं और बेचते हैं। सभी बड़े नगरों में इस प्रकार के थोक बाज़ार और मंडियाँ होती हैं।"

कनाट सर्कस में पंत सुपर बाज़ार का एक बाहरी दृश्य

शाम होनेवाली थी। नवीन और कमल अपने दादाजी के साथ घर की ओर लौट पड़े। आज उन्हें मालूम हो गया कि दिल्ली में छोटे-बड़े बहुतसे बाज़ार हैं, जहाँ पर अनेक प्रकार की वस्तुओं का फुटकर और थोक व्यापार होता है। दिल्ली व्यापार का एक बड़ा केन्द्र है।

अब बताओ

१. बाज़ार हमारे लिए क्यों आवश्यक हैं?
२. रोज़ काम में आनेवाली दस वस्तुओं के नाम बताओ।
३. बाज़ारों में बिकनेवाली वस्तुएँ कहाँ से आती हैं?
४. हम यह कैसे कह सकते हैं कि दिल्ली व्यापार का एक बड़ा केन्द्र है?
५. नीचे दिल्ली के कुछ बाज़ारों के नाम दिए गए हैं। उनके सामने उन वस्तुओं के नाम लिखो जिनके लिए वे प्रसिद्ध हैं।

(क) चाँदनी चौक ——
(ख) दरीबाकलाँ ——
(ग) सब्ज़ी मंडी ——
(घ) सदर बाज़ार ——

कुछ करने को

१. अपने माता-पिता के साथ दिल्ली नगर के प्रसिद्ध बाज़ारों को देखने जाओ।
२. दिल्ली के उन बाज़ारों की सूची बनाओ जो तुमने देखें हैं।
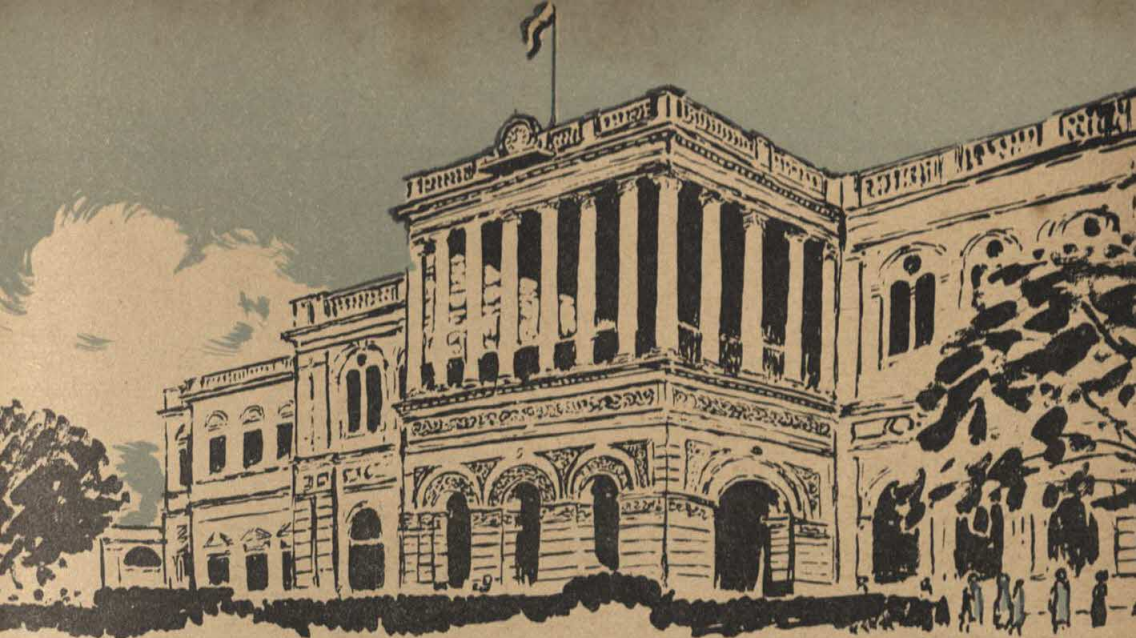
दिल्ली में नागरिक सुविधाएँ

सब लोग अच्छी तरह से रह सकें, इसके लिए हर जगह कुछ सुविधाओं का होना आवश्यक है, जैसे पीने के लिए पानी, घरों और सड़कों पर रोशनी, अच्छी सड़कें, आने-जाने के लिए सवारियाँ, समाचार भेजने के लिए डाक-तार, पढ़ने के लिए स्कूल और रोगियों के लिए अस्पताल। इन्हें हम साधारण नागरिक सुविधाएँ कहते हैं। बड़े शहरों में तो इन सब बातों का अच्छा प्रबन्ध और भी ज़रूरी होता है। वहाँ लाखों लोग रहते हैं। दूर-दूर बस्तियाँ होती हैं। लम्बी-लम्बी सड़कें होती हैं। लोगों को एक जगह से दूसरी जगह काम धन्धे पर जाना होता है। दिल्ली भी एक बहुत बड़ा नगर है। यहाँ पर ये सुविधाएँ न मिलें तो लोगों को बड़ी कठिनाई हो जाए।

तुम इस भाग में दिल्ली की कुछ मुख्य नागरिक सुविधाओं के विषय में पढ़ोगे। इन सुविधाओं के प्रबन्ध में हज़ारों लोग काम करते हैं। वे सब हमारे अच्छे सहायक हैं। हमें भी उनके काम में उनकी सहायता करनी चाहिए।

९. दिल्ली नगरनिगम

तुमने पढ़ा है कि दिल्ली एक बड़ा शहर है। यहाँ दूर-दूर पर बस्तियाँ हैं। लम्बी-लम्बी सड़कें हैं। लाखों लोग रहते हैं। इतने लोगों की और इतने बड़े नगर की बहुतसी छोटी-बड़ी ज़रूरतें होती हैं, जैसे सड़कों, गलियों और नालियों की सफाई, रात को सड़कों पर रोशनी, पीने के लिए पानी, बच्चों के पढ़ने के लिए पाठशालाएँ और रोगियों के लिए अस्पताल। इन सब बातों का कौन प्रबन्ध करता है ?

दिल्ली में ऐसी कई ज़रूरतों का प्रबन्ध दिल्ली नगरनिगम और नई दिल्ली नगरपालिका करती हैं।

दिल्ली नगरनिगम एक बहुत बड़ी समिति है। हर चार साल के बाद दिल्ली में नगरनिगम के चुनाव की धूम होती है। सारे नगर को छोटे-छोटे भागों में बाँटा जाता है। प्रत्येक भाग को 'वार्ड' कहते हैं। हर वार्ड के लोग नगरनिगम के लिए एक सदस्य चुनते हैं। निगम के कुल १०० सदस्य हैं। सब सदस्य मिलकर अपना एक नेता चुनते हैं जिसे महापौर (मेयर) कहते हैं। महापौर नगरनिगम का अध्यक्ष होता है।

दिल्ली नगरनिगम का मुख्य कार्यालय टाऊन हाल में है। यह चाँदनी चौक में है। निगम की बठकें इसी टाऊन हाल में होती हैं।

नगरनिगम हमारे लिए बहुत से काम करता है। तुम अपनी बस्ती में प्रतिदिन सफाई करनेवालों को देखते हो। ये लोग बड़ी-बड़ी झाड़ लिए सारे शहर की गलियों, सड़कों, बाज़ारों और नालियों की सफाई करते हैं। नगर का सारा कूड़ा-करकट पहले हथगाड़ियों में भर कर कुछ स्थानों पर इकट्ठा किया जाता है और फिर उसे ट्रकों में भर कर शहर से दूर फिकवा दिया जाता है। सफाई का काम करनेवाले सभी लोग नगर को साफ-सुथरा रखने में हमारी सहायता करते हैं। वे सब नगरनिगम के सफ़ाई विभाग के कर्मचारी हैं और हमारे अच्छे सहायक हैं।
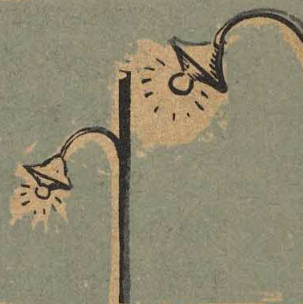
नगरवासियों की सुविधा के लिए निगम ने बहुत से दवाखाने और अस्पताल खोले हैं जहाँ पर रोगियों का इलाज होता है और मुफ़्त दवाएँ मिलती हैं। चेचक, हैज़ा जैसी बीमारियों की रोकथाम के लिए टीके लगाए जाते हैं।

लड़के-लड़कियों की शिक्षा के लिए नगरनिगम ने प्रत्येक बस्ती में स्कूल खोले है। इनमें प्राइमरी और मिडिल स्कूल अधिक हैं। निगम के स्कूलों में कई लाख बच्चे पढ़ते हैं। तुम भी शायद निगम के ही किसी स्कूल में पढ़ते हो।

तुमने अपनी बस्ती या अपने पास-पड़ोस में आग बुझाने का केन्द्र तो देखा होगा। नगर में कहीं पर आग लग जाए तो दम-कल केन्द्र को टेलीफोने कर दो। आग बुझाने की गाड़ियाँ खतरे की घंटी बजाती हुई थोड़ी देर में वहाँ पहुँच जाएँगी और आग बुझानेवाले शीघ्र ही आग बुझा देंगे।

तुम्हारे घरों और सड़कों पर रोशनी और पीने के पानी का प्रबन्ध भी नगर-निगम के हाथों में है। दिल्ली की सड़कों पर चलनेवाली दिल्ली परिवहन की बसें तुम प्रतिदिन देखते हो। यह बसें भी नगरनिगम द्वारा ही चलाई जाती हैं।

तुमने देखा कि नगरनिगम दिल्ली वालों के लिए बहुत सी सुविधाएँ देता है। इन सभी कामों पर बहुत अधिक धन खर्च होता है। क्या तुम जानते हो कि नगरनिगम के पास इतना धन कहाँ से आता है?

नगरनिगम दिल्ली में रहने वालों पर कई प्रकार के कर लगाता है, जैसे चुंगी कर, साइकिल कर, ताँगा कर, मकान कर आदि। बिजली और पानी के विभागों से भी निगम को आय होती है। दिल्ली परिवहन की बसों से भी काफी धन प्राप्त होता है।

नगरनिगम को जनता चुनती है और यह जनता के लिए ही काम करता है। यह किसी न किसी रूप में जनता से ही धन प्राप्त करता है और इसे जनता की भलाई और आराम के लिए खर्च कर देता है।

नगरनिगम की तरह नई दिल्ली में 'नई दिल्ली नगरपालिका' है। इसके अधीन नई दिल्ली का थोड़ासा भाग है, जिसमें राष्ट्रपतिभवन, संसदभवन, केन्द्रीय सचिवालय, केन्द्रीय मंत्रियों के निवासस्थान, विदेशी दूतावास और केन्द्रीय सरकार के

कर्मचारियों की कुछ बस्तियाँ शामिल हैं। इसका मुख्य कार्यालय कनाट प्लेस के पास है।

नगरनिगम की तरह नई दिल्ली नगरपालिका भी अपने क्षेत्र में रहनेवालों को बहुतसी नागरिक सुविधाएँ देती है।

अब बताओ

१. दिल्ली नगर-निगम हमारे लिए क्या-क्या कार्य करता है?
२. महापौर किसे कहते हैं? दिल्ली नगरनिगम के वर्तमान महापौर का नाम मालूम करो।
३. नगरनिगम की आय के क्या-क्या साधन हैं?
४. नई दिल्ली नगरपालिका के अधिकार में जो क्षेत्र हैं, उनमें से चार के नाम बताओ।
५. यदि नगरनिगम द्वारा दी गई सुविधाएँ न मिलें तो दिल्लीवालों के सामने क्या-क्या कठिनाइयाँ आएँगी?

कुछ करने को

१. अपने वार्ड के नगरनिगम के सदस्य को अपनी कक्षा में आने का निमन्त्रण दो और उनसे निगम के बारे में जानकारी प्राप्त करो।
२. अपनी कक्षा में नगरनिगम की बैठक का अभिनय करो और कक्षा के कमरे की सफाई का कार्यक्रम बनाओ।

१०. दिल्ली में पानी का प्रबन्ध

तुम जानते ही हो कि हम पानी के बिना जीवित नहीं रह सकते। सभी मनुष्यों, जानवरों और पेड़-पौधों को पानी की आवश्यकता होती है।

घरों में पीने के लिए, नहाने-धोने और बर्तन साफ करने के लिए पानी काम में लाया जाता है। बगीचे के पेड़-पौधे पानी के बिना मुरझा जाते हैं। खेती की उपज के लिए पानी ज़रूरी है। आग बुझाने के लिए भी अक्सर पानी डालना पड़ता है।

ज़रा सोचो तो, यदि ज़रूरत के समय पानी न मिले तो क्या हो? कितनी आवश्यक वस्तु है पानी!

यह पानी हमें कहाँ से मिलता है?

गाँवों और छोटे शहरों के रहने वाले कुओं, तालाबों, झीलों अथवा नदियों से पानी प्राप्त करते हैं। तुम्हारे घर में यह पानी शायद नल से आता है। क्या तुम जानते हो कि इस नल में पानी कहाँ से आता है?
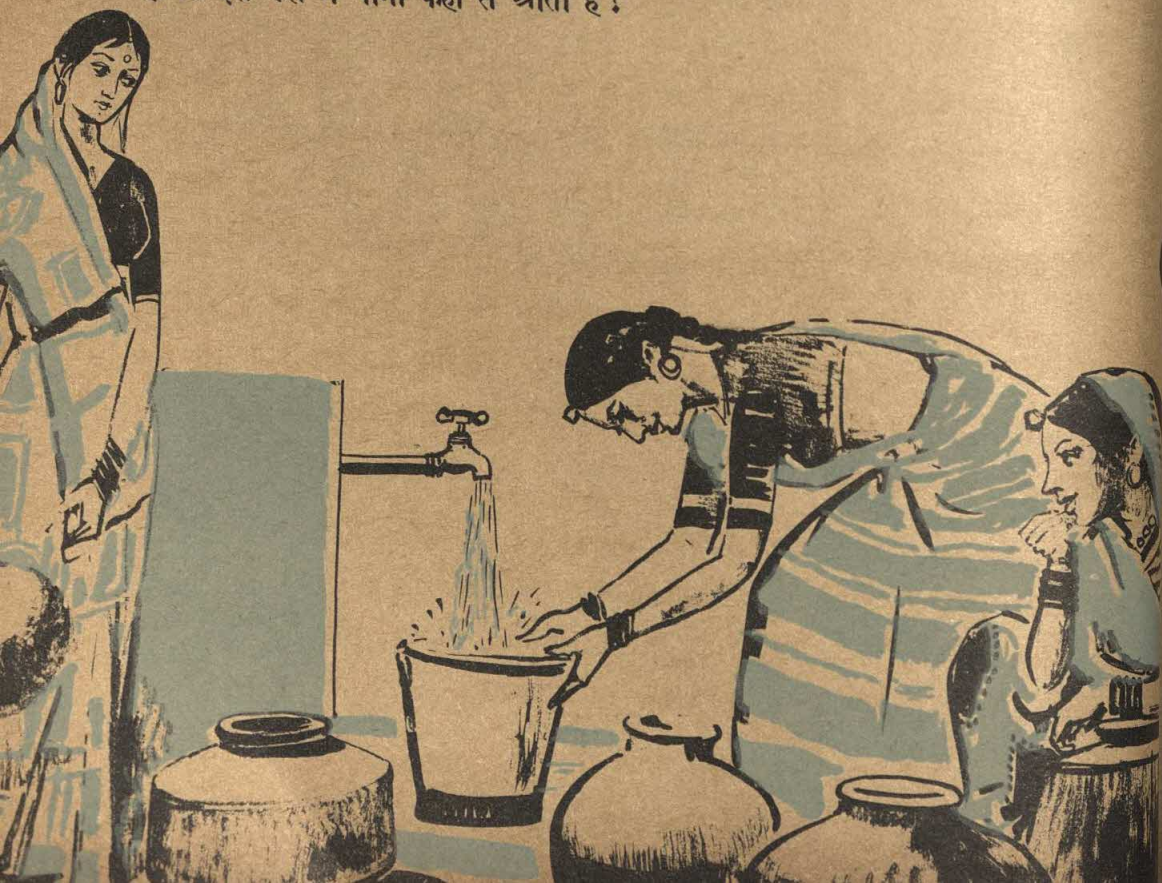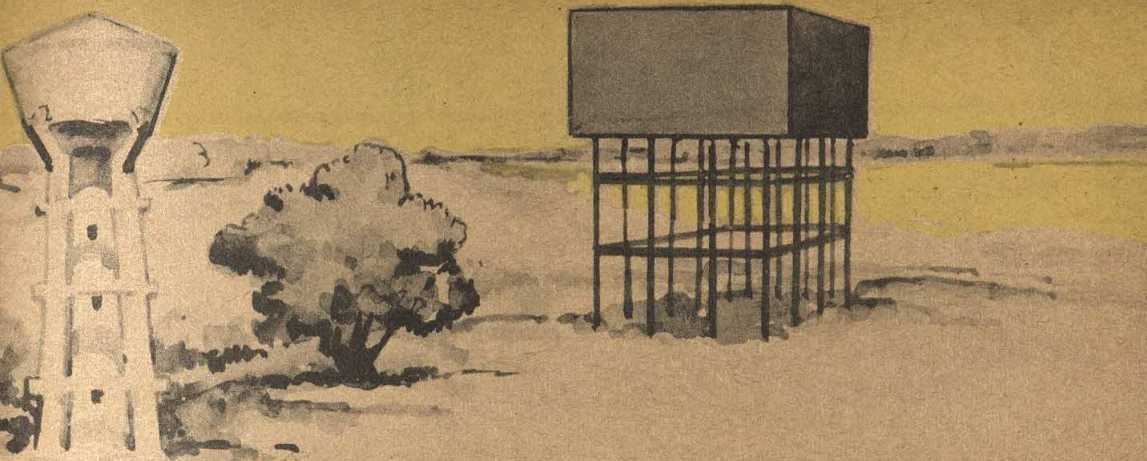
तुम्हें यह जानकर अचरज होगा कि दिल्ली में अधिकतर घरों के नलों में यमुना नदी से पानी आता है।

मशीनों की सहायता से बड़े-बड़े पाइपों द्वारा यमुना नदी से पानी खींचकर बाहर लाते हैं और एक बड़े पक्के तालाब में जमा करते हैं। नदी से लिया हुआ यह पानी पीने योग्य नहीं होता। इसे कई क्रियाओं द्वारा साफ करके पीने योग्य बनाया जाता है। पानी को साफ करने की इन क्रियाओं के बारे में तुम अपनी विज्ञान की पुस्तक में पढ़ोगे।

यमुना नदी के किनारे वज़ीराबाद में एक बड़ा पम्पिंग स्टेशन है। ऐसा ही एक दूसरा पम्पिग स्टेशन ओखला के पास भी है। तुम यह दोनों स्थान पृष्ठ ६ पर दिए गए नक्शे में देख सकते हो। यहीं पर यमुना का पानी जमा किया जाता है और साफ करके पीने योग्य बनाया जाता है।

इस साफ पानी को बड़े पाइपों द्वारा नगर में कई स्थानों पर ऊँची-ऊँची टंकियों में ले जात हैं। वहाँ से पहले बड़े आरै फिर छोटे पाइपों द्वारा इसे घरों तक पहुँचाया जाता है। पानी के ये पाइप धरती के अन्दर लगाए जाते हैं। तुमने इस तरह के पाइप लगते अवश्य देखे होंगे।

पम्पिग स्टेशन पर दिन रात काम होता है। नगरवासियों को पानी पहुँचाने के लिए सैंकड़ों व्यक्ति हर समय अपने-अपने कामों में जुटे रहते हैं। कुछ लोग मशीनें चलाते हैं और नदी के पानी को बड़े तालाबों में भरते हैं। कुछ लोग पानी को साफ करने का कार्य करते हैं। पानी की सफाई की जाँच करने वाले लोग अलग होते हैं।

धरती के अन्दर सीमेंट और लोहे के पाइप बिछाने और समय-समय पर उनकी मरम्मत और देखभाल करने के काम पर भी सैंकड़ों व्यक्ति लगे रहते हैं।

तुम्हारे घर में यदि पानी का नल खराब हो जाए तो जलविभाग का मिस्तरी उसे ठीक करने आता है। नगरनिगम के जलविभाग में काम करनेवाले ये सभी लोग हमारे सहायक हैं। वे इस बात का पूरा ध्यान रखते हैं कि नगर के प्रत्येक भाग में हर समय पीने का पानी पहुँचता रहे।

तुम जानते हो कि दिल्ली नगर में रहनेवालों की संख्या रोज़ बढ़ रही है। इसी के साथ-साथ अधिक पानी की माँग भी बढ़ रही है। कभी-कभी गर्मियों में यमुना में पानी की बहुत कमी हो जाती है और पूरे शहर के लिए हर समय पानी पहुँचाना कठिन हो जाता है। ऐसे संकट के समय नलों में पानी आने का समय निश्चित कर देते हैं।

तुमने देखा कि पानी कितनी कठिनाई से हम तक पहुँचता है और इस काम में कितने लोग हमारी सहायता करते हैं।

कुछ लोग पानी के नलों को खुला छोड़ देते हैं। इससे बहुत-सा पानी बेकार बह जाता है। काम हो जाने पर नल बन्द कर देना चाहिए। नल खराब हो जाए या फट जाए तो इसकी सूचना तुरन्त जल-विभाग के अधिकारियों को देनी चाहिए।

अब बताओ

१. पानी से हम क्या-क्या काम लेते हैं?
२. दिल्ली नगर की बस्तियों और घरों में पानी कहाँ से और किस प्रकार आता है?
३. यमुना के पानी को साफ क्यों किया जाता है?
४. हमें पानी के उपयोग में सावधानी क्यों बर्तनी चाहिए?
५. यदि तुम्हारी बस्ती की एक सड़क पर लगा नल खराब हो जाए और पानी बेकार बह रहा हो तो तुम क्या करोगे?
नीचे लिखी बातें में से केवल उचित कार्य पर सही (✓) का निशान लगाओ :

(क) अपने पास-पड़ोसवालों को जाकर बताओगे। ( )
(ख) जल विभाग के कर्मचारियों को सूचना दोगे। ( )
(ग) स्वयं ठीक करने का प्रयत्न करोगे। ( )
(घ) बहते हुए पानी से खेलने लगोगे। ( )

कुछ करने को

नीचे लिखे वाक्यों को अपनी कापी पर इस प्रकार लिखो कि पानी की यात्रा की पूरी कहानी बन जाए :

इस साफ पानी को बड़े पाइपों द्वारा नगर में कई स्थानों पर बनी ऊँची-ऊँची टंकियों में ले जाते हैं। मशीनों की सहायता से बड़े पाइपों द्वारा नदी से पानी ऊपर खींचकर बाहर लाते हैं। उसे एक बड़े पक्के तालाब में जमा करते हैं। वहाँ से पहले बड़े और फिर छोटे पाइपों द्वारा इसे घरों तक पहुँचाया जाता है। इसे कई क्रियाओं द्वारा साफ करके पीने योग्य बनाया जाता है। नदी से लिया हुआ यह पानी पीने योग्य नहीं होता।

११. घरों और सड़कों के लिए बिजली

हम घरों में अँधेरा दूर करने के लिए रोशनी करते हैं। इस रोशनी के लिए हम तेल के दिये, लालटेन, लैम्प और बिजली के बल्ब काम में लाते हैं। बड़े शहरों में लोगों के घरों में और सड़कों पर बिजली के बल्ब जलते हैं। दिल्ली नगर में तो हर स्थान पर बिजली से काम लिया जाता है। रोशनी करने के साथ-साथ बहुत से दूसरे कार्य भी बिजली द्वारा किए जाते हैं। कारखानों में मशीनें चलती हैं, घरों और दफ़तरों में पंखे चलते हैं, तुम्हारा रेडियो भी बिजली से ही चलता है।
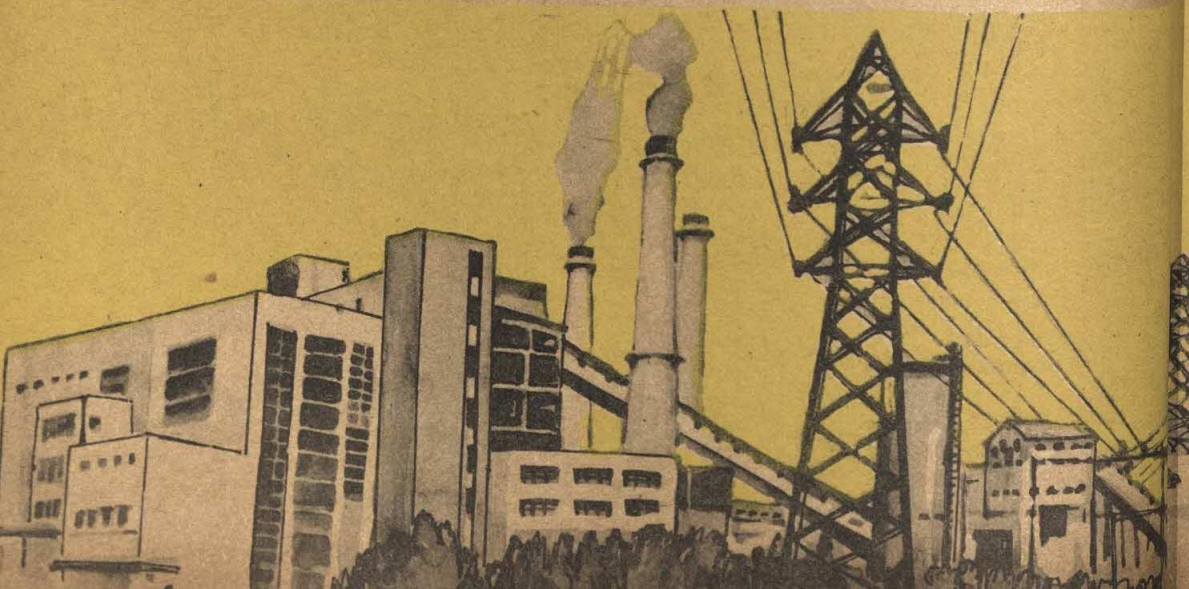
तुम जानना चाहोगे कि यह बिजली इन सब स्थानों पर कहाँ से आती है और किस प्रकार पहुँचती है।

चलो, तुम्हें दिल्ली के एक बड़े बिजलीघर ले चलें। यह यमुना के किनारे राजघाट के पास बना है। दूर से ही तुम्हें एक बड़ी इमारत दिखाई देगी। इस बड़ी इमारत के अन्दर बड़ी-बड़ी मशीनें लगी हैं जो भाप की शक्ति से चलती हैं। तुमने रेल का इंजिन तो भाप की शक्ति से चलता देखा होगा। कुछ दूसरी मशीनें भी भाप से चलती हैं। बिजली बनाने की मशीनें चलाने के लिए बहुत भाप की आवश्यकता होती है। तुम देखोगे इस बिजलीघर की इमारत के पास कोयले के ऊँचे-ऊँचे ढेर लगे हुए हैं। इसी कोयले को जलाकर पानी से भाप बनाई जाती है। इस भाप की शक्ति से बिजली बनाने की बड़ी-बड़ी मशीनें चलती हैं। इन्हें टरबाइन कहते हैं। इनसे बिजली तैयार होती है। अब तुम समझ गए होगे कि यह बिजलीघर यमुना के किनारे क्यों बनाया गया है।

तुमने सड़कों पर लगे बिजली के खम्बे और तार तो अवश्य देखे होंगें। बहुतसे स्थानों पर बिजली के ये तार धरती के अन्दर भी बिछाए जाते हैं। इन्हीं तारों द्वारा नगर की प्रत्येक बस्ती के बिजलीघर तक बिजली पहुँचती है। फिर वहाँ से इसी प्रकार सड़कों, घरों, कारखानों, दफ़्तरों आदि में पहुँचाई जाती है।
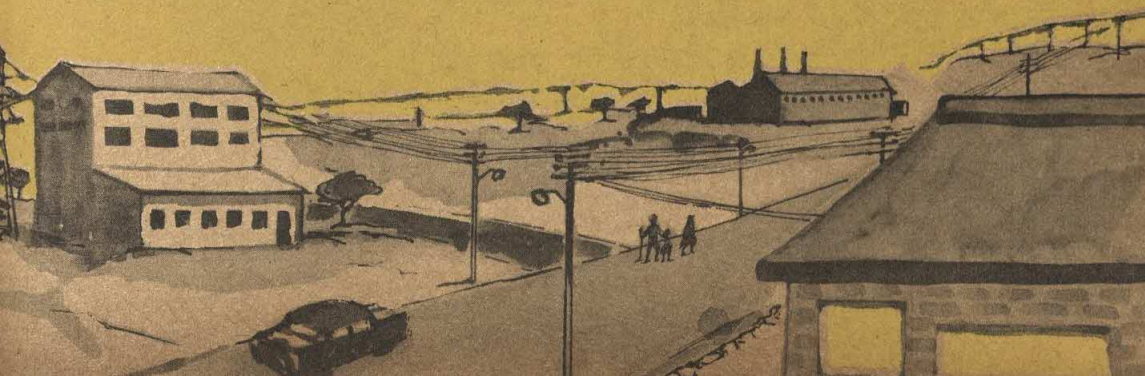
नगरवासियों को गर्मी, सर्दी, बरसात, हर मौसम में हर समय बिजली की आवश्यकता रहती है। इसीलिए राजघाट के बड़े बिजलीघर में दिन-रात बिजली तैयार की जाती है। वहाँ पर सैंकड़ों व्यक्ति चौबीसों घंटे काम करते रहते हैं। कुछ लोग मशीनों को चलाते हैं तो कुछ कारीगर इनके कल-पुरज़ों की देखभाल और मरम्मत करते हैं।

नगर के सभी छोटे बिजलीघर भी दिन-रात खुले रहते हैं। यहाँ से हर बस्ती के घरों में बिजली पहुँचाई जाती है। सड़कों पर जलनेवाले बल्ब भी यहीं से जलाए-बुझाए जाते हैं। यदि मौसम की खराबी या किसी और कारण से किसी स्थान की बिजली खराब हो जाए, तो सूचना मिलने पर बिजली विभाग के कर्मचारी शीघ्र ही वहाँ पहुँचकर बिजली ठीक कर देते हैं। ये सभी लोग हमारे सहायक हैं।

यदि तुम्हारे यहाँ बिजली लगी है तो तुमने अपने घर में लगा हुआ बिजली का मीटर अवश्य देखा होगा। इस मीटर से यह पता चलता है कि तुमने कितनी बिजली जलाई। बिजली के खर्च का एक बिल बिजली विभाग से भेजा जाता है। इस बिल के पैसे सभी लोगों को बिजली-विभाग के दफ़्तर में जमा कराने होते हैं। यही बिजली विभाग शहर में बिजली का प्रबन्ध करता है।

अब बताओ

१. हम किन-किन कामों में बिजली का प्रयोग करते हैं?
२. दिल्ली का बड़ा बिजलीघर यमुना के किनारे क्यों बनाया गया है?
३. बिजलीघर से घरों, सड़कों और कारखानों में बिजली किस प्रकार पहुँचाई जाती है?
४. हमें बिजली के बिल के पैसे विजली विभाग के दफ़्तर में समय पर क्यों जमा करने चाहिएँ?
५. यदि तुम्हारे घर की बिजली खराब हो जाए तो नीचे लिखी बातों में से तुम क्या करोगे?
   (क) राजघाट के बिजलीघर पर सूचना दोगे।
   (ख) छोटे बिजलीघर पर सूचना दोगे।
   (ग) तुम स्वयं उसे ठीक करने लगोगे।

कुछ करने को

१. अपनी बस्ती का स्थानीय बिजलीघर देखने जाओ और नीचे लिखी जानकारी प्राप्त करो :

(क) यह कहाँ पर है?

(ख) यहाँ कितने लोग काम करते हैं?

(ग) क्या यह कभी बन्द होता है?

२. नीचे लिखे वाक्यों को अपनी कापी पर इस प्रकार लिखो कि बिजली की यात्रा की पूरी कहानी बन जाए :

इस भाप की शक्ति से बिजली बनाने की बड़ी-बड़ी मशीनें चलती हैं। राजघाट बिजलीघर में बड़ी-बड़ी मशीनें लगी हैं। फिर वहाँ सड़कों, घरों, कारखानों और दफतरों में बिजली पहुँचाई जाती है। इन्हीं तारों द्वारा नगर की प्रत्येक बस्ती के छोटे बिजलीघर तक बिजली पहुँचाई जाती है। सड़कों पर बिजली के खम्बे और तार लगे होते हैं। इन्हें टरबाहन कहते हैं। बिजलीघर की इमारत के पास कोयले के ऊँचे-ऊँचे ढेर लगे हैं। कहीं-कहीं पर बिजली के यह तार धरती के अन्दर भी बिछाए जाते हैं। इनसे बिजली तैयार होती है। इस कोयले को जलाकर पानी से भाप बनाई जाती है।
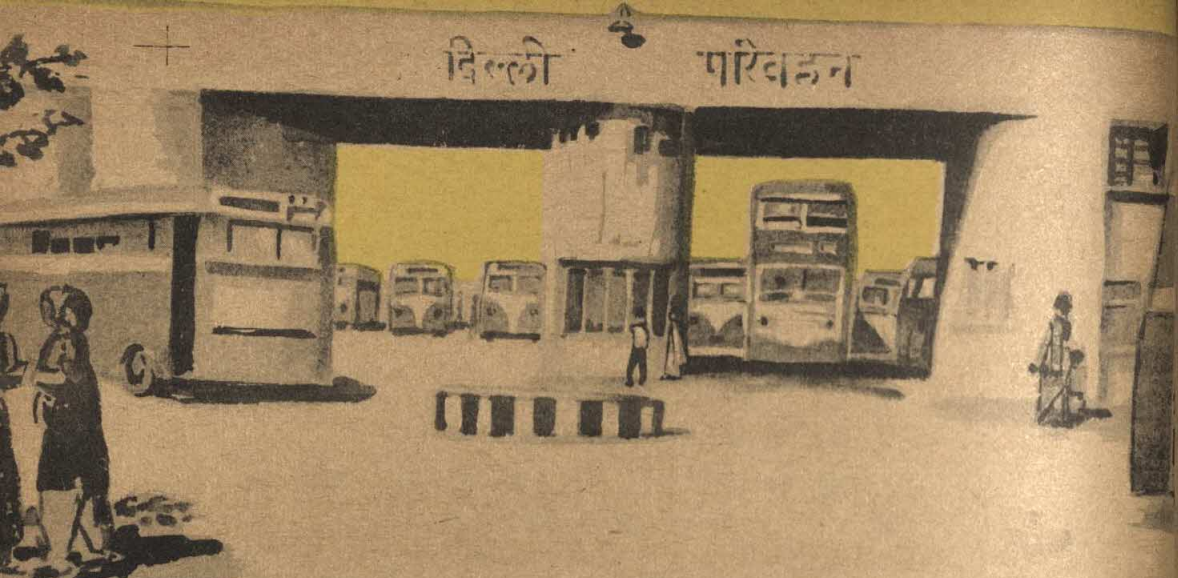
१२. स्थानीय परिवहन

तुमने दिल्ली में बस के अड्डों पर लम्बे 'क्यू' लगे अवश्य देखे होंगे। इतने लोग इस प्रकार लाइन लगाए क्यों खड़े रहते हैं? दिल्ली की सड़कों पर भी इतनी ही भीड़ क्यों रहती है?

तुम जानते हो कि दिल्ली नगर दूर तक फैला हुआ है। यहाँ के रहनेवालों को नगर के एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाना-आना पड़ता है। हज़ारों स्त्री-पुरुष प्रतिदिन दफ्तरों, कारखानों और बाज़ारों को जाते हैं। बहुतसे पढ़नेवाले लड़के और लड़कियाँ अपने स्कूलों और कालिजों को जाते हैं। इसके अतिरिक्त घूमने-फिरने और मित्रों से मिलने-जुलने के लिए भी लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाना-आना पड़ता है। दिन में किसी समय भी तुम सड़कों को देखो, तो तुम्हें हज़ारों साइकिलें, रिक्शे, ताँगे, कारें, बसें और स्कूटर चलते नज़र आएँगे। यही एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने-आने के लिए दिल्ली की मुख्य सवारियाँ है।

दिल्ली के बहुतसे लोग साइकिल पर ही आते-जाते हैं। लाखों लोगों के पास अपनी-अपनी साइकिलें हैं। सड़कों पर साइकिल सवारों के झुंड दिखाई देते हैं। सुबह और शाम के समय तो साइकिलों की भीड़ का दृश्य देखने योग्य होता है।

बहुतसे व्यक्ति स्कूटर, टैक्सी, रिक्शा और ताँगे से यात्रा करते हैं। स्कूटर और टैक्सी तेज़ चलनेवाले साधन हैं, परन्तु इनमें अधिक किराया लगता है। ताँगे और रिक्शे धीरे-धीरे चलते हैं और इनमें अधिक दूर जाने में काफी समय लगता है।

दिल्ली में सबसे अधिक लोग बस की सवारी करते हैं। बसें तेज़ी से चलती हैं और इनमें किराया भी कम लगता है।

तुमने दिल्ली की सड़कों पर चलनेवाली बसें अवश्य देखी होंगी। तुम में से कुछ ने इन बसों में यात्रा भी की होगी। इन बसों पर मोटे शब्दों में दि० प० लिखा होता है। इसका अर्थ है दिल्ली परिवहन। तुमने अपनी बस्ती के बस स्टाप पर भी यह शब्द अवश्य लिखे देखे होंगे।

तुम पढ़ चुके हो कि दिल्ली परिवहन दिल्ली नगरनिगम के अधीन एक विभाग है। यही विभाग शहर में बसों का प्रबन्ध करता है और लगभग एक हज़ार बसें प्रतिदिन चलाता है। ये बसें अपने-अपने मार्गों पर चलती हैं और अड्डों पर रुकती हैं।

नगर की प्रत्येक बस्ती तक दिल्ली परिवहन की बसें चलती हैं। इनमें से कुछ बसें दो-मंज़िला भी है। आजकल तो दिल्ली क्षेत्र के गाँवों तक भी दिल्ली परिवहन की बसें चलने लगी हैं। ये बसें प्रातः पाँच बजे से चलना आरम्भ होती हैं और रात को देर तक चलती हैं। प्रतिदिन लाखों लोग इन बसों में यात्रा करते हैं।

तुमने बस के अन्दर कंडक्टर को टिकट बाँटते हुए तो देखा ही होगा। कुछ बसों में सवारियों को टिकट देने के लिए दो कंडक्टर होते हैं। कंडक्टर बस को प्रत्येक अड्डे पर रुकवाता है, यात्रियों को उतारता है और चढ़ाता है। बस चलानेवाला ड्राइवर सदा कंडक्टर की घंटी या सीटी के इशारे पर ही बस चलाता है और रोकता है। कंडक्टर का काम बड़ी मेहनत का काम है। वह तेज़ दौड़ती हुई बस में खड़ा होकर यात्रियों की टिकट देता है। ड्राइवर और कंडक्टर, दोनों हमारे अच्छे सहायक हैं। हमें भी चाहिए कि उनके काम में उनकी सहायता करें और टिकट अवश्य खरीदें। यह तो तुमको मालूम ही होगा कि दिल्ली परिवहन की बसों में १२ वर्ष से कम आयु के बच्चों का आधा किराया लगता है।

दिल्ली में चौड़ी-चौड़ी सड़कें हैं। इन पर हर समय साइकिल, ताँगा, रिक्शा, स्कूटर, टैक्सी, कार, बस आदि बहुतसी सवारियाँ चलती हैं। नगरनिगम शहर की सभी सड़कों की देखभाल रखता है और समय-समय पर इनकी मरम्मत भी कराता है।

नगर के बड़े चौराहों पर पुलिस के सिपाही होते हैं। इस पुलिस को ट्रैफ़िक पुलिस कहते हैं। सभी सवारियाँ ट्रैफ़िक पुलिस के सिपाही के इशारे पर चलती हैं। बहुत से बड़े चौराहों पर बिजली की लाल और हरी बत्तियाँ लगाई गई हैं। हरी बत्ती होने पर सवारियाँ चलती हैं और लाल बत्ती होने पर रुक जाती हैं। बताओ यदि पैदल सड़क पार करना हो तो किस प्रकार करोगे।

यदि सवारियाँ चलानेवाले और पैदल चलनेवाले सावधान न हों, तो दुर्घटनाएँ हो जाती हैं। कभी सवारियों में टक्कर हो जाती है तो कभी पैदल या साइकिल पर चलनेवालों को चोट आ जाती है। इन दुर्घटनाओं को रोकने का क्या उपाय है? सड़क पर सावधानी से चलना और सड़क पर चलने के नियमों का पालन करना। तुम्हें शायद मालूम हो कि हमारे देश में सवारियों को सड़कों पर बाईं ओर चलाने का नियम है। चौराहे पर खड़े ट्रैफ़िक पुलिस के सिपाही के इशारे पर चलना और लाल व हरी बत्तियो का ध्यान रखना तो बहुत आवश्यक है।

नई दिल्ली में एक चौराहे पर ट्रैफ़िक का दृश्य
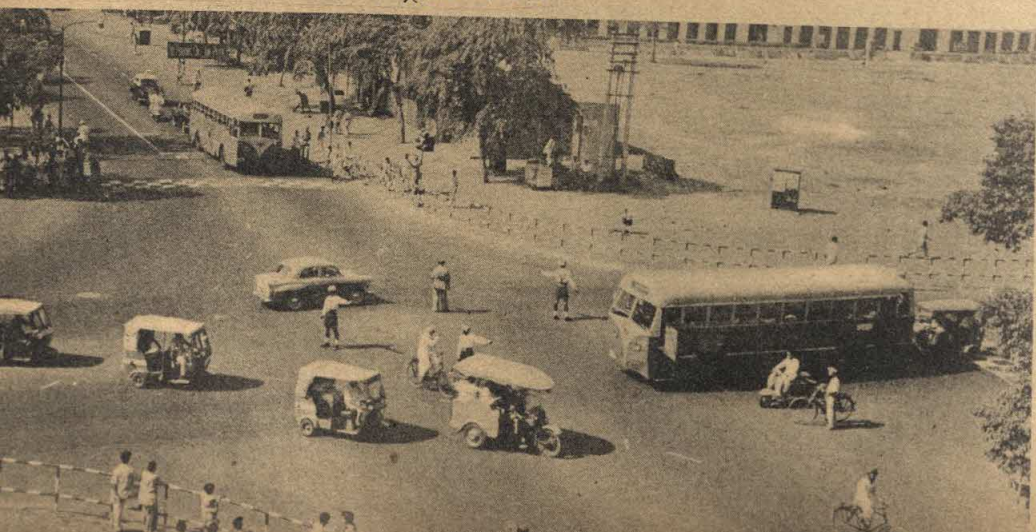
नगरवासियों की ज़रूरत पूरी करने के लिए दिल्ली परिवहन विभाग समय-समय पर बसों की संख्या बढ़ाता रहता है। फिर भी अक्सर यात्रियों को काफ़ी समय तक बसों के लिए इंतज़ार करना पड़ता है। बताओ क्यों ऐसा होता है।

अब बताओ

१. दिल्ली में परिवहन के अच्छे साधनों की आवश्यकता क्यों है?
२. दिल्ली में एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने के लिए कौन-कौनसी सवारियाँ मिलती हैं?
३. सड़कों पर दुर्घटनाएँ क्यों होती हैं?
४. सड़कों पर दुर्घटनाओं को रोकने के लिए हमें क्या करना चाहिए?
५. तुम पैदल चलते हुए किसी चौराहे पर सड़क किस समय पार करोगे? नीचे लिखी बातों में से केवल ठीक पर सही का निशान (✓) लगाओ :
   (क) जब सामने हरी बत्ती होगी। ( )
   (ख) जब सामने लाल बत्ती होगी। ( )
   (ग) जब सामने पीली बत्ती होगी। ( )

कुछ करने को

१. इर्विन रोड, नई दिल्ली पर स्थित 'बच्चों का ट्रैफिक पार्क' देखने जाओ और ट्रैफिक के नियम सीखो।
२. मालूम करो कि तुम्हारी बस्ती के बस-स्टाप पर किस-किस नम्बर की बसें आती हैं।
३. 'दिल्ली परिवहन' की बसों के नियमों को पढ़ो और उन्हें अपनी कापी पर लिखो।
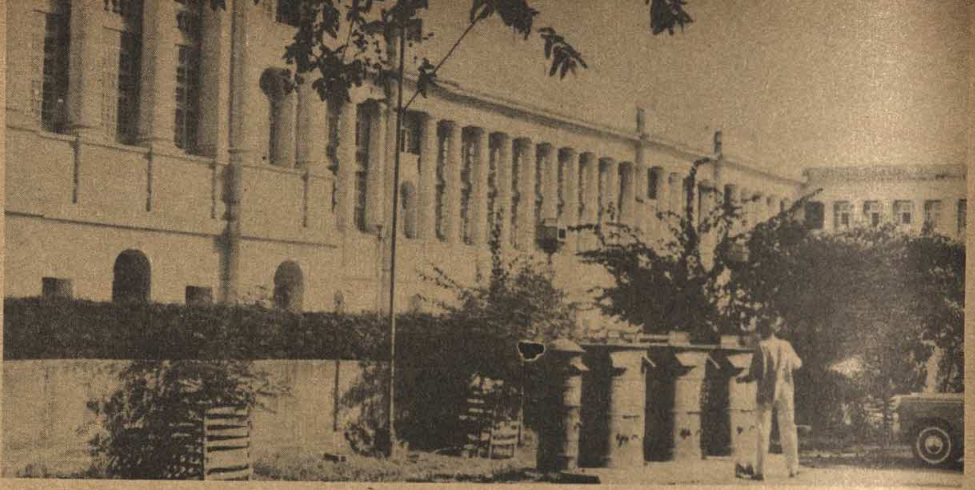
१३. डाक-तार और टेलीफोन

तुम जानते हो कि डाकिया हमारा अच्छा सहायक है। वह हमारे सगे-सम्बन्धियों के समाचार हम तक पहुँचाता है। दूर रहनेवाले हमारे भाई-बन्धुओं और मित्रों के सन्देश लाता है। इसीलिए हम सब प्रतिदिन डाकिए की बाट देखते हैं।

डाकिया सरकारी कर्मचारी है। वह भारत सरकार के डाक व तार विभाग में काम करता है।

दिल्ली में कनाट प्लेस के पास एक बड़ा भवन है। इसका नाम ईस्टर्न कोर्ट है। इस इमारत में डाक व तार विभाग का एक बड़ा कार्यालय है। चित्र में देखो, इसके बाहरी द्वार पर कई लैटर-बक्स लगे हुए हैं।

आओ, इसके अन्दर चलें।

इस भवन में तीन अलग-अलग विभाग हैं—डाक, तार और टेलीफोन।

पहला डाक विभाग है। यहाँ बड़ी भीड़ है। प्रत्येक खिड़की पर लोग लाइन में खड़े हुए हैं। एक खिड़की पर कार्ड, लिफ़ाफ़े और डाक के टिकट बिकते हैं।

दूसरी खिड़की रजिस्ट्री पत्रों और पार्सलों के लिए है। रजिट्री पत्रों पर साधारण पत्रों से अधिक पैसों के टिकट लगते हैं। पार्सलों में छोटी-छोटी वस्तुएँ, पुस्तकें, कपड़े आदि भेजे जा सकते हैं। इन पर वज़न के अनुसार टिकट लगाए जाते हैं।

एक और खिड़की पर मनीआर्डर भेजे जाते हैं। तुम किसी को भी डाक द्वारा रुपया भेज सकते हो। इसके लिये एक मनीआर्डर फ़ार्म भरना पड़ता है। डाक विभाग

मनीआर्डर भेजने के लिए कुछ शुल्क लेता है और रुपये को दिए गए पते के अनुसार ठीक आदमी तक पहुँचा देता है।

यह डाकघर का बचत-बैंक है। बहुतसे लोग डाकघर बचत-बैंक में अपना रुपया जमा करते हैं। आवश्यकता पड़ने पर वे अपना रुपया बचत-बैंक से निकाल भी सकते हैं।

डाकघर के साथ ही यहाँ पर एक डाक-छटाईघर है। छटाईघर में अन्दर जाने की आज्ञा नहीं है। बाहर से ही देखो कि यहाँ कितने लोग काम कर रहे हैं। हर एक के सामने पत्रों का ढेर पड़ा हुआ है। इतने सारे पत्र यहाँ कहाँ से आए हैं? नगर के हज़ारों लैटर-बक्सों से निकालकर सभी पत्र पहले छटाईघर में लाए जाते हैं।

छटाईघर में देश-विदेश को जानेवाले पत्रों को छाँटा जाता है। छटाईकार पते पढ़-पढ़कर पत्रों को छाँटते हैं। अलग-अलग स्थानों को जानेवाले पत्र अलग-अलग थैलों में बन्द किए जाते हैं। ये डाक थैले मोहर लगाकर रेल, मोटर या हवाई जहाज़ द्वारा विभिन्न स्थानों के डाकघरों के लिए भेज दिए जाते हैं।

पत्र के ऊपर पता बहुत साफ़ और मोटे शब्दों में लिखना चाहिए। इससे छटाई का काम सरल हो जाता है, भूल कम होती है और पत्र पानेवाले को शीघ्र मिल जाता है।

डाकघर के प्रत्येक विभाग में बहुत फुर्ती से काम होता है। दिल्ली से भेजा हुआ एक पत्र सैंकड़ों किलोमीटर की यात्रा करके दूसरे या तीसरे दिन पानेवाले को मिल जाता है।

पत्र के अलावा सन्देश शीघ्र भेजने का एक और साधन है। इसे तार कहते हैं। एक तारघर से तार द्वारा भेजा हुआ सन्देश बहुत थोड़ी देर में सैंकड़ों किलोमीटर दूर के दूसरे तारघर में पहुँच जाता है। वहाँ से वह सन्देश लिखकर पानेवाले तक उसी समय पहुँचा दिया जाता है।

तार द्वारा भेजे हुए सन्देश पर शब्दों की गिनती के हिसाब से शुल्क लगता है। सन्देश में जितने अधिक शब्द होंगे, उतने ही अधिक दाम देने पड़ेंगे। इसलिए तार का सन्देश बहुत छोटा होना चाहिए।

हमारी राजधानी दिल्ली में डाक व तार का बड़ा अच्छा प्रबन्ध है।

लगभग प्रत्येक बस्ती में एक डाक-तारघर है। ईस्टर्न कोर्ट की तरह कई बड़े डाक-तारघर हैं जो दिन रात खुले रहते हैं और उनमें छुट्टी के दिन भी काम होता है।

लोगों की सुविधा के लिए दिल्ली में कई चलते-फिरते डाकघर भी हैं। चलता-फिरता डाकघर एक बड़ी लारी में होता है। इसमें डाकघर का सब आवश्यक सामान और कर्मचारी होते हैं। यह लारी निश्चित समय पर नगर के मुख्य स्थानों पर जाकर खड़ी होती है। आसपास के लोग अपनी आवश्यकता के अनुसार कार्ड, लिफाफे, डाक-टिकट आदि खरीदते हैं। रजिस्ट्री पत्र, मनीआर्डर और पार्सल भी चलते-फिरते डाकघर से भेजे जाते हैं। ये डाकघर छुट्टी के दिन भी काम करते हैं।

आओ अब टेलीफोन विभाग की ओर चलें।

तार की तरह टेलीफोन भी सन्देश भेजने का एक अच्छा साधन है। इसके द्वारा हम बहुत दूर बैठे हुए मित्र से सीधी बातचीत कर सकते हैं, और आने-जाने की मुसीबत से बच जाते हैं।

टेलीफोन करने के लिए तारघर या डाकघर जाने की आवश्यकता नहीं होती। प्रत्येक टेलीफोन का अलग-अलग नम्बर होता है। यदि तुम्हारे घर में टेलीफोन लगा हुआ है और तुम्हारे मित्र के पास भी टेलीफोन है तो तुम उसका नम्बर मिलाकर अपने मित्र से बातचीत कर सकते हो।

राजधानी का एक चलता फिरता डाकघर

दिल्ली में बहुतसे कार्यालयों, दुकानों स्कूलों, कालिजों और घरों मे टेलीफ़ोन लगे हुए हैं। जनता की अधिक सुविधा के लिए नगर के डाकघरों तथा अन्य स्थानों पर सार्वजनिक टेलीफ़ोन लगे हैं। कोई भी आदमी पन्द्रह पैसे डालकर सार्वजनिक टेलीफ़ोन पर बातचीत कर सकता है।

अब बताओ

१. सन्देश भेजने के कौन-कौनसे साधन हैं?
२. डाक-तार विभाग हमारी क्या-क्या सेवाएँ करता है?
३. डाक-छटाईघर में क्या कार्य होता है?
४. टेलीफ़ोन से हमें क्या लाभ हैं?
५. तार और टेलीफोन में क्या अन्तर है?
६. यदि तुम्हें निम्नालिखित काम करने हों तो कहाँ जाओगे :
   (क) चिट्ठी पर लगाने के लिए टिकट खरीदना हो।
   (ख) रजिस्ट्री पत्र भेजना हो।
   (ग) बहुत जल्दी समाचार भेजना हो।
   (घ) मनीआर्डर करना हो।
   (ङ) अपने शहर में किसी दूसरी बस्ती में रहनेवाले आदमी से बातचीत करना हो।

कुछ करने को

१. अध्यापक के साथ नगर का कोई बड़ा डाक तारघर देखने जाओ।
२. पत्रों पर ठीक ढँग से पते लिखना सीखो।
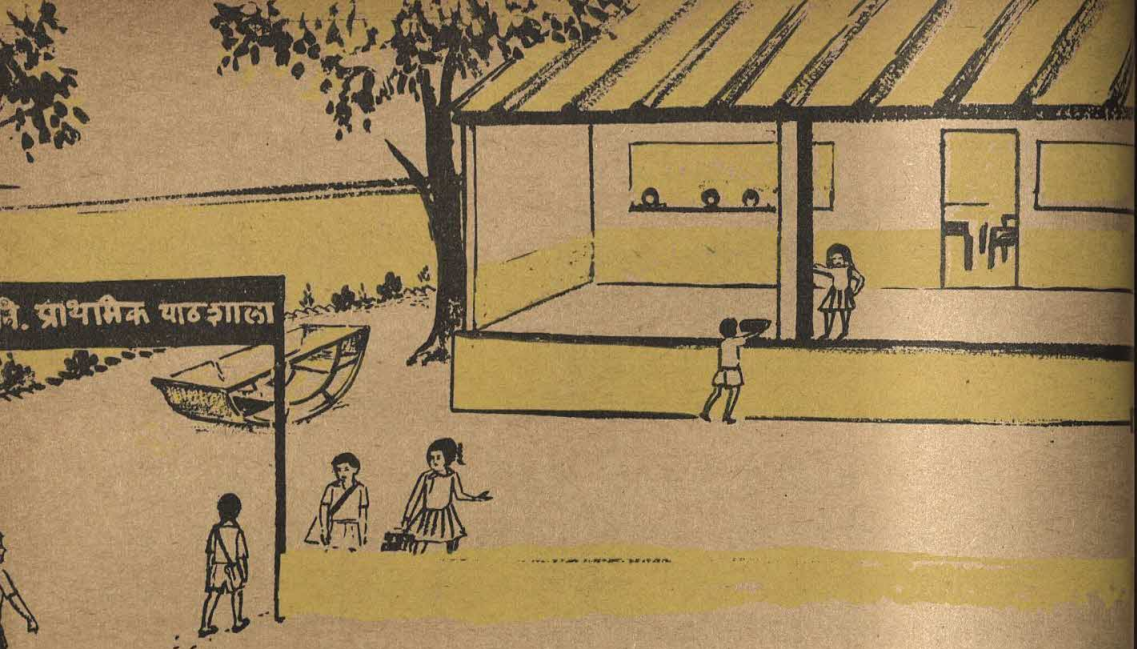
१४. दिल्ली में शिक्षा

तुम अपनी पाठशाला का नाम तो अवश्य जानते हो। यह तुम्हारी पाठशाला की इमारत के बाहरी दरवाज़े पर भी लिखा हुआ है। तुम्हारी तरह के सैंकड़ों बच्चे यहाँ पढ़ने आते हैं। यहाँ कई अध्यापक और अध्यापिकाएँ हैं जो तुम्हें पढ़ाते हैं। इस पाठशाला में कई कमरे हैं। तुम्हारे बैठने के लिए टाट और दरियाँ हैं। कई स्कूलों में मेज़ें और कुर्सियाँ भी हैं। पाठशाला की सफ़ाई करनेवाले और तुम्हें पानी पिलानेवाले कर्मचारी अलग हैं।

पाठशाला में काम करनेवाले सभी अध्यापकों और अन्य कर्मचारियों को हर मास वेतन मिलता है। पाठशाला की इमारत टूट—फूट जाए तो इसकी मरम्मत कराई जाती है या नई इमारत बनाई जाती है। तुम्हारे बैठने के टाट व दरियाँ फट जाएँ या मेज़ कुर्सियाँ टूट जाएँ, तो नई मँगवाई जाती हैं। तुम्हारे खेल-कूद और मनोरंजन के लिए भी प्रबन्ध किया जाता है।

इन सब बातों का प्रबन्ध कौन करता है?

यदि तुम अपनी पाठशाला के नाम को ध्यान से पढ़ो तो तुम्हें इस प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा। तुम्हारी पाठशाला एक प्राथमिक पाठशाला है। इसके नाम के साथ नगरनिगम का शब्द जुड़ा हुआ है। अब तुम समझ गए होगे कि तुम्हारी पाठशाला का प्रबन्ध कौन करता है।

दिल्ली की सभी बस्तियों और गाँवों में ऐसी प्राथमिक पाठशालाएँ हैं। नगर के दूसरे भागों में तुमने ऐसी अन्य पाठशालाएँ देखी भी होंगी। इन सभी पाठशालाओं में हज़ारों अध्यापक अध्यापिकाएँ तुम्हारे जैसे कई लाख बच्चों को पढ़ाते हैं। इन सभी पाठशालाओं का प्रबन्ध दिल्ली नगरनिगम या नई दिल्ली नगरपालिका द्वारा किया जाता है।

यह तो तुम्हें मालूम ही होगा कि दिल्ली-क्षेत्र के सभी स्कूलों में पहली से आठवीं कक्षा तक के बच्चों को मुफ़्त शिक्षा दी जाती है। तुम्हें भी अपनी शिक्षा के लिए कोई फ़ीस नहीं देनी पड़ती है।

प्राथमिक पाठशालाओं के अतिरिक्त दिल्ली में बहुत से माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूल हैं। इन स्कूलों में दिल्ली के लाखों लड़के-लड़कियाँ शिक्षा पाते हैं। तुम्हारे बड़े भाई-बहिन शायद ऐसे ही किसी बड़े स्कूल में पढ़ते होंगे। बड़े होकर तुम भी किसी माध्यमिक या उच्च-माध्यमिक स्कूल में पढ़ोगे।

आगे की शिक्षा के लिए दिल्ली में दिल्ली विश्वविद्यालय है और बहुत से बड़े-बड़े स्कूल और कालिज हैं। देश-विदेश के हज़ारों विद्यार्थी इन कालिजों में शिक्षा पाते हैं। स्कूल की शिक्षा समाप्त करने के बाद तुम भी किसी कालिज में शिक्षा पा सकते हो।

सभी छोटे-बड़े स्कूलों और कालिजों में भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, कला आदि विभिन्न विषयों की शिक्षा दी जाती हैं। तुम भी अपने स्कूल में इन विषयों को पढ़ते होगे। इससे तुम्हें जीवन में काम आनेवाली तरह-तरह की बातों की जानकारी होती है।

दिल्ली की एक प्राथमिक पाठशाला में व्यायाम करते हुए बच्चे

आजकल स्कूलों में बच्चों के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखा जाता है। तुम्हारे स्कूल में भी खेल-कूद और शारीरिक शिक्षा का प्रबन्ध अवश्य होगा। किसी बच्चे को चोट आ जाए तो स्कूल ही में मरहम-पट्टी करने का प्रबन्ध होता है। बड़े स्कूलों में तो एक डाक्टर भी होता है। स्कूल का डाक्टर सभी बच्चों की जाँच करता है और रोगी बच्चों को दवाई देता है। बड़े स्कूलों और कालिजों में विद्यार्थियों को फ़ौजी कवायद की शिक्षा भी दी जाती है।

पढ़ाई-लिखाई और खेल-कूद के अतिरिक्त स्कूलों के विद्यार्थी गाने, बजाने, नाटक आदि में भी भाग लेते हैं। अपने-अपने स्कूल की 'बालसभा' में सभी कक्षाओं के बच्चे गीत, कविताएँ, कहानियाँ, चुटकले आदि सुनाते हैं। तुम भी अपनी 'बाल-सभा' में अवश्य भाग लेते होगे। इससे तुम्हारा मनोरंजन तो होता ही है, कई अच्छी बातें भी सीखने को मिलती हैं।

'बाल-दिवस' बच्चों का दिन है। यह प्रतिवर्ष १४ नवम्बर को आता है। हमारे प्रिय चाचा नेहरू का जन्म भी १४ नवम्बर को ही हुआ था। वे बच्चों को बहुत प्यार करते थे। इसीलिए उनका जन्मदिन सारे देश में 'बाल-दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर दिल्ली के सभी स्कूलों में विशेष समारोह किए जाते हैं। बालक-बालिकाएँ तरह-तरह के खेल-कूद, व्यायाम, गाने-बजाने, भाषण, नाटक आदि का कार्यक्रम दिखाते हैं। अच्छे भाषणों और कविताओं पर पुरस्कार दिए जाते हैं। बहुतसे स्कूलों में 'चाचा नेहरू' के चित्रों की प्रदर्शनी भी लगाई जाती है।

बाल दिवस पर बच्चों के प्रिय चाचा नेहरू बच्चों के बीच में
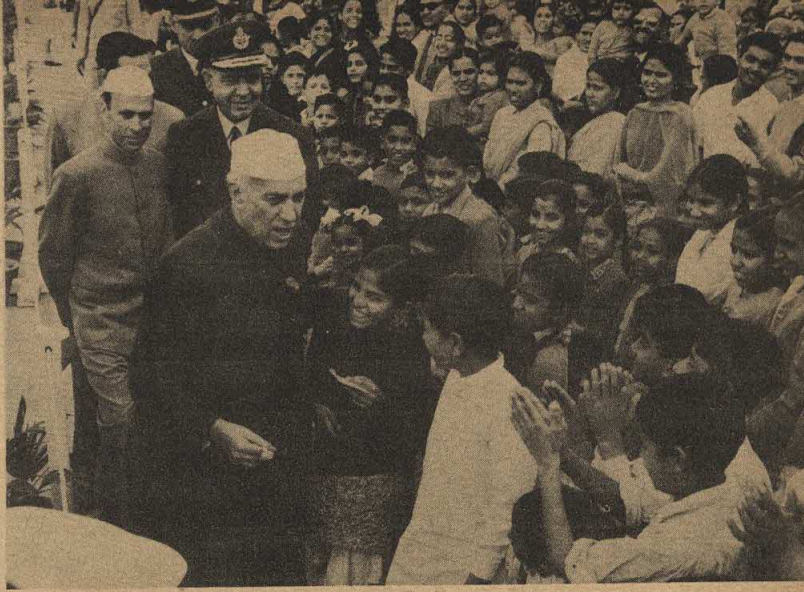
बालदिवस की तरह स्कूलों में और भी कई दिवस मनाए जाते हैं। इनमें 'अध्यापक-दिवस' विशेष है। यह प्रतिवर्ष ५ सितम्बर को मनाया जाता है। सभी स्कूलों और कालिजों के विद्यार्थी 'अध्यापक-दिवस' के अवसर पर विशेष कार्यक्रम तैयार करके दिखाते हैं।

हमारे अध्यापक हमारे सबसे अच्छे सहायक हैं। वे हमें शिक्षा देते हैं और जीवन में काम आनेवाली हज़ारों बातें सिखाते हैं। अध्यापक का स्थान माता-पिता के ही बराबर है।
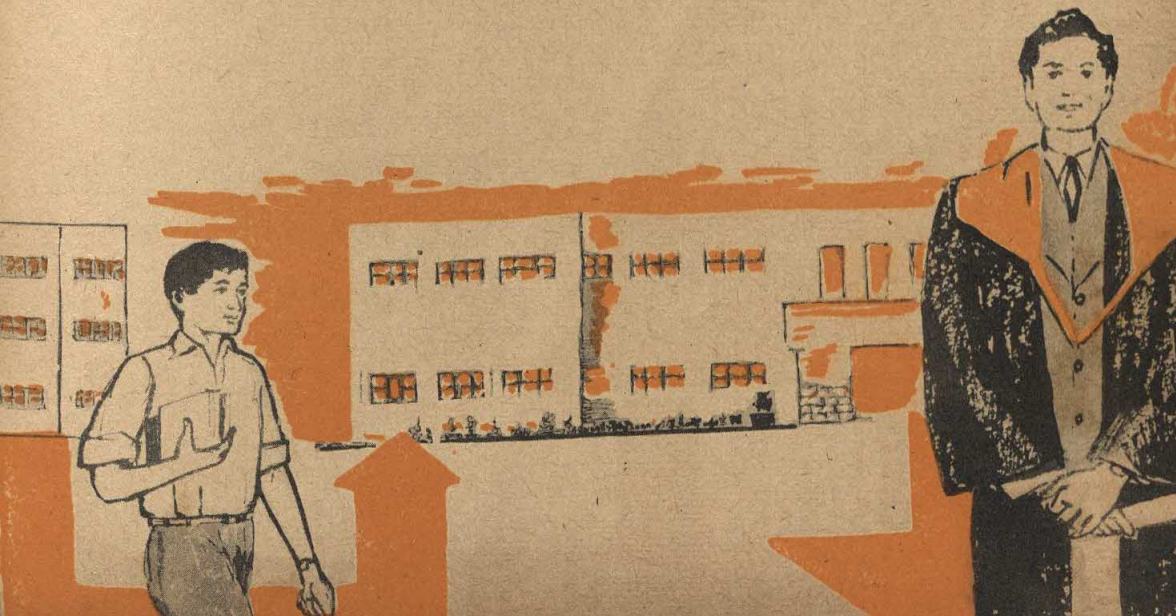
अब बताओ

१. यदि स्कूल न हों तो हमें क्या हानि होगी ?
२. पढ़ाई-लिखाई के अतिरिक्त स्कूलों में और क्या-क्या क्रियाएँ कराई जाती हैं ?
३. 'बालदिवस' और 'अध्यापक-दिवस' क्यों मनाए जाते हैं ?
४. तुम्हें स्कूल में पढ़ना क्यों अच्छा लगता है ?
५. नीचे लिखे वाक्यों में से केवल ठीक वाक्यों पर सही (✓) का निशान लगाओ :

(क) दिल्ली के प्राथमिक स्कूलों में मुफ़्त शिक्षा दी जाती है। (   )
(ख) 'अध्यापक दिवस' प्रतिवर्ष १४ नवम्बर को मनाया जाता है। (   )
(ग) आजकल स्कूलों में बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया जाता है। (   )
(घ) दिल्ली के उच्च-माध्यमिक स्कूलों और कालिजों में मुफ़्त शिक्षा दी जाती है। (   )
(ङ) अच्छे विद्यार्थी सदा अपने अध्यापकों का आदर करते हैं। (   )

कुछ करने को

१. अपनी पाठशाला में बाल-दिवस मनाने का एक कार्यक्रम तैयार करो।
२. 'बालदिवस' के अवसर पर रेडियो कार्यक्रम सुनो।
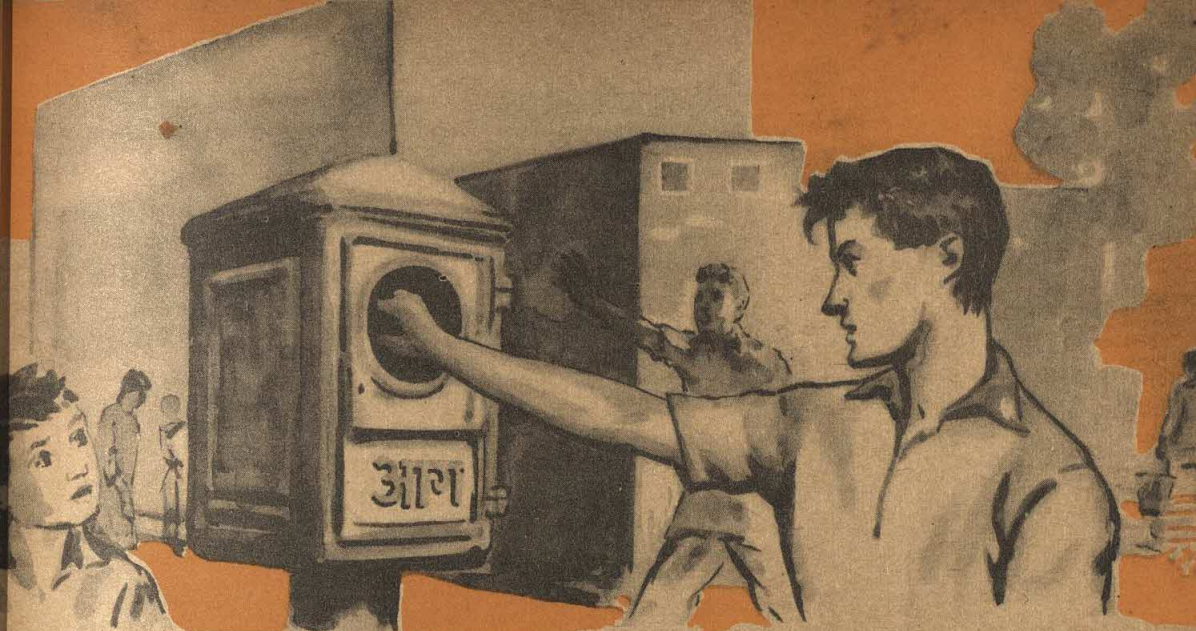
१५. आग बुझाने का प्रबन्ध

गली के मोड़ पर लोहे का एक छोटासा खम्बा लगा हुआ था। एक आदमी दौड़ता हुआ आया और उसने एक बड़ा सा पत्थर उठाकर उस खम्बे पर लगे शीशे पर दे मारा। शीशा टुकड़े-टुकड़े होकर गिर गया। फिर उसने खम्बे में लगा एक छोटासा हैन्डल घुमाया और वह वहीं खड़ा रहा।

नवीन और कमल दादाजी के साथ सुबह सैर कर के लौट रहे थे। उन्होंने यह सब देखा तो वे बड़े चकित हुए और चलते-चलते रुक गए।

दादाजी ने कहा, "कहीं पर आग लग गई है।"

नवीन और कमल की समझ में कुछ न आया।

इसी समय उन्होंने देखा कि गली के अन्दर एक मकान की खिड़की से धुआँ निकल रहा था। बहुतसे लोग मकान की ओर दौड़े जा रहे थे। चारों ओर 'आग, आग' 'बचाओ, बचाओ' का शोर था। सचमुच बड़ी भयंकर आग लगी थी।

अभी केवल तीन-चार मिनट ही हुए थे कि दूर सड़क पर एक लाल रंग की मोटर आती हुई दिखाई दी। साथ-साथ ज़ोर-ज़ोर से ख़तरे की घंटी बज रही थी। सड़क पर चलते हुए सभी ताँगों, रिकशों, कारों, बसों और पैदल लोगों ने इस मोटर के लिए रास्ता छोड़ दिया। मोटर गली में आ पहुँची। यह आग-बुझानेवाली मोटर थी।

खाकी वर्दी पहने हुए दस-बारह आदमी जल्दी-जल्दी इस मोटर से नीचे उतर पड़े। सिर पर उन्होंने लोहे के टोप पहन रखे थे और पाँवों में भारी जूते थे।

दादाजी ने बताया, "आग-बुझानेवाली यह गाड़ी पास के दमकल केन्द्र (फ़ायर स्टेशन) से आई है। अभी कुछ देर पहले तुमने एक आदमी को इस खम्बे का शीशा तोड़कर हैन्डल घुमाते देखा था। नगर में कुछ स्थानों पर ऐसे आग-सूचक खम्बे

लगाए गए हैं। कहीं पर आग लग जाए तो इस खम्बे का शीशा तोड़कर हैन्डल घुमा देने से आग लगने की सूचना तुरन्त ही दमकल केन्द्र को हो जाती है। यदि आग-सूचक खम्बा पास न हो तो दमकल केन्द्र को आग लगने की सूचना टेलीफ़ोन द्वारा भी दे सकते हैं।"

नवीन और कमल दादाजी की बातें सुन तो रहे थे, लेकिन उनका ध्यान आग बुझानेवाली गाड़ी की ओर लगा था। उन्होंने देखा कि आग बुझानेवाली तीन और गाड़ियाँ वहाँ पहुँच गईं। इन सभी गाड़ियों में बड़ी-बड़ी टंकियाँ थीं।

दादाजी ने बताया, "इन टंकियों में आग बुझाने के लिए काफ़ी पानी भरा होता है। अधिक पानी की आवश्यकता हो तो पानी के बम्बों से पानी ले लेते हैं। शहर में बहुत-सी जगह केवल इसी काम के लिए धरती में बड़े बम्बे लगाए जाते हैं।"

एक मोटर में पुलिस के कुछ सिपाही भी वहाँ पहुँच गए। उन्होंने सब लोगों को पीछे हटा दिया और एक घेरा बनाकर खड़े हो गए।

आग अब बहुत फैल चुकी थी। सारा मकान जल रहा था। आग बुझानेवालों ने तुरन्त आग बुझाना आरम्भ कर दिया। उन्होंने लोहे की एक बड़ी सीढ़ी मकान की दीवार से लगा दी और एक आदमी सीढ़ी पर चढ़कर खिड़की के पास तक पहुँच गया। आग की लाल-लाल लपटें खिड़की से बाहर निकल रही थीं, लेकिन वह घबराया नहीं। उसके हाथों में कपड़े (कैनवस) का एक होज़ पाइप था जिसके सिरे पर धातु की मोटी नली लगी थी। वह इस होज़ पाइप की सहायता से पानी की तेज़ बौछार आग की लपटों पर डालने लगा।
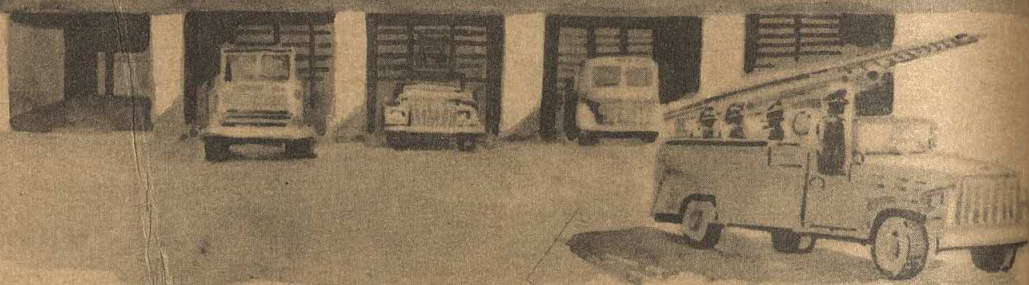
आग बुझानेवालों में से कुछ लोग पड़ोस के मकानों की छतों पर चढ़ गए। वे इन मकानों पर से पानी फेंकने लगे ताकि पड़ोस के मकान आग से बचे रहें और आग अधिक न फैले। कुछ लोग नीचे खड़े होकर ही आग पर पानी फेंक रहे थे। इनके दूसरे साथी मकान के अन्दर से सामान निकाल-निकालकर बाहर ला रहे थे।

एक स्त्री मकान के बाहर खड़ी ज़ोर ज़ोर से रो रही थी। उसका बच्चा मकान के अन्दर किसी कमरे में सोता हुआ रह गया था। आग बुझानेवाला एक आदमी बच्चे को निकालकर लाने के लिए तैयार हुआ। उसने अपने शरीर पर खूब पानी डाला और मुँह पर साँस लेने का एक यंत्र पहन लिया। दूसरे ही क्षण वह आग की लपटों में से होता हुआ तेज़ी से मकान के अन्दर चला गया।

कुछ ही देर बाद वह बच्चे को उठाए बाहर आ गया और बच्चे को माँ की गोद में दे दिया। उसका शरीर आग में झुलस गया था, लेकिन उसने अपनी जान पर खेल कर बच्चे की जान बचा ली थी।

आग की लपटें अब कुछ धीमी पड़ गई थीं। आग बुझानेवालों ने अपनी कुशलता और साहस से अन्त में आग पर काबू पा लिया।

दादाजी नवीन और कमल को लेकर घर की ओर चल दिए। रास्ते में उन्होंने बताया कि दिल्ली में बहुतसे छोटे-बड़े दमकल केन्द्र हैं। ये सभी केन्द्र नगर के आग-सेवा विभाग की देख-रेख में काम करते हैं। आग बुझानेवाले बहुतसे आदमी इन केन्द्रों में हर समय उपस्थित रहते हैं। वे आग बुझाने के सभी आवश्यक सामान से लैस होते हैं। नगर में कहीं आग-दुर्घटना हो जाए तो सूचना मिलते ही तुरन्त आग बुझाने के लिए पहुँच जाते हैं।

नवीन ने कहा, "आग तो बहुत भयानक चीज़ है। इससे तो बड़ी हानि होती है।"

"हां," दादाजी बोले। "आग से बड़ी हानि होती है। मकान, दुकान और कारखाने जल जाते हैं। बहुतसा कीमती सामान जल कर राख हो जाता है और कभी-कभी कुछ लोग मर भी जाते हैं। दिल्ली में मकान, दुकानें आदि बहुत पास-पास हैं। किसी की ज़रा-सी असावधानी से यदि आग लग जाए तो वह शीघ्र फैल सकती है। हमें हमेशा सावधानी रखनी चाहिए जिससे आग लगने ही न पाए।"

दादाजी ने यह भी समझाया, "कभी-कभी मिट्टी के तेल या पैट्रोल में आग लग जाती है। इस आग को पानी से बुझाओ तो और अधिक भड़कती है। मिट्टी के तेल या पैट्रोल में लगी आग को बुझाने के लिए रेत, मिट्टी या आग बुझाने की गैस का प्रयोग किया जाता है। तुमने देखा होगा कि बहुत से दफ्तरों, स्कूलों और कारखानों में रेत की भरी बाल्टियाँ रखी रहती हैं। ये भी आग बुझाने के काम में आती हैं।"

आज नवीन और कमल ने अच्छी तरह समझ लिया कि दिल्ली जैसे बड़े शहर में आग-सेवा विभाग का होना बहुत आवश्यक है। आग-सेवा केन्द्र के सभी कर्मचारी हमारे अच्छे सहायक हैं। किसी मकान, दुकान, दफ्तर या कारखाने में आग लग जाए तो वे तुरन्त हमारी सहायता के लिए आ जाते हैं और हमारी व हमारे माल की रक्षा करते हैं।
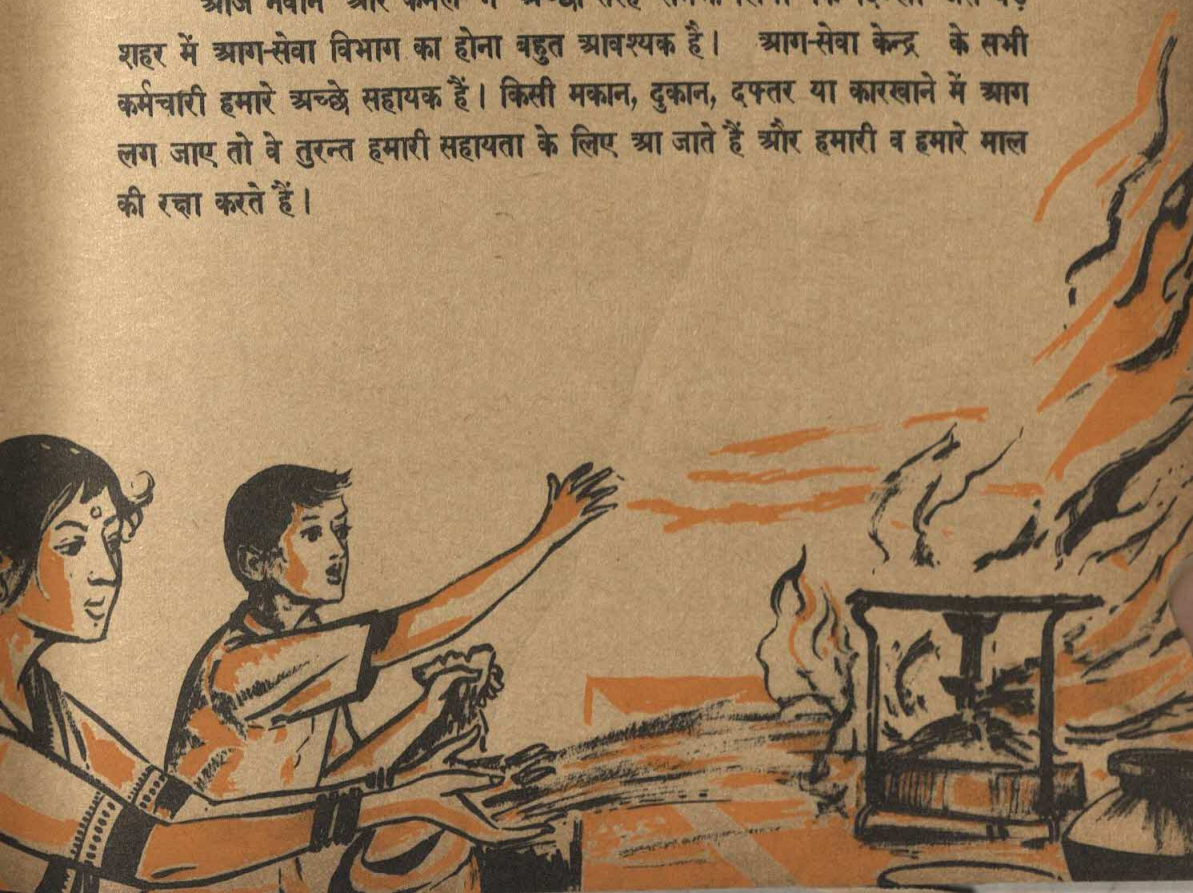
अब बताओ

१. तुम्हारे घर या पड़ोस में आग लग जाए तो दमकल केन्द्र को किस प्रकार सूचना दोगे ?
२. आग-सेवा विभाग के कर्मचारी किस प्रकार हमारी सहायता करते हैं ?
३. दिल्ली जैसे बड़े नगर में आग-सेवा विभाग का होना क्यों आवश्यक है ?
४. स्कूलों, दफ्तरों, कारखानों आदि में आग बुझाने के लिए क्या प्रबन्ध रखा जाता है ?
५. ऐसे समय में तुम किस प्रकार आग बुझाओगे ?
   (क) यदि मेज़, कुर्सी या बिस्तर में आग लग जाए।
   (ख) यदि स्टोव में आग लग जाए।
   (ग) यदि तुम्हारे पहने हुए कपड़ों में आग लग जाए।

कुछ करने को

१. अपने पड़ोस का दमकल केन्द्र देखने जाओ और वहाँ पर आग-सेवा दल को आग बुझाने का अभ्यास करते हुए देखो।
२. कहीं आग लग जाने पर हमें क्या करना चाहिए ? इस के लिए कुछ नियम बनाओ और लिखकर अपनी कक्षा की बाहरी दीवार पर चिपकाओ।

दिल्ली के कारखाने और दस्तकारियाँ

हमारे प्रतिदिन काम में आनेवाली सैंकड़ों चीज़ें हैं। इनमें से बहुत-सी आज-कल मशीनों की सहायता से बनाई जाती हैं। दिल्ली में बहुतसे छोटे-बड़े कारखाने हैं जिनमें मशीनों की सहायता से अनेक प्रकार की चीज़ें तैयार होती हैं। कारखानों में मशीनों की सहायता से वे बहुत जल्दी और बहुत अधिक संख्या में बनती हैं। इसलिए वे आसानी से प्राप्त हो सकती हैं। ये मशीनें बिजली अथवा भाप से चलाई जाती हैं।

हाथ से चीज़े बनाने का काम भी दिल्ली में बहुत अच्छा होता है। यहाँ के चतुर कारीगर और दस्तकार बहुत सुन्दर-सुन्दर वस्तुएँ बनाते हैं।

मशीन और हाथ से बनी ये अनेक प्रकार की वस्तुएँ दिल्ली के बाज़ारों में तो बिकती ही हैं, अन्य शहरों और राज्यों को भी भेजी जाती हैं।

इस भाग में तुम्हें दिल्ली के कुछ प्रसिद्ध कारखानों और दस्तकारियों के विषय में जानकारी मिलेगी।

१६. दिल्ली के कारखाने

ज़रा अपने चारों ओर देखो। कितनी वस्तुएँ हैं जिनका तुम रोज़ प्रयोग करते हो और जो मशीनों से बनती हैं। तुम्हारे मोज़े, बनियन, कपड़े, पेन, पेंसिल, कागज़ बिस्कुट, तुम्हारे पिताजी की घड़ी, तुम्हारी माताजी की साड़ी और भाई की साइकिल आदि सभी चीज़ें मशीनों से बनती हैं। अपने घर में जिधर भी तुम देखोगे, कुछ न कुछ ऐसी चीज़ें मिल जाएँगी जो मशीन से बनी हैं। इनमें से कुछ ऐसी चीज़ें भी होंगी जो दिल्ली में बनी होंगी। तुम्हारे शहर में कई छोटे-बड़े कारखाने हैं जहाँ मशीनों से वस्तुएँ बनती हैं।

दिल्ली में सूती कपड़े बनाने की छोटी और बड़ी कई मिलें हैं। मोज़े, बनियान, दरियाँ, निवाड़ और सिले-सिलाए ऊनी, सूती व रेशमी कपड़े भी यहाँ कारखानों में तैयार होते हैं।

दिल्ली में खिलौनों की दुकानों पर तुम जो खिलौने देखते हो, उनमें से बहुतसे खिलौने दिल्ली के कारखानों में बने हैं। अब तो प्लास्टिक के खिलौने भी यहीं बनते हैं।

नई दिल्ली में चीनी मिट्टी के बर्तन बनाने के कई कारखाने हैं। इनमें चीनी मिट्टी के प्याले, प्लेटें चायदानी, मरतबान, आदि बनते हैं।

अब तो दिल्ली में बिजली के पंखे, लैम्प, लालटैन, लोहे की अलमारियाँ, ब्लेड, हल्की मशीनें और मोटरों के पुर्जे भी बनने लगे हैं।

तुम यह जानना चाहोगे कि इन सब वस्तुओं को मशीनों से क्यों बनाते हैं? मशीनें कैसे चलती हैं? तुम्हें कभी कोई कारखाना देखने का अवसर मिले तो अवश्य देखना। वहाँ तुम देखोगे कि चीज़ें कितनी तेज़ी से बनती हैं। मशीनों की सहायता से दिनों का काम घंटों में और घंटों का काम मिनटों में हो जाता है। बहुत-सी मशीनें बिजली से चलती हैं। मशीनों से थोड़े समय में बहुत अधिक वस्तुएँ तैयार हो जाती हैं।

जब चीज़ें इतनी शीघ्रता से और इतनी अधिक संख्या में बनाई जाती हैं तो उन्हें दूसरे स्थानों को भी भेजा जाता है। दिल्ली के कारखानों में बनी वस्तुएँ नगर के बाज़ारों में तो बिकती ही हैं, बाहर भी भेजी जाती हैं। बाज़ारों में ये वस्तुएँ बहुत सस्ती मिल जाती हैं। इन्हीं कारखानों के कारण आज लाखों बच्चों को मशीन के

एक कपड़ा मिल के अन्दर का दृश्य

बने तरह-तरह के खिलौने मिल पाते हैं। तुम्हारा प्लास्टिक का हवाई जहाज़ भी शायद किसी कारखाने में मशीन से बना है।

कारखानों में हज़ारों मज़दूर और दूसरे कर्मचारी काम करते हैं। ये लोग आसपास के गाँवों और अन्य राज्यों से आते हैं। दिल्ली की जनसंख्या बढ़ने का यह भी एक कारण है।

दिल्ली में कुछ बस्तियाँ ऐसी भी हैं, जहाँ तरह-तरह के कई छोटे-बड़े कारखाने एक ही जगह पर हैं। ओखला और नजफगढ़ दो ऐसी ही बस्तियाँ हैं। यहाँ के कारखानों में तरह-तरह की वस्तुएँ तैयार होती हैं। ऐसे स्थानों को औद्योगिक क्षेत्र कहते हैं। दिल्ली में और भी कई औद्योगिक क्षेत्र हैं।

अब बताओ

१. ऐसी चार चीज़ों के नाम बताओ जो दिल्ली के कारखानों में बनती हैं।
२. कारखानों में चीज़े तेज़ी से क्यों बनती हैं?
३. कारखानों से हमें जो लाभ होते हैं, नीचे लिखे वाक्यों में केवल उन पर (✓) निशान लगाओ जो सही हों :
   (क) बाज़ारों में चीज़ें सस्ती मिल जाती हैं।
   (ख) वस्तुएँ बहुत अधिक संख्या में बनती हैं।
   (ग) वस्तुएँ बनाने में बहुत समय लगता है।
   (घ) समय की बचत होती है।
४. नीचे दी हुई सूची में से कारखानों में बनी वस्तुओं के नाम छाँटो : पेन, पेंसिल, नहाने का साबुन, कंघा, चावल, निब, मेज़, कुर्सी, घड़ा, बनियान, प्याला, दही. बिजली का पंखा, लालटैन, आलू।

कुछ करने को

१. ओखला और नजफ़गढ़ जैसे दिल्ली के सभी औद्योगिक क्षेत्रों की एक सूची बनाओ और अध्यापक की सहायता से उन्हें दिल्ली क्षेत्र के नक्शे मे दिखाओ।
२. पास के किसी छोटे कारखाने में जाओ और देखो कि वहाँ किस प्रकार काम होता है।

१७. हमारी दस्तकारियाँ

ऊपर की तस्वीर को ध्यान से देखो। इस तस्वीर में कई वस्तुएँ हैं।

ये सब दस्तकारी की वस्तुएँ हैं। ये मशीनों से नहीं, हाथ से बनाई गई हैं। हाथ से वस्तुएँ बनाने में बड़ी मेहनत लगती है। अच्छा दस्तकार बड़े धीरज और लगन से काम करता है। वह बहुत सफ़ाई और बारीकी से अपनी वस्तु बनाता है। कभी-कभी उसे एक ही वस्तु को बनाने में कई दिनों तक काम करना पड़ता है।

दस्तकार की बनाई हुई एक ही तरह की वस्तुओं में कुछ न कुछ अन्तर हो सकता है। वह प्रत्येक वस्तु में अपने हाथ की कारीगरी दिखाता है और अपनी इच्छा से उसकी बनावट में हेर-फेर करता है। मशीन ऐसा नहीं कर सकती। मशीनों की सहायता से वस्तुएँ बहुत शीघ्रता से और अधिक संख्या में तो तैयार हो जाती हैं, लेकिन मशीनें केवल एक ही बनावट की वस्तुएँ बनाती हैं।

दिल्ली तरह-तरह की दस्तकारियों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ बहुत-से कुशल कारीगर और दस्तकार रहते हैं जो बढ़िया वस्तुएँ बनाते हैं।

दिल्ली में हाथीदाँत का काम बहुत अच्छा होता है। हाथीदाँत के तरह-तरह के खिलौने, सजावट की सुन्दर-सुन्दर वस्तुएँ, बटन, कंघे आदि बनते हैं। हाथीदाँत बहुत

सख़्त और कीमती होता है। इसकी वस्तुएँ बनानेवाले बड़ी सावधानी से काम करते हैं। ज़रा-सी भूल हो जाए, तो सारी मेहनत बेकार हो जाती है, लेकिन चतुर कारीगरों के हाथ बहुत सधे हुए होते हैं। वे अपने बारीक और पैने औज़ारों की सहायता से हाथीदाँत की एक से एक अनोखी वस्तु बनाते हैं।

सोने-चाँदी के गहने बनाने का काम तो दिल्ली में बहुत ही अच्छा होता है। सुनार इन गहनों को बड़ी मेहनत और होशियारी से बनाते हैं। वे अपनी पतली-सी छैनी और छोटी-सी हथौड़ी की सहायता से काम करते हैं और गहनों पर तरह-तरह के रंगदार नमूने बड़ी सफ़ाई से बनाते हैं। रंग-बिरंगे नगों और हीरों के जड़े जाने से तो इन गहनों की कीमत कई गुना बढ़ जाती है। दिल्ली के बने जड़ाऊ गहनों को खरीदने के लिए दूर-दूर के लोग आते हैं।

कढ़ाई, बुनाई और कशीदाकारी भी दिल्ली की एक अच्छी दस्तकारी है। लड़कियाँ और स्त्रियाँ घर-घर में यह काम करती हैं। कुछ लोग सुन्दर, रंगीन और नए-नए नमूनों के कालीन बनाते हैं और मखमली और रेशमी कपड़ों पर कढ़ाइ का सुन्दर काम करते हैं।

तुमने अपने पड़ोस में कुम्हार को मिट्टी के बर्तन बनाते हुए देखा होगा। मिट्टी की बनी रंग-बिरंगी मूर्तियाँ और सुन्दर-सुन्दर खिलौने भी दिल्ली में बनते हैं और बाज़ारों में खूब बिकते हैं। अच्छे दस्तकार इन वस्तुओं के ऊपर तरह-तरह के रंगों के नमूने बनाकर इन्हें और भी सुन्दर बना देते हैं।

कुछ दस्तकारी की वस्तुओं के बनाने में ताँबा, पीतल, काँसा और चाँदी का भी प्रयोग होता है। यहाँ इन धातुओं की तश्तरियाँ, प्याले, गिलास, मोमबती स्टेंड, पान-दान, फूलदान, देवी-देवताओं की मूर्तियाँ और अनेक प्रकार की सजावट की चीज़े और खिलौने बनाए जाते हैं। दस्तकार लोग इन चीज़ों पर सुन्दर नमूने और चित्र खोदते हैं। इसको 'नक्काशी' कहते हैं। कुछ कारीगरों की बनाई मूर्तियाँ तो ऐसी लगती हैं मानो अभी बोल पड़ेंगी।

विदेशी लोग हमारी दस्तकारी की वस्तुओं को बहुत पसन्द करते हैं। वे इन्हें चाव से खरीदते हैं और इनसे अपने घरों को सजाते हैं। दस्तकारी की इन वस्तुओं में हमारे रहन-सहन और पुरानी कला की झलक मिलती है।

अब बताओ

१. मशीन की बनी हुई और हाथ की बनी हुई वस्तुओं में क्या अन्तर होता है?
२. दस्तकार को बड़ी सावधानी से क्यों काम करना पड़ता है?
३. दस्तकार की बनी एक ही तरह की वस्तुओं में इतनी भिन्नता क्यों पाई जाती है?
४. विदेशी लोग हमारी दस्तकारी की वस्तुओं को क्यों अधिक खरीदते हैं?
५. नीचे लिखी दस्तकारियों में से केवल उन्हीं के आगे सही का निशान (✓) लगाओ जिनके लिए दिल्ली प्रसिद्ध है:

(क) हाथीदाँत का काम ( )
(ख) पीतल के बर्तनों पर नक्काशी का काम ( )
(ग) सोने-चाँदी के गहने बनाने का काम ( )
(घ) टोकरियाँ बनाने का काम ( )
(ङ) कढ़ाई, बुनाई और कशीदाकारी का काम ( )
(च) लिहाफों की रंगाई का काम ( )
(छ) मिट्टी के बर्तन और खिलौनों का काम ( )

कुछ करने को

१. दिल्ली के किसी बाज़ार में दस्तकारी की वस्तुओं की किसी दुकान पर जाओ और मालूम करो कि यहाँ बिकनेवाली कौन-कौनसी वस्तुएँ दिल्ली में बनती हैं।
२. अपने घर की वस्तुओं में से मशीन से बनी और हाथ से बनी वस्तुओं की दो अलग-अलग सूचियाँ बनाओ।

दिल्ली क्षेत्र के गाँव

दिल्ली क्षेत्र में बहुत से गाँव हैं। गाँवों के रहनेवालों का जीवन शहर के लोगों से कुछ भिन्न है। गाँवों के लोग अधिकतर खेती-बाड़ी करते हैं। वे हमारे लिए अनाज और सब्ज़ियाँ उगाते है। गाँवों और शहरों के रहनेवाले अपनी बहुत-सी ज़रूरतों के लिए एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। दिल्ली शहर में अनाज के साथ-साथ दूध, अंडे, सब्ज़ियाँ आदि गाँवों से आते हैं। वहाँ से हज़ारों लोग शहर में काम करने भी आते हैं। शहर से तरह-तरह का बना-बनाया सामान गाँवों को जाता हैं। तुम्हारी किताबें, कापियाँ, पेंसिलें आदि भी शहर ही से गाँवों की दुकानों में पहुँचती हैं।

इस भाग में तुम पढ़ोगे कि दिल्ली क्षेत्र के गाँवों में आजकल शहर की सी सुविधाएँ मिलने लगी हैं। गाँव-गाँव में स्कूल और अस्पताल खुल रहे हैं। आने-जाने के लिए पक्की सड़कें बन रही हैं। अधिक से अधिक गाँवों में बिजली पहुँचाई जा रही है। खेती की सिंचाई के लिए नलकूप लगाए जा रहे हैं। सभी गाँवों में ग्राम-पंचायतें हैं। ये पंचायतें गाँववालों की भलाई के लिए काम करती हैं।

हमारे गाँव आजकल बड़ी उन्नति कर रहे हैं।
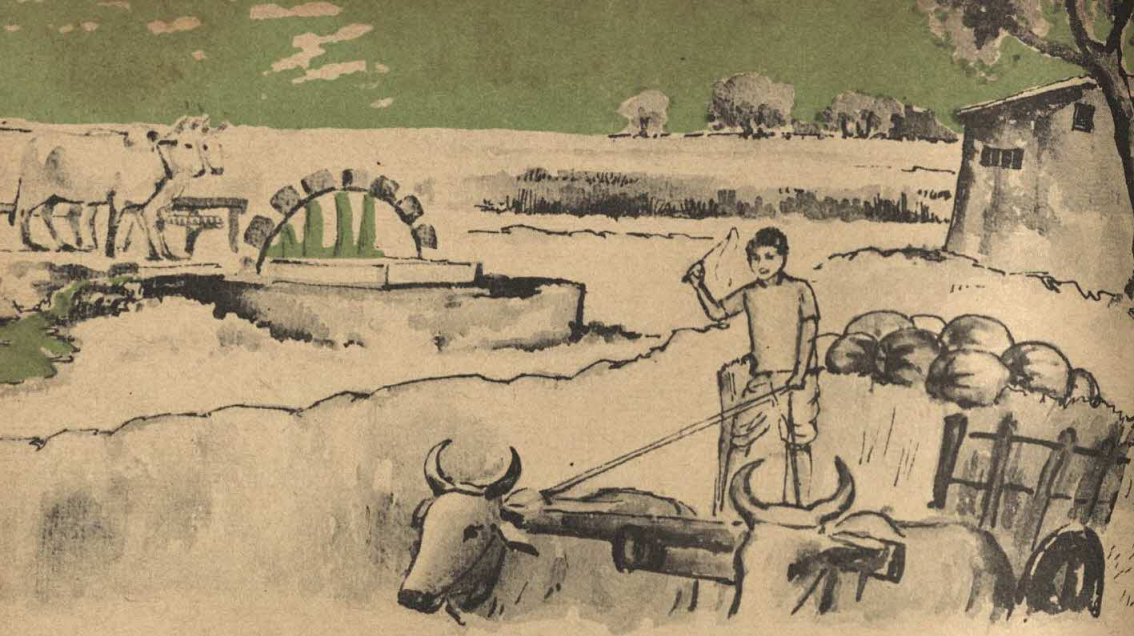
१८. दिल्ली के एक गाँव की सैर

तुम पढ़ चुके हो कि दिल्ली क्षेत्र के अधिक भाग में दिल्ली नगर फैला हुआ है। शेष भाग में लगभग तीन सौ छोटे-बड़े गाँव हैं। इनमें से कुछ गाँव अब नगर के बीच में आ गए हैं। इन गाँवों में बहुत-सी बातें नगर की सी हो गई हैं, लेकिन दूर वाले गाँवों का जीवन आज भी नगर के जीवन से बहुत भिन्न है।

चलो, तुम्हें दिल्ली क्षेत्र के एक गाँव की सैर कराएँ।

यह गाँव शहर से लगभग बारह किलोमीटर दूर यमुना के किनारे पर बसा हुआ है। पक्की सड़क जिस पर दिल्ली परिवहन की बसें चलती है, यहाँ से लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर है। वहाँ से गाँव तक कच्ची सड़क जाती है। इस कच्ची सड़क पर तुम्हें बैलगाड़ी से या पैदल चलकर गाँव जाना होगा।

सर्दी के दिनों में इस कच्ची सड़क के दोनों ओर गेहूँ, जौ और चने के खेत दिखाई देते हैं। बरसात में ज्वार, बाजरे के हरे-भरे खेत लहलहाते हैं। यहाँ तुम्हें जगह-जगह पर गाँव के लोग खेतों में काम करते दिखाई देंगे। वह देखो, एक किसान अपने खेत में हल चला रहा है। पास ही दूसरे खेत में कुछ स्त्रियाँ और बच्चे आलुओं की निराई कर रहे हैं। थोड़ी दूर पर रहट चल रहा है। शायद वे तरकारियों के खेत की सिंचाई कर रहे हैं। वहाँ कुछ दूर पर एक नल-कूप है जो बिजली से चलता है।

उधर गाँव की ओर से कुछ बैलगाड़ियाँ आ रही हैं। इनमें गेहूँ, चने और जौ की बोरियाँ भरी हुई हैं। एक बैलगाड़ी में आलू, गोभी, टमाटर, प्याज़ आदि तरकारियाँ भरी हुई हैं। ये सब इस गाँव के उपजाऊ खेतों की पैदावार हैं। किसान लोग इन्हें दिल्ली नगर के बड़े बाजारों और मंडियों में बेचने जा रहे हैं।

लो, गाँव आ गया। आओ, गाँव के अन्दर चलें। यहाँ तुम्हें कच्चे और पक्के दोनों प्रकार के मकान मिलेंगे। कहीं-कहीं पर फूँस के छप्पर भी बने हुए हैं। वह देखो, एक व्यक्ति छप्पर में कुट्टी की मशीन चला रहा है। वह कुर्ता और धोती पहने हुए है। साड़ी-ब्लाऊज़ पहने एक लड़की मशीन में चारा डाल रही है। वे दोनों अपने पशुओं के लिए कुट्टी काट रहे हैं।

उधर से कुछ स्त्रियाँ लहँगे पहने और ओढ़नी ओढ़े, सिरों पर बड़े-बड़े टोकरे उठाए चली आ रही हैं। इनके परिवार के दूसरे लोग सुबह से ही हल-बैल लेकर खेतों में काम करने गए हुए हैं। ये इन टोकरों में उनके लिए दोपहर का भोजन और
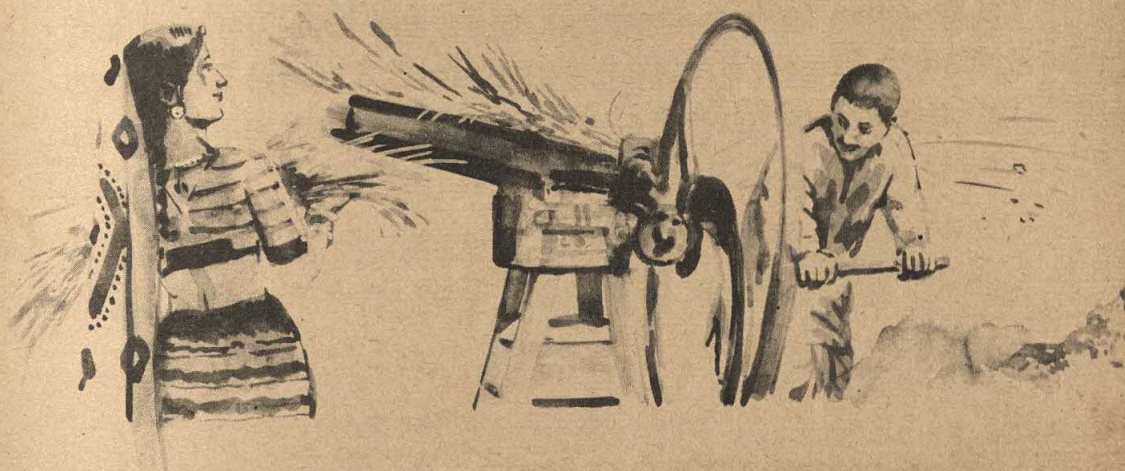
बैलों के लिए चारा ले जा रही हैं। दिल्ली के गाँवों के लोग अधिकतर गेहूँ, चने या बाजरे की रोटी खाते हैं। चावल खाने का रिवाज यहाँ पर बहुत कम है।

तुम देख रहे हो कि इस गाँव में एक छोटासा मन्दिर है। यहाँ एक मस्जिद भी है। यहाँ हिन्दू, मुसलमान और अन्य कई धर्मों को माननेवाले लोग आपस में बड़े मेलमिलाप से रहते हैं। सब मिलकर कई प्रकार के मेले लगाते हैं, उत्सव और त्यौहार मनाते हैं।

अब ज़रा इस गली में आओ। एक गाँववाला कुछ मुर्ग़ियों को दाना खिला रहा है। यहाँ पर और भी बहुत सी मुर्ग़ियाँ दड़बों में बन्द हैं। यह तो एक छोटासा मुर्ग़ीघर है। यह आदमी मुर्गी पालने का काम करता है। वह अंडों को दिल्ली के बाज़ार में बेच देता है।

तुम इस चौड़ी गली में कुछ कच्ची पक्की दुकानें देख रहे हो। गाँववाले अपनी ज़रूरत की वस्तुएँ इन्हीं दुकानों से मोल लेते हैं। यही इस गाँव का छोटासा बाज़ार है।

अब हम गाँव के दूसरे सिरे पर आ गए हैं। गाँव के बाहर तुम जो छोटी-सी पक्की इमारत देख रहे हो, यह इस गाँव की प्राथमिक पाठशाला है। तुम जैसे छोटे लड़के-लड़कियाँ इस पाठशाला में पढ़ते हैं। पाठशाला के पास ही एक दूसरी इमारत भी है। यह गाँव का 'पंचायतघर' है।

शाम होने वाली है। आओ अब लौट चलें। देखो, फिर वही कच्ची सड़क आ गई। किसान लोग अभी तक अपने खेतों में काम कर रहे हैं। कुछ लोग साइ-किलों पर सवार होकर गाँव की ओर लौट रहे हैं। इनके कपड़े तो बिल्कुल शहरी लोगों के से हैं। जानते हो ये कौन हैं? ये सब इसी गाँव के रहनेवाले हैं। ये अवश्य ही दिल्ली नगर के किसी न किसी दफ्तर या कारखाने में नौकरी करते होंगे। छुट्टी के बाद शाम को अपने घर लौट रहे हैं।

कुछ लोग तेज़ साइकिल चलाते हुए शहर की ओर भी जा रहे हैं। इनकी साइकिलों पर दूध के बड़े बड़े डिब्बे लटके हुए हैं। ये गाँव से दूध लेजाकर शहर में बेचते हैं।
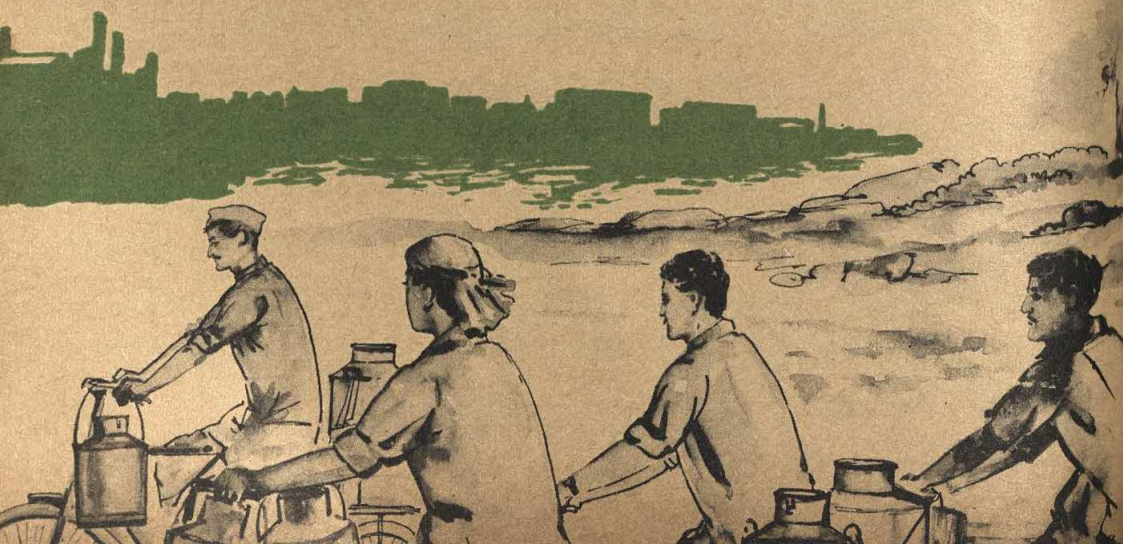
लो, हम पक्की सड़क पर पहुँच गए। अब बताओ, कैसी लगी तुम्हें दिल्ली-क्षेत्र के इस गाँव की सैर।

गाँव के लोग सादा ढंग से रहते हैं। वे मोटा खाते हैं और मोटा पहनते हैं। वे दिनभर कठिन परिश्रम करते हैं और हमारे लिए अनाज और तरकारियाँ पैदा करते हैं।

अब बताओ

१. दिल्ली-क्षेत्र में गाँवों की संख्या क्यों कम होती जा रही है?
२. गाँव के लोग क्या-क्या काम करते हैं?
३. दिल्ली-क्षेत्र में किसान अधिकतर कौनसी फ़सलें उगाते हैं?
४. ग्रामों में पैदा होने वाली क्या-क्या वस्तुएँ दिल्ली नगर को भेजी जाती हैं?
५. खाली स्थान भरो :
   (क) दिल्ली-क्षेत्र में लगभग —— गाँव हैं।
   (ख) दिल्ली-क्षेत्र के गाँवों में पुरुष अधिकतर —— पहनते हैं और स्त्रियाँ अधिकतर — पहनती हैं।
   (ग) दिल्ली के गाँवों में चावल खाने का रिवाज —— है।
   (घ) गाँवों में —— और —— घर होते हैं।

कुछ करने को

१. यदि तुम नगर के किसी भाग में रहते हो तो अपने अध्यापक के साथ पास के किसी गाँव के भ्रमण के लिए जाओ और गाँववालों के जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त करो।
२. यदि तुम गाँव में रहते हो तो अपने गाँव में पैदा होनेवाली वस्तुओं के नामों की एक सूची बनाओ।

१६. ग्राम-पंचायतें

पिछले पाठ में तुमने दिल्ली क्षेत्र के एक गाँव में रहने वालों के बारे में बहुतसी बातें सीखीं। इस पृष्ठ पर तुम एक इमारत का चित्र देख रहे हो। यह इसी गाँव का 'पंचायत घर' है। यह इमारत गाँव के बाहर बनी हुई है। इसे यहाँ की ग्राम पंचायत ने बनवाया है। पंचायत की बैठकें यहीं होती हैं।

तुम जानते हो कि शहर के लोग अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए नगर-निगम या नगरपालिका का चुनाव करते हैं। इसी प्रकार गाँववाले भी अपनी छोटी-बड़ी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए एक समिति बनाते हैं। इसको 'ग्राम पंचायत' कहते हैं।

दिल्ली क्षेत्र के बहुतसे गाँवों में ऐसी ग्राम-पंचायतें हैं। जो गाँव बहुत छोटे हैं, उनको साथ मिलाकर दो या तीन गाँवों की एक ग्राम पंचायत बनाई जाती है। एक ग्राम पंचायत में कम से कम पाँच और अधिक से अधिक ग्यारह सदस्य हो सकते हैं जिनको पंच कहते हैं। प्रत्येक ग्राम पंचायत के पंच अपना-अपना एक सरपंच चुनते हैं। सरपंच ग्राम पंचायत का अध्यक्ष होता है।

ग्राम पंचायतों के चुनाव हर तीन वर्ष के बाद होते हैं।

पंचायतघर के सामने गाँव का प्राथमिक स्कूल है। इसमें गाँव के लड़के-लड़कियाँ पढ़ते हैं। इसका भवन ग्राम पंचायत ने बनवाया है। समय-समय पर वही इसकी मरम्मत भी कराती है।

पास ही एक कुआँ है। कई स्त्रियाँ पानी भर रही हैं। गाँव के रहनेवाले इसी कुएँ से पीने का पानी लेते हैं। गाँव में इस प्रकार के और भी कुएँ हैं। ग्राम पंचायत इन कुओं की सफ़ाई कराती है। यदि कुआँ टूट-फूट जाए तो उसकी मरम्मत भी कराती है।

तुम देख रहे हो कि इस गाँव की गलियाँ पक्की हैं। ग्राम पंचायत ने ही इन गलियों को पक्का कराया है। पानी के निकास के लिए पक्की नालियाँ भी बनी हुई हैं। इनकी सफ़ाई का काम भी ग्राम पंचायत कराती है।

गाँव में बिजली के खम्बे लगे हुए हैं। रात के समय सभी गलियों और रास्तों में बिजली से रोशनी की जाती है। दिल्ली-क्षेत्र के ग्रामों में बिजली लगवाने का प्रबन्ध तो दिल्ली नगरनिगम करता है, लेकिन इस काम के लिए थोड़ा-सा खर्च ग्राम पंचायतें भी देती हैं।
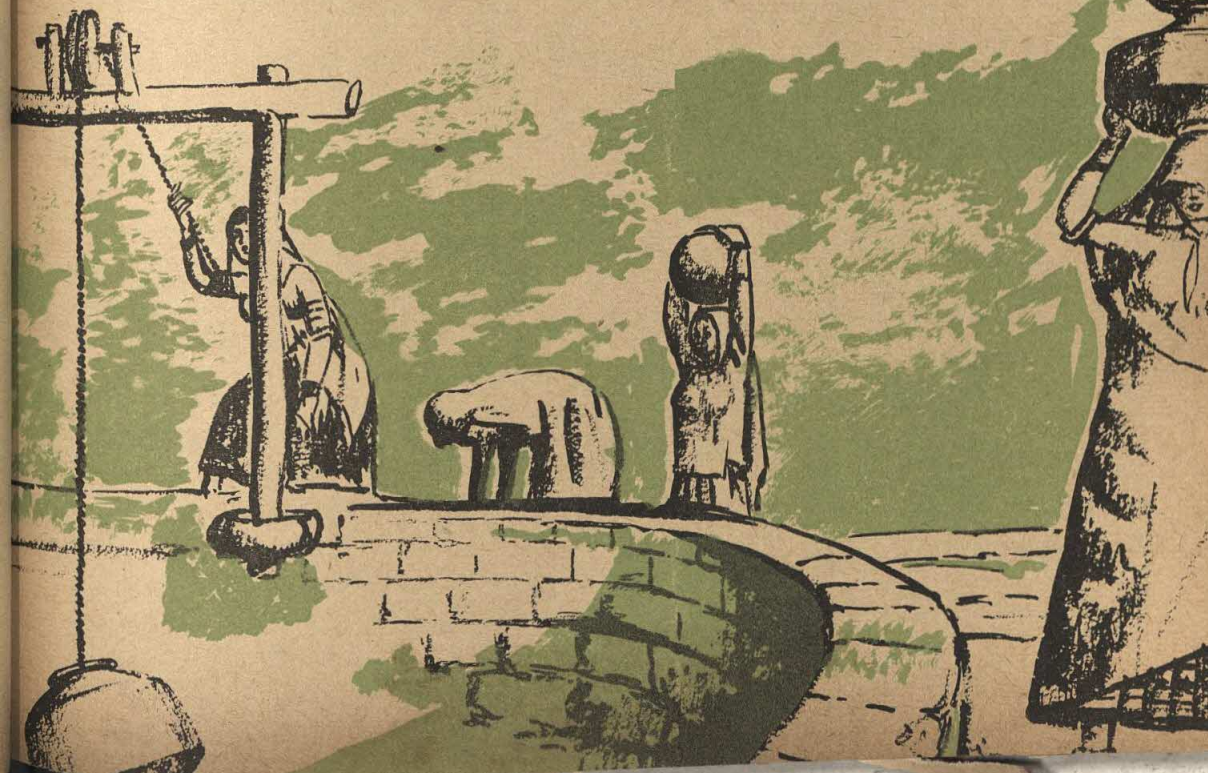
ग्राम पंचायतें गाँवों की भलाई और सुधार के लिए और भी बहुतसे काम करती हैं। इन कामों पर बहुतसा धन खर्च होता है। तुम जानना चाहोगे कि यह धन ग्राम पंचायतों के पास कहाँ से आता है।

ग्राम पंचायतों के पास गाँव की कुछ भूमि होती है। वे इस भूमि में खेती कराती हैं और उसकी उपज को बेचकर धन प्राप्त करती हैं। इसके अलावा ग्राम पंचायतें गाँववालों पर एक कर भी लगाती हैं, जो प्रति वर्ष लिया जाता है। सरकार भी उनको कुछ सहायता देती है।

आओ, पंचायतघर की बैठक में चलें। यहाँ पर तो बहुत से लोग बैठे हुए हैं। पंचायत की बैठक हो रही है। दो पड़ोसियों में खेत की मेंढ़ पर झगड़ा हो गया था। उन्होंने बारी-बारी अपनी बात पंचायत के पंचों को सुनाई। पंचों ने दोनों की बात सुनी
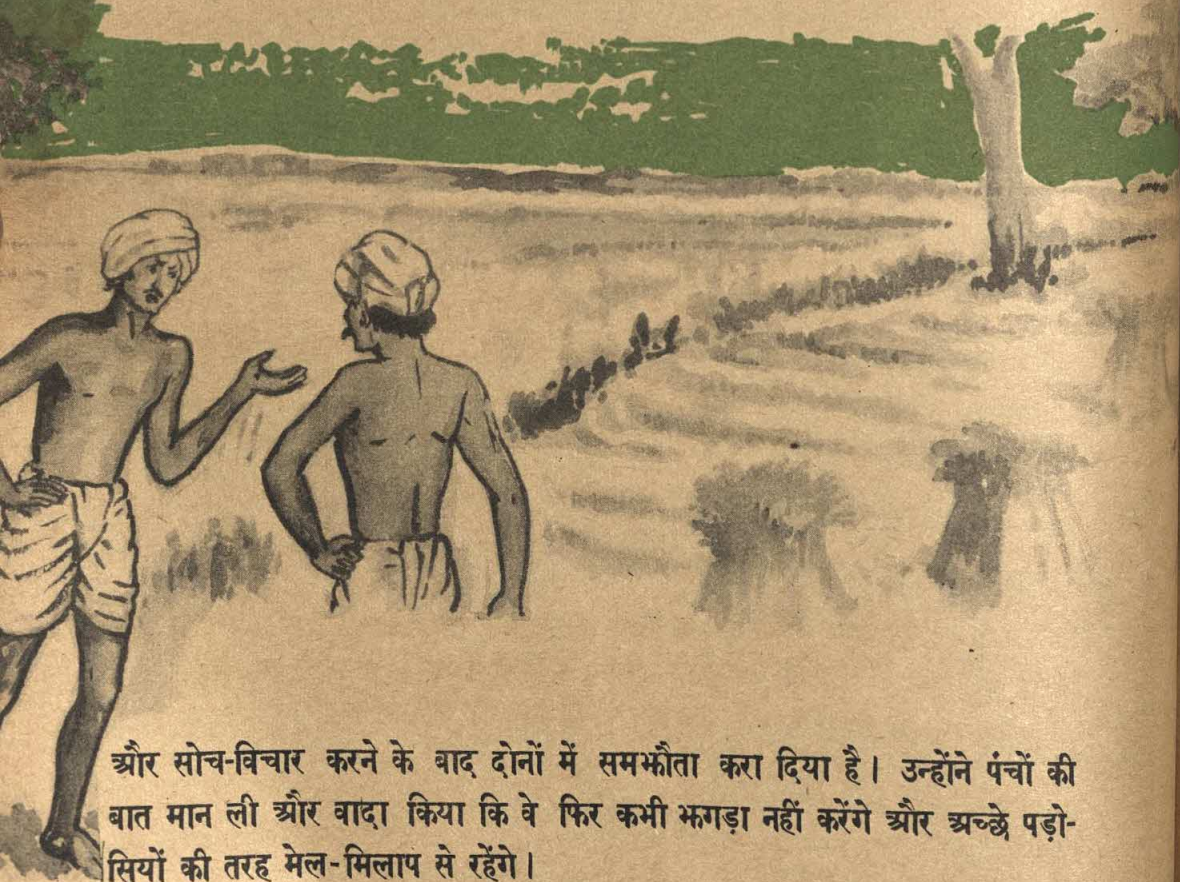
और सोच-विचार करने के बाद दोनों में समझौता करा दिया है। उन्होंने पंचों की बात मान ली और वादा किया कि वे फिर कभी झगड़ा नहीं करेंगे और अच्छे पड़ोसियों की तरह मेल-मिलाप से रहेंगे।

ग्राम पंचायतें इसी प्रकार के छोटे-मोटे झगड़[illegible] [illegible] निबटारा करती है।

ग्राम पंचायतों की सहायता के लिए बहुत-से सरकारी कर्मचारी भी होते हैं, जैसे ग्रामसेवक, पटवारी, पंचायत अधिकारी आदि। गाँववाले भी सभी कामों में पंचायत की मदद करते हैं और सहयोग देते हैं।

पंचों का चुनाव जनता करती है। वे जनता की भलाई के लिए ही काम करते हैं। इसी लिए हम कह सकते हैं कि पंचायती राज किसी एक आदमी का राज नहीं, सारी जनता का राज है।

पंचायती राज के द्वारा हमारे गाँव आगे बढ़ रहे हैं।

अब बताओ

१. ग्राम पंचायतें क्या-क्या कार्य करती हैं?
२. ग्राम पंचायतों की आय के क्या-क्या साधन हैं?
३. हमें ग्राम पंचायत के कामों में क्यों मदद करनी चाहिए?
४. बड़े होकर यदि तुम सरपंच बन जाओ तो गाँव के लिए क्या करोगे?
५. खाली स्थान भरो:
   (क) पंचायती राज____का राज है।
   (ख) पंचायत गाँव में____बढ़ाने में मदद करती है।
   (ग) एक ग्राम पंचायत में कम से कम____और अधिक से अधिक____ पंच हो सकते हैं।
   (घ) ग्राम पंचायत की सहायता के लिए कुछ सरकारी____होते हैं।

कुछ करने को

१. अपने अथवा पास के किसी गाँव के सरपंच को निमंत्रण देकर अपनी पाठशाला में बुलाओ और उससे पंचायत के कामों के बारे में जानकारी प्राप्त करो।
२. अपनी कक्षा में ग्राम पंचायत की बैठक का अभिनय करो।
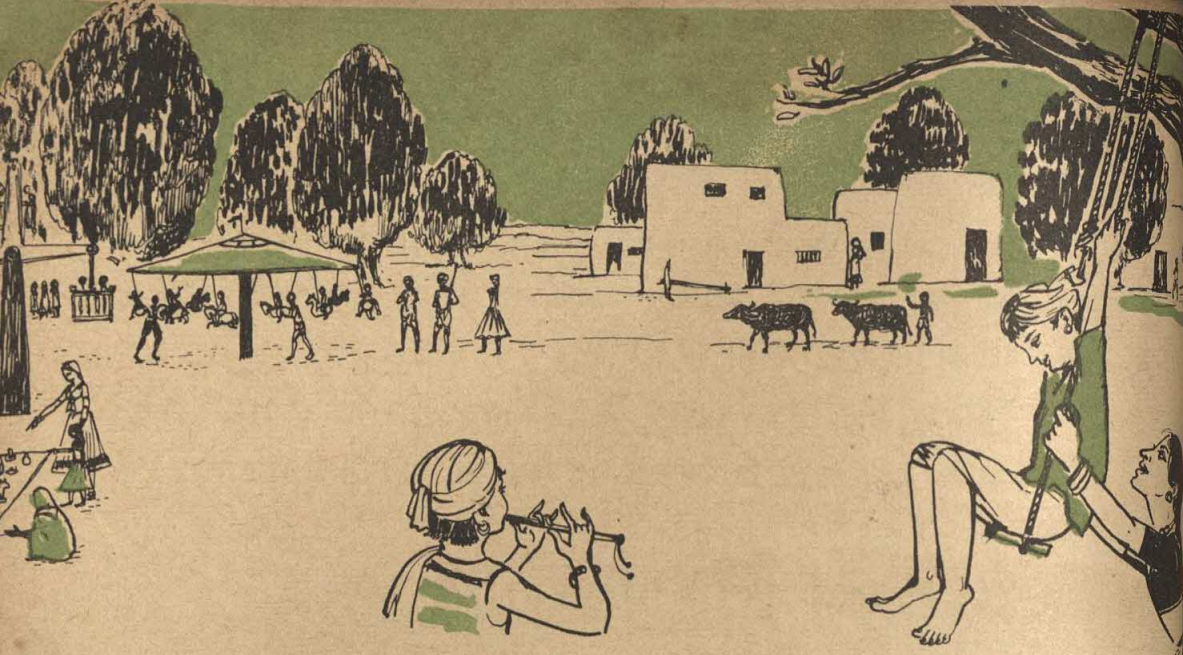
दिल्ली के पड़ोसी राज्य

पिछले पाठों में तुमने 'दिल्ली क्षेत्र' के विषय में जानकारी प्राप्त की। 'दिल्ली क्षेत्र' की तरह हमारे देश में और भी कई छोटे-बड़े क्षेत्र और राज्य हैं। दिल्ली के पड़ोस में हरियाना, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और पंजाब राज्य हैं। इनमें से दो राज्य 'हरियाना' और 'उत्तर प्रदेश' से तो दिल्ली क्षेत्र की सीमाएँ मिलती हैं।

तुम्हें मालूम ही है कि दिल्ली भारत की राजधानी है। इसका सम्बन्ध देश के सभी भागों से है, लेकिन पड़ोसी राज्य होने के कारण उत्तर प्रदेश और हरियाना से तो बहुत अधिक सम्बन्ध है। सुबह हज़ारों लोग इन राज्यों के पासवाले भाग से दिल्ली में काम करने आते हैं और शाम को लौटकर जाते हैं। हम इन राज्यों को बहुत-सी वस्तुएँ भेजते हैं और वहाँ से बहुतसी वस्तुएँ मंगाते हैं। इस प्रकार सभी राज्य बहुत-सी चीज़ों के लिए एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं।

विभिन्न राज्यों के रहनेवालों के जीवन में कुछ भिन्नताएँ अवश्य हैं, लेकिन सभी राज्य भारत के अंग हैं। सबकी उन्नति में ही भारत की उन्नति है। इस भाग में तुम दिल्ली के इन्हीं पड़ोसी राज्यों के विषय में पढ़ोगे।
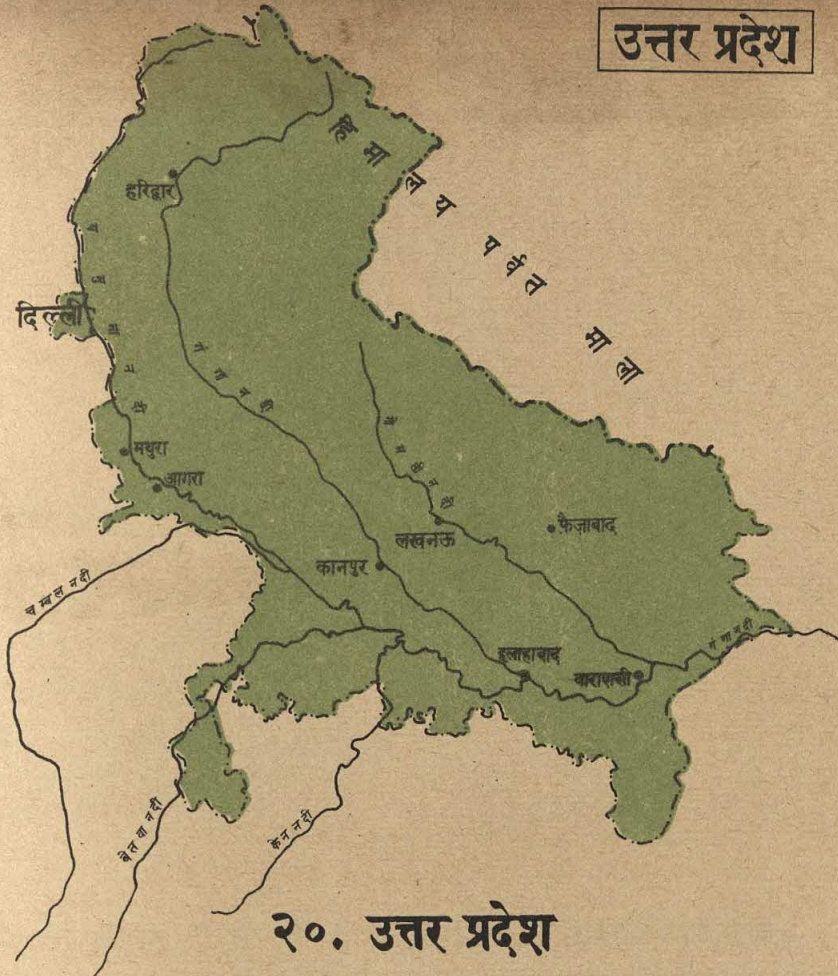
२०. उत्तर प्रदेश

यदि तुम किसी दिन लगभग नौ बजे सुबह दिल्ली के बड़े स्टेशन पर जाओ तो वहाँ तुम्हें हज़ारों लोग गाज़ियाबाद से आए हुए मिलेंगे। ये लोग दिल्ली में काम करने के लिए आते हैं। गाज़ियाबाद हमारे पड़ोसी राज्य उत्तर प्रदेश का एक शहर है।

मानचित्र में देखो। उत्तर प्रदेश दिल्ली के पूर्व में है। यह एक बहुत बड़ा राज्य है। इसमें दिल्ली जैसे लगभग दो सौ राज्य बन सकते है। जनसंख्या में तो यह भारत के सभी राज्यों से बड़ा है। जानते हो कितने लोग इसमें रहते हैं? लगभग आठ करोड़।

मानचित्र में देखो। सारे उत्तर प्रदेश में नदियों का जाल-सा बिछा हुआ है। गंगा और यमुना दो बड़ी नदियाँ इसके बीच से बहती हैं। इन बड़ी नदियों में कई छोटी-छोटी नदियाँ आकर मिलती हैं। ये गंगा, यमुना की सहायक नदियाँ हैं। इनमें चम्बल, गोमती, सरयू, बेतवा और केन मुख्य हैं। तुम इन्हें मानचित्र में ढूँढ सकते हो।
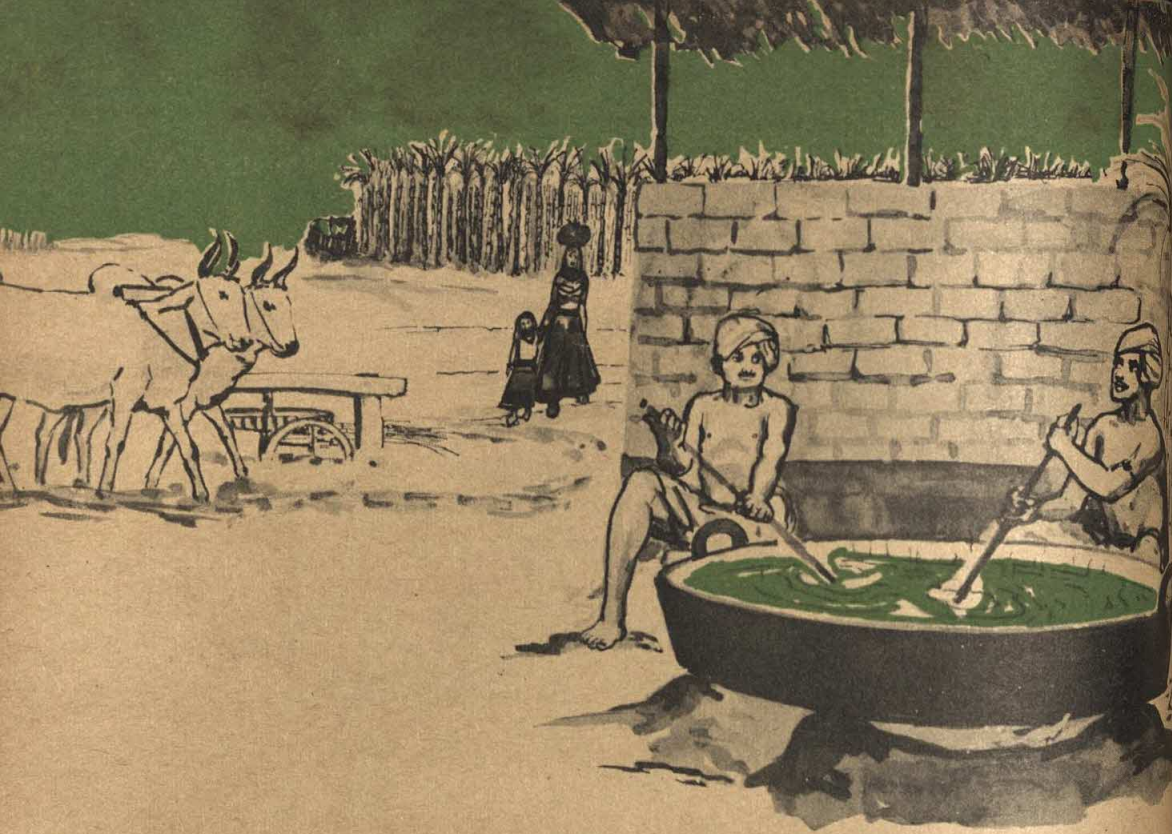
उत्तर प्रदेश में लगभग चालीस हज़ार गाँव हैं। इन गाँवों के रहनेवाले लोग अधिकतर खेतीबाड़ी करते हैं। तुम कभी उत्तर प्रदेश के किसी गाँव में जाओ तो देखोगे कि गाँव के आसपास खेतों में किसान काम कर रहे हैं। दूर-दूर तक हरे-भरे खेत लहलहा रहे हैं। जगह-जगह पर आम, अमरूद, जामुन और महुवा के पेड़ हैं। कहीं कोई किसान अपने खेत में हल चला रहा है, तो कोई रहट चलाकर खेतों की सिंचाई कर रहा है। आजकल तो बहुत-से गाँवों में नलकूपों से भी सिंचाई होती है। नदियों से बहुत-सी नहरें भी निकाली गई हैं। इनके पानी से भी खेतों की सिंचाई की जाती हैं।

उत्तर प्रदेश की भूमि बहुत उपजाऊ है। यहाँ पैदावार खूब होती हैं। गेहूँ और गन्ने की भारी उपज के लिए तो यह राज्य सारे भारत में प्रसिद्ध है। जौ, चना, आलू, आदि की खेती भी यहाँ होती है। इलाहाबाद के अमरूद और लखनऊ के आम तुमने अवश्य खाए होंगे। उत्तर प्रदेश में जगह-जगह पर बड़े-बड़े बाग़ हैं जिनमें आम, अमरूद, जामुन और लीची खूब होते हैं।

तुम यदि उत्तर प्रदेश के किसी गाँव के पनघट पर जाओ तो साड़ी-ब्लाऊज़ या लहँगा-ओढ़नी पहने हुए स्त्रियाँ पानी भरती हुई मिलेंगी। गाँवों में कच्चे-पक्के घर

होंगे और धोती-कुर्ता और टोपी पहने हुए पुरुष दिखाई देंगे। यहाँ के सभी लोग हिन्दी बोलते हैं। गाँव के निवासियों का पहनावा और रहन-सहन, दिल्ली क्षेत्र के ग्राम वासियों से बहुत मिलता-जुलता है।

इस राज्य में कई बड़े उद्योग भी हैं। गन्ने के रस से गुड़ और चीनी बनाने के तो यहाँ बहुत से कारखाने हैं, जिनमें प्रतिवर्ष लाखों क्विंटल चीनी तैयार होती है। यह चीनी विदेशों को भी भेजी जाती है।

बड़े-बड़े कारखाने अधिकतर बड़े शहरों में हैं। कानपुर एक बहुत बड़ा औद्योगिक शहर है। यहाँ पर ऊनी-सूती कपड़े और चमड़े का सामान बनाने के कारखाने बहुत प्रसिद्ध हैं।

आगरे का ताजमहल संसार भर में प्रसिद्ध है। यह सुन्दर इमारत सफ़ेद संगमरमर की बनी हुई है। इसे मुग़ल बादशाह शाहाजहाँ ने बनवाया था।

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ एक सुन्दर और पुराना नगर है। यह गोमती नदी के किनारे बसा हुआ है। यहाँ पर अवध के नवाबों के समय के कई इमामबाड़े और इमारतें हैं।

इलाहाबाद में गंगा और यमुना का संगम होता है। इसका पुराना नाम प्रयाग है। यह हिन्दुओं का एक बहुत प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। प्रति बारह वर्षों के बाद यहाँ कुम्भ मेला लगता है। देश के हर भाग से लाखों लोग इस अवसर पर गंगास्नान करने आते हैं। क्या तुम्हें मालूम है कि स्वर्गीय चाचा नेहरू का जन्म भी इलाहाबाद में ही हुआ था।

लखनऊ का एक छोटा इमामबाड़ा
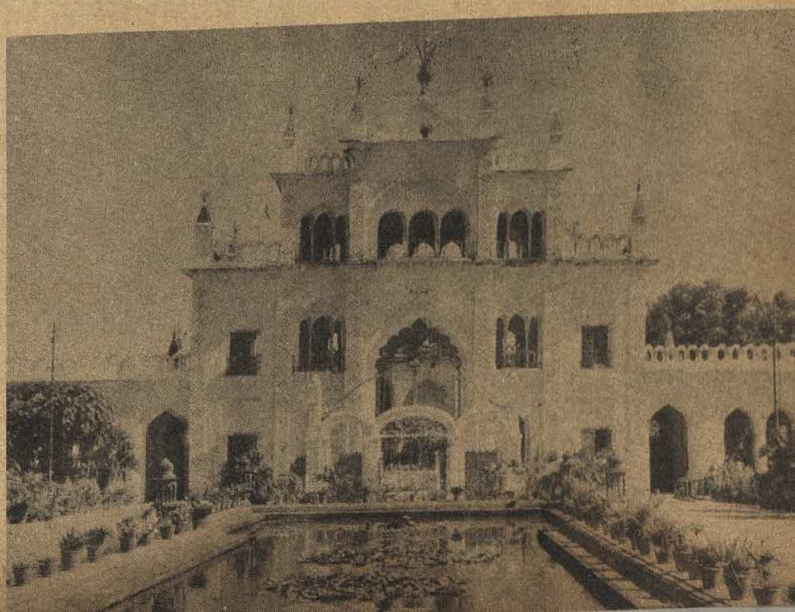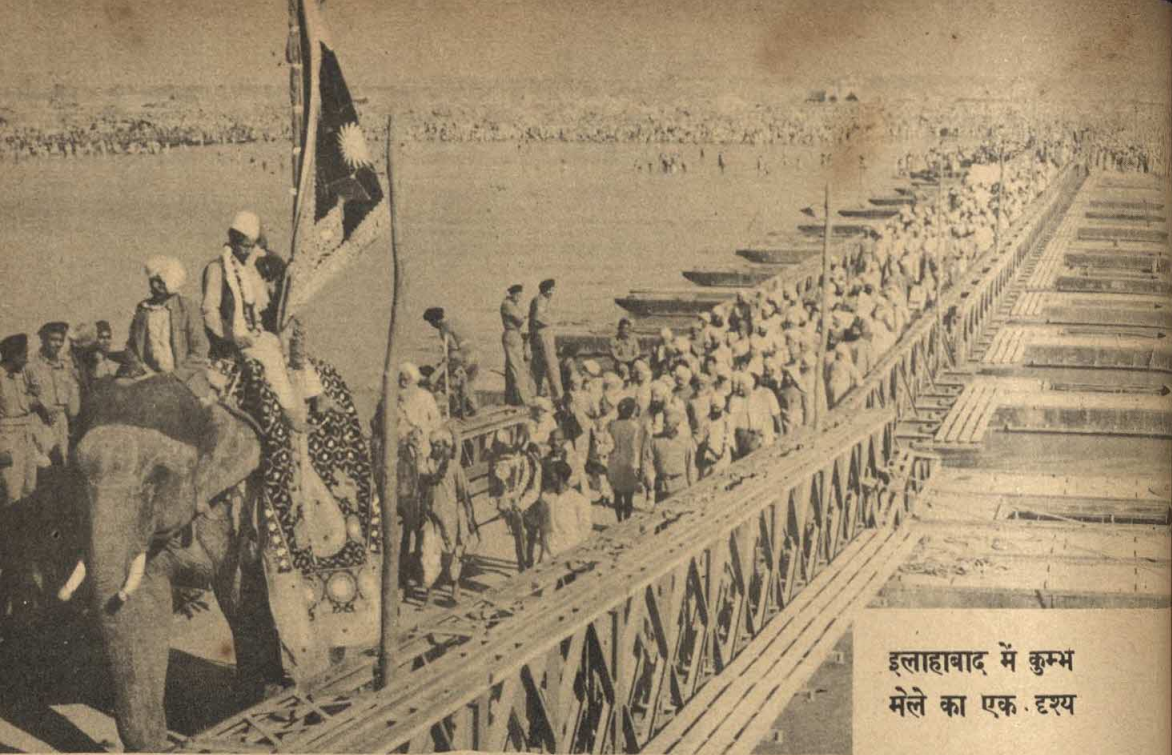
इलाहाबाद में कुम्भ मेले का एक दृश्य

इस राज्य में और भी कई तीर्थस्थान हैं, जैसे मथुरा, वृन्दावन, वाराणसी, हरिद्वार, अयोध्या, आदि। इन स्थानों पर बहुत-से प्रसिद्ध मन्दिर हैं। वाराणसी के पीतल के बरतन और बनारसी साड़ियाँ मशहूर हैं।

उत्तर प्रदेश के उत्तरी भाग में हिमालय पर्वतमाला है। इस भाग के अल्मोड़ा, टेहरी, गढ़वाल, देहरादून और नैनीताल ज़िलों को मिलाकर उत्तराखंड कहते हैं। उत्तराखंड अपने प्राकृतिक दृश्यों के लिए बहुत प्रसिद्ध है। वर्षा खूब होती है। जल-वायु ठंडी है। कई स्थानों पर बर्फ़ भी पड़ती है। सारा भाग पहाड़ी है और स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा है। दिल्ली और आसपास के बहुत-से लोग गर्मियों के दिनों में इस भाग के ठंडे स्थानों पर आ जाते हैं।

बदरीनाथ, केदारनाथ, ऋषीकेश, लछमनभूला आदि प्रसिद्ध तीर्थस्थान इसी भाग में हैं। गंगा और यमुना के निकलने के स्थान गंगोत्री और जमनोत्री भी उत्तराखंड में हैं। देश के सभी भागों के लोग इन स्थानों की तीर्थयात्रा करते हैं। इन पहाड़ी क्षेत्रों में खेतीबाड़ी कम होती है। अधिकांश लोग भेड़ बकरियाँ पालते हैं।

अन्य राज्यों की भाँति उत्तर प्रदेश में भी हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध, आदि रहते हैं। सभी धर्मों को माननेवाले लोग अपने त्यौहारों को मिलजुल कर धूमधाम से मनाते हैं।

अब बताओ

१. उत्तर प्रदेश में खेती क्यों अधिक होती है?
२. उत्तर प्रदेश की मुख्य उपज क्या-क्या हैं?
३. यहाँ के कुछ प्रसिद्ध उद्योगों के नाम बताओ।
४. ऐसी तीन बातें बताओ जिनसे यह पता चले कि उत्तर प्रदेश के गाँववालों का जीवन दिल्ली क्षेत्र के गाँववालों के जीवन से बहुत कुछ मिलता-जुलता है।
५. नीचे एक ओर कुछ स्थानों के नाम दिए गए हैं। प्रत्येक स्थान के प्रसिद्ध होने का सही कारण छाँटकर उसका अक्षर कोष्ठक में लिखो:

( ) इलाहाबाद (अ) यहाँ से गंगा निकलती है।
( ) लखनऊ (आ) यह एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान है।
( ) गंगोत्री (इ) यह एक बड़ा औद्योगिक नगर है।
( ) जमनोत्री (ई) यह उत्तर प्रदेश का राजधानी है।
( ) कानपुर (उ) यहाँ गंगा-यमुना का संगम होता है।
( ) हरिद्वार (ऊ) यहाँ से यमुना निकलती है।

कुछ करने को

१. उत्तर प्रदेश के बड़े मानचित्र में नीचे लिखे नगरों को ढूँढो। यह भी मालूम करो कि ये नगर किस नदी के किनारे पर स्थित हैं: हरिद्वार, कानपुर, मथुरा, लखनऊ, फैज़ाबाद, वाराणसी, इलाहाबाद, आगरा।
२. अपनी कक्षा के उत्तर प्रदेश के रहनेवाले किसी बालक या बालिका से उत्तर प्रदेश के रहनेवालों के जीवन के बारे में बातचीत करो और अधिक जान कारी प्राप्त करो।
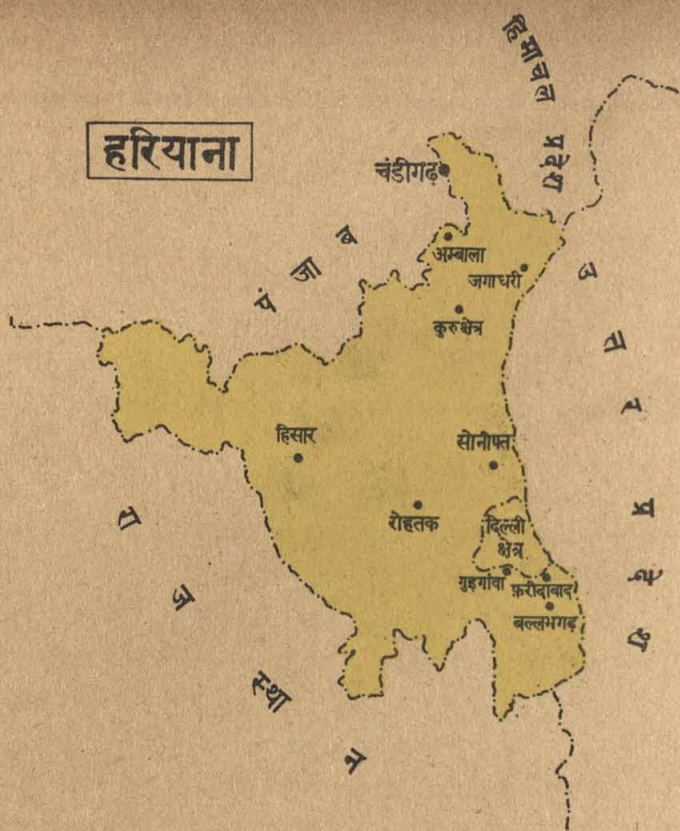
२१. हरियाना

उत्तर प्रदेश की तरह हरियाना भी दिल्ली का एक पड़ोसी राज्य है। ऊपर दिए मानचित्र में देखो। दिल्ली क्षेत्र के तीन ओर की सीमाएँ हरियाना राज्य से मिलती हैं। दिल्ली और उत्तर प्रदेश की तरह हरियाना भी भारत का एक अंग है।

हरियाना एक छोटा राज्य है। यह राज्य अभी कुछ समय पहले पंजाब के विभाजन के बाद बना है। भाषा के आधार पर पंजाब राज्य अब दो राज्यों में बाँटा गया है: पंजाब और हरियाना। हरियाना राज्य में केवल सात ज़िले हैं।

इस राज्य के गाँवों के रहनेवाले अधिकतर खेती-बाड़ी करते हैं। उनका रहन-सहन दिल्ली और उत्तर प्रदेश के गाँवों में रहनेवालों से बहुत कुछ मिलता जुलता है। तुम कभी हरियाना राज्य के किसी गाँव में जाओ तो वहाँ तुम्हें दिल्ली या उत्तर प्रदेश के किसी गाँव जैसा ही दृश्य दिखाई देगा। वहाँ तुम्हें कच्चे और पक्के दोनों प्रकार के मकान् मिलेंगे। बहुत-से मकानों के दरवाज़ों और दीवारों पर तरह-तरह के रंग-बिरंगे चित्र बने होंगे। स्त्रियाँ अक्सर लहँगा और ओढ़ना पहने दिखाई देंगी। बहुत-से गाँवों
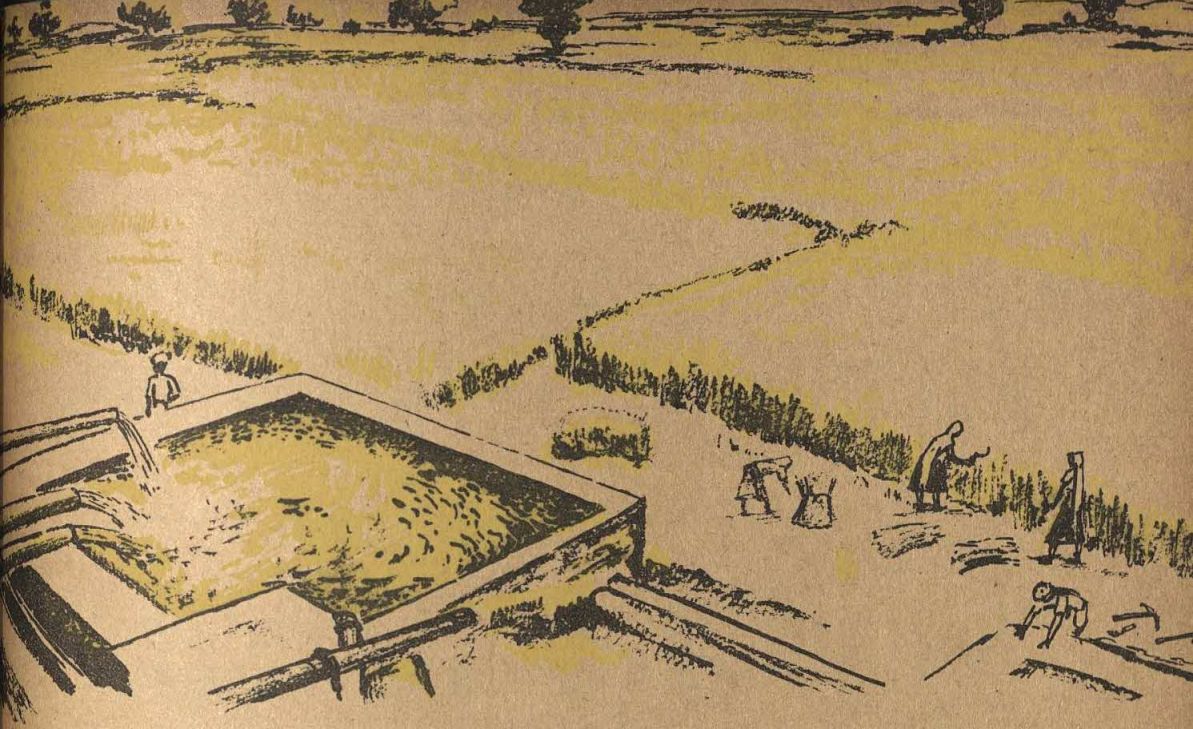
में आजकल स्त्रियाँ और लड़कियाँ सलवार-कमीज़ भी पहनने लगी हैं। पुरुष अधिकतर धोती-कुर्ता और टोपी या पगड़ी पहनते हैं। अधिकतर लोग तुम्हें हिन्दी में बात करते मिलेंगे।

तुम देखोगे कि गाँव के चारों ओर दूर-दूर तक हरे-भरे खेत लहलहा रहे हैं। किसान लोग अपने खेतों में हल चला रहे हैं या रहट चलाकर खेती की सिंचाई कर रहे हैं। राज्य के बहुत से गाँवों में अब बिजली पहुँच गई है। इसी से गाँवों में नलकूपों से सिंचाई की जाती है। यह बिजली भाखड़ा बाँध पर बनाई जाती है। भाखड़ा बाँध पंजाब राज्य में सतलुज नदी पर बनाया गया है। इससे कई नहरें निकाली गई हैं और पानी से बिजली पैदा की जाती है। यह बिजली और नहरें हरियाना राज्य के गाँवों तक पहुँचाई गई हैं।

हरियाना की भूमि बहुत उपजाऊ है। पहले यहाँ पर सिंचाई के साधनों की कमी थी। अब नलकूपों और नहरों से पानी मिलने के कारण इस राज्य की उपज पहले से बहुत बढ़ गई है। ज्वार, बाजरा, जौ और चना के अलावा यहाँ पर गेहूँ की उपज खूब होती है। आजकल गन्ना और कपास भी उगाए जाते हैं।

हरियाना में एक 'पशु मेले का दृश्य

दिल्ली के पासवाले भाग के लोग सब्जियों की खेती भी खूब करते हैं। ये सब्जियाँ ट्रकों द्वारा दिल्ली में रोज़ बिकने आती हैं।

हरियाना राज्य की जलवायु दिल्ली से बिल्कुल मिलती-जुलती है। गर्मियों में यहाँ अधिक गर्मी पड़ती है और सर्दियों में अधिक सर्दी। वर्षा कम होती है। इसी-लिए किसानों को सिंचाई पर अधिक ध्यान देना पड़ता है।

इस राज्य में बहुत अच्छे पशु होते हैं। हिसार के बैल और गाएँ तो प्रसिद्ध है। यहाँ पर पशुओं का एक बड़ा फ़ार्म है जिसमें पशुओं को अच्छी तरह पाला जाता है और अन्य स्थानों को भेजा जाता है। लगभग सभी किसान अपने घरों में गाय-भैंस अवश्य रखते हैं। हरियाना की गाएँ और भैंसें बहुत दूध देती हैं। दिल्ली में बिकने वाला बहुत-सा दूध हरियाना के गुड़गाँवा और रोहतक ज़िलों के गाँवों से आता है। करनाल में तो दूध की एक बहुत बड़ी डेरी है।

आजकल हरियाना राज्य में कई उद्योग भी चलाए गए हैं। फ़रीदाबाद तो एक अच्छा औद्योगिक नगर बन गया है। यहाँ छोटे-बड़े बहुत-से कारखाने हैं। जूते बनाने का एक प्रसिद्ध कारखाना भी यहाँ पर है। इसके पास ही बल्लभगढ़ में एक बहुत बड़ा कारखाना है, जिसमें रबड़ के टायर और अन्य चीज़ें बनती हैं।

जगाधरी काग़ज़ बनाने के कारखानों के लिए प्रसिद्ध है। सौनीपत में साइकिलें बनाने का एक बड़ा कारखाना है। यहाँ पर कपड़े सीने की मशीनें भी बनाई जाती हैं।

अम्बाला में शीशे का सामान और विज्ञान के औज़ार बनते हैं।

हरियाना और पंजाब, दोनों की राजधानी चण्डीगढ़ है। यह एक सुन्दर नगर है। अभी कुछ वर्ष पहले ही इस नगर का निर्माण हुआ था। यह नगर बिल्कुल नए ढंग से बसा हुआ है। सारे नगर को तीस सैक्टरों में बाँटा गया है। प्रत्येक सैक्टर में एक बाज़ार, डाकघर और पुलिस-चौकी है। ज़रूरत की सभी चीज़ें पास ही मिल जाती हैं।

चण्डीगढ़ की सड़कें चौड़ी-चौड़ी हैं और मकान हवादार और खुले खुले हैं। स्थान स्थान पर घास के मैदान और पार्क हैं। सड़कों के दोनों ओर छायादार पेड़ हैं। इस नगर के चारों ओर का दृश्य बहुत सुन्दर है। सुबह के समय दूर हिमालय पर्वत की बर्फ़ से ढकी चोटियाँ दिखाई देती हैं।

चण्डीगढ़ में हाई कोर्ट की इमारत
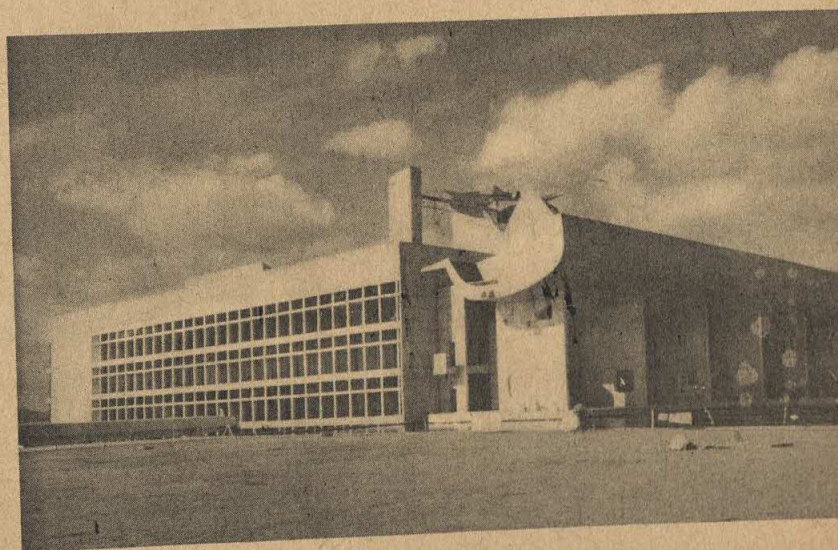
चण्डीगढ़ में कई प्रसिद्ध इमारतें हैं। 'सचिवालय' की दसमंज़िला इमारत में सरकारी दफ्तर हैं। इसके पास ही 'विधानसभा-भवन' और 'हाईकोर्ट' की इमारतें हैं।

कुरुक्षेत्र भी हरियाना का एक प्रसिद्ध नगर है। यहाँ एक विश्वविद्यालय है। सूर्यग्रहण के समय यहाँ भारी मेला लगता है। लाखों यात्री यहाँ के तालाबों

सूर्य ग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र के तालाब में स्नान करते हुए लोग

में स्नान करने आते हैं। कहते हैं यह वही स्थान है जहाँ बहुत प्राचीन समय में महाभारत की लड़ाई हुई थी और श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था।

अन्य राज्यों की तरह हरियाना राज्य में भी हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई आदि सभी धर्मों के मानने वाले लोग रहते हैं। वे सब अपने-अपने त्यौहारों को मिलजुल कर मनाते हैं। उत्तर प्रदेश के पास के रहनेवाले हज़ारों मुसलमान मेव 'ईद' और 'मुहर्रम' के त्यौहार मनाते हैं। दशहरा, दीवाली और लोहड़ी के त्यौहार तो सारे हरियाना राज्य में बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं।

यहाँ के रहनेवाले 'स्वांग,' 'ढोला' और 'आल्हा' बड़े चाव से सुनते हैं।

हरियाना राज्य के लोग कद में ऊँचे और स्वस्थ होते थे। वे अक्सर सेना में भरती होना पसन्द करते हैं। गुड़गाँवा और रोहतक के हज़ारों जवान हमारी सेनाओं में भरती हैं और देश की रक्षा कर रहे हैं।

अब बताओ

१. हरियाना राज्य में खेती क्यों अधिक होती है ?
२. इस राज्य की मुख्य उपज क्या-क्या है ?
३. हरियाना के कुछ प्रसिद्ध उद्योगों के नाम बताओ।
४. ऐसी तीन बातें बताओ जिनसे यह पता चले कि हरियाना राज्य के गाँववालों का जीवन दिल्ली क्षेत्र के ग्रामवासियों के जीवन से बहुत कुछ मिलता जुलता है।
५. नीचे एक ओर कुछ स्थानों के नाम दिए गए हैं। दूसरी ओर यह बताया गया है कि वे क्यों प्रसिद्ध हैं। प्रत्येक स्थान के प्रसिद्ध होने का सही कारण छाँटकर उसका अक्षर कोष्ठक में लिखो :

( ) हिसार (अ) रबड़ का सामान बनता है।
( ) फ़रीदाबाद (आ) कागज़ बनाने का कारखाना है।
( ) चण्डीगढ़ (इ) सूर्यग्रहण पर मेला लगता है।
( ) सोनीपत (ई) हरियाना की राजधानी है।
( ) बल्लभगढ़ (उ) पशुओं का फ़ार्म है।
( ) जगाधरी (ऊ) जूते बनाए जाते हैं।
( ) कुरुक्षेत्र (ए) साइकिलें बनाने का कारखाना है।

कुछ करने को

१. अपनी कक्षा में पढ़नेवाले हरियाना राज्य के किसी बालक या बालिका से वहाँ के रहनेवालों के जीवन के बारे में बातचीत करो और अधिक जानकारी प्राप्त करो।
२. हरियाना राज्य के रहनेवालों के लिए आकाशवाणी दिल्ली से शाम को प्रसारित होनेवाला देहाती प्रोग्राम सुनो।

इतिहास की कहानियाँ

पिछली कक्षा में तुमने अध्यापकजी से कई कहानियाँ सुनीं। ये सब कहानियाँ तुम्हें याद होंगी। इनके अलावा कुछ और कहानियाँ भी तुम्हें आती होंगी।

इस भाग में तुम्हें कई नई कहानियाँ पढ़ने को मिलेंगी। ये सब पुराने समय की कहानियाँ हैं। इनको पढ़कर तुम्हें अपने महान देश के कई प्रसिद्ध राजाओं और महा-पुरुषों के विषय में जानकारी होगी। पुराने समय के लोगों के जीवन और रहन-सहन के बारे में भी तुम्हें बहुतसी बातें सीखने को मिलेंगी। इस प्रकार की बहुतसी कहानियाँ तुम अपने माता पिता से भी सुन सकते हो।

इन रोचक कहानियों को पढ़ो, याद करो और दूसरों को सुनाओ।

२२. रामायण की कहानी

बहुत पुराने समय की बात है। अयोध्या में राजा दशरथ राज्य करते थे। उनके तीन रानियाँ थीं। उनसे चार पुत्र हुए। सबसे बड़े पुत्र की माता कौशल्या थीं। भरत की माता कैकेयी और लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता सुमित्रा थीं।

राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न एक दूसरे से बहुत प्रेम करते थे। राम बड़े थे, इसलिए उनके तीनों भाई उनका बहुत आदर करते थे। इन चारों भाइयों को बचपन से बड़े लाड़प्यार से पाला गया। राजा दशरथ ने इनको गुरु वशिष्ठ के आश्रम में पढ़ने के लिए भेजा। कुछ ही समय में चारों राजकुमारों ने अपनी शिक्षा समाप्त कर ली। उन्होंने धनुष-बाण चलाने और युद्ध करने की शिक्षा भी ली।

अयोध्या के पड़ोस में ही एक और राज्य था 'मिथिला'। उस समय वहाँ राजा जनक राज्य करते थे। उन्होंने अपनी पुत्री सीता के विवाह के लिए एक स्वयंवर किया। स्वयंवर में लड़की स्वयं अपना पति चुनती है। स्वयंवर की शर्त यह थी कि जो राजा जनक के धनुष को तोड़ेगा, उसी से सीता का विवाह होगा। सभी राजाओं ने बारी-बारी से धनुष पर डोरी चढ़ाने की कोशिश की। जब कोई भी राजा धनुष

को न तोड़ सका तब गुरु विश्वामित्र के कहने पर राम धनुष की ओर बढ़े। उन्होंने अपनी पूरी ताकत से धनुष को झुकाया ही था कि वह दो टुकड़े हो गया। सीता ने राम के गले में वरमाला डाल दी। इस प्रकार राम और सीता का विवाह हुआ। राम के तीनों छोटे भाइयों का विवाह भी सीता की बहिनों के साथ मिथिला में ही हुआ।

राजा दशरथ अब बूढ़े हो चले थे। वह अपने बड़े पुत्र राम को युवराज बनाना चाहते थे, लेकिन रानी कैकेयी अपने पुत्र भरत को युवराज बनवाना चाहती थी। एक बार राजा दशरथ ने प्रसन्न होकर रानी कैकेयी को उसकी एक मनचाही इच्छा पूरी करने का वचन दिया था। उसी वचन के अनुसार कैकेयी ने राम को चौदह वर्ष का बनवास दिलवाया और अपने पुत्र भरत के लिए राजगद्दी माँग ली। भरत उस समय वहाँ पर नहीं थे। यदि वे होते तो शायद ऐसा न होता।

राम पिता की आज्ञा सुनते ही वन चले गए। सीता और लक्ष्मण भी उनके साथ गए।

भरत राम से बहुत प्रेम करते थे। वे चाहते थे कि राम ही को राजगद्दी मिले। इसलिए उन्होंने राजा बनना स्वीकार नहीं किया और वे राम से वन में मिलने गए। वहाँ उन्होंने राम को मनाने की बहुत कोशिश की, लेकिन राम राजा बनने के लिए राज़ी नहीं हुए और पिता के वचन का पालन करने के लिए वन में ही रहे। भरत ने एक अच्छे भाई की तरह राम की खाड़ाऊँ राजसिंहासन पर रख दीं और उन्हीं के नाम पर राज्य की देखभाल करने लगे।

राम, लक्ष्मण और सीता वनों में चलते-चलते पंचवटी के स्थान पर जा पहुँचे। उन्होंने वहाँ घास फूँस की एक सुन्दर कुटिया बनाई और उसी में रहकर अपने बनवास के दिन पूरे करने लगे।

सीता के स्वयंवर के समय लंका का राजा रावण भी उपस्थित था। वह सीता से विवाह करना चाहता था, परन्तु वह स्वयंवर की शर्त पूरी न कर सका था। एक दिन राम और लक्ष्मण वन में शिकार खेलने गए हुए थे और सीता कुटिया में अकेली थी। सीता को अकेला देखकर रावण एक साधु के भेष में भीख माँगने आया और सीता को उठाकर ले गया।

राम और लच्मण जब वापस आए तो सीता को कुटिया में न पाकर बड़े दुखी हुए। वे सीता को ढूँढने निकले, तो वानरों के राजा सुग्रीव से उनकी मित्रता हो गई। उन्होंने सुग्रीव और उसके वीर साथी अंगद, हनुमान आदि की सहायता से एक बड़ी सेना तैयार की। अपनी सेना के साथ राम ने रामेश्वरम् के पास समुद्र पर पुल बाँधा और लंका पर चढ़ाई कर दी। बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में रावण के सभी बड़े-बड़े सरदार मारे गए। रावण स्वयं भी इस युद्ध में मारा गया। इस प्रकार राम ने सीता को छुड़ा लिया। रावण का छोटा भाई विभीषण बहुत नेक था। राम ने लंका का राज्य उसे सौंप दिया।

इस समय तक बनवास के चौदह वर्ष पूरे हो चुके थे। राम, लच्मण और सीता अयोध्या लौट आए। भरत ने राम का बड़ा स्वागत किया और राज्य उनको सौंप दिया। श्रीरामचन्द्र जब अयोध्या के राजा बने तो सारी प्रजा ने घर-घर दीप जलाए और खुशियाँ मनाई।

राम बहुत समय तक राज्य करते रहे। उनके राज्य में प्रजा बहुत सुखी थी। कोई भी अपढ़ या ग़रीब न था। चोर-डाकुओं का तो नाम भी नहीं सुनाई पड़ता था। चारों ओर शान्ति थी। हमारे प्रिय बापू गाँधीजी भी भारत में ऐसाही 'राम राज्य' लाना चाहते थे।
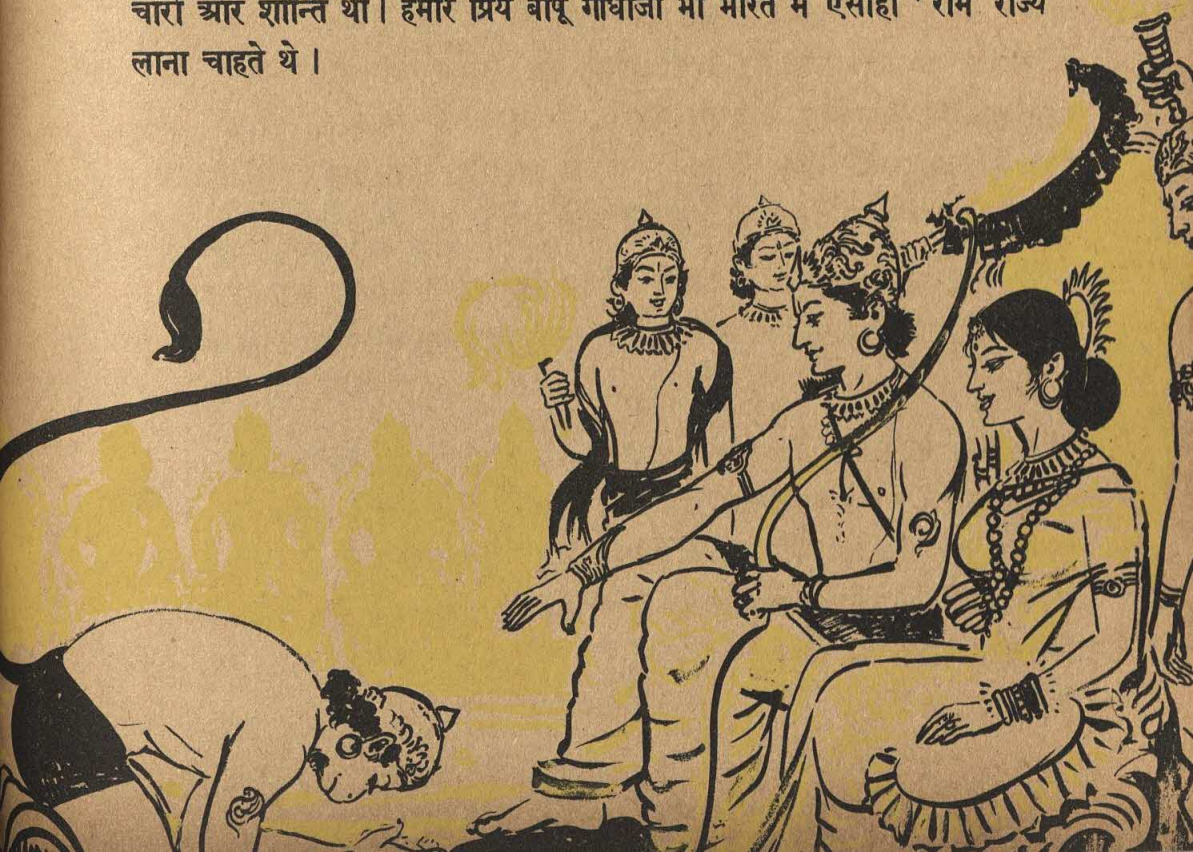
हमारे करोड़ों देशवासी राम को भगवान की तरह मानते हैं और उनकी पूजा करते हैं। उनकी लंकाविजय और राजगद्दी पर बैठने की याद में आज भी हमारे देश में दशहरा और दीवाली के त्यौहार प्रतिवर्ष बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं। दशहरे के दिन तुमने देखा होगा कि रावण का काग़ज़ का पुतला बनाकर जलाया जाता है। गाँव-गाँव और नगर-नगर में रामलीलाएँ होती हैं और रामायण की कहानी को नाटक के रूप में दिखाया जाता है। तुमने भी रामलीला अवश्य देखी होगी।

रामायण की कथा सबसे पहले वाल्मीकि ने संस्कृत में लिखी थी। फिर तुलसीदासजी ने इसे हिन्दी में लिखा। इस पुस्तक को 'रामचरितमानस' कहते हैं।

अब बताओ

१. सीता के स्वयंवर की क्या शर्त थी?
२. राम को बनवास क्यों जाना पड़ा?
३. रावण कौन था? राम ने रावण से युद्ध क्यों किया?
४. राम के बनवास से लौटने पर भरत ने उन्हें राज्य क्यों लौटा दिया?
५. हमारे देश में दशहरा क्यों मनाया जाता है?

कुछ करने को

१. रामायण की कहानी के किसी भाग का नाटक अपनी कक्षा में खेलो।
२. अपने माता-पिता अथवा किसी बड़े व्यक्ति से रामायण की कथा विस्तार से सुनो।
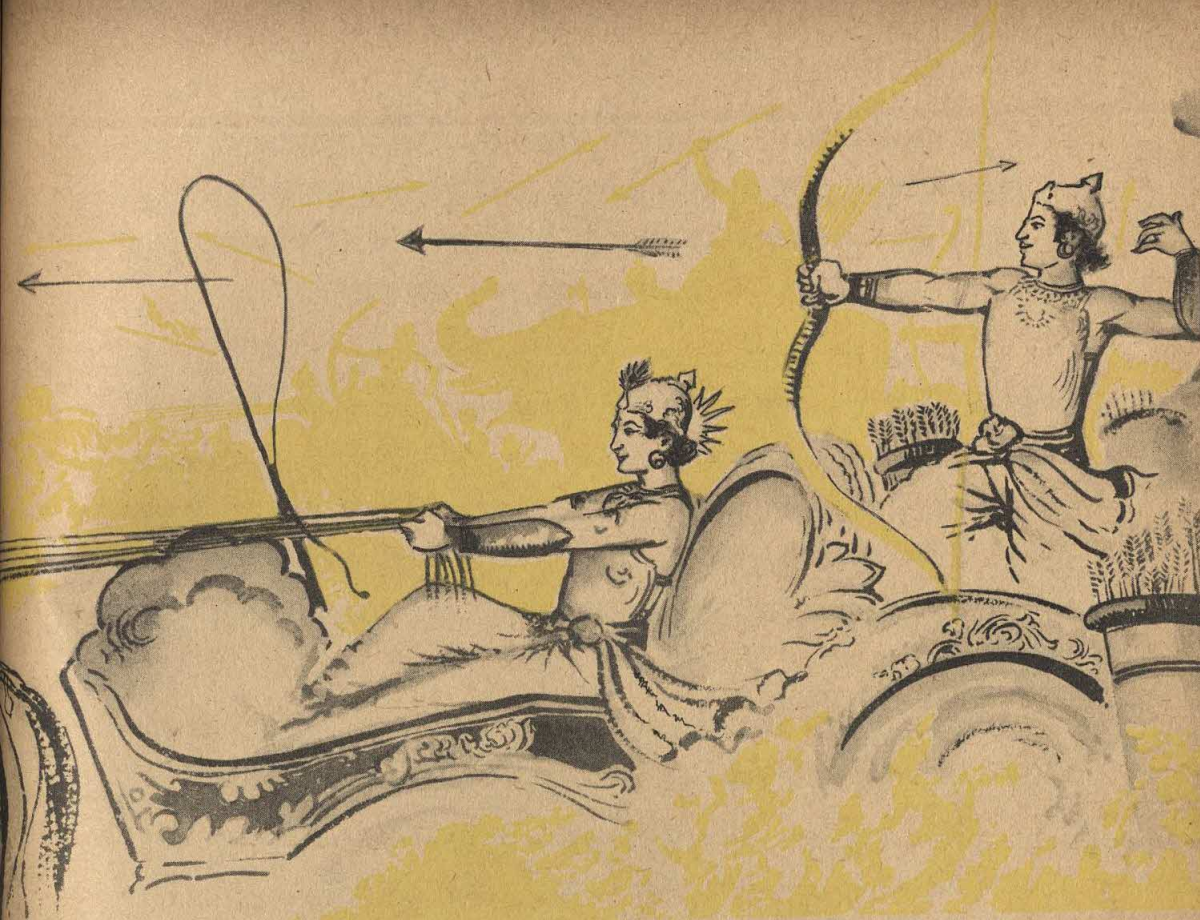
२३. महाभारत की कहानी

महाभारत की कहानी भी बहुत पुराने समय की है। उन दिनों आज के दिल्ली शहर के पास हस्तिनापुर नाम का एक राज्य था। वहाँ के राजा के दो पुत्र थे, धृतराष्ट्र और पाण्डु। धृतराष्ट्र जन्म से अन्धे थे, इसलिए पिता के मरने पर पाण्डु राजा हुए।

धृतराष्ट्र के सौ पुत्र थे। उनको 'कौरव' कहते थे। उनमें दुर्योधन सबसे बड़ा था। पाण्डु के पाँच पुत्र थे, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव। इनको 'पाण्डव' कहते थे।

कुछ दिनों के बाद पाण्डु की मृत्यु हो गई। पाण्डव लोग तब छोटे थे। इसलिए धृतराष्ट्र राजा हुए। उन्होंने कौरवों और पाण्डवों को गुरु द्रोणाचार्य से शिक्षा दिलवाई। थोड़े ही दिनों में सभी राजकुमार बाण, गदा, तलवार, भाला आदि चलाना सीख गए। बड़े होकर अर्जुन अपने समय के सबसे अच्छे तीर चलानेवाले हुए। गदा चलाने में भीम का मुकाबला कोई नहीं कर सकता था।

दुर्योधन सोचने लगा कि पाण्डव बड़े होकर राज्य माँगेंगे। इसलिए उसने उनको मार डालने के लिए कई चालें चलीं, परन्तु वे बचते रहे। एक बार उसने पाण्डवों को लाख के महल में ठहराया और रात को उसमें आग लगवा दी। पाण्डव किसी तरह से बच निकले और वन में भाग गए।

इन्हीं दिनों राजा द्रुपद की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर हुआ। तीर चलाने की परीक्षा थी। तेल की कड़ाही में परछाईं को देखकर ऊपर एक चरखी पर घूमती हुई मछली की आँख में तीर मारना था। बहुत-से राजाओं ने कोशिश की, लेकिन सफल न हुए। पाँचों पाण्डव भाई भी वहाँ जा पहुँचे। अर्जुन ने मछली की आँख में तीर मारकर मुकाबला जीता। माँ के कहने पर द्रौपदी का विवाह पाँचों भाइयों के साथ हो गया। राजा धृतराष्ट्र ने जब यह समाचार सुना तो उन्होंने पाण्डवों को हस्तिनापुर वापस बुला लिया और राज्य के दो हिस्से करके कौरवों और पाण्डवों को दे दिए।

पाण्डवों ने अपने हिस्से के राज्य में एक नया नगर बसाया और उसका नाम इन्द्रप्रस्थ रखा। कहते हैं इन्द्रप्रस्थ उसी स्थान पर था जहाँ आज दिल्ली बसी हुई है।

दुर्योधन पाण्डवों से मन ही मन बहुत जलता था। उसने पाण्डवों का राज्य छीनने के लिए एक और चाल चली। उसने युधिष्ठिर को जुआ खेलने के लिए बुलाया। युधिष्ठिर बहुत सच्चे, सीधे और ईमानदार व्यक्ति थे। वह दुर्योधन की चाल में आ गए। दुर्योधन जुआ खेलते समय भी चाल चलता रहा। उसने छल करके पाण्डवों का सारा राजपाट जीत लिया। जुए की शर्त के अनुसार पाण्डवों को तेरह वर्ष तक वन में रहना पड़ा।

पाण्डव बेचारे तेरह वर्ष का बनवास काटने के बाद वापस आए और उन्होंने दुर्योधन से अपना राज्य माँगा। दुर्योधन ने सुई के नोक के बराबर भी स्थान देने से इनकार कर दिया। बड़ों ने दुर्योधन को समझाने की कोशिश की परन्तु उसने किसी की बात न मानी। वह अपनी हठ पर अड़ा रहा।

द्वारका के राजा श्रीकृष्ण पाण्डवों और कौरवों के सम्बन्धी थे और अर्जुन के मित्र भी थे। उन्होंने भी झगड़ा निबटाने की कोशिश की, लेकिन दुर्योधन ने उनकी बात भी नहीं मानी।

अन्त में कुरुक्षेत्र के विशाल मैदान में कौरवों और पाण्डवों का युद्ध हुआ।

इसे "महाभारत का युद्ध" कहते हैं। इस युद्ध में उस समय के अनेक बड़े-बड़े राजाओं और वीर योद्धाओं ने भाग लिया। श्रीकृष्ण ने अपने मित्र अर्जुन का साथ दिया। इसी युद्ध के समय श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश दिया था। इसे "गीता" का उपदेश कहते हैं। श्रीकृष्ण की भी हमारे देशवासी राम की तरह पूजा करते हैं और उन्हें भगवान की तरह मानते हैं

महाभारत का घमासान युद्ध अठारह दिन तक चलता रहा। इसमें लाखों मारे गए और घायल हुए। अन्त में सचाई और ईमानदारी की विजय हुई। इस भयंकर युद्ध में पाण्डवों की जीत हुई और कौरव हार गए।

महाभारत की कहानी सबसे पहले वेदव्यास ने संस्कृत में लिखी थी। यह एक बहुत बड़ी पुस्तक है। इससे हमें उस समय के जीवन के बारे में बड़ी जानकारी मिलती है।

अब बताओ

१. कौरव, पाण्डव कौन थे?
२. द्रौपदी का पाण्डवों से विवाह कैसे हुआ?
३. महाभारत का युद्ध किस-किस में और क्यों हुआ?
४. महाभारत के युद्ध में श्रीकृष्ण ने पाण्डवों का साथ क्यों दिया?
५. महाभारत की लड़ाई में किसकी जीत हुई?

कुछ करने को

१. महाभारत की पूरी कथा पुस्तकालय से कोई पुस्तक लेकर पढ़ो।
२. महाभारत की किसी रोचक घटना का नाटक अपनी कक्षा में खेलो।
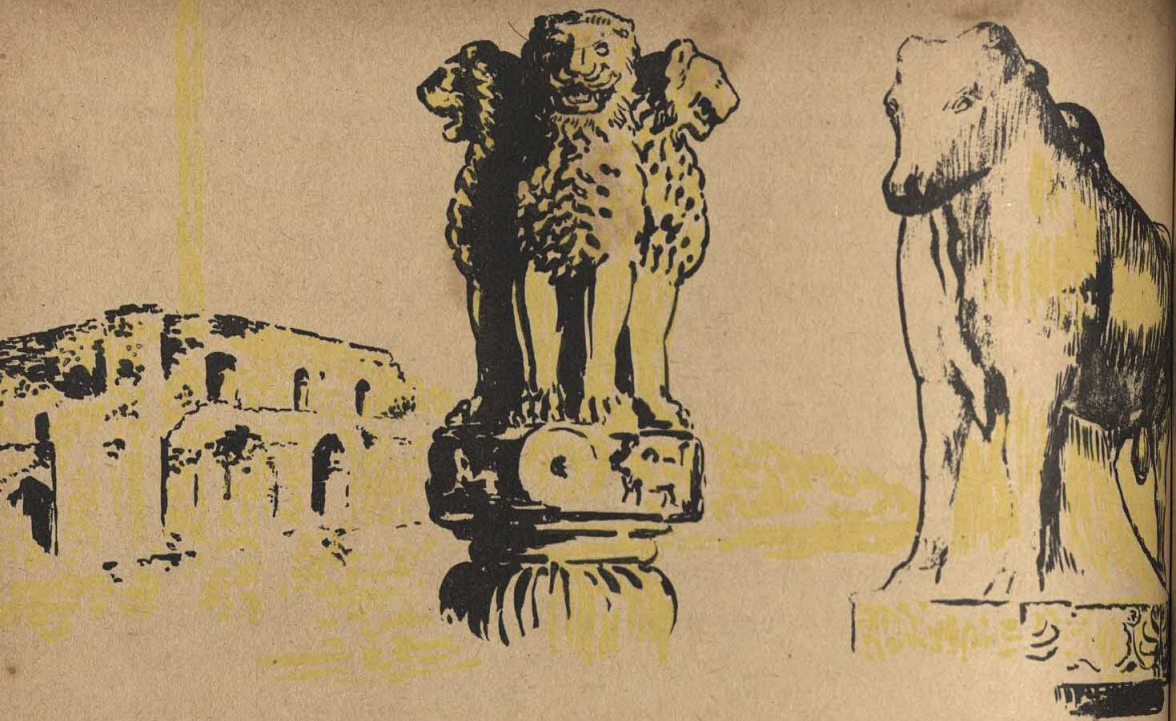
२४. अशोक महान

हमारे राष्ट्रीय झंडे के बीच में एक चक्र बना है। उसे अशोक चक्र कहते हैं। कौन था यह अशोक? कहाँ का राजा था? उसे हम इतना मान क्यों देते हैं।

अशोक आज से लगभग ढाई हज़ार वर्ष पहले भारत का राजा था। उसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी। आजकल उसे पटना कहते हैं। बचपन से ही अशोक बहुत वीर और साहसी था। उसका राज्य बहुत बड़ा था। लगभग सारा भारत और आस-पास के कई देश उसके राज्य में शामिल थे। वह भारत का सम्राट कहलाता था। कलिंग जिसे आजकल उड़ीसा कहते हैं, अशोक के राज्य में नहीं था। उसने कलिंग को जीतकर अपने राज्य में मिलाने का निश्चय किया और एक बड़ी सेना लेकर उस राज्य पर हमला कर दिया।

कलिंग का राजा भी बड़ा साहसी और शूरवीर था। उसने डट कर अशोक का सामना किया। बड़ा घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध में कोई एक लाख मारे गए। डेढ़ लाख घायल हुए या बन्दी बना लिए गए। तब कहीं कलिंग पर अशोक का अधिकार हुआ।

अशोक की विजय तो हुई, लेकिन कलिंग के युद्ध से अशोक के मन को बहुत अधिक दुःख हुआ। उसने सोचा कि युद्ध से राज्य बढ़ाना तो बहुत बुरी बात है। उसने प्रतिज्ञा की कि वह आगे युद्ध न करेगा और धर्म के प्रचार में जीवन बिता देगा। इसी समय से वह महात्मा बुद्ध का मत भी मानने लगा। उसने सभी बौद्ध तीर्थों की यात्रा की।

अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए बड़े काम किए। उसने अपने विशाल राज्य में स्थान स्थान पर पत्थर के खम्बे और लाटें लगवाईं। इन लाटों और कुछ चट्टानों पर उसने अच्छे-अच्छे उपदेश खुदवा दिए। इनमें से कई आज भी देखी जा सकती हैं। दिल्ली में भी फ़िरोज़शाह कोटला और जीतगढ़ के पास तुम अशोक की दो लाटें देख सकते हो। उसने कई स्तूप भी बनवाए। साँची का स्तूप तो अभी तक है। वह चाहता था कि इन लाटों और चट्टानों पर लिखे उपदेशों को लोग पढ़ें और उनको मानें। जिस लिपि में यह उपदेश लिखे हैं उसे 'ब्राह्मी लिपि' कहते हैं। इस लिपि का एक नमूना तुम यहाँ देख सकते हो।

अपने देश में ही नहीं, अशोक ने आसपास के देशों में भी इन उपदेशों को फैलाया। उसका बेटा महेन्द्र और बेटी संघमित्रा प्रचार करने के लिए लंका गए। दूसरी बेटी और दामाद नैपाल गए। उस ने बहुत से भिक्षुओं को बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए दूसरे देशों को भी भेजा।

उसने जनता की भलाई के लिए भी बहुत से काम किए। उसने विशाल राज्य में सड़कें बनवाईं और उनके किनारे छायादार पेड़ लगवाए। यात्रियों के आराम के लिए स्थान-स्थान पर सराएँ बनवाईं और कुएँ खुदवाए। उसने बूढ़ों, बीमारों और पशुओं के लिए कई अस्पताल खुलवाए।

अशोक बौद्ध भिक्षुओं की तरह सादा जीवन बिताता था। वह राज्य का काम करने के लिए हर समय तैयार रहता था। उसने आज्ञा दे रखी थी कि सरकारी काम की सूचना उसे सोने या भोजन के समय भी दी जाए। वह लोगों को हर प्रकार से सुखी बनाना चाहता था और प्रजा के साथ सन्तान का सा व्यवहार करता था।

अशोक का नाम 'देवताओं का प्रिय, प्रियदर्शी' भी था। उसने एक चट्टान पर जो उपदेश लिखवाए थे, उनका एक भाग नीचे दिया जा रहा है :

'माता-पिता की सेवा करनी चाहिए।' 'जीवों का आदर करना चाहिए।'

'विद्यार्थी को गुरु की सेवा करनी चाहिए।' 'साथियों से उचित बर्ताव करना चाहिए।'

'यही धर्म की नीति है और मनुष्यों को इसी के अनुसार चलना चाहिए।'

अशोक हमारे देश का एक महान सम्राट था। आज भी सारा संसार उसे 'अशोक महान' के नाम से पुकारता है।

अब बताओ

१. अशोक ने कलिंग पर हमला क्यों किया?
२. अशोक पर कलिंग युद्ध का क्या प्रभाव पड़ा?
३. अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए क्या किया?
४. अशोक ने अपनी प्रजा की भलाई के लिए क्या-क्या काम किए?
५. हम अशोक को 'महान' क्यों कहते हैं?

कुछ करने को

१. अशोक की लाटें देखने के लिए फिराज़शाह कोटला और जीतगढ़ जाओ।
२. अशोक की बनवाई हुई वस्तुओं से सम्बन्धित डाक-टिकट जमा करो।

२५. चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य

अशोक ने बौद्ध धर्म के उपदेशों को भारत और आसपास के देशों में फैलाया। इस काम के लिए बहुत से बौद्ध भिक्षु चीन, जापान, लंका और बर्मा आदि देशों में गए। विदेशों के कई यात्री भी बौद्ध धर्म की शिक्षा पाने और तीर्थयात्रा करने के लिए भारत आए। आज से लगभग सोलह सौ वर्ष पहले चीन का एक यात्री यहाँ आया। उसका नाम फ़ाह्यान था। उसने कई साल तक हमारे देश का भ्रमण किया और उस समय के लोगों के रहन-सहन के बारे में बहुत-सी बातें लिखीं।

फ़ाह्यान ने लिखा है कि देश में शान्ति थी। प्रजा सुखी थी। लोग सच्चे और ईमानदार थे। घरों में ताले नहीं लगाए जाते थे। चोरियाँ बहुत कम होती थीं। लोग घोड़ों, बैलगाड़ियों और नावों द्वारा व्यापार के लिए दूर-दूर स्थानों को जाते थे। देश में स्थान-स्थान पर मन्दिर और बौद्धविहार बने हुए थे। लोग जिस धर्म को चाहें मान सकते थे। सड़कें, सराएँ, बाग आदि बहुत थे। अस्पतालों में दवा और भोजन मुफ्त मिलते थे। राजा अपनी प्रजा के दुखों को दूर करने का पूरा प्रयत्न करता था।

जब फ़ाह्यान आया था उस समय हमारे देश में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य राज्य करता था। वह बड़ा वीर और न्यायकारी राजा था। कहा जाता है कि वह वेष बदल-कर अपने राज्य में घूमा करता था और लोगों के दुखों को जानने और दूर करने का प्रयत्न करता था। उसके न्याय और वीरता की कहानियाँ अभी तक कही जाती हैं।

चन्द्रगुप्त ने शक जाति के विदेशी शासकों से युद्ध किया। शकराज को मार कर उसने भारत के एक बड़े भाग को शकों के शासन से छुटकारा दिलवाया। इस बड़ी विजय के बाद उसने 'विक्रमादित्य' की उपाधि ली। इसका अर्थ है 'सूर्य के समान शक्तिवाला'।

विक्रमादित्य स्वयं एक बहुत बड़ा विद्वान था। वह गुणी लोगों का आदर करता था। उसके दरबार में उस समय के प्रसिद्ध विद्वान थे, जिन्हें अक्सर लोग 'नवरत्न' कहते हैं। संस्कृत का प्रसिद्ध कवि कालिदास शायद इनमें से एक था। शकुन्तला नाटक, मेघदूत आदि पुस्तकें उसी ने लिखी हैं।

विक्रमादित्य के समय में देश की दो राजधानियाँ थी: पाटलिपुत्र (पटना) और उज्जयिनी (उज्जैन)। दोनों में एक से एक सुन्दर महल और मन्दिर थे। इस समय के बने मन्दिर और मुर्तियाँ बहुत सुन्दर हैं। बहुत लोगों का विश्वास है कि महरौली का लौह-स्तम्भ भी विक्रमादित्य के समय का है। यह कई धातुओं को मिलाकर बनाया गया है। सैंकड़ों वर्ष बीत जाने पर भी इसमें ज़ंग नहीं लगा है। उस समय धातु की वस्तुएँ बनाने की कला कितनी उन्नति पर थी!

अशोक की तरह विक्रमादित्य भी हमारे देश का एक महान सम्राट कहलाता है।

'लौह-स्तम्भ' महरौली

अब बताओ

१. फ़ाह्यान कौन था और वह भारत क्यों आया था ?
२. कोई ऐसी चार बातें लिखो जो फ़ाह्यान ने विक्रमादित्य के राज्यकाल के बारे में लिखी हैं।
३. 'विक्रमादित्य' का क्या अर्थ है ? चन्द्रगुप्त ने यह उपाधि क्यों ली ?
४. राजा विक्रमादित्य अपनी प्रजा के सम्बन्ध में जानने के लिए क्या करते थे ?
५. नीचे लिखी बातों में से जो अशोक के समय में हुई, उनके आगे 'अ' और जो चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय में हुई, उनके आगे 'च' लिखो :

(क) इसने बौद्धधर्म का प्रचार किया। ( )
(ख) इसने 'प्रियदर्शी' की उपाधि ली। ( )
(ग) इसने शकों को हराया। ( )
(घ) इसने कलिंग युद्ध किया। ( )
(ङ) इसने विक्रमादित्य की उपाधि ली। ( )
(च) इसके समय में चीनी यात्री फ़ाह्यान भारत आया। ( )

कुछ करने को

१. महारौली का लौह-स्तम्भ देखने जाओ और इसके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करो।
२. कालिदास की पुस्तकों के बारे में अध्यापकजी से पूछो।

२६. हर्षवर्धन

बहुत पुराने समय की बात है। गंगा-यमुना के संगम, प्रयाग में एक बहुत बड़ा मेला लगा हुआ था। ग़रीब, अमीर, बालक, बूढ़े, जवान, स्त्री, पुरुषों की अपार भीड़ थी। देश के कोने-कोने से लोग इस मेले में आए थे। दूर-दूर तक लोगों के रहने के लिए तम्बू और फूँस की झोंपड़ियाँ बनी हुई थीं। कहीं भजन-कीर्तन हो रहा था तो कहीं कथा वार्ता। चारों ओर बड़ी चहलपहल थी।

इस तरह का मेला अब भी प्रतिवर्ष इलाहाबाद में लगता है। अब भी यहाँ लाखों लोग जमा होते हैं, लेकिन उस पुराने समय का यह मेला कुछ अनोखा था। एक राजा इस मेले में साधुओं और गरीबों को दान दे रहा था। दान लेनेवाले हिन्दू साधू भी थे और बौद्ध भिक्षु भी। मेला कई दिनों तक चलता रहा। राजा भी हर रोज़ दान देता रहा। यहाँ तक कि उसने अपना सारा खज़ाना दान में दे दिया, सारा सोना-चाँदी और हीरे-जवाहरात बाँट दिए। अन्त में उसने अपने तन के कपड़े भी दान कर दिए और अपनी बहिन से पुराने कपड़े माँग कर पहने। फिर वह प्रसन्नमुख एक चीनी बौद्ध भिक्षु से बात करता अपने तम्बू में चला गया।

यह महादानी राजा हर्षवर्धन था। वह हर पाँच वर्ष के बाद प्रयाग के इस मेले में आता था और ग़रीबों, साधुओं आदि को खूब दान देता था। इनमें सभी धर्मों के माननेवाले लोग होते थे। इस मेले का बड़ा अच्छा वर्णन एक दूसरे चीनी यात्री ह्यून-साँग ने अपनी पुस्तक में किया है। ह्यून-साँग हर्षवर्धन के समय में भारत आया था और उसने यह मेला अपनी आँखों से देखा था।

आज से लगभग डेढ़ हज़ार वर्ष पहले हर्षवर्धन हमारे देश पर राज्य करता था। उसकी राजधानी दिल्ली के पास ही थानेश्वर में थी। कन्नौज का राजा हर्षवर्धन का बहनोई था। उसके मरने पर कन्नौज का राज्य भी हर्ष को मिल गया। अब हर्ष ने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया।

राजगद्दी पर बैठने के समय हर्ष केवल सोलह साल का था, लेकिन था बड़ा वीर और साहसी। उसके पास एक बड़ी सेना थी, जिसमें हज़ारों हाथी, घोड़े और पैदल सिपाही थे। धीरे-धीरे उसने अपने राज्य को बढ़ाना शुरू किया। कुछ ही समय में उसने आसपास के बहुत से छोटे-छोटे राज्यों को जीत लिया। कामरूप (आसाम) का राजा भी उसका मित्र बन गया। इस प्रकार वह पूरे उत्तरी भारत का राजा बन बैठा।

हर्ष पूरे भारत को जीतना चाहता था। इसलिए उसने दक्षिणी भारत को जीत-कर अपने राज्य में मिलाने का निश्चय किया। उन दिनों दक्षिणी भारत के एक बड़े भाग पर पुलकेशी द्वितीय नाम का राजा राज्य करता था। वह बड़ा वीर राजा था। वह दक्षिणी भारत में कई लड़ाइयाँ जीत चुका था। हर्ष ने उसके राज्य पर चढ़ाई कर दी। वह भी अपनी बड़ी सेना लेकर लड़ाई के मैदान में आ डटा। नर्बदा नदी के पास बड़े ज़ोर का युद्ध हुआ। इस युद्ध में हर्षवर्धन की बुरी तरह हार हुई और इसके बाद उसने दक्षिणी भारत को जीतने की फिर कोशिश न की।

अशोक और विक्रमादित्य की तरह, हर्षवर्धनभी हमारे देश का एक बड़ा राजा माना जाता है। वह अपनी प्रजा के सुख और भलाई का बहुत ध्यान रखता था। वह सारे देश में घूमता था। वह लोगों के दुखों को स्वयं सुनता था और उनको दूर करने की कोशिश करता था। उसने लोगों के आराम के लिए सराएँ और धर्मशालाएँ भी बनवाई थीं।

चीनी यात्री ह्यून-साँग की पुस्तक से हर्ष के राज्यकाल के बारे में हमें बहुत-सी बातों का पता चलता है। एक स्थान पर उसने लिखा है :

‘हर्ष की राजधानी कन्नौज नगर गंगा के किनारे बसा हुआ है। यह एक बहुत सुन्दर नगर है। इसमें कई सुन्दर बाग और पानी के तालाब हैं। दूर-दूर से लाई गई अनोखी वस्तुएँ यहाँ मिलती हैं। कोइ कन्नौज निवासी निर्धन नहीं है। कुछ लोग तो बहुत धनवान हैं। वे रेशमी कपड़े पहनते हैं और आराम से रहते हैं। अक्सर लोग कला और विद्या के प्रेमी हैं।’

हर्षवर्धन विद्या का बड़ा प्रेमी था। वह स्वयं एक अच्छा लेखक था। उसके लिखे नाटक आज भी मिलते हैं। उसके दरबार में कई अच्छे कवि थे। प्रसिद्ध कवि बाणभट्ट इसी समय हुआ था। ‘हर्षचरित’ उसकी प्रसिद्ध पुस्तक है। इससे हमें राजा हर्ष और उसके समय के लोगों के जीवन के बारे में बड़ी जानकारी मिलती है। राजा हर्ष अपने हस्ताक्षर इस प्रकार किया करता था :

हर्षवर्धन एक अच्छा शासक और वीर सैनिक तो था ही, एक अच्छा कलाकार भी था। वह हमारे देश का एक महान राजा था।

अब बताओ

१. हर्षवर्धन कहाँ का राजा था और उसकी राजधानी कहाँ थी?
२. हर्ष के समय में कौन-सा चीनी यात्री भारत आया था? उसने हर्ष तथा उसकी राजधानी के बारे में क्या वर्णन किया है?
३. पुलकेशी द्वितीय कौन था? हर्ष ने उसके साथ युद्ध क्यों किया?
४. हर्ष को एक बड़ा दानी राजा क्यों कहा जाता है?
५. नीचे लिखी घटनाएँ 'अशोक', 'विक्रमादित्य' या 'हर्ष' में से जिसके समय में हुई हैं, उसी राजा का नाम घटना के सामने लिखो:

(क) प्रयाग के मेले में दान देना। ( )
(ख) फ़ाह्यान की भारतयात्रा। ( )
(ग) पुलकेशी से लड़ाई। ( )
(घ) साँची के स्तूप का निर्माण। ( )
(ङ) ह्यून-साँग की भारत यात्रा। ( )
(च) शकराज से युद्ध। ( )

कुछ करने को

१. प्रयाग के मेले में हर्षवर्धन द्वारा दान देने की घटना का नाटक अपनी कक्षा में करो।
२. ह्यून-साँग की भारत यात्रा के विषय में अपने अध्यापक से अधिक जानकारी प्राप्त करो।

२७. राजेन्द्र चोल

सामने के पृष्ठ पर तुम एक चित्र देख रहे हो। यह तंजौर के प्रसिद्ध मन्दिर का चित्र है। आज से लगभग एक हज़ार वर्ष पहले इसे दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध राजा ने बनवाया था। उस राजा का नाम राजेन्द्र चोल था। उसकी राजधानी तंजौर में थी। आजकल यह नगर मद्रास राज्य में है।

राजेन्द्र चोल अपने पिता राजराज चोल के समय से ही राजकाज के कामों में भाग लेने लगा था। राजा बनने से पहले ही वह कई लड़ाइयाँ लड़ चुका था। वह बड़ा साहसी और वीर योद्धा था।

सिंहासन पर बैठते ही उसने अपने राज्य को और अधिक बढ़ाने का निश्चय किया। उसने एक बड़ी सेना बनाई। इस सेना में हाथी, घुड़सवार और पैदल सैनिक थे। इसी सेना की सहायता से उसने कई लड़ाइयाँ जीतीं। धीरे-धीरे दक्षिणी भारत के एक बड़े भाग पर उसका अधिकार हो गया। उसने लंका पर भी हमला किया और इसे जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। कुछ दिनों के बाद उसने बंगाल पर चढ़ाई की। वहाँ कई राजाओं को हराकर उसकी सेनाएँ गंगा नदी तक जा पहुँचीं।

बंगाल-विजय के बाद राजेन्द्र चोल ने 'गंगईकोंडा' की उपाधि ली, जिसका अर्थ है 'गंगा को जीतनेवाला'। इस बड़ी विजय की याद में उसने तिरुचिरपल्ली के पास एक नगर बसाया। इसका नाम उसने 'गंगईकोंडाचोलापुरम' रखा। उसने इसे अपनी राजधानी भी बनाया। इस नगर के खण्डहर आज भी मिलते हैं। यह स्थान भी आजकल मद्रास राज्य में है।

राजेन्द्र चोल के राज्य का अधिक भाग समुद्र के किनारे था। इसलिए उसने एक अच्छी जलसेना भी तैयार की थी। बंगाल की खाड़ी में दूर-दूर तक उसके सैनिक जहाज़ चक्कर लगाते थे। व्यापार करने के लिए तो उस समय दूर हिन्द महासागर में भी राजेन्द्र चोल के जहाज़ चलते थे। वे व्यापार का सामान लेकर पड़ोसी देशों में भी जात थे।

तंजौर का मन्दिर
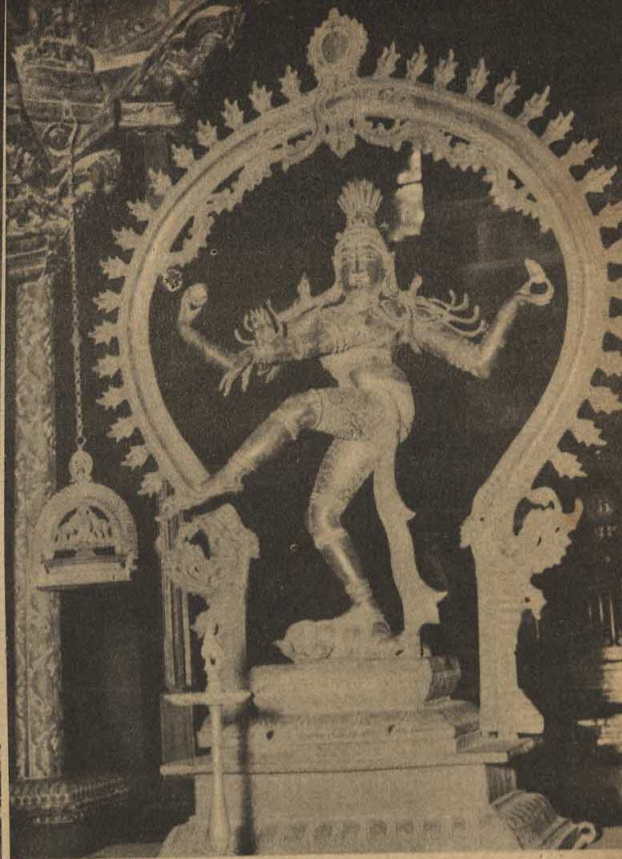
'नटराज'

भारत और उसके पड़ोसी देशों के बीच समुद्री मार्गों द्वारा आना-जाना इस समय काफ़ी बढ़ गया था। मलाया, सुमात्रा, जावा, बालि, चीन आदि देशों के साथ भारत का व्यापार होता था। भारत के बहुत-से व्यापारी इन देशों में जाने लगे। बहुत से तो वहाँ जाकर बस भी गए।

विदेशों से इस प्रकार हमारे सम्बन्ध होने के कारण कई लाभ हुए। हमारे देश का व्यापार बढ़ा। हमारे धर्म और कला का प्रभाव भी इन पड़ोसी देशों पर पड़ा। इन पड़ोसी देशों में आज भी ऐसे कई मन्दिर मिलते हैं जिनकी दीवारों पर रामायण और महाभारत के दृश्य दिखाए गए हैं। अंकोरवाट और बोरोबदुर के मन्दिर तो इसके बहुत ही उत्तम नमूने हैं।

राजेन्द्र चोल का शासन करने का ढंग बहुत अच्छा था। उसने अपने राज्य को छोटे-छोटे भागों में बाँट रखा था। प्रत्येक गाँव या नगर में एक सभा होती थी, जो इस स्थान की देखभाल करती थी। आजकल की पंचायतों की तरह इन सभाओं का चुनाव जनता करती थी। राजा की सहायता के लिए कुछ मंत्री होते थे। वे राज-काज की सभी बातों के बारे में राजा को सलाह देते थे।

इस समय में तमिल और संस्कृत भाषाओं में बहुत-सी अच्छी पुस्तकें लिखी गई। कई प्रसिद्ध लेखक, कवि और कलाकार राजेन्द्र चोल के दरबार में थे। इसे मन्दिर और भवन बनवाने का शौक भी था। तंजौर के मन्दिर की 'नटराज' की मूर्ति उसी समय की है। यह मूर्ति बहुत ही सुन्दर बनी है और संसार-भर में प्रसिद्ध है।

राजेन्द्र चोल एक महान विजेता और शक्तिशाली राजा था। उसका राज्य सारे दक्षिण भारत और उत्तरी भारत के कुछ हिस्से में फैला था। उसने विदेशों के साथ भारत के सम्बन्ध स्थापित किए। उसके समय में हमारे धर्म और कला को विदेशों में पहुँचने का अवसर मिला।

अब बताओ

१. राजेन्द्र चोल कहाँ का राजा था?
२. 'गंगईकोंडा' का क्या अर्थ है? राजेन्द्र चोल ने यह उपाधि क्यों ली?
३. हम किस प्रकार कह सकते हैं कि राजेन्द्र चोल एक महान विजेता था?
४. राजेन्द्र चोल के समय में विदेशों से सम्बन्ध क्यों स्थापित हुए और उसका क्या प्रभाव पड़ा?
५. राजेन्द्र चोल अपने राज्य का शासन किस प्रकार चलाता था?

कुछ करने को

चोल राजाओं के समय के मन्दिर आदि के चित्र एकत्र करके अपनी कापी पर चिपकाओ।

२८. पृथ्वीराज चौहान

महरौली के पास एक किले के खण्डहर पाए जाते हैं। इसका नाम क़िला राय-पिथौरा है। यह किला पृथ्वीराज चौहान ने बनवाया था। उसे 'राय पिथौरा' भी कहते हैं। वह आज से लगभग आठ सौ वर्ष पहले दिल्ली में राज्य करता था। अजमेर भी उसके राज्य में था।

पृथ्वीराज चौहान बड़ा वीर और साहसी राजा था। उसके समय में भारत में कई छोटे-छोटे राज्य थे, जिनमें कई राजपूत राजा राज्य करते थे। इन सभी राजाओं में बड़ी फूट थी। वे एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए सदा तैयार रहते थे और प्रायः छोटी-छोटी बातों पर आपस में लड़ते रहते थे। देश में एकता बिल्कुल न थी। कन्नौज के राजा जयचन्द्र और पृथ्वीराज चौहान में तो आपस में बड़ी अनबन थी। जयचन्द्र पृथ्वीराज से मन ही मन बहुत जलता था।

इसी समय ग़ौर के बादशाह मुहम्मद ग़ौरी ने भारत पर हमला किया। पृथ्वी-राज एक बड़ी सेना लेकर उसका मुकाबला करने के लिए आ डटा। दिल्ली से कुछ दूर तरावड़ी के मैदान में युद्ध हुआ। पृथ्वीराज और उस के वीर सिपाहियों नें मुहम्मद ग़ौरी को हरा दिया और वह अपनी बची-खुची सेना के साथ वापस अपने देश भाग गया।

मुहम्मद ग़ौरी अपनी हार का बदला लेने की तैयारी करता रहा। एक वर्ष के बाद वह एक भारी सेना के साथ दूसरी बार भारत पर चढ़ आया। पृथ्वीराज फिर अपनी सेना के साथ मुकाबले पर आ डटा। किसी अन्य राजा ने उसकी सहायता नहीं की। जयचन्द्र के पास अच्छी सेना थी, लेकिन उसने भी पृथ्वीराज का साथ नहीं दिया। उसी तरावड़ी के मैदान में फिर युद्ध हुआ। पृथ्वीराज और उसके सिपाही इस बार भी बड़ी वीरता से लड़े, परन्तु हार गए। पृथ्वीराज चौहान युद्ध में मारा गया और दिल्ली पर मुहम्मद ग़ौरी का अधिकार हो गया।

पृथ्वीराज चौहान की वीरता का वर्णन चन्द बरदाई नाम के एक कवि ने अपनी पुस्तक 'पृथ्वीराजरासो' में किया है। इस पुस्तक में पृथ्वीराज चौहान के बारे में कई कहानियाँ लिखी हैं जो आज भी लोगों में प्रचलित हैं। उनमें से एक कहानी संयोगिता के स्वयंवर की है। संयोगिता राजा जयचन्द्र की पुत्री थी। चन्द बरदाई लिखता है कि पृथ्वीराज ने संयोगिता के साथ उसके पिता जयचन्द्र की इच्छा के विरुद्ध विवाह किया था। इसी कारण जयचन्द्र ने मुहम्मद ग़ौरी के हमले के समय पृथ्वीराज की सहायता नहीं की।

पृथ्वीराज की हार के बाद ही उत्तरी भारत में तुर्क और अफ़ग़ान सुलतानों का राज्य स्थापित हो गया।

अब बताओ

१. पृथ्वीराज चौहान कहाँ का राजा था? उसका दूसरा नाम क्या था?
२. तरावड़ी का युद्ध किस-किस के बीच में हुआ?
३. पृथ्वीराज की हार का क्या कारण था?
४. पृथ्वीराज की हार का क्या परिणाम हुआ?
५. जयचन्द्र कहाँ का राजा था? उसने पृथ्वीराज की सहायता क्यों नहीं की?

कुछ करने को

१. महरौली के पास 'किला राय पिथौरा' देखने जाओ।
२. अपने अध्यापक से संयोगिता की कहानी सुनो।

दर्शिका भाग

विषय - सूची

दर्शिका भाग

कुछ सामान्य बातें

सामाजिक अध्ययन

स्वतंत्रता के बाद हमने सर्वसम्मति से गणतांत्रिक जीवन अपनाया है। इसलिए हमें अपने देश के भावी नागरिकों में वे जानकारियाँ, कुशलताएं और मान्यताएँ पैदा करनी हैं, जिनसे वे स्वतंत्रता की ज़िम्मेदारियों को सम्हाल सकें, अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों को समझें और इस प्रकार देश और समाज के योग्य सदस्य बन सकें। वैसे तो घर, परिवार, पास-पड़ौस, धार्मिक समुदाय आदि सभी अच्छी नागरिकता के विकास में सहायता देते हैं, लेकिन शिक्षण संस्थाएँ ऐसे नागरिक तैयार करने में सबसे अधिक मदद करती हैं। वास्तव में प्राथमिक पाठशालाओं में ही इसकी पक्की नींव पड़ती है। पाठ्यक्रम का प्रत्येक विषय बच्चों में उचित धारणाएँ और कुशलताएं उत्पन्न करने में सहायक होता है और उनके व्यक्तित्व का विकास करता है। लेकिन इस संबंध में सबसे बड़ा योगदान शायद सामाजिक अध्ययन का है। यह विषय आजकल हमारे स्कूलों में अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाता है। इसलिए सामाजिक अध्ययन पढ़ानेवाले अध्यापक के ऊपर बड़ी ज़िम्मेदारी है। उसे अपने विषय का अच्छा ज्ञान तो होना ही चाहिए, साथ ही साथ पढ़ाने का उचित ढंग भी आना चाहिए।

सामाजिक अध्ययन क्या है ?

सामाजिक अध्ययन का अर्थ बहुत व्यापक है। भिन्न-भिन्न व्यक्ति इसकी भिन्न-भिन्न ढंगों से परिभाषा करते हैं, किन्तु इसमें '**सामाजिक**' शब्द सबसे अधिक महत्त्व का है। इस विषय का केन्द्र 'मानव' ही है। इसमें मुख्य रूप से मानव और उसके सामाजिक व भौतिक वातावरण का पारस्परिक प्रभाव तथा मानवीय संबंधों का अध्ययन सम्मिलित है। इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र, विज्ञान और कला आदि इस विषय की पाठ्यवस्तु के स्रोत हैं।

सामाजिक अध्ययन इस पाठ्यवस्तु के माध्यम से बच्चों को समाज में सफलता से रहना सिखाता है और यह समझने में सहायता देता है कि मनुष्य अपने वातावरण अर्थात् अपने गाँव, शहर, पास-पड़ौस, देश और संसार के भौतिक वातावरण में किस प्रकार रहता है और काम करता है तथा परिवार, समुदाय, राष्ट्र और विश्व से उसका क्या संबंध है।

सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र

सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। मानव जीवन की सभी बातें इसके अंदर आ जाती हैं। इस विषय का महत्त्व और इसकी व्यापकता समझने के लिए आप निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखें :

१. छात्रों को भावी जीवन के लिए तैयार करना पाठशालाओं का एक प्रमुख कर्तव्य है। इसलिए उनको कुछ ऐसी जानकारियाँ करानी हैं और उनमें कुछ ऐसी भावनाएँ पैदा करनी हैं जो उन्हें उनके वातावरण के अनुकूल बनने में सहायता देंगी। आजकल के

संसार में रोज़ ही परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तनों की जानकारी की नींव पाठशाला में ही डालनी है।

जिस वातावरण में बच्चा जन्म लेता है और पलता है, वह प्राकृतिक और सामाजिक परिस्थितियों के योग से बनता है। वातावरण का हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। सामाजिक अध्ययन द्वारा हम छात्रों को इस वातावरण से परिचित कराते हैं। साथ ही साथ उनमें कुछ ऐसी कुशलताएँ पैदा करना चाहते हैं जो आगे चलकर उन्हें नागरिक जीवन में सहायता देंगी।

२. अब हम स्वतंत्र हैं। इससे एक ओर हम गौरव अनुभव करते हैं कि हमें नए अधिकार मिले हैं, दूसरी ओर हमारी जिम्मेदारियाँ भी बढ़ गई हैं। इन जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए हमको कुछ बातें जाननी हैं और अपने में कुछ भावनाएँ पैदा करनी हैं। सामाजिक अध्ययन छात्रों को एक ओर तो ज्ञान देता है और दूसरी ओर उपयुक्त क्रियाओं की सहायता से उनमें उचित भावनाओं और आदतों की नींव डालने का प्रयत्न करता है।

३. स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद हमने अपने देश को समृद्ध तथा शक्तिशाली बनाने के लिए नए-नए कदम उठाए हैं। इस संबंध में पंचवर्षीय योजनाएँ बनाई जा रही हैं। बच्चों को इनकी प्रारंभिक जानकारी होना आवश्यक है। आगे चलकर अच्छे नागरिक के रूप में वे इस कार्य के बारे में पूर्ण सहयोग देंगे।

४. 'वर्तमान' को समझने के लिए बीते हुए ज़माने की जानकारी जरूरी है। देशभक्त व समझदार नागरिक बनने के लिए देश के गौरवमय अतीत का ज्ञान भी होना चाहिए। अतः इतिहास की कहानियाँ, महापुरुषों की जीवनियाँ इस विषय में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। लेकिन यह ध्यान रखना चाहिए कि अतीत पुराने समय की कथामात्र नहीं है। वर्तमान के संबंध से ही वह सजीव हो उठता है।

५. शांतिमय जीवन व्यतीत करने के लिए संसार के लोगों में आपसी सहयोग और सद्भावना आवश्यक है। सामाजिक अध्ययन द्वारा हम बच्चों में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की भावना का बीजारोपण करते हैं।

६. प्राथमिक पाठशाला का विषय होने के नाते सामाजिक अध्ययन बच्चों की रुचियों और आवश्यकताओं का पूरा ध्यान रखता है। इसी दृष्टि से उसकी पाठ्यसामग्री चुनी जाती है। अध्यापन की विधियाँ भी बच्चों की रुचि और आवश्यकताओं के अनुकूल होनी चाहिए। अगले पृष्ठों में इसका संकेत किया गया है।

वर्तमान पाठ्यक्रम

पाठशाला के पाठ्यक्रम में कुछ सीमाएँ होती हैं। सभी बातें उसमें शामिल नहीं हो सकतीं। अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए हमें कुछ बातों पर अधिक बल देना होता है और कुछ को छोड़ना पड़ता है।

वर्तमान पाठयक्रम जिस मौलिक बात पर आधारित है, वह है हमारा देश और उसकी एकता। साथ ही इसमें उसकी भावी आशाओं और हमारे कर्त्तव्यों पर भी जोर दिया गया है। सभी कक्षाओं के पाठ्यक्रम में भिन्न-भिन्न पहलुओं से इस बात पर बल दिया गया है, यद्यपि प्रत्येक कक्षा की मुख्य विषयवस्तु अलग-अलग है :

कक्षा १ : हमारा घर और पाठशाला
कक्षा २ : हमारा पास-पड़ौस
कक्षा ३ : हमारा दिल्ली क्षेत्र (भारत के अंग के रूप में)
कक्षा ४ : हमारा भारत
कक्षा ५ : भारत और संसार

सामाजिक अध्ययन पढ़ाने के उद्देश्य

किसी भी विषय को ठीक तरह से पढ़ाने के लिए यह जानना आवश्यक है कि हम उसे किस उद्देश्य से पढ़ा रहे हैं। हम उस विषय के शिक्षण द्वारा बच्चों के ज्ञान, उनकी वैयक्तिक कुशलता, उनकी समझ, उनकी आदतों और क्षमताओं में क्या परिवर्तन लाना चाहते हैं। प्राथमिक कक्षाओं में सामाजिक अध्ययन पढ़ाने के कुछ मुख्य उद्देश्य नीचे दिए जा रहे हैं। अपने विषय को पढ़ाते और मूल्यांकन करते समय आप इन उद्देश्यों को कक्षा ५ के अंत तक सदैव ध्यान में रखें।

(क) बच्चों को निम्नलिखित बातें जान लेनी चाहिए:

१. संसार के सभी मनुष्यों की मूल आवश्यकताएँ–भोजन, कपड़ा और रहने का स्थान–एकसी हैं। वे इन आवश्यकताओं को दूसरों की सहायता से पूरा करते हैं।
२. मनुष्य के जीवन का भौतिक वातावरण से घनिष्ठ संबंध है। उसकी जीवन-क्रिया बहुत कुछ इसी वातावरण से प्रभावित होती है, लेकिन वह अपने प्रयत्न से वातावरण को भी अपनी आवश्यकताओं के अनुकूल बना लेता है।
३. प्राकृतिक साधनों जैसे मिट्टी, पानी, जंगल, खनिजपदार्थ आदि के उपयोग द्वारा ही मनुष्य का जीवन संभव है। इन साधनों का ठीक उपयोग करना और इनकी रक्षा करना उसका कर्तव्य है।
४. मनुष्य समाज में रहता है। वह हर बात के लिए दूसरों पर निर्भर है। परिवार में प्रत्येक व्यक्ति, देश में प्रत्येक राज्य और संसार में प्रत्येक देश, एक दूसरे पर निर्भर हैं। सहयोग के बिना किसी का कोई भी कार्य नहीं चल सकता।
५. समाज में मनुष्य का शांतिमय और सुचारु जीवन परस्पर सहयोग, सद्भावना, विश्वास और दूसरों के प्रति उत्तरदायित्व निभाने की भावना पर आधारित है।
६. भारत अब गणतंत्र है। गणतंत्र में सभी नागरिक बराबर हैं, सभी के अधिकार और कर्तव्य एक से हैं। हमें इनको जानना चाहिए और ईमानदारी से पालन करना चाहिए।
७. हमारे देश के विभिन्न भागों के लोगों की भाषाएं भिन्न-भिन्न हैं, उनके भोजन और वस्त्र अलग-अलग हैं और वे भिन्न-भिन्न धर्मों को मानते हैं। इन सब विभिन्नताओं के होते हुए भी हम सब भारतवासी हैं और एकता के सूत्र में बँधे हैं।
८. हमारे देश की एक अपनी संस्कृति है और हमारी कुछ मान्यताएँ हैं। इनको बनाए रखने और समय-समय पर इनमें संशोधन करने के लिए अपनी संस्कृति और मान्यताओं का ज्ञान होना हमारे लिए आवश्यक है।
९. भारतीय सभ्यता को बनाने में हमारे अनेक महापुरुषों ने योग दिया है। हमें उनके विषय में भी जानना चाहिए।

१०. संसार के देशों में बहुत-सी विभिन्नताएँ हैं लेकिन सभी देश एक ही दुनिया के अंग हैं । प्रत्येक देश की कुछ न कुछ देन है । हमें संसार के सभी देशों के लोगों को समान दृष्टि से देखना चाहिए और उनके अलग-अलग मतों और विश्वासों का आदर करना चाहिए।

(ख) बच्चों को निम्नलिखित कुशलताएँ सीख लेनी चाहिए :

१. सभा तथा अन्य सामूहिक कार्यक्रम में दूसरों के साथ मिलकर काम करते समय
- साफ़, शुद्ध और तर्कपूर्ण ढंग से बोलकर या लिखकर अपने विचार प्रकट करना ।
- दूसरों के विचार ध्यान से सुनना ।
- बातचीत में सम्मान-सूचक शब्दों का प्रयोग करना और अपनी बारी पर बोलना ।
- अपना उत्तरदायित्व निभाना, दूसरों को सहयोग देना और नेतृत्व कर सकना ।
- सभा, अभिनय, वाद-विवाद, उत्सव मनाने या किसी अन्य योजना में सक्रिय भाग लेना और सुव्यवस्थित ढंग से काम करना ।
- प्रदर्शनी लगाना और चीज़ों को उचित ढंग से सजाकर रखना ।
- विभिन्न स्रोतों से आवश्यक सूचना और सामग्री एकत्र करना, उसे सम्हालकर रखना, उसका उचित उपयोग करना और उसकी सहायता से छोटी-मोटी रिपोर्ट तैयार करना ।

२. पास-पड़ौस अथवा दर्शनीय स्थानों और स्मारकों का भ्रमण करते समय
- भ्रमण से संबंधित योजना बनाना ।
- सबके साथ शिष्ट व्यवहार करना ।
- मिलजुल कर काम करना और वस्तुओं को बाँट कर प्रयोग करना ।
- ट्रैफिक के चिह्नों को पहचानना, सड़क पर चलने के नियमों को सीखना और उनका पालन करना ।

३. मानचित्र, चार्ट, ग्राफ, ग्लोब आदि का प्रयोग करते समय
- विभिन्न मानचित्रों को पहचानना, पढ़ना और तुलना करना ।
- मानचित्रों में विभिन्न स्थानों की स्थिति जानना, दूरी नापना, दिशाएँ मालूम करना, विभिन्न चिह्नों, संकेतों और रंगों को पहचानना ।
- रेखा मानचित्रों को भरना ।
- ग्लोब और चपटे तल पर बने मानचित्र में अंतर जानना ।
- सरल ग्राफ, आरेख आदि पढ़ना ।
- साधारण चार्ट और मॉडल बनाना ।
- एकत्र किए चित्र, फूलपत्ती, पत्र-पत्रिकाओं की कतरन आदि को अलबमों में सुरक्षित करके रखना ।

(ग) बच्चों में निम्नलिखित भाव जाग्रत हो जाने चाहिए :

१. विभिन्न धर्मों, जातियों, भाषाओं और व्यवसायों के लोगों के प्रति आदर ।
२. देश के गौरव और आदर्शों के प्रति सम्मान ।
३. देश की एकता की भावना ।
४. राष्ट्रीय प्रतीकों के प्रति आदर ।

५. राष्ट्र के हित के लिए छोटी-मोटी ज़िम्मेदारी उठाना ।
६. देश की स्वतंत्रता बनाए रखने की प्रबल भावना ।
७. निजी व सरकारी संपत्ति तथा देश के प्राकृतिक साधनों की सुरक्षा के लिए स्वेच्छापूर्ण उत्तरदायित्व निभाना ।
८. कानून और सरकार के प्रति आदर ।
९. बड़ों तथा अध्यापकों के प्रति सम्मान ।
१०. पीड़ित और असहाय लोगों के प्रति सहानुभूति ।
११. अंतर्राष्ट्रीयता तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की भावना ।
१२. प्राकृतिक सौंदर्य में रुचि ।
१३. परिवर्तन के प्रति जागरूकता ।
१४. आत्मनिर्भरता की भावना ।

प्राथमिक कक्षाओं के छात्र

प्राथमिक कक्षाओं में पाँच-छह साल से लेकर ग्यारह-बारह साल तक के बच्चे होते हैं । जब वे पहले-पहल पाठशाला आते हैं तो उनके मस्तिष्क स्लेट की तरह साफ़ नहीं होते । वे जन्म से ही अपने घर और पास-पड़ौस में रहते रहे हैं । स्कूल में आने से पहले ही उनके पास बहुत से अनुभव होते हैं । इन्हीं अनुभवों के अनुसार वे स्कूल में बर्ताव करेंगे । आप देखेंगे कि आपके सभी छात्र बाहरी रूप में एक दूसरे से बहुत भिन्न हैं । कोई लंबा है तो कोई छोटा, कोई मोटा-ताजा है तो कोई दुबला-पतला, कोई शर्मीला है तो कोई चंचल, कोई झगड़ालू है तो कोई चुपचाप रहनेवाला । सभी का अपना-अपना अलग व्यक्तित्व है । इतनी भिन्नताओं के होते हुए भी इन बच्चों में बहुत-सी समानताएँ होती हैं । आयु की दृष्टि से तो ये सब बच्चे लगभग समान ही होते हैं; इनके घर, पास-पड़ौस का सामाजिक वातावरण और इनकी आर्थिक स्थिति आदि भी लगभग एक जैसे होते हैं । स्कूल में आने के बाद इन बच्चों को आपस में घुलने-मिलने तथा साथ रहने के और अधिक अवसर मिलते हैं ।

साधारण रूप से पाँच से बारह साल की आयु के बच्चों का विकास बहुत ही शीघ्रता से होता रहता है, लेकिन यह विकास किसी विशेष नियम के अनुसार नहीं होता । किसी का विकास जल्दी हो जाता है और किसी में देर से होता है । फिर भी इस आयु के अधिकांश बच्चों में कुछ विशेषताएँ सामान्य रूप से अवश्य ही पाई जाती हैं । अध्यापक के नाते आपका यह कर्तव्य है कि इन विशेषताओं के प्रकाश में आप अपनी कक्षा के बच्चों को अच्छी तरह जानें और समझें । निम्नलिखित विशेषताओं का ज्ञान आपको अपने अध्यापन-कार्य करने और निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक होगा ।

प्राथमिक कक्षाओं के छात्रों के विकास की कुछ विशेषताएँ

१. इस आयु के बच्चों में स्वभाव से ही कौतूहल होता है । उनमें जानने की इच्छा बड़ी प्रबल होती है । वे जो कुछ देखते हैं उसी पर प्रश्न पूछते हैं ।
२. वे हमेशा किसी-न-किसी काम में लगे रहना पसंद करते हैं । अपने मन से ही कुछ-न-कुछ बनाते रहते हैं । बड़ों की नकल करना उन्हें अच्छा लगता है । कोई भी चीज मिल जाए, उसके बारे में फौरन सब कुछ जान लेना चाहते हैं और इसलिए कभी-कभी चीज़ों को तोड़ भी डालते हैं ।

३. शुरू-शुरू में वे किसी भी विषय पर अधिक समय तक मन नहीं लगा सकते हैं, लेकिन दो-तीन साल बाद, अर्थात् कक्षा ३ या ४ में पहुँचकर कुछ देर तक एक ही काम में मन लगा सकते हैं।

४. उनकी कल्पना-शक्ति तेज़ होती है। कल्पना में एक दूसरी दुनिया बना लेना उनके लिए कठिन नहीं है। इसलिए शुरू-शुरू में परियों की कहानी, जानवरों की कहानी आदि उन्हें अच्छी लगती हैं। वे यह नहीं पूछते हैं कि परियाँ होती भी हैं या जानवर कैसे हमारी तरह बोल सकते हैं। जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं वे पूछने लगते हैं कि कहानी सच है या झूठ।

५. घर से पहली बार बाहर जाने पर वे कुछ स्वार्थी से दिखाई देते हैं। साथ मिलकर खेल नहीं पाते। अपनी चीज़ें दूसरों को नहीं देते हैं, लेकिन कुछ ही दिनों के बाद मिलकर काम करने और खेलने की स्वाभाविक रुचि उनमें दिखाई पड़ने लगती है। वे बहुत ही जल्दी दोस्ती कर लेते हैं।

६. उनके अनुभव कम होते हैं, लेकिन वे नए अनुभवों के लिए सदैव उत्सुक रहते हैं। केवल बातों की सहायता से वे ज्यादा नहीं सीख सकते। चीज़ों को देखकर, सुनकर, सूँघकर, छूकर वे अधिक सीखते हैं।

७. चीज़ें एकत्र करना वे बहुत पसंद करते हैं। बड़े जिनको फेंक देते हैं उनको जमा करना उनका बड़ा काम है। इसलिए अक्सर इन लोगों के पास रद्दी चीज़ें भरी होती हैं। सात-आठ वर्ष के बालक की जेबों और बस्ते में ऐसी चीज़ों का एक खज़ाना होता है।

८. उनमें 'झेंप' का अहसास कम होता है। वे सबके सामने बोल लेंगे। ज़रूरत पड़ने पर हाथों के बल चल लेंगे, जानवरो की बोली बोलेंगे, गाएँगे; उन्हें सफाई करना, कूड़ा उठाना, आदि कामों में कोई शर्म नहीं मालूम होती। कोई काम नीचा है या ऊँचा, वे इन भावनाओं से मुक्त होते हैं।

९. उनमें स्फूर्ति बहुत होती है, वे बहुत चुलबुले और चंचल होते हैं। चुपचाप बैठना उनके लिए कठिन है जब तक किसी विशेष वस्तु में उनका मन न लग जाए।

१०. सभी बच्चे बड़ों की दृष्टि में अच्छे बनना चाहते हैं। वे बड़ों से अपनी प्रशंसा सुनकर बहुत खुश होते हैं ओर नाराज़गी का भी उनपर बड़ा प्रभाव पड़ता है।

११. वे बड़ों से प्रेम चाहते हैं। कोई भी काम करें, उसकी तारीफ उनके लिये जरूरी है। ज़िम्मेदारी का काम दिया जाए, तो बहुत खुश होते हैं। हर बात में रोक-टोक से हतोत्साहित हो जाते हैं लेकिन जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं वैसे-वैसे नियंत्रण उन्हें पसंद होता जाता है और वे दूसरों की राय का आदर करने लगते हैं। तब वे ऐसा काम नहीं करते जिसे दूसरे अच्छा न कहें। इस समय वे समूह में रहना पसंद करते हैं और मिलजुल कर काम करना, खेलना, गाना, उनको बहुत अच्छा लगता है।

१२. उनमें ऊँच-नीच का भेदभाव नहीं होता। सभी से उनकी दोस्ती आसानी से हो जाती है।

१३. सभी बच्चे जितनी जल्दी हो सके बड़े हो जाना चाहते हैं। इसलिए वे नई बातें, नए काम सीखने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। वे बड़ों-जैसे काम शुरू से ही करना चाहते हैं और ऐसे काम की ज़िम्मेदारी लेने के लिए भी तैयार रहते हैं।

१४. उनके लिए 'आज और यहाँ' का काफी महत्त्व होता है। वे इसी के सहारे सोच-विचार सकते हैं। स्थूल वस्तु जिसे वे देख सकते हैं, छू सकते हैं उन्हें काफी आकर्षित करती हैं। इन्हीं के सहारे उनकी शिक्षा, उनके अनुभव बढ़ते जाते हैं।

१५. प्रारंभ में इस अवस्था के बच्चों के पास वे साधन नहीं होते जिनसे विधिवत् शिक्षा प्राप्त की जाती है । ये साधन वे धीरे-धीरे प्राप्त करते हैं और उनका प्रयोग सीखते हैं ।

बच्चों के विकास की विशेषताओं की यह सूची पूर्ण नहीं है। इसमें केवल उन्हीं विशेषताओं की ओर संकेत किया गया है जो इस आयु के बच्चों में साधारण रूप से पाई जाती हैं और जिनका उपयोग शिक्षण-प्रक्रिया में बहुत ही लाभदायक ढंग से किया जा सकता है । जो शिक्षण-क्रिया इन विशेषताओं पर आधारित होगी वह बच्चों को स्वभाव से ही पसंद आएगी और उन्हें सीखने में सहायता देगी । प्रत्येक विशेषता शिक्षण के लिए अपना-अपना महत्त्व रखती है और उसे अध्यापक को समझ लेना चाहिए । आगे चलकर शिक्षण के सामान्य सुझावों में इसकी चर्चा की गई है ।

शिक्षण के कुछ सामान्य सुझाव

पाठशाला सीखने के लिए उपयुक्त वातावरण बनाती है और सीखने के अवसर प्रदान करती है । बालक कब सीखता है ? केवल किसी बात को बता देने से ही वह सीख नहीं सकता । वह अधिक से अधिक उसे रट कर दुहरा सकता है । इससे उसके व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं आता । वास्तव में बालक तब सीखता है जब वह सीखने की प्रक्रिया में स्वयं सक्रिय रूप से भाग लेता है । इसके लिए आप दो बातें हर समय ध्यान में रखें । एक तो यह कि बालक में सीखने की प्रक्रिया के प्रति रुचि हो और उसे इसमें अपने किसी अर्थ की सिद्धि होने की संभावना दिखाई दे । दूसरी यह कि आप अपनी कक्षा में ऐसा वातावरण और परिस्थिति बनाएँ कि सीखने की क्रिया सुचारु रूप से संपन्न हो सके, बच्चे निर्धारित कुशलताओं, आदतों, आदि को सीख सकें और दुहरा सकें । इस प्रकार आप सहज ही अपने वांछित लक्ष्यों को प्राप्त कर सकेंगे । अतः सीखने का उपयुक्त वातावरण तैयार करना और शिक्षण को बच्चों के लिए रोचक और अर्थपूर्ण बनाना ही आपका मुख्य कर्तव्य है । इस संबंध में आप निम्नलिखित सुझाव ध्यान में रखें :

१. बच्चे के अनुभव और क्रियाएँ ही उसके विकास के असली साधन हैं । जो जानकारियाँ उसे अपने चारों ओर देखकर और सुनकर सीधे अनुभव से प्राप्त होती हैं, वह उन्हीं के आधार पर नए अनुभव और नई जानकारियाँ ग्रहण करता है । इसलिए नई चीज़ें बताते हुए आप बच्चों के पूर्व-प्राप्त अनुभवों से अधिक से अधिक लाभ उठाएँ ।

२. सामाजिक अध्ययन की पाठ्यवस्तु को अन्य विषयों की पाठ्यवस्तु से अलग नहीं समझना चाहिए । कक्षा के अन्य विषयों से उसका गहरा संपर्क रहता है । भाषा का संबंध तो स्पष्ट ही है । इसी की सहायता से बच्चा सोचता है, समझता है, बोलता है और लिखता है । आप शुरू से ही बच्चों में भाषा की योग्यता पैदा करें, उनके सामने शुद्ध भाषा बोलें और देखें कि वे भी शुद्ध भाषा का प्रयोग करते हैं । जहाँ कहीं गणित के प्रयोग का अवसर आए, वहाँ बच्चों को सोचने का समय दीजिए और अभ्यास कराइए । विज्ञान और सामाजिक अध्ययन का तो निकट संबंध है । वातावरण का अध्ययन कराते समय आप कदम-कदम पर विज्ञान की सहायता लेंगे । कागज़, मिट्टी का काम आदि तो सामाजिक अध्ययन की क्रियाओं के प्रधान उपकरण हैं । अतः आप हस्तकला, शिल्प आदि का उचित समन्वय सामाजिक अध्ययन से स्थापित करें ।

३. प्रायः हर कक्षा में आप कहानियाँ पढ़ाएँगे । कहानी सुनाते समय अपनी भाषा को अधिक जानदार बनाइए । ज़रूरत पड़ने पर हाव-भाव से काम लीजिए । आपके बोलने के तरीके से ही बच्चे बहुत कुछ सीखेंगे । यदि कहानी में बातचीत आ जाए, तो बातचीत के शब्दों का

प्रयोग कीजिए : उदाहरणत:, यह न कहिए : लड़के ने अध्यापक से किताब माँगी। कहिए : लड़का अध्यापक के पास गया और बोला, 'गुरुजी, कृपा करके मुझे अपनी किताब दे दीजिए।' हाव-भाव समय के उपयुक्त हो।

४. आपकी कक्षा में कुछ तेज़ छात्र होंगे। इनकी आवश्यकताएं औरों से भिन्न हैं। वे जल्दी सीख लेते हैं। औरों से अधिक सीखना चाहते हैं। उनकी उत्सुकता भी अधिक होती है। अत: उनकी आवश्यकताओं पर भी आप ध्यान रखें। उनको अधिक जानने के लिए प्रोत्साहित करें। इसी प्रकार आप मंद-बुद्धि छात्रों की आवश्यकताओं का भी विशेष ध्यान रखें।

५. बच्चों के जीवन में शिक्षक का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। वे हर समय अपने शिक्षक के आचरण का अनुकरण करते हैं और उसके व्यक्तित्व से जाने-अनजाने प्रेरणा लेते हैं। अत: आप अपने दिन-प्रति-दिन के व्यवहार को आदर्श रूप में बच्चों के सामने रखें और देखें कि बच्चे भी शिष्ट व्यवहार करना सीखते है। इसके अतिरिक्त आप इस बात का भी ध्यान रखें कि बच्चों में कोई कुसंस्कार आदि न पड़ें। वे स्कूल के बाहर से छुआ-छूत आदि जैसी गलत बातें न सीखें।

६. हर एक कक्षा के पाठ्यक्रम में कुछ बुनियादी तथ्य और जानकारियाँ होती हैं। आगे चलकर इन्हीं के आधार पर ज्ञान का विस्तार किया जाता है। हर एक स्तर पर यदि इन तथ्यों को बच्चा अच्छी तरह से नहीं समझ पाए या उनमें अभ्यस्त न हो तो आगे उसको कठिनाई होगी। इसलिए यह जरुरी है कि इन तथ्यों को नए-नए रूप में दुहराया जाए।

७. पाठ्यपुस्तकों में प्रचुर मात्रा में चित्र दिए गए हैं। ये सजावट मात्र नहीं हैं, बल्कि पाठ्यपुस्तकों के अभिन्न अंग हैं। इनके माध्यम से रुचि और उत्सुकता, दोनों बढ़ती हैं। चित्रों को ध्यान से देखना सिखाइए। इनकी आपस में तुलना कराइए और बच्चों को नया ज्ञान देने में सहायता दीजिए। इनके द्वारा अस्पष्ट धारणाओं को स्पष्ट कीजिए।

८. पाठ्यपुस्तक में दी गई क्रियाएं और अभ्यास भी शिक्षण के आवश्यक अंग हैं। इनके द्वारा आप मूल्यांकन तो करेंगे ही, साथ ही पढ़ाते समय तथा पढ़ाने के बाद उनके प्रयोग से छात्रों के ज्ञान को व्यवस्थित रूप भी दे सकेंगे। साथ ही, क्रियाओं के माध्यम से पढ़ाकर आप ज्ञान को स्थायी और प्रभावपूर्ण बना सकते हैं। इन्हीं की मदद से आप नई क्रियाएँ और नए अभ्यास सोच सकते हैं।

छात्रों के लिए संभव क्रियाएँ

सीखने में क्रियाओं का बड़ा महत्व है। इनसे बच्चों में विषय के प्रति रुचि बढती है और शिक्षा की बुनियाद भी पक्की होती हैं। सामाजिक अध्ययन पढ़ाते समय आप क्रियाओं की सहायता अवश्य लें। पाठ्यपुस्तक और दर्शिका-भाग में ऐसी अनेक क्रियाओं का उल्लेख किया गया है। क्रियाओं के संबंध में आपकी सुविधा के लिए यहाँ कुछ सामान्य सुझाव दिए जा रहे हैं। इन क्रियाओं को कराते समय आप नीचे लिखे सुझावों को ध्यान में रखें और आवश्यकतानुसार इनमें फेर-बदल कर लें :

१. पूरे साल के काम की योजनां और व्यवस्था

साल के प्रारंभ में ही पूरे साल के काम की योजना बना लीजिए। पाठ्यक्रम की प्रत्येक 'यूनिट' पर कितने सप्ताह का समय लगेगा, अंदाज़ करके लिख लीजिए। पढ़ाते समय देखते जाइए इसमें कितना अंतर हुआ। ऐसा क्यों हुआ, इस पर भी विचार करते जाइए। संभव है कि आगामी वर्षों में भी आप

इसी कक्षा को पढ़ाएं । उस समय पुराने अनुभवों से लाभ उठाइएगा । योजना बना लेने के बाद ऐसा न सोचिए कि योजना में परिवर्तन न हो सकेगा । आवश्यकता पड़ने पर इसको बदलते जाइए, लेकिन परिवर्तन भी सोच समझकर कीजिए । इस परिवर्तन में आपको विशेष कठिनाई न होगी, क्योंकि अधिकतर प्राथमिक पाठशालाओं में प्रायः एक ही अध्यापक को कक्षा के सारे विषय पढ़ाने होते हैं ।

छोटे बच्चों को टोली में काम करना अच्छा लगता है । अतः आप अपनी कक्षा के बच्चों को कुछ टोलियों में बाँटकर काम कराएँ । प्रत्येक काम की व्यवस्थित योजना बच्चों के साथ मिलकर बनाएँ । कक्षा को अव्यवस्था से दूर रखें और प्रत्येक काम को सुव्यवस्थित ढंग से कराएं । कई बार एक ही प्रकार का काम करते-करते बच्चे ऊब जाते हैं । जैसे दिन भर चुपचाप बैठकर काम करना उन्हें अच्छा नहीं लगता है, वैसे ही पूरा समय घूम-फिर कर या खेलकर काटना भी इन्हें बुरा लगेगा । आप बच्चों की रुचि का अवश्य ध्यान रखें और विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ बदल-बदल कर बच्चों से कराएँ ।

२. चीजें एकत्र करना, अलबम आदि बनाना और लेखा रखना

आप जानते हैं कि बच्चों में चीज़ें एकत्र करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है । आप को चाहिए कि इस दिशा में बच्चों को बराबर प्रोत्साहित करते रहें । बच्चों को हर प्रकार की चीज़ों से रुचि होती है । कागज़ के टुकड़े, दियासलाई के बक्स, टीन के डिब्बों से लेकर वे डाकटिकट, रेलटिकट, बस के टिकट, फूल, पौधे, पत्तियाँ, रंगीन पत्थर, चित्र आदि सभी चीजें एकत्र करते हैं । उनके द्वारा एकत्र की हुई चीज़ों की कभी-कभी प्रदर्शनी लगाइए और किसी भी चीज़ को नीची निगाह से न देखिए । आप इन सभी चीज़ों के द्वारा बच्चों को कुछ-न-कुछ नवीन ज्ञान दे सकते हैं । उदाहरणार्थ, एक बच्चा पुरानी चिट्ठियाँ एकत्र करता है । आप इनके द्वारा बच्चों को डाकघर की मोहर पढ़ना, इसका महत्त्व जानना, पता पढ़ना व लिखना आदि बहुत-सी बातें सिखा सकते हैं । चिट्ठियों पर तरह-तरह के डाकटिकट लगे होते हैं । प्रत्येक का कोई न कोई अर्थ होता है, उसके पीछे कुछ इतिहास होता है । इनसे आप कई नई जानकारियाँ करा सकते हैं ।

एकत्र की हुई चीज़ों को सुरक्षित और सुंदर ढंग से रखने के लिए आप बच्चों को अलबम बनाना सिखाएँ । चित्र, टिकट, फल-पत्ती, पुराने सिक्के आदि की अलग-अलग अलबम बच्चे अपनी-अपनी रुचि के अनुसार बना सकते हैं । यहाँ यह याद दिलाना आवश्यक है कि बच्चों में चीज़ें एकत्र करने की प्रवृत्ति यदि बहुत अधिक बढ़ जाए, तो उनमें चोरी आदि की बुरी आदत पड़ने का डर रहता है । अतः आप इससे सतर्क रहें ।

पत्र-पत्रिकाओं से लिए गए विभिन्न विषयों से संबंधित चित्र, मानचित्र, समाचार, सूचना, विज्ञापन आदि की कतरनों को अलबम में लगाना बच्चों के लिए बड़ा रुचिकर होगा । वे इनकी मदद से सूर्योदय व सूर्यास्त का समय, दैनिक मौसम, वर्षा, बाढ़, सूखा, चुनाव, मेले, त्यौहार आदि अनेक बातों का लेखा रखना भी सीख सकेंगे ।

३. सामाजिक अध्ययन का कोना, भीत-पत्र और प्रदर्शनी

प्राथमिक पाठशालाओं में हर विषय के लिए अलग कमरा मिलना कठिन होता है । आप अपनी कक्षा के कमरे के एक भाग का सामाजिक अध्ययन के लिए उपयोग कर सकते हैं । यही सामाजिक अध्ययन का कोना होगा । इस कोने में बच्चों द्वारा बने चित्र, मानचित्र, लेख, कविता, चार्ट, माडल, अलबम आदि रखे जा सकते हैं । इस स्थान की सफाई, देखभाल, सजावट आदि का भार आप बच्चों को ही सौंपें । सामाजिक अध्ययन का कोना एक प्रकार से 'कक्षा प्रदर्शनी' का काम देगा । यहीं से आप कुछ ऐसी सामग्री का चुनाव करें जिसे आप स्कूल के **'भीत-पत्र'** में प्रदर्शनार्थ भेज सकते हैं । 'भीत-पत्र' में सभी कक्षाओं के बच्चों

की और सभी विषयों से संबंधित चीज़ें शामिल होती हैं और स्कूल में किसी एक विशेष स्थान पर लकड़ी के एक बड़े बोर्ड पर लगाई जाती हैं । 'भीत-पत्र' पर थोड़े-थोड़े समय के बाद नई नई चीजें लगती रहनी चाहिएँ । इसके अतिरिक्त आप सामाजिक अध्ययन के कोने में बच्चों के लिखे अथवा संग्रह किए हुए लेख कविताएँ, चुटकुले आदि स्कूल की पत्रिका में सम्मिलित करने के लिए भी चुन सकते हैं ।

प्रत्येक स्कूल में कुछ विशेष समारोह प्रतिवर्ष मनाए जाते हैं । इन अवसरों पर आप बच्चों की बनाई हुई चीजों की प्रदर्शनी अवश्य लगाएँ । यह प्रदर्शनी स्कूल के किसी बड़े कमरे में लगाई जाए और इसमें सभी कक्षाओं के बच्चों की वस्तुएँ प्रदर्शित की जाएँ । प्रदर्शनी के लगाने में बच्चों को काम करने का अवसर अवश्य दीजिए । उनके माता-पिता आदि को भी यह प्रदर्शनी देखने के लिए बुलाइए । बच्चों की बनाई हुई कुछ अच्छी चीज़ों पर कुछ छोटे-मोटे पुरस्कार भी दीजिए । पुरस्कार व्यक्तिगत और सामूहिक, दोनों प्रकार के हो सकते हैं । इससे बच्चों की भावनाओं को उचित प्रोत्साहन मिलेगा।

४. चित्र, मानचित्र, चार्ट, माडल आदि का प्रयोग

हाथ से काम करना बच्चों को स्वभाव से ही अच्छा लगता है । चित्र बनाना और एकत्र करना उनके लिए समान रूप से रुचिकर होता है । आप बच्चों से अपने विषय से संबंधित कुछ साधारण चित्र, चार्ट, माडल आदि बनवाएँ । धरती पर कोई बड़ा मानचित्र या माडल बनाने के लिए सारी कक्षा के बच्चे मिलकर काम करें । नए ढंग की बस्ती, आदर्श गाँव, स्कूल, भाखड़ा बाँध, कुतुब मीनार, सौरमंडल आदि के छोटे-बड़े माडल कागज़, मिट्टी, पत्थर आदि की सहायता से बनाए जा सकते हैं । ऐसे माडल बच्चों के लिए बहुत अर्थपूर्ण होते हैं । वे इन्हें छूकर, बनाकर, बिगाड़कर देख सकते हैं । इनकी सहायता से वे बहुत शीघ्र समझते हैं और उनका ज्ञान सुदृढ़ हो जाता है । छोटे माडलों को आप सामाजिक अध्ययन के कोने में रखवाएँ । धरती पर बननेवाले माडल अथवा मानचित्र के लिए आप स्कूल के प्रांगण में कोई ऐसा स्थान चुनें जहाँ पर बनाई हुई चीज़ें काफी देर तक सुरक्षित रह सकें । चित्र, चार्ट, माडल आदि बनाने के काम का आप हस्तकला के विषय से सरलतापूर्वक समन्वय स्थापित कर सकते हैं ।

बच्चे कक्षा ५ में ग्लोब का अध्ययन करना और प्रयोग करना सीखेंगे । अत: आपके स्कूल में ग्लोब का होना ज़रूरी है । यदि आप के स्कूल में ग्लोब नहीं है तो आप बच्चों से नकली ग्लोब बनवाएँ । इसके लिए आप भिगोकर कूटा हुआ रद्दी कागज़ या मिट्टी काम में ला सकते हैं । भूमि की बनावट और इससे संबंधित अन्य बातें आप ग्लोब की सहायता से आसानी से समझा सकेंगे ।

५. वार्तालाप, अभिनय और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम

पढ़ाने की क्रियाओं में 'अभिनय' का महत्त्वपूर्ण स्थान है । अभिनय के माध्यम से बच्चों को सच्चे अनुभव प्राप्त होते हैं और अतीत की घटनाएँ उनके सामने जीवित हो उठती हैं ।

सामाजिक अध्ययन पढ़ाते हुए आप वार्तालाप, क्रियागीत, कविता, कव्वाली, भजन, लोकनृत्य, लोकगीत, फैंसी-ड्रैस-शो, सामूहिक गान, एकांकी नाटक, मूक अभिनय, आदि बहुत-से कार्यक्रम कराना पसंद करेंगे । छोटे बच्चे इन सभी चीज़ों में स्वभाव से रुचि लेते हैं । साधारण वार्तालाप भी उनके लिए एक प्रकार का अभिनय होता है । इतिहास की कहानी या वर्तमान की किसी घटना का नाटक खेलना तो उनके लिए बहुत ही अर्थपूर्ण होगा । अत: आप शिक्षण में अभिनय के माध्यम को भी काम में लाएँ और अधिकाधिक बच्चों को नाटक और अन्य सांस्कृतिक क्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें । इन क्रियाओं को देखना और ध्यान से सुनना ही बहुत लाभकारी होता है, इसलिए आप इस दिशा में भी बच्चों को प्रशिक्षण दें ।

पाठशाला में कुछ विशेष दिवस, उत्सव, सप्ताह आदि मनाना सामाजिक अध्ययन की अच्छी क्रिया है । अपनी कक्षा की विषयवस्तु के अनुसार आप वर्ष में कई अवसरों पर विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत कर सकते हैं, जैसे, स्कूल का वार्षिकोत्सव, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, बाल दिवस, अध्यापक दिवस, गाँधी जयंती, संयुक्त राष्ट्रसंघ दिवस, मानव अधिकार दिवस, वन-महोत्सव सप्ताह, सफ़ाई सप्ताह आदि । बच्चों को समय-समय पर तैयार कराए गए कुछ अच्छे-अच्छे सांस्कृतिक कार्यक्रम आप इन अवसरों के लिए चुन लें ।

६. प्रार्थना सभा और बाल सभा

सभी स्कूलों में हर रोज़ प्रार्थना सभा होती है । स्कूल के सभी बच्चे और अध्यापक इसमें अनिवार्य रूप से भाग लेते हैं । आप अपनी कक्षा के बच्चो को इस सभा में उचित और सुव्यवस्थित ढंग से भाग लेना सिखाएँ । वे प्रार्थना सभा में जाते और आते समय लाइन बनाकर चलें । सप्ताह में कम-से-कम एक दिन आपकी कक्षा के दो बच्चे प्रार्थना कहलवाएँ । इस सभा के लिए समय-समय पर उचित प्रार्थनाएँ चुनने का काम आप करें । प्रार्थना के बाद बच्चों की सफाई का निरीक्षण करना, राष्ट्गीत सामूहिक रुप से गाना, कुछ विशेष अवसरों पर झंडा फहराना, भाषण देना, समाचार सुनाना आदि सभी बातें सामाजिक अध्ययन से संबंध रखती हैं । आप इन्हें अच्छी तरह कराइए ।

बाल सभा के माध्यम से तो बच्चों को सामाजिक अध्ययन की बहुत-सी बातें सिखाई जा सकती हैं । सप्ताह में एक दिन आप कुछ समय 'कक्षा बाल सभा' की बैठक के लिए निश्चित कर लीजिए । पूरे स्कूल की बाल सभा की बैठक भी मास में एक बार अवश्य होनी चाहिए । आप अधिक से अधिक बच्चों को बाल सभा में बोलने के अवसर दें और स्कूल के छोटे-मोटे काम की ज़िम्मेदारी सौंपें । इस प्रकार उन्हें सभा में बोलने का अभ्यास होगा और ज़िम्मेदारी निभाने की आदत पड़ेगी । अपने विषय से संबंधित जो वार्तालाप, नाटक, कहानियाँ, क्रियागीत, कविताएँ आदि आप बच्चों से सामूहिक अथवा व्यक्तिगत रूप से तैयार कराते हैं, उन्हें पहले 'कक्षा बाल सभा' में और फिर कुछ चुनी हुई चीज़ें पूरे स्कूल की बाल सभा में प्रस्तुत कराएँ । कभी-कभी किसी विशेष अवसर पर प्रतियोगिता कराएँ और बच्चों को कुछ पुरस्कार भी दें । यह बात याद रखिए कि आपका काम बच्चों को ज़रूरी सुझाव और निर्देश देकर उनका उचित मार्गदर्शन करना है । बाल-सभा बच्चों की सभा है । इसका सारा कार्य मुख्य रूप से बच्चे ही करेंगे । आप अपने छात्रों को धीरे-धीरे इस योग्य बनाइए कि वे अपनी बाल सभा का आयोजन स्वतंत्र रूप से करना सीखे । अध्यक्ष, मंत्री आदि का चुनाव भी बच्चे आपके निरीक्षण में स्वयं ही करें । अध्यक्ष सभा की कार्यवाही चलाए । मंत्री इसका ब्योरा रखे । बाल सभा के अधिकारी प्रत्येक कक्षा से चुने जाएँ । बड़ी जिम्मेदारी के काम ऊँची कक्षाओं के बच्चे करें और वे इन कामों का प्रशिक्षण धीरे-धीरे छोटे बच्चों को देते रहें ।

७. पास-पड़ौस का अध्ययन और स्थानीय भ्रमण

सामाजिक अध्ययन के शिक्षण में पास-पड़ौस के अध्ययन का बड़ा महत्व होता है । इसके लिए बच्चों को पाठशाला से बाहर भ्रमण पर ले जाना आवश्यक होगा । भ्रमण से यहाँ हमारा अभिप्राय केवल मनोरंजन नहीं है, बल्कि बच्चों को कुछ अनुभव और जानकारियाँ कराना हमारा ध्येय है ।

इस संबंध में आप अपने छात्रों को बहुत-से ऐतिहासिक, भौगोलिक स्थानों, जंगल, नदी, झील, पार्क, शहर, गाँव, स्टेशन, हवाई अड्डे, दफ्तर, कारखाने, प्रदर्शनी, मेले, संग्रहालय, चिड़ियाघर, पंचायत, निगम और संसद की बैठक आदि अनेक चीज़ें दिखाना चाहेंगे, अनेक लोगों से बातचीत कराना चाहेंगे । अतः आप पास-पड़ौस के अध्ययन अथवा स्थानीय भ्रमण पर जाने से पहले विशेष तैयारी करें और बच्चों से मिलकर इसकी योजना बनाएँ । इस संबंध में आप आगे दी गई बातों का विशेष ध्यान रखें :

- भ्रमण के उद्देश्य आपके मन में स्पष्ट होने चाहिएँ।
- भ्रमण से पूर्व छात्रों से उसके संबंध में बातचीत कीजिए। कापी, पेंसिल, भोजन आदि लाने और अन्य आवश्यक बातों के बारे में उन्हें पहले से समझा दीजिए।
- सभी बच्चों को योजना में सक्रिय भागीदार बनाने का यत्न कीजिए। कहाँ-कहाँ, किस प्रकार, किस समय जाएँगे? कौन क्या करेगा? किससे क्या बातचीत की जाएगी? किन-किन बातों का लेखा रखा जाएगा? आदि सभी पर पहले विचार कर लीजिए।
- जिस स्थान पर आप जा रहे हैं उसका निरीक्षण पहले आप स्वयं कर लीजिए और उसके खुलने, बंद होने के बारे में आवश्यक जानकारी भी पहले से प्राप्त कर लीजिए। किसी संस्था, सभा आदि में जाना हो या किसी व्यक्ति से मिलना हो, तो दिन और समय भी निश्चित कर लीजिए।
- निकट के स्थानों की यात्रा पैदल कराइए। दूर जाना हो तो बस आदि का प्रबंध कर लें। यदि आप छुट्टीवाले दिन भ्रमण पर जा रहे हैं तो कुछ बड़े स्कूलों की बसें आपको सस्ते किराए पर मिल जाएँगी।
- भ्रमण पर जाने से पहले बच्चों को टोलियों में बाँट दीजिए और प्रत्येक टोली का एक नेता भी नियुक्त कर दीजिए। सभी टोलियों को अलग-अलग काम सौंप दीजिए। यात्रा के बीच में नेता अपनी-अपनी टोली के बच्चों को आवश्यक निर्देश देंगे।
- यात्रा में बच्चों की सुरक्षा करना आपकी बड़ी ज़िम्मेदारी है। यदि आप बहुत अधिक बच्चों को यात्रा पर ले जा रहे हैं तो स्कूल के कुछ अन्य अध्यापकों को साथ ले जाएँ। यह संभव न हो तो आप कुछ बच्चों के बड़े भाई, बहिन, माता आदि को अपनी सहायता के लिए अपने साथ ले जाएँ।
- भ्रमण के बीच में बच्चों के व्यवहार पर दृष्टि रखिए। वे हर काम सुव्यवस्थित ढंग से करें, सभी से शिष्टतापूर्वक बातचीत करें, सड़क के नियमों का पालन करें, किसी सार्वजनिक अथवा निजी संपत्ति को हानि न पहुँचाएँ, मिलजुल कर और बाँटकर खाएँ-पीएँ।
- यात्रा से वापस आने के बाद भी कुछ काम करना बहुत ज़रूरी है, अन्यथा आपकी यात्रा अधूरी रहेगी। अतः आप कक्षा में यात्रा के ऊपर खूब बातचीत करें। बच्चों के अनुभवों और जानकारियों का सारांश श्यामपट पर लिखते जाएँ। पूरी कक्षा इस यात्रा का विवरण लिखे, चित्र बनाए, माडल तैयार करे, सूचियाँ आदि बनाए और अन्य संबंधित क्रियाएँ करे।
- यदि आप किसी व्यक्ति विशेष को बातचीत के लिए कक्षा में बुलाएँ, तो उससे दिन और समय आदि पहले से ही निश्चित कर लीजिए। बातचीत के विषय और आगंतुक के बारे में बच्चों को ज़रूरी जानकारी कराना न भूलिए। वे अपने प्रश्न बारी-बारी से पूछें। आगंतुकों का स्वागत, धन्यवाद, आदि भी बच्चे ही करें।

८. रेडियो, टलिविज़न-कार्यक्रम और फिल्म-शो का आयोजन

रेडियो, टेलिविज़न और फिल्म शिक्षा के बहुत शक्तिशाली साधनों में से हैं। अधिक बच्चे अपने घर या पड़ौस में रेडियो कार्यक्रम सुनते हैं। दिल्ली के कुछ स्कूलों में रेडियो हैं और बहुत-से हायर सेकंडरी स्कूलो में टेलिविज़न-सेट भी हैं। सामाजिक अध्ययन से संबंधित अनेक कार्यक्रम रेडियो और टेलिविज़न पर प्रसारित

होत हैं । जब भी मौका मिले, आप इनका लाभ उठाइए । स्वतंत्रता दिवस, बाल दिवस, गणतंत्र दिवस आदि के अवसर पर तो आप बच्चों से विशेष रूप से रेडियो कार्यक्रम सुनने का अनुरोध कीजिए और अपनी बस्ती के हायर सेकंडरी स्कूल के प्रिंसिपल महोदय से मिलकर बच्चों को टेलिविज़न कार्यक्रम दिखाइए ।

किसी विशेष विषय से संबंधित फिल्म देखना बच्चों के लिए बड़ा लाभकर होगा । इसके लिए आप राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के श्रव्य-दृश्य-शिक्षा विभाग (इंद्रप्रस्थ इस्टेट, नई दिल्ली) के विभागाध्यक्ष से संपर्क स्थापित करें । वे आपके स्कूल में ही फिल्म-शो दिखाने का प्रबंध करेंगे । यदि यह कार्यालय आपके स्कूल के निकट है तो आप बच्चो को वहाँ ले जाकर फिल्म दिखा सकते हैं । विदेशों से संबंधित फिल्मों के लिए आप दूतावासों से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं ।

रेडियो, टेलिविज़न कार्यक्रम सुनाने अथवा फिल्म-शो दिखाने से पहले आप बच्चों को विषय से संबंधित कुछ आवश्यक बातें समझा दें । कार्यक्रम देखने के बाद आप बच्चों से इसके बारे में बातचीत अवश्य करें और प्रश्नों द्वारा पाठ की पुनरावृत्ति करें ।

९. कहानी सुनाना

कहानी सुनाना एक कला है । हर एक शिक्षक को यह कला आनी चाहिए । प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे कहानी सुनाना और सुनना बहुत पसंद करते हैं । अत: छोटे बच्चों के शिक्षकों के लिए कहानी सुनाने का प्रभावपूर्ण ढंग सीखना अनिवार्य है । इतिहास की कहानियों के अलावा प्रस्तुत पाठ्यपुस्तकों में कुछ अन्य पाठों को भी या तो कहानी में गूँथा गया है या पाठ्यवस्तु को कहीं न कहीं पर कहानी का रंग दिया गया है । इसका एकमात्र उद्देश्य यही है कि बच्चे कठिन विषय को कहानी के माध्यम से जल्दी समझ जाएँ और रुचि से पढ़ें ।

कहानी सुनाने की कई विधियाँ हो सकती हैं । प्रश्नोत्तर द्वारा अथवा टुकड़ों में कहानी सुनाई जा सकती है । चित्रों के माध्यम से भी कहानी सुनाई जाती है । अच्छा कहानी सुनानेवाला सदा जानदार सरल भाषा में कहानी सुनाता है । वह आवश्यकतानुसार आवाज़ बदलकर, रुक-रुक कर, हाव-भाव के साथ घटनाओ का वर्णन करता है । इससे सुननेवालो की रुचि बनी रहती है और वे उकताते नहीं । आप बच्चों को भी कक्षा में कहानी सुनाने के लिए उत्साहित करें । वे आपकी नकल करके ही कहानी सुनाना सीखेंगे । आप उन्हें हाव-भाव के साथ, हँसकर, रोकर, गाकर, नाचकर कहानी सुनाना सिखाएँ । कभी-कभी केवल हाव-भाव, अंगभंगी से कहानी कहें, कुछ न बोलें ।

लंबी कहानियों को एक ही बार में न पढ़ाकर कई दिनों तक टुकड़ो में पढ़ाएँ । कहानी पढ़ाते समय कोई उपदेश बच्चों को न दें । बच्चे निष्पक्ष भाव से कहानी पढ़ें और स्वयं इसके अच्छे-बुरे पहलुओं को समझें । कहानियों का अन्य पाठों या विषयों से समन्वय करना उचित होगा । कुछ कहानियों का अथवा इन पर आधारित कुछ घटनाओं का वार्तालाप या अभिनय भी बच्चे तैयार कर सकते हैं ।

मूल्यांकन

पाठ्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए हम छात्रोंके शिक्षण में नई-नई विधियाँ, क्रियाएँ, उपकरण आदि काम में लाते हैं । किसी विषय के शिक्षण से बच्चों ने क्या सीखा, उनकी क्या उपलब्धियाँ हुईं, उनके आचरण में क्या परिवर्तन आए और शिक्षक अपने निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने में कहाँ तक सफल हुआ, इन सब बातों की जाँच करने का नाम मूल्यांकन है । मूल्यांकन का अर्थ केवल यह नहीं है कि हम अपने शिक्षण की सफलता या असफलता का पता लगा लें अथवा छात्रों की उपलब्धि की इस जाँच के आधार

र उन्हें सफल या असफल कर दें। इसके विपरीत मूल्यांकन के परिणामों को शिक्षण में सुधार लाने का साधन बनाकर प्रयुक्त करना ही हमारा उद्देश्य है। वास्तव में मूल्यांकन शिक्षण का एक अभिन्न अंग है। यह एक ऐसी क्रिया है, जो शिक्षण के साथ-साथ चलती है। अपने दिन-प्रति-दिन के शिक्षण कार्य के बीच आप अनुभव करेंगे कि विभिन्न स्थितियों के अनुसार कई शिक्षण-क्रियाओं को मूल्यांकन के लिए और कई मूल्यांकन-क्रियाओं को शिक्षण के लिए प्रयोग किया जा सकता है। कभी-कभी एक ही क्रिया शिक्षण और मूल्यांकन, दोनों के उद्देश्य पूर्ण करने में सहायक होती है। उदाहरण के लिए सड़क पर चलने के नियम सिखाने के लिए आप बच्चों को 'चौराहे का खेल' खिलाते हैं। इस क्रिया के द्वारा आप बच्चों को न केवल सड़क के नियम सिखाते हैं और इनका अभ्यास कराते हैं, बल्कि इसीके द्वारा आप उनके सीखे हुए नियमों की जाँच भी कर सकते हैं।

आप हर रोज़ अपनी कक्षा में प्रश्न पूछते हैं, मासिक जाँच करते हैं, अर्धवार्षिक और वार्षिक परीक्षा लेते हैं। मूल्यांकन का यह ढंग सरल और स्पष्ट है। इसके द्वारा आप बच्चों के सीखे हुए कौशलों और याद किए हुए तथ्यों और जानकारियों की जाँच कर लेते हैं, लेकिन इतना ही काफी नहीं है। सीखे हुए ज्ञान के आधार पर बच्चों के आचरण में आनेवाले परिवर्तनों की जाँच करना भी ज़रूरी है। यह मौखिक या लिखित परीक्षा द्वारा संभव नहीं है। इसके लिए आप बच्चों के व्यवहार का निरंतर निरीक्षण कीजिए और उचित परिस्थितियाँ बनाकर तथा ठीक प्रशिक्षण देकर उनकी भावनाओं और वृत्तियों में सुधार लाने का यत्न कीजिए।

प्रत्येक छात्र के विषय में और उसकी प्रगति के संबंध में जानकारी के लिए आप अपने से निम्न प्रकार के प्रश्न पूछें :

- क्या वह आत्मनिर्भर है या प्रत्येक बात में दूसरों पर निर्भर रहता है ?
- क्या वह दूसरो के साथ तत्काल ही दोस्ती कर लेता है या एकांत में रहना पसंद करता है ?
- क्या वह दूसरों के साथ मिल-जुलकर काम कर सकता है या थोड़ी ही देर में लड़ने लगता है ?
- क्या वह अपनी बारी की प्रतीक्षा खुशी से करता है या लड़झगड़ कर हमेशा सबसे पहले बारी लेना चाहता है ?
- क्या वह नियमों का पालन करता है ? यदि करता है तो क्या केवल आपके सामने करता है या हमेशा ही ?
- क्या वह अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाता है ? और यदि निभाता है तो कैसे ? क्या उस समय प्रसन्न रहता है या उस काम को मुसीबत समझकर करता है ?
- क्या वह अपनी और दूसरों की चीज़ों का ध्यान रखता है ?
- क्या वह किसी काम या खेल में अगुआ बनता है ? यदि बनता है, तो औरों के साथ उसका कैसा बर्ताव रहता है ? उसके साथी प्रसन्नतापूर्वक उसका कहना मानते हैं या उसकी धौंस से डरते हैं ?
- वह स्वभाव से ही भीरु तो नहीं ? क्या सबके सामने बोलने में उसे कोई झिझक होती है ? क्या ऐसी झिझक हमेशा होती है या किन्हीं विशेष अवसरों पर ? यदि विशेष अवसरों पर झिझक होती है, तो क्यों ?
- बड़ो के सामने उसका कैसा आचरण रहता है ? क्या वह उपयुक्त शिष्ट शब्दों का प्रयोग करता है या नहीं ? अपने छोटों से उसका बर्ताव कैसा है ?

-- काम करते समय वह अधीर हो जाता है या शांत रहता है ? उसने धैर्य रखना सीखा है या नहीं ?
-- वह प्रत्येक साथी से बराबरी का व्यवहार करता है या नहीं ? वह साथियों के संरक्षकों के पेशों का सम्मान करता है या नहीं ? दूसरों के प्रति उसमें कोई भेदभाव तो नहीं है ?

पाठ्यपुस्तक के बारे में

नए पाठ्यक्रम के अनुसार लिखी गई कक्षा ३ की सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक का शिक्षक संस्करण आपके हाथों में है । पहले कहा जा चुका है कि प्राथमिक कक्षाओं के सामाजिक अध्ययन के हमारे वर्तमान पाठ्यक्रम का मौलिक आधार है ' हमारा देश और उसकी एकता '। कक्षा १ और कक्षा २ में इस विषय को पढ़ाने के लिए कोई पाठ्यपुस्तक नहीं है । अतः प्रस्तुत पुस्तक नए पाठ्यक्रम के अनुसार लिखी गई सामाजिक अध्ययन की पहली पाठ्यपुस्तक है जिसे कक्षा ३ के छात्र पढ़ेंगे । अपने घर, पाठशाला, और पास-पड़ौस के बारे में वे पहले पढ़ चुके हैं । प्रस्तुत पुस्तक की मूल विषय-वस्तु ' दिल्ली ' क्षेत्र है। सारी पुस्तक को सात खंडों में बाँटा गया है और प्रत्येक खंड में कई-कई पाठ हैं । एक ही प्रकार की विषयवस्तु के पाठ एक खंड के अंतर्गत रखे गए हैं । सभी पाठों को सीधे सादे और रोचक ढंग से लिखने का प्रयत्न किया गया है । उदाहरण के लिए किसी पाठ में बच्चों को सैर-सपाटे पर ले जाने का नाटकीय ढंग अपनाया गया है तो कोई पाठ कहानी के रूप में गूँथा गया है अथवा इसके लिए कोई अन्य रोचक शैली अपनाई गई है । प्रत्येक खंड के आरंभ में और सभी पाठों में काफी चित्र, मानचित्र आदि दिए गए हैं । सारी पुस्तक को बच्चों के लिए सरल, सुंदर और रोचक बनाने का प्रयत्न किया गया है । कठिन शब्दों और धारणाओं की व्याख्या साथ-साथ कर दी गई है । इसीलिए पुस्तक के अंत में कोई शब्दावली आदि नहीं है ।

खंड १ में दिल्ली क्षेत्र की स्थिति, सीमाएँ, भूमि की बनावट, जलवायु, मौसम, वर्षा, प्राकृतिक वनस्पति, उपज आदि तथा भारत की राजधानी दिल्ली नगर के ऐतिहासिक व राजनैतिक महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है ।

खंड २ में दिल्ली नगर के रहनेवालों के रहन-सहन, रीति-रिवाज, भाषा, धर्म आदि के साथ-साथ शहर के नए-पुराने मकानों, बस्तियों, बाज़ारों और कुछ दर्शनीय स्थानों और प्राचीन स्मारकों का वर्णन है ।

तीसरे खंड के पाठों में दिल्ली नगर निगम, इसके चुनाव और कार्य आदि के अतिरिक्त दिल्ली निवासियों को प्राप्त कुछ मुख्य नागरिक सुविधाओं का विस्तारपूर्वक ब्यौरा दिया गया है । बिजली, पानी, परिवहन, डाक-तार व टेलीफोन, शिक्षा और आग बुझाने के प्रबंध आदि पर अलग-अलग पाठ हैं ।

खंड ४ में दिल्ली क्षेत्र के विकसित होते हुए विभिन्न कारखानों और दस्तकारियों पर दो पाठ हैं । यहाँ के कारखानों की बनी और दस्तकारी की क्या-क्या वस्तुएँ अन्य शहरों और राज्यों को भेजी जाती हैं और औद्योगीकरण का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है—इन बातों पर विचार किया गया है ।

दिल्ली क्षेत्र के उन्नतिशील गाँवों, ग्राम पंचायतों, वहाँ के बदलते हुए ग्रामीण जीवन और शहर व गाँवों के बीच घनिष्ठ संबंधों के बारे में खंड ५ में बताया गया है ।

खंड ६ में दिल्ली क्षेत्र के पड़ौसी राज्य उत्तर प्रदेश और हरियाना के लोगों के रहन-सहन, रीति-रिवाज तथा इन राज्यों के पारस्परिक घनिष्ठ संबंधों की चर्चा की गई है । इस बात पर बल दिया गया है

कि अनेक भिन्नताओं के होते हुए भी सभी राज्य भारत के अभिन्न अंग हैं और सबकी उन्नति में ही भारत की उन्नति है ।

पुस्तक के अंतिम खंड में रामायण, महाभारत और इतिहास की कुछ कहानियाँ हैं । इन रोचक कहानियों के पढ़ने से बच्चों को पुराने समय के लोगों के जीवन और रहन-सहन के बारे में आवश्यक जानकारी मिलेगी और उन्हे अपने अतीत को समझने और उसके बारे में अधिक जानने की इच्छा उत्पन्न होगी ।

प्रत्येक पाठ में अंत में 'अब बताओ' और 'कुछ करने को' के शीर्षकों से कुछ प्रश्न और क्रियाएँ दी गई हैं। आपको यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि इनका उद्देश्य केवल छात्रों का मूल्यांकन करने तक सीमित नहीं है । इन सभी क्रियाओं और प्रश्नों का सीधा संबंध पाठ्यसामग्री से है । अपने छात्रों को पढ़ाते समय आपको अवश्य ही अनुभव होगा कि पाठों के अंत में दिए गए ये अभ्यास न केवल आपके निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में सहायक होंगे, बल्कि छात्रों के अध्ययन-क्षेत्र को और अधिक विस्तृत करेंगे ।

कक्षा में पुस्तक का प्रथम परिचय

प्रस्तुत पुस्तक सामाजिक अध्ययन की पहली पुस्तक है जिसे बच्चे कक्षा ३ में पढ़ेंगे । नई पुस्तक के प्रति बच्चों में उत्सुकता और अभिरुचि होना स्वाभाविक ही होता है । आप इस उत्सुकता का लाभ उठाएँ और विधिवत् शिक्षण आरंभ करने से पहले नई पाठ्यपुस्तक का सामान्य परिचय बच्चों को अवश्य दें । इस बात का ध्यान रखें कि पुस्तक-परिचय के समय कक्षा के अधिक-से-अधिक बच्चों के पास पुस्तकें हों । पुस्तक के सामान्य परिचय के बारे में आप नीचे लिखी बातों पर चर्चा करें :

-- पुस्तक का नाम और मुखपृष्ठ ।
-- पुस्तक के कुछ मुख्य चित्र , मानचित्र ।
-- विषय सूची ।

दर्शिका के बारे में

शिक्षण कार्य को सफलतापूर्वक और सुचारु रूप से चलाने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक अपने विषय और इसके उद्देश्यों से भली भाँति परिचित हों । अपने छात्रों की मानसिक व शारिरिक बनावट और विकास, उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि, उनकी मुख्य विशेषताओं और रुचियों आदि का ज्ञान भी उसे होना चाहिए । निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के अनेक साधनों, शिक्षण की विभिन्न पद्धतियों और मूल्यांकन के नए-नए तरीकों को जाने और सीखे बिना तो किसी भी शिक्षक का काम नहीं चल सकता । इन सभी बातों का विस्तृत विवरण गत पृष्ठों में दिया जा चुका है ।

शिक्षक संस्करण का दर्शिका-भाग विशेष रूप से केवल शिक्षकों के लिए ही लिखा गया है । इसमें प्रस्तुत पुस्तक के शिक्षण से संबंधित उपरोक्त सभी बातों पर विस्तार से विचार किया गया है । आशा है कि इस दर्शिका से शिक्षकों का उचित मार्ग-दर्शन होगा और उनको अपने दिन प्रतिदिन के शिक्षण कार्य में अवश्य ही सहायता मिलेगी । पाठ्यपुस्तक के विभिन्न खंडों और पाठों को निम्नलिखित मुख्य शीर्षकों के अंतर्गत विभक्त करके आवश्यक सुझाव दिए गए हैं :

(क) खंड के लिए

१. **पृष्ठभूमि और उद्देश्य :** इस शीर्षक के अंतर्गत प्रत्येक खंड के सभी पाठों का संक्षिप्त विवरण दिया गया है । साथ ही साथ पिछली कक्षा या पिछले खंडों पर आधारित बच्चों के पूर्व-ज्ञान की पृष्ठ-

भूमि की ओर संकेत किया गया है। यह भी बताया गया है कि पूरे खंड को पढ़कर बच्चों को क्या जान लेना चाहिए, उन्हें क्या कुशलताएँ सीख लेनी चाहिए और उनमें क्या-क्या आदतें और भावों की नींव पड़ जानी चाहिए। यहाँ यह कहना बहुत आवश्यक है कि ये सभी उद्देश्य (धारणाएँ, कुशलताएँ और भाव) बच्चों से रटाने के लिए नहीं हैं। दर्शिका-भाग में दिए गए इस प्रकार के सभी उद्देश्य आपके अध्यापन कार्य में सहायता देने के लिए है।

२ पढ़ाने के लिए सामान्य सुझाव : इस शीर्षक के अधीन प्रत्येक खंड को आरंभ करने के लिए कुछ संभव सुझाव दिए गए हैं। ये सुझाव केवल सुझाव मात्र हैं। अपनी आवश्यकताओं और साधनों के अनुसार आप इनमें अवश्य ही फेर-बदल करेंगे। इन सुझावों में अधिकतर ऐसी क्रियाएँ बताई गई हैं जो पूरे खंड को पढ़ाते हुए चालू रहेंगी। आप स्वयं भी कुछ ऐसी अन्य क्रियाएँ सोचें।

(क) पाठ के लिए

१. पृष्ठभूमि और उद्देश्य : इस शीर्षक के अंतर्गत प्रत्येक पाठ से संबंधित बच्चों की पृष्ठभूमि की ओर संकेत किया गया है और पाठ के कुछ मुख्य और विशेष उद्देश्य गिनाए गए हैं। आप याद रखें कि यह उद्देश्य केवल आपके लिए है, बच्चों के लिए नहीं। अतः आप इन्हें बच्चों से बिलकुल याद न कराएँ। उदाहरण के लिए एक पाठ में दिया गया यह उद्देश्य

शहर और गाँवों के रहनेवाले अपनी बहुत-सी आवश्यकताओं के लिए एक दूसरे पर निर्भर हैं। बच्चों से याद कराने के लिए नहीं है। इसके विपरीत आप देखें कि पाठ पढ़ने के पश्चात यह उद्देश्य पूरा हुआ या नहीं।

२. पढ़ाने के लिए कुछ सामान्य सुझाव : यहाँ पर पूरे पाठ को पढ़ाने के लिए विस्तृत रूप से सुझाव नहीं दिए गए हैं। केवल उन बातों पर अधिक बल दिया है जो बहुत आवश्यक हैं या बहुत लाभकर। कोई सुझाव अनिवार्य नहीं हैं। सभी सांकेतिक हैं। आप इनमें आवश्यकतानुसार फेर-बदल कर सकते और चुन सकते हैं। इन सुझावों में कहीं-कहीं क्रियाएँ भी बताई गई हैं। इनसे अवश्य लाभ उठाएँ। इस बात का ध्यान रखें कि आपकी कक्षा के अधिक-से-अधिक बच्चे क्रियाओं में भाग लें। आपके शिक्षण की सफलता इसी बात पर निर्भर होगी।

पाठ्यपुस्तक में बहुत से चित्र, मानचित्र आदि हैं। पढ़ाने के सुझावों में इनको प्रयोग करना भी बताया गया है।

३. अन्य संभव क्रियाएँ : इस शीर्षक के अंतर्गत हर पाठ के लिए कुछ रोचक क्रियाएँ बताई गई हैं जिन्हें बच्चे व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से कर सकते हैं। ये क्रियाएँ सभी बच्चों के लिए नहीं हैं। इनमें से कुछ क्रियाएँ प्रखरबुद्धि छात्रों के लिए उपयुक्त होंगी तो कुछ मंदबुद्धि छात्रों के लिए। कुछ क्रियाएँ कक्षा के बच्चे दल बनाकर करेंगे और कुछ को पूरी कक्षा मिलकर करेगी। पाठ्यपुस्तक में भी 'कुछ करने को' के अंतर्गत ऐसी ही क्रियाएँ लिखी गई हैं। आप इनमें से कुछ क्रियाएँ करा सकते हैं, शेष को छोड़ सकते हैं।

४. मूल्यांकन : इस संबंध में गत पृष्ठों में अलग से विचार किया जा चुका है। यहाँ पर कुछ ऐसी क्रियाएँ, सुझाव और सहायक प्रश्न दिए गए हैं जिनकी सहायता से आप बच्चों की जाँच कर सकेंगे और उनके बनते-बदलते-सुधरते भावों, आदतों, कुशलताओं, जानकारियों को परख सकेंगे, उन पर निगाह रखकर उचित परिवर्तन ला सकेंगे। यह सदैव याद रखिए कि मूल्यांकन शिक्षा का अभिन्न अंग है। यह एक निरंतर चलनेवाली क्रिया है। आपका काम बच्चों का मूल्यांकन करके उन्हें फेल या पास करने तक सीमित नहीं है, बल्कि वास्तविक उद्देश्य तो यह है कि आप मूल्यांकन को शिक्षण में सुधार लाने का साधन बनाकर प्रयोग करें।
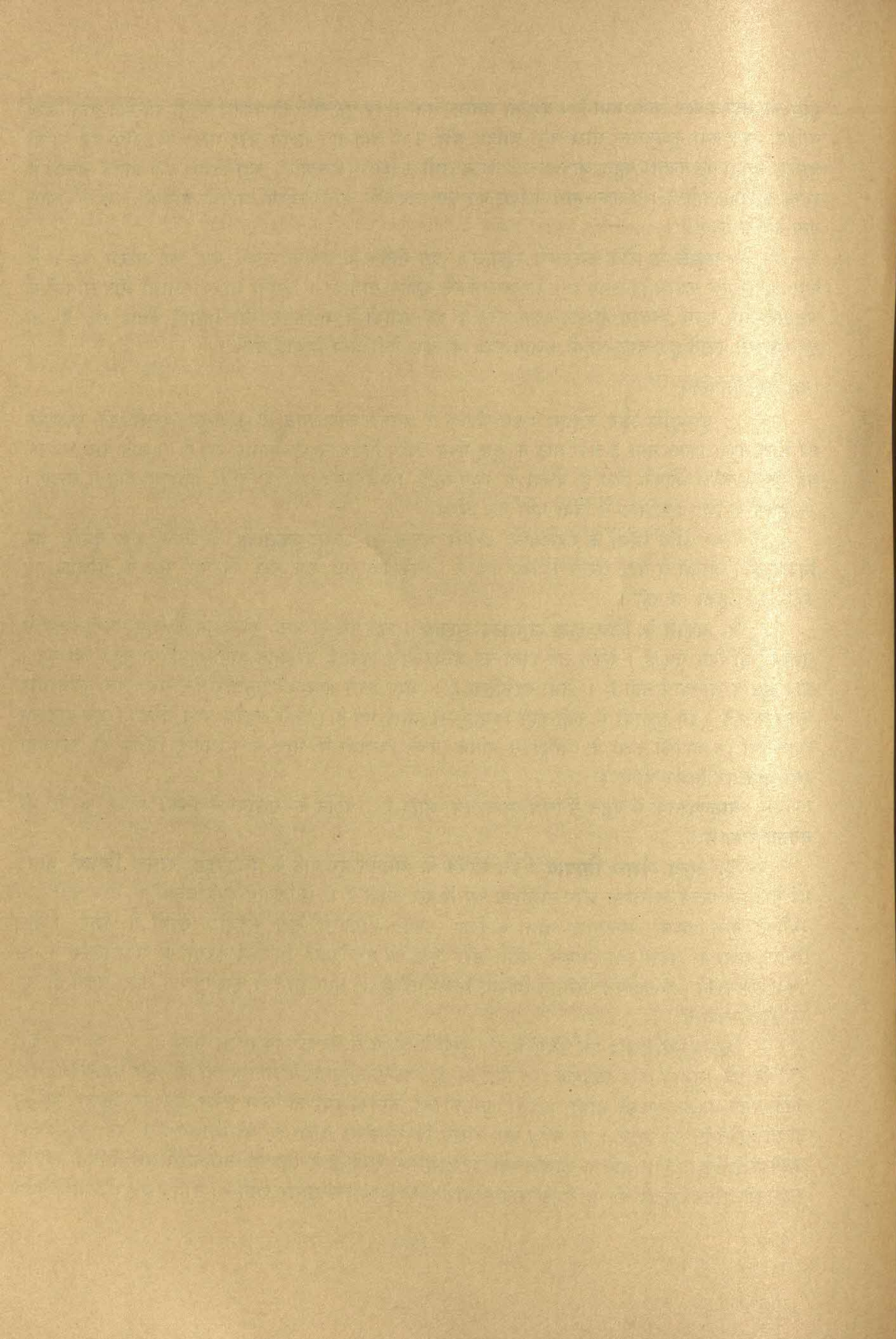
शिक्षण के विस्तृत सुझाव

खंड १

यह है हमारी दिल्ली

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

कक्षा १ और २ में बच्चे अपने घर, पाठशाला और पास-पड़ौस के बारे में बहुत-सी बातें सीख चुके हैं। कक्षा ३ की सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक में वे दिल्ली क्षेत्र (भारत के अंग के रूप में) के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे। इस सारे क्षेत्र का हमारे देश के लिए बड़ा महत्त्व है, क्योंकि इसी क्षेत्र में हमारे देश की राजधानी दिल्ली है। शासन का सभी कार्य यहीं से चलाया जाता है। यह नगर हर प्रकार के यातायात का बड़ा केन्द्र है। देश की राजधानी होने के नाते इस नगर का संबंध देश के सभी भागों से तो है ही, विदेशों से भी है।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रथम खंड में तीन पाठ हैं। पाठ १ में 'दिल्ली क्षेत्र' की स्थिति, सीमाएँ, भूमि की बनावट जलवायु (मौसम), वर्षा, प्राकृतिक वनस्पति, उपज आदि का वर्णन है। पाठ २ और पाठ ३ की विषयवस्तु का केन्द्र दिल्ली नगर है। इस खंड के पाठों को पढ़कर

(क) बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. दिल्ली क्षेत्र हमारे विशाल देश भारत का एक अंग है।
२. दिल्ली क्षेत्र के रहने वालों का रहन-सहन यहाँ की भूमि की प्राकृतिक बनावट, जल्वायु, मौसम, वर्षा, आदि से प्रभावित होता है।
३. सारे देश की राजधानी होने के नाते दिल्ली शहर का संबंध समान रूप से देश के सभी भागों से तो है ही, संसार के अन्य देशों से भी है।
४. राष्ट्रीय त्यौहार सारे देश में मनाए जाते हैं, किन्तु राजधानी दिल्ली में इन त्यौहारों को विशेष धूम-धाम से मनाया जाता है।

(ख) बच्चे निम्नलिखित कुशलताएँ सीख लेंगे :

१. दिल्ली क्षेत्र के मानचित्र को पहचानना।
२. दिल्ली क्षेत्र के मानचित्र में निम्नलिखित चीजें पहचानना और भरना :
सीमाएँ, प्राकृतिक विभाग, नदी, झील, पहाड़ी, आदि।
३. समतल, ऊँची-नीची, रेतीली व पथरीली भूमि की पहचान कर सकना।
४. विभिन्न वस्तुएँ, फूलपत्तियाँ और चित्र एकत्र करना तथा उन्हें सफाई से कापी पर चिपकाना।
५. राष्ट्रीय त्यौहारों के अवसर पर अपनी कक्षा, पाठशाला, पास-पड़ौस आदि में आयोजित कार्यक्रमों में सहयोग देना और भाग लेना।

(ग) बच्चों में निम्नलिखित भाव जाग्रत होंगे :

१. अपने देश की राजधानी और प्राचीन ऐतिहासिक नगर दिल्ली के प्रति गौरव और प्रेम का भाव।

२. राष्ट्र-चिन्हों का सम्मान करना और राष्ट्रीय त्यौहारों में उत्साह और श्रद्धा से भाग लेना।

३. भारत के सभी राज्यों के रहनेवालों और विदेशियों के प्रति प्रेम, सम्मान, और समानता का भाव।

पढ़ाने के लिए कुछ सामान्य सुझाव

१. यह इस पुस्तक का पहला खंड है। अतः पुस्तक-परिचय के साथ ही आप बच्चों के सामने पहले खंड की रूपरेखा उपस्थित कर दें और इसे पढ़ाना आरंभ कर दें। पहले तीन पाठों के क्रम को आप अपनी जरूरत के अनुसार आगे पीछे कर सकते हैं, अर्थात पाठ २ व ३ को पाठ १ से पहले पढ़ा सकते हैं।

२. छात्रों की सहायता और अपने स्वयं के प्रयास से अपनी कक्षा में निम्नलिखित अथवा इसी प्रकार के कुछ चित्र, मानचित्र, माडल आदि की एक प्रदर्शनी लगाएँ:

- दिल्ली की सरकारी इमारतों और पुराने स्मारकों जैसे—राष्ट्रपति भवन, संसद भवन, केन्द्रीय सचिवालय, सुप्रीम कोर्ट, लाल किला, जामा मस्जिद, पुराना किला, इंडिया गेट, दिल्ली गेट, तुर्कमान गेट, यमुना पुल, कुतुब मीनार, तुगलकाबाद किला, हुमायूँ का मकबरा और कुछ प्रमुख विदेशी दूतावासों के चित्र, माडल आदि।
- दिल्ली में रहनेवाले विभिन्न प्रदेशों और विदेशों के लोगों की वेष-भूषा के चित्र।
- दिल्ली में स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस पर होने वाले समारोहों, झाँकियों और अन्य खेल-तमाशों के पुराने चित्र।
- राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधान मंत्री आदि के चित्र।

---

१. दिल्ली क्षेत्र—एक झाँकी

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

अपने पास-पड़ौस की भूमि को बच्चे प्रतिदिन देखते हैं। वे जानते हैं कि भूमि की बनावट हरजगह एक जैसी न होकर कहीं ऊँची और कहीं नीची होती है। रेतीली, पथरीली, कंकरीली आदि मिट्टी की पहचान भी साधारण रूप से वे जानते हैं। इसके अतिरिक्त गर्मी, सर्दी और बरसात का भी थोड़ा-सा ज्ञान वे रखते हैं। बच्चों की इसी पृष्ठभूमि को बढ़ावा देते हुए आप दिल्ली क्षेत्र की स्थिति, सीमाएँ, भूमि, बनावट, जलवायु (मौसम), वर्षा, उपज व प्राकृतिक वनस्पति आदि के बारे में पढ़ाएँगे। इस पाठ को पढ़कर

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. पड़ौसी राज्य हरियाना और उत्तर प्रदेश को देखते हुए दिल्ली क्षेत्र बहुत छोटा है।

२. दिल्ली क्षेत्र के एक बड़े भाग में दिल्ली नगर फैला हुआ है और शेष भाग में बहुत-से छोटे-बड़े गाव हैं।

३. दिल्ली क्षेत्र मे मुख्यतः तीन प्रकार की भूमि (खादर, पहाड़ी, मैदानी) पाई जाती है।

४. दिल्ली क्षेत्र के रहने वालों का जीवन यहाँ की जलवायु (मौसम), वर्षा, बाढ़, आदि से प्रभावित होता है।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

यह खंड १ का प्रथम पाठ है। खंड १ का प्रारंभ करने के लिए कुछ सुझाव पहले ही दिए जा चुके हैं । अतः खंड १ को आरंभ करने के साथ आप सहज ही इस पाठ को पढ़ाने का अवसर निकाल सकते हैं । यह याद रहे कि इस पाठ को पढ़ाने के लिए पाठ्यपुस्तक में दिए गए दिल्ली क्षेत्र के (सीमाएँ व स्थिति और भूमि की बनावट) दो मानचित्रों की सहायता लेना आपके लिए अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त दीवार पर लटकाने वाले दिल्ली क्षेत्र के बड़े मानचित्र का प्रयोग भी अवश्य करें। पूरे भारत का मानचित्र अभी न दिखाएँ। मानचित्र में दिशाओं का ज्ञान भी अभी न कराके खंड ६ में कराया जाएगा । अब बच्चे केवल दिल्ली क्षेत्र के पड़ौसी राज्यों सहित स्थिति, इसके प्राकृतिक विभाग, यमुना नदी आदि के बारे में ही अच्छी तरह समझ लें।

दिल्ली क्षेत्र की भूमि की बनावट को समझाते हुए 'ज्ञात से अज्ञात की ओर' का सिद्धांत अवश्य याद रखें । आपका स्कूल दिल्ली क्षेत्र के खादर, पहाड़ी, मैदानी आदि किसी एक भाग में स्थित होगा। स्कूल तथा पास-पड़ौस की इसी स्थानीय स्थिति और इसके बारे में बच्चों के दैनिक अनुभवों के आधार पर आप अपना पाठ विकसित करें। पाठ्यपुस्तक में क्रमशः खादर, पहाड़ी व मैदानी भाग का वर्णन दिया गया है। आप अपनी सुविधा के अनुसार इस क्रम को बदल सकते हैं। आप अपना पाठ उसी भाग से पढ़ाना आरंभ करें जहाँ आपके बच्चे रहते हैं और जिसके बारे में वे निजी अनुभव रखते हैं ।

इसी प्रकार मौसम की चर्चा करते हुए बच्चों के पूर्व-प्राप्त अनुभवों का पूरा लाभ उठाएँ और उन्हें उनके अनुभव वर्णन करने के अधिक-से-अधिक अवसर दें । पाठ को अधिक रोचक बनाने के लिए पाठ-सामग्री का स्थान-स्थान पर बच्चों के दैनिक जीवन से समन्वय किया गया। पढ़ाते समय आप भी बच्चों के आस-पास के वातावरण और उनके दैनिक जीवन से संबंधित बातों को पाठ के बीच में अवश्य लाएँ।

सीमा, स्थिति, प्राकृतिक बनावट, जलवायु आदि कठिन शब्दों का प्रयोग अभी न करके सरल से सरल भाषा में बच्चों को दिल्ली क्षेत्र की भूमि की बनावट और मौसम के बारे में समझाएँ। इस पाठ में आने वाले निम्नलिखित शब्दों का अर्थ व परिभाषा अच्छी तरह समझाएँ :

नदी, खादर, बाढ़, उपजाऊ, बाँध ।

यह ध्यान रहे कि किसी भी शब्द की परिभाषा लिखवाकर रटवाने की ज़रूरत नहीं है। बच्चों को केवल इनके अर्थ और इनको प्रयोग करना आ जाना चाहिए। आप ऐसे नए और कठिन शब्दों को बार-बार बच्चों से प्रयोग कराएँ।

आप देखेंगे कि इस पाठ में दिए गए चित्रों का प्रतिदिन के जीवन से निकट संबंध हैं, जैसे पहाड़ी को काट कर बनाई गई सड़क का चित्र, गर्मी, सर्दी, बरसात तथा बाढ़ के दृश्य । इसी प्रकार के कुछ चार्ट या पत्र-पत्रिकाओं से काटे गए चित्र आप इस पाठ को पढ़ाते समय प्रयुक्त करें। यदि आप बच्चों को ऐसे चित्रों पर बातचीत करने का अवसर दें तो इससे बड़ा लाभ होगा। चित्रों के माध्यम से आप बातों ही बातों में बच्चों को निम्नलिखित काम की बातें बता जाएँगे :

– भूमि की प्राकृतिक बनावट, वर्षा, मौसम आदि हमारे जीवन पर किस प्रकार प्रभाव डालते हैं।
– भौतिक वातावरण में परिवर्तन लाकर मनुष्य किस प्रकार इसे अपने रहने योग्य बना लेता है।
– मनुष्य भौगोलिक परिस्थितियों को किस प्रकार अपने अनुकूल बना लेता है।

इस पाठ को पढ़ाते हुए आप बच्चों से दिल्ली क्षेत्र के रेखा मानचित्र में खादर, पहाड़ी, मैदानी भाग, नजफगढ़ झील, यमुना नदी, पड़ौसी राज्य, दिल्ली नगर आदि अवश्य भरवाएँ । इससे उन्हें मानचित्र-अध्ययन का अभ्यास होगा और उनका ज्ञान पक्का होगा।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. अंग्रेजी और हिन्दी महीनों के नामों की सूची बनाना और उन्हें याद करना।

२. सर्दी, गर्मी, बरसात आदि पर सुंदर, सरल और हल्की-फुल्की कविताएँ याद करना और कक्षा में सुनाना।

३. दिल्ली क्षेत्र के प्राकृतिक भागों का एक मानचित्र धरती पर सारी कक्षा के बच्चे मिलकर बनाएँ।

४. समाचार-पत्रों के आधार पर बरसात के मौसम में यमुना में आई बाढ़ का ब्यौरा रखना :

(क) यमुना में पानी कौन से मास की किस तारीख को बढ़ना आरंभ हुआ ?

(ख) बाढ़ का पानी खतरे के निशान तक कब पहुँचा ?

(ग) क्या बाढ़ का पानी खतरे के निशान से ऊपर गया ? यदि हाँ तो कितना ?

(घ) बाढ़ से क्या क्या हानियाँ हुईं ?

(ङ) बाढ़ की रोकथाम और बाढ़-पीडितों की सहायता के लिए क्या कदम उठाए गए ?

५. वर्षा के बीच में, यदि अवसर आए तो, सारी कक्षा बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए कोई कार्यक्रम बनाए।

मूल्यांकन

'अब बताओ' में दिए गए प्रश्न १ के (ख) और (ग) भाग का उत्तर समझाते हुए आप बच्चों को दिल्ली क्षेत्र में यमुना नदी के बहाव की दिशा बता सकते हैं। ध्यान रहे कि बहाव की दिशा समझाते हुए 'उत्तर से दाक्षिण की ओर' न कहकर 'वजीराबाद से ओखला की ओर' कहें।

दिल्ली नगर यमुना नदी के किस किनारे पर बसा हुआ है ?

दिल्ली नगर के वर्तमान स्वरूप को देखते हुए इस प्रश्न के कई उत्तर और इनसे संबंधित प्रश्न बच्चों के लिए बहुत ज्ञानवर्धक और रोचक हो सकते हैं, जैसे (१) पुराना दिल्ली नगर यमुना नदी के दाएँ किनारे था (२) आज की दिल्ली नदी के दोनों ओर बसी हुई है (३) नदी का दायाँ अथवा बायाँ किनारा किस प्रकार मालूम किया जाता है ? (४) दिल्ली क्षेत्र की सीमा में यमुना नदी पर कितने पुल हैं ? (५) नदी पर पुल क्यों बनाए जाते हैं ? आदि।

दिल्ली क्षेत्र के खादर, पहाड़ी और मैदानी भाग की उपज के बारे में बच्चों से प्रश्न करें। उनके उत्तरों की सहायता से उपज की तीन अलग-अलग सूचियाँ श्यामपट पर बनाएँ और उनकी तुलना कराएँ।

---

२. हमारी राजधानी दिल्ली

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

बच्चे दिल्ली क्षेत्र की बनावट, स्थिति, सीमाएँ, जलवायु (मौसम), वर्षा आदि के बारे में पढ़ चुके हैं। वे यह भी जानते हैं कि दिल्ली क्षेत्र के एक बड़े भाग में दिल्ली नगर फैला हुआ है। यह एक प्राचीन ऐतिहासिक नगर है। इस पाठ की विषयवस्तु का केन्द्र (भारत की राजधानी के रूप में) दिल्ली नगर ही है। इस पाठ को पढ़कर

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे

१. दिल्ली एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक नगर है जिसमें बहुत से पुराने स्मारक और इमारतें हैं।

२. दिल्ली नगर स्वतंत्र भारत की राजधानी है और शासन के सभी कार्य यहीं से चलाए जाते हैं ।

३. हमारी राजधानी दिल्ली एक बहुत बड़ा नगर है जिसमें देश-विदेश के लाखों लोग रहते हैं ।

४. सभी राष्ट्रीय त्यौहार राजधानी दिल्ली में विशेष धूम-धाम से मनाए जाते हैं ।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

दिल्ली नगर यमुना नदी के किस किनारे पर बसा हुआ है ?

दर्शिका-भाग के पाठ १ में मूल्यांकन शीर्षक के अंतर्गत इस प्रश्न के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है । पाठ २ को पढ़ाते समय आप एक बार फिर बच्चों से यही प्रश्न करें । मानचित्र और अन्य चित्रों की सहायता से उन्हें शाह-जहानाबाद, तुगलकाबाद, किला रायपिथौरा, इंद्रप्रस्थ, पुराना किला आदि के बारे में बताते हुए दिल्ली शहर के प्राचीन इतिहास पर प्रकाश डालें । महाभारत, इंद्रप्रस्थ और पांडवों आदि के वर्णन को कक्षा २ में पढ़ी हुई कहानी 'अर्जुन का निशाना' से संबंधित करें ।

दिल्ली शहर में और उसके आस-पास मीलों तक पुराने समय के बहुत से ऐतिहासिक स्मारक, इमारतें और खँडहर आदि मिलते हैं । यदि आप के स्कूल के पड़ौस में दिल्ली नगर के इतिहास से संबंधित कुछ ऐसी ही चीज़ें मिलती हैं तो इनके बारे में बच्चों को अवश्य बताएँ । अच्छा यह होगा कि आप अपने पास-पड़ौस के ऐसे स्मारकों, इमारतों खँडहरों आदि के द्वारा ही इस पाठ को विकसित करें । पुस्तक में दिल्ली गेट और इसके पास की टूटी हुई दिवार का एक चित्र दिया गया है । कुछ मुख्य इमारतों के ऐसे ही चित्र आप अपनी ओर से कक्षा में दिखाएँ और इनके बारे में बच्चों से बातचीत करें ।

राष्ट्रपति भवन, केन्द्रीय सचिवालय और संसद भवन के चित्रों द्वारा आप मुख्य रूप से ये बातें बच्चों को समझाएँ.

- हमारे देश के राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री आदि दिल्ली में रहते हैं ।
- देश के शासन के सभी कार्य दिल्ली से ही चलाए जाते हैं ।
- दिल्ली हमारे देश भारत की राजधानी है ।
- राजधानी में भारत के सभी प्रदेशों के और विदेशों के लोग आकर रहते हैं ।

यदि आपकी कक्षा में कुछ अन्य प्रदेशों के छात्र भी पढ़ते हैं तो आप बड़ी आसानी से यह बात बच्चों को बता सकते हैं कि राजधानी में हमें पूरे भारत का छोटा-सा सुंदर रूप दिखाई देता है ।

दिल्ली क्षेत्र के बच्चे राजधानी में होने वाले स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस के समारोहों के बारे में अक्सर जानते हैं । उनमे से कुछ शायद इन समारोहों को देख भी चुके होंगे । आप ऐसे बच्चों के अनुभवों से लाभ उठाएँ और उन्हें कक्षा में बोलने का अवसर दें । १५ अगस्त और २६ जनवरी के दो चित्र पुस्तक में दिए गए हैं । इन पर कक्षा में बातचीत कीजिए और यह स्पष्ट कीजिए कि राष्ट्रीय त्योहार सारे देश में मनाए जाते हैं, लेकिन राजधानी में इन त्योहारों को विशेष धूम-धाम से मनाया जाता है ।

किला, महल, मीनार, मकबरा, सम्राट, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, केंद्रीय सरकार, सचिवालय, राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, राजदूत, विदेशी, समारोह आदि नए शब्दों की पाठ में ही व्याख्या करने की कोशिश की गई है । आप इन शब्दों को बच्चों द्वारा अधिक-से-अधिक प्रयोग कराएँ और इनके अर्थ अच्छी तरह समझाएँ ।

इस पाठ को पढ़ाते हुए आपको यह ध्यान रखना चाहिए कि बच्चों में राष्ट्रीय झंडे, राष्ट्रीय गीत, राष्ट्र-प्रतीकों आदि के प्रति सम्मान और श्रद्धा की भावना को प्रोत्साहन मिले । इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आप बच्चों को इस बारे में यथोचित अभ्यास के अधिक अवसर प्रदान करें ।

अन्य संम्भव क्रियाएँ

१. राजधानी दिल्ली, स्वतंत्रता तथा गणतंत्र दिवस के बारे में कुछ अच्छी कविताएँ याद करना और कक्षा में सुनाना।
२. राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधान मंत्री आदि के नाम याद करना और उनके चित्र एकत्र करना।
३. स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस के अवसर पर अपनी कक्षा अथवा स्कूल के लिए कार्यक्रम बनाना तथा उसमें भाग लेना।
४. गणतंत्र दिवस समारोह पर निकलने वाली विभिन्न प्रदेशों की झाँकियों के चित्र एकत्र करना और कापी पर लगाना।
५. १५ अगस्त और २६ जनवरी के अवसर पर होनेवाले समारोह देखने जाना अथवा अपनी बस्ती के हायर सैकंडरी स्कूल में टेलीविजन कार्यक्रम देखना।

मूल्यांकन

इस पाठ को पढ़ाते हुए और संबंधित क्रियाएँ कराते हुए बच्चों में राष्ट्रीय भावनाओं का यथोचित विकास होना चाहिए। मूल्यांकन करते हुए आपका कर्तव्य है कि पाठांत में दिए प्रश्न कराने के अतिरिक्त आप बच्चों की राष्ट्र तथा राष्ट्र-प्रतीकों के प्रति बनती, बदलती और विकसित होती हुई भावनाओं पर निगाह रखें, उनके व्यवहार का निरीक्षण करते रहें और उनका उचित मार्ग-दर्शन करें। देश के विभिन्न राज्यों की एकता, परस्पर प्रेम और सहयोग की भावना को पनपने के अवसर भी अवश्य दें।

यहाँ यह कहना आवश्यक है कि ऊपर कही हुई बातों का संबंध केवल इसी पाठ के पढ़ाने से नहीं है। इनका संबंध सामाजिक अध्ययन के पूरे विषय से है। अतः आप इनका सदैव ध्यान रखिए।

---

३. दिल्ली – यातायात का केन्द्र

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

यह पाठ भी दिल्ली नगर के बारे में है और इसका पाठ २ से सीधा संबंध है। ऐतिहासिक और राजनैतिक दृष्टि से दिल्ली को हमारे देश में विशेष स्थान प्राप्त है। इसी विशिष्ट स्थिति के कारण इस नगर का व्यापार और यातायात के बड़े केन्द्र के रूप में विकास भी हुआ है। यहाँ पर हर प्रकार के यातायात की अधिकता है। इस पाठ को पढ़कर

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. दिल्ली व्यापार और यातायात का एक बड़ा केन्द्र है।
२. बड़े शहरों में यातायात के अच्छे साधनों का होना आवश्यक है।
३. यातायात के विभिन्न साधनों द्वारा दिल्ली न केवल भारत के सभी भागों, बल्कि सारे संसार से संबंध स्थापित किए हुए है।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

इस पाठ का पिछले पाठ से सीधा संबंध है और आप पाठ २ को पढ़ाते हुए सहज ही इस पाठ पर आ सकते हैं। आप देखेंगे कि पाठ्यपुस्तक में एक बहुत साधारण तथ्य को लेकर इस पाठ का प्रारंभ किया गया है। आप भी किसी ऐसी ही साधारण स्थिति को लेकर और बच्चों के पूर्व-प्राप्त अनुभवों के सहारे इस पाठ को विकसित कीजिए।

माल गाड़ी व सवारी गाड़ी, बस व ट्रक और हवाई जहाज आदि में अंतर स्पष्ट करें। बस अड्डा (बस-स्टेंड), रेलवे स्टेशन, हवाई अड्डा आदि शब्दों का सही प्रयोग बच्चों को आना चाहिए। इस पाठ में 'सवारी' शब्द का 'मुसाफिर' और 'वाहन' के दो अलग-अलग अर्थों में प्रयोग हुआ है। इसका अंतर बच्चों पर स्पष्ट कर दें। मुसाफिर खाना, टिकट घर, सैलानी, अंतर-राज्य बस-स्टेंड आदि के अर्थ और प्रयोग भी अच्छी तरह समझाइए। 'क्यू' अंग्रेजी का शब्द है लेकिन आजकल साधारण बोलचाल में प्रयोग होता है। ऐसे सभी शब्दों का अर्थ व प्रयोग समझाने के लिए आप अपने छात्रों से अभिनय करा सकते हैं। 'बस-स्टेंड,' 'रेलवे स्टेशन' आदि का खेल बहुत रोचक होगा। कुछ बच्चे स्टेशन मास्टर, पूछ-ताछ क्लर्क, टिकट बाबू आदि बनें, अन्य यात्री बनकर 'क्यू' मे खड़े हों। प्रत्येक यात्री बालक अपने-अपने गम्य-स्थान का नाम स्वयं सोचें। टिकट के स्थान पर मोटे कागज के टुकड़े या पुराने रेल टिकट आदि काम में लाएँ। 'टिकट बाबू' टिकट के उपर गम्य-स्थान का नाम और तारीख लिखकर यात्री को दें। बच्चों से शिष्ट वार्तालाप का अभ्यास कराया जाए। वे ऐसे वाक्यों को बोलना सीखें जैसे; श्रीमान जी, मुझे अंबाला के दो टिकट दीजिए। श्रीमान जी, मुझे मथुरा का एक टिकट चाहिए। गाड़ी किस समय छूटेगी? रोहतक जाने के लिए कितने नंबर की बस में बैठें? बम्बई से आनेवाला हवाई जहाज किस समय आएगा? कृपया मुझे एक प्लेटफार्म टिकट दीजिए।

इस प्रकार बच्चों में शिष्टतापूर्वक व्यवहार करने और 'क्यू' में खड़े होकर अपनी बारी की प्रतीक्षा करने की आदतें विकसित होंगी।

पुस्तक में यातायात शब्द की पूरी व्याख्या की गई है। आप इसके व्यापक अर्थों को और भी अच्छी तरह समझाने का प्रयत्न करें।

'दिल्ली में हर प्रकार के यातायात की अधिकता है, इसीलिए यह नगर यातायात का बड़ा केन्द्र है।' इस बात को स्पष्ट करने के लिए आप पुस्तक में दिए चित्र पर बच्चों के साथ विस्तार से बातचीत करें। यहाँ यह भी बच्चों को समझाएँ कि देश की राजधानी होने के कारण दिल्ली नगर रेल, सड़क, हवाई-मार्गों द्वारा पड़ौसी राज्यों और देश-विदेश से मिला हुआ है और यहाँ यातायात की भरमार रहती है।

आजकल हमारे जीवन में यातायात के नवीन साधनों के महत्त्व को समझाने के लिए पाठ की अंतिम दस-ग्यारह पंक्तियों पर अधिक बल दें और इसके बारे में बच्चों से तरह-तरह के प्रश्न करें।

आज यदि यातायात के सभी साधन बंद हो जाएँ तो तुम्हारे सामने क्या-क्या कठिनाइयाँ आएँगी?

इस प्रश्न के उत्तर में सब बच्चों को बारी-बारी से अपने विचार प्रकट करने का अवसर दें।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. रेलगाड़ी, हवाई जहाज, बस, ट्रक आदि या इनसे संबंधित कुछ सुंदर चित्र एकत्र करना और कापी पर चिपकाना।
२. दिल्ली क्षेत्र के मानचित्र में बड़ी-बड़ी सड़कें (जैसे जी० टी० रोड, राष्ट्रीय मार्ग आदि), रेल मार्ग और सफदरजंग व पालम हवाई अड्डे भरना।
३. रेल, हवाई जहाज, मोटर आदि पर कविताएँ ढूँढ़ना, याद करना और कक्षा में सुनाना।
४. दिल्ली क्षेत्र में स्थित सभी रेलवे स्टेशनों के नाम याद करना।

मूल्यांकन

प्रश्न नं. ५ का उत्तर बारी-बारी से सभी बच्चों से पूछें और इसी प्रकार के कुछ नए प्रश्न आप स्वयं सोचें।

रेलवे स्टेशन आदि से संबंधित अभिनय कराते समय बच्चों के व्यवहार, जैसे शिष्टतापूर्ण ढंग से बातचीत करना, क्यू में खड़े होकर अपनी बारी की प्रतीक्षा करना आदि पर अवश्य निगाह रखिए और उसमें सुधार लाने का प्रयत्न कीजिए।

यह इस खंड का अंतिम पाठ है। इस का मूल्यांकन करते समय आप पूरे खंड के प्रस्तावित लक्ष्यों को दृष्टि, में रखें।

खंड २

आओ दिल्ली देखें

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

खंड १ में दिल्ली नगर का वर्णन भारत की राजधानी और यातायात के बड़े केन्द्र के रूप में किया गया है। खंड २ में पाँच पाठ हैं। इन पाठों में बच्चे आज के दिल्ली शहर की बढ़ती हुई जन-संख्या, यहाँ के रहने वालों के जीवन, रहन-सहन, पहनावे, रीति-रिवाज, आदि के बारे में पढ़ेंगे। इसके अतिरिक्त वे नगर की नई-पुरानी बस्तियों, बड़े-बड़े बाज़ारों, कुछ दर्शनीय स्थानों, ऐतिहासिक स्मारकों आदि की जानकारी भी प्राप्त करेंगे। इस खंड के पाठों को पढ़कर

(क) बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. दिल्ली नगर की जन-संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है।
२. दिल्ली नगर में विभिन्न राज्यों और विदेशों के लाखों लोग मिलजुल कर रहते हैं और जीवन का विश्वग्राही रूप प्रदर्शित करते हैं।
३. दिल्ली शहर के और पड़ौसी गाँवों व राज्यों के रहनेवाले अपनी बहुत-सी आवश्यकताओं के लिए एक दूसरे पर निर्भर हैं।
४. नगर के ऐतिहासिक और शैक्षिक महत्त्व के सभी सार्वजनिक स्थान और स्मारक हमारे राष्ट्र की संपत्ति हैं और हम इनकी सुरक्षा करने में सरकार को सहयोग देते हैं।

(ख) बच्चे निम्नलिखित कुशलताएँ सीख लेंगे :

१. स्थानीय भ्रमण की छोटी-मोटी स्वतंत्र योजना बनाना और समूह में काम करते समय :
   (क) चीज़ों को बाँटना।
   (ख) अपना उत्तरदायित्व निभाना।

(ग) सबके साथ शिष्ट व्यवहार करना।

(घ) चित्र, फूलपत्तियाँ आदि एकत्र करना और संबंधित जानकारी का ब्योरा रखना।

२. देश के विभिन्न राज्यों के रहनेवालों के अभिवादन करने के ढंगों को सीखना।

३. देश में प्रचलित स्त्री व पुरुषों के विभिन्न प्रकार के वस्त्रों को पहचानना।

४. साधारण अभिनय में भाग लेना।

(ग) बच्चों में निम्नलिखित भाव जाग्रत होंगे :

१. देश के गौरव और एकता की भावना।

२. सभी राज्यों, समुदायों, व्यवसायों, भाषाओं और धर्मों के लोगों के प्रति प्रेम, आदर और समानता का भाव।

३. जनता की संपत्ति (जैसे सार्वजनिक व ऐतिहासिक स्थान और स्मारक आदि) के सदुपयोग और सुरक्षा में सहयोग का भाव।

पढ़ाने के लिए कुछ सामान्य सुझाव

१. इस खंड के शीर्षक (आओ दिल्ली देखें) और इसके साथ पुस्तक में दिए गए चित्र से ही प्रतीत हो जाता है कि इस खंड में दिल्ली शहर के लोगों के जीवन, रहन-सहन आदि और यहाँ के प्रसिद्ध दर्शनीय स्थानों, बड़े-बड़े बाज़ारों- बस्तियों आदि का वर्णन होगा। दिल्ली शहर की कुछ प्रसिद्ध इमारतों, हवाई अड्डों और रेलवे स्टेशन आदि के बारे मे बच्चे खंड १ में पढ़ चुके हैं। बच्चों के इस ताज़ा-ताज़ा ज्ञान का लाभ उठाते हुए यदि आप चाहें तो, इस खंड के उन पाठों को जिनमें दिल्ली के कुछ दर्शनीय स्थानों, स्मारकों, बाज़ारों आदि का वर्णन है सबसे पहले पढ़ा दें और बाद में दिल्ली की नई पुरानी बस्तियों और दिल्ली नगर के रहनेवालों के बारे में पढ़ाएँ। इस खंड को आरंभ करने का यह एक सुंदर और सरल ढंग होगा।

२. भारत के विभिन्न प्रदेशों के लोगों के जीवन का प्रदर्शन करने वाले कुछ चित्रों पर बच्चों से बातचीत करें। इसके लिए आप खंड १ में बच्चों द्वारा एकत्रित गणतंत्र दिवस समारोह की सांस्कृतिक झाँकियों के चित्रों का प्रयोग भी कर सकते हैं। दिल्ली शहर में भारत के सभी राज्यों के जीवन की मिली-जुली झाँकी मिलती है। इस प्रकार आप सहज ही दिल्ली शहर के रहनेवालों के जीवन, रहन-सहन, खान-पान, पहनावा, भाषा, धर्म, रहने के मकानों व बाजारों आदि के बारे में पढ़ाना आरंभ कर सकते हैं।

---

४. नई और पुरानी बस्तियाँ

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

दिल्ली एक पुराना शहर है और नया भी। यहाँ पर सैंकड़ों साल पुरानी इमारतें और बस्तियाँ भी हैं और नए-से-नए ढंग से बसी बस्तियाँ और आधुनिक ढंग से बने मकान भी हैं। आप के सभी बच्चे इन नई-पुरानी बस्तियों, इनके मकानों, सड़कों, गलियों आदि को प्रतिदिन देखते हैं। इस पाठ में दिल्ली नगर की इन्हीं नई-पुरानी बस्तियों, शहर की बढ़ती हुई जन-संख्या और मकानों की कमी आदि का वर्णन है। इस पाठ को पढ़कर

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. दिल्ली नगर में नए और पुराने दोनों प्रकार के मकान और बस्तियाँ हैं।

२. नई बस्तियाँ और मकान आजकल नए ढंग के अनुसार बनाए जा रहे हैं।

३. दिल्ली नगर की जन-संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है और इसके परिणामस्वरूप शहर में रहने के मकानों की कमी बनी रहती है।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

गाँवों के बच्चों को छोड़कर आप के छात्र नगर की इन्ही बस्तियों में रहते हैं। वे इन बस्तियों के मकानों गलियों, सड़कों आदि से भली-भाँति परिचित हैं। आजकल तो दिल्ली क्षेत्र के गाँवों में भी बहुत-सी बातें शहर की सी होती जा रही हैं। अतः आप इस पाठ की विषय वस्तु पर बच्चों के साथ बड़ी सरलता से बातचीत कर सकते हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि आप यह बातचीत उसी पृष्ठभूमि को लेकर आरंभ करें जिसमें आपके बच्चे रहते हैं।

पुस्तक में इस पाठ को एक कहानी के रूप में गूँथा गया है। कहानी के मुख्य पात्र कक्षा के दो बच्चे नवीन और कमल हैं, जो अपने दादाजी से बातचीत करते हैं। पाठ की विषय वस्तु पर प्रारंभिक बातचीत के बाद आप इस पाठ को कुछ बच्चों में बारी-बारी से कक्षा में पढ़वाएँ तो आपके छात्र बड़ी रुचि लेंगे।

पाठ को और अधिक रुचिकर बनाने के लिए आप कुछ होशियार बच्चों से इस कहानी का अभिनय कराएँ। नवीन, कमल और दादाजी के अलग-अलग वार्तालाप आप पाठ में से ही चुन सकते हैं। इसके लिए बच्चों की कई टोलियाँ अलग-अलग तैयारी करें और कक्षा में अपना वार्तालाप सुनाएँ। शेष बच्चे ध्यान से सुनें और यदि वे त्रुटियाँ करें तो बाद में उन पर बातचीत की जाए।

पाठ में नए ढंग की बस्ती का एक काल्पनिक रेखा-चित्र तथा नए ढंग के मकानों के चित्र दिए गए हैं। इनके बारे में बच्चों को बातचीत करने का अवश्य अवसर दें। बच्चे नए ढंग के मकानों और बस्तियों में मिलनेवाली विशेष बातें इन चित्रों में ढूँढें।

इस पाठ को पढ़ाते हुए आप यह बात अवश्य ध्यान में रखें कि बच्चों में किसी तरह भी ऐसी भावना पैदा न होने पाए कि नए ढंग के मकान व बस्तियाँ अच्छे होते हैं और पुराने ढंग के मकान व बस्तियाँ बुरे होते हैं। बच्चे इस विचार के कुप्रभाव से भी मुक्त रहें कि पुराने ढंग के मकानों या झुग्गी-झोंपड़ियों में रहने वाले लोग कुछ घटिया श्रेणी के होते हैं। इसके उलटे, इस बात पर बल दिया जाए कि सब मनुष्य बराबर हैं, पुराने ढंग के मकान उस समय की जरूरतों को ध्यान में रखकर बनाए जाते थे और नए ढंग के मकान व बस्तियाँ आजकल की ज़रूरतों को दृष्टि में रखकर बनाए जाते हैं।

दिल्ली की बढ़ती हुई जन-संख्या के बारे में विस्तार से समझाएँ और ' जन-गणना ' का अर्थ अच्छी तरह स्पष्ट करें। पुरानी दिल्ली (शाहजहानाबाद) के बारे में बच्चे पाठ २ में पढ़ चुके हैं। तुर्कमान गेट और पुरानी दिल्ली के मकानों, गलियों आदि के बारे में पढ़ाते हुए आप बच्चों के इस ज्ञान का लाभ उठाएँ।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. कक्षा के बच्चों की तीन या चार टोलियाँ बना दें। प्रत्येक टोली नए ढंग के एक मकान का कागज या मिट्टी का माडल बनाए। जिस टोली का माडल सब से अच्छा हो, उसे आप कोई सामूहिक पुरस्कार दें और उसके माडल को प्रदर्शनी में रखें।

२. स्कूल के बगीचे की एक खाली क्यारी में आधुनिक ढंग की एक ' आदर्श बस्ती ' का माडल सारी कक्षा के बच्चे मिलकर बनाएँ। इसकी योजना बच्चों से ही बनवाएँ। स्कूल, पार्क, अस्पताल, बाजार, डाक घर आदि पर कागज़ पर लिखे शीर्षक लगवाएँ। सड़कों के नाम बच्चे ही सोचें और इस बस्ती का नाम भी रखा जाए।

३. नई बस्तियों के छात्र किसी पुरानी बस्ती को और पुरानी बस्ती के छात्र किसी नई बस्ती को देखने जाएँ। गाँवों के छात्र नई पुरानी दोनों प्रकार की बस्तियों के मकानों को देखने की योजना बनाएँ।

मूल्यांकन

पाठ में दिए गए चित्र देखकर नए-पुराने मकानों और बस्तियों की विशेषताएँ और कमियाँ बच्चों द्वारा ही निकलवाएँ। इस पाठ से संबंधित वार्तालाप या अभिनय को बच्चे ध्यान से सुनें और बाद में आप बच्चों के मूल्यांकन के लिए प्रश्न करें।

समूह में काम करते हुए बच्चों के व्यवहार पर दृष्टि रखिए। सामूहिक कार्य में सहयोग देने और उत्तरदायित्व निभाने की भावनाओं का अध्ययन कीजिए और इसका लेखा रखिए। जहाँ कहीं आवश्यकता हो उन्हें सुझाव दीजिए।

सभी प्रकार के मकानों अथवा झुग्गी-झोंपड़ियों में रहनेवाले लोगों के प्रति बच्चों में उचित भावनाओं को जन्म देना, तथा मूल्यांकन करते हुए उनमें सुधार करने के प्रयत्न करना आपके लिए अत्यंत आवश्यक है।

कागज़ या मिट्टी के बनाए गए नए ढंग के मकान या नई बस्ती के माडल की विशेषताओं और कमियों पर स्वयं बच्चों से ही वाद-विवाद कराएँ और दिए गए सुझावों के अनुसार माडल में फेर बदल भी करें।

------

५. दिल्ली नगर के रहने वाले

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

दिल्ली एक अनोखा नगर है। यहाँ भारत के विभिन्न राज्यों और विदेशों के लोग रहते हैं। राजधानी के इस विश्वग्रही रूप के बारे में बच्चे थोड़ासा ज्ञान पाठ २ में प्राप्त कर चुके हैं। इस पाठ में दिल्ली नगर के लोगों के इसी

मिले-जुले जीवन, रहन-सहन, पहनावा, खान-पान, भाषा, रीति-रिवाज, धर्म, काम-धंधे आदि के विभिन्न पहलुओं के बारे में बच्चे कुछ विस्तार से पढ़ेंगे। इस पाठ को पढ़कर

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. दिल्ली नगर में विभिन्न राज्यों, समुदायों, भाषाओं, व्यवसायों और धर्मों के लाखों लोग आपस में मिलजुल कर रहते हैं।

२. बहुत-सी अनेकताओं के होते हुए भी दिल्ली नगर के लोग भारत की एकता का एक छोटा-सा सुंदर रूप प्रस्तुत करते हैं।

३. दिल्ली नगर के लोग अपनी बहुत-सी आवश्यकताओं के लिए पड़ोसी गाँवों और राज्यों पर निर्भर हैं।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

यदि आपकी कक्षा में कई राज्यों, भाषाओं, धर्मों आदि के छात्र पढ़ते हैं अथवा वे नगर की किसी ऐसी बस्ती में रहते हैं जहाँ राजधानी का यह मिलाजुला जीवन देखने को मिलता है तो आप इस पाठ को बड़ी आसानी से पढ़ा सकते हैं। इस अवस्था में आप अपने छात्रों से उनके अलग-अलग राज्य, धर्म, भाषा, पहनावा, खान-पान आदि के बारे में कक्षा में बातचीत करते हुए पाठ को विकसित करें। यदि ऐसा करना संभव न हो तो आप बच्चों से उनके अभिभावकों के अलग-अलग काम-धंधों के बारे में बातचीत करते हुए पाठ को पढ़ाएँ।

कक्षा १ और २ में बच्चों ने देश में प्रचलित अभिवादन करने के कई ढंग सीखे हैं। इस पाठ में भी अभिवादन के विभिन्न तरीकों को लेकर ही राजधानी में रहने वाले विभिन्न राज्यों, भाषाओं व धर्मों के लोगों के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। आप अभिवादन करने के विभिन्न ढंग बच्चों को सिखाएँ और 'नमस्ते,' 'नमस्कार,' 'वाणकम्,' 'आदाब अर्ज़ है,' 'सलाम वालेकुम,' 'जयरामजी की,' 'राम-राम,' 'जयहिन्द,' आदि शब्दों का सभी बच्चों से बारी-बारी से अभ्यास कराएँ। इस प्रकार अभिवादन के इन शब्दों और तरीकों के बार-बार अभ्यास द्वारा बच्चे अपने देश के लोगों के रीति-रिवाजों, धर्मों, और भाषाओं आदि से परिचित होंगे और उनके मन में इन सभी के लिए आदर का भाव भी बनेगा।

दिल्ली निवासियों के जीवन के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डालने के लिए इस पाठ में बच्चों को एक काल्पनिक पार्क में ले जाया गया है। इस पार्क के चित्र में दिखाए गए स्त्री-पुरुषों के पहनावों पर बच्चों से बातचीत करें और हमारे देश में प्रचलित अन्य प्रकार के वस्त्रों के कुछ और चित्र भी बच्चों को दिखाएँ। आपके स्कूल के निकट यदि कोई इस प्रकार का पार्क हो तो उसे भी बातचीत का विषय बनाया जा सकता है।

इस पाठ में कुछ मुख्य त्यौहारों और पूजा-स्थानों का संक्षिप्त वर्णन है। आप इनसे संबंधित कुछ चित्र प्राप्त करें और बच्चों से इनके बारे में चर्चा करें। दशहरा, दीवाली, ईद, क्रिसमस, लोहड़ी, गुरुपर्व, बुद्ध जयंती आदि बहुत से त्यौहारों की स्कूलों में छुट्टी होती है। इस पाठ को पढ़ाते हुए आप आगे पीछे आने वाले ऐसे कुछ त्यौहारों के बारे में बच्चों को समझाएँ। पाठ ४ में 'रामलीला' का एक चित्र दिया गया है। आप इस पर भी बच्चों से बातचीत कर सकते हैं। सभी त्यौहार दिल्ली में मनाए जाते हैं। हम सब ही उनमें भाग लेते हैं।

राजधानी के लोगों के विभिन्न व्यवसायों के बारे में बातचीत करते हुए भी यह ध्यान रहे कि बच्चों के मन में सभी व्यवसायों के प्रति आदर की भावना उत्पन्न हो। अलग-अलग काम-धंधे करने वाले सभी लोग हमारे जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरी करने में हमारी सहायता करते हैं। अतः कोई भी धंधा घटिया नहीं है।

गाँवों और शहरों के परस्पर घनिष्ठ संबंधों को अच्छी तरह स्पष्ट करने के लिए आप बच्चों से उन वस्तुओं की सूचियाँ बनवाएँ जो गाँवों से शहर में आती हैं और शहर से गाँवों को जाती हैं।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. विभिन्न प्रकार के वस्त्र पहने हुए भारत के अलग-अलग राज्यों के स्त्री, पुरुष और बच्चों के चित्र एकत्र करना और कापी पर चिपकाना।

२. दिल्ली में रहनेवाले भारत के विभिन्न राज्यों के लोगों की भाषाओं के नामों की सूची बनाना।

३. कॅलेंडर या डायरी में देखकर दिल्ली में मनाए जाने वाले मुख्य त्यौहारों की सूची बनाना तथा उनसे संबंधित चित्र एकत्र करना।

मूल्यांकन

यह पाठ इस पुस्तक का बहुत महत्त्वपूर्ण पाठ है। इससे संबंधित मूल्यांकन बहुत लंबे समय तक चलेगा। अतः पाठ के अंत में दिए गए प्रश्नों के आधार पर तो आप बच्चों की जाँच करेंगे ही, नीचे लिखी कुछ बातों को अच्छी तरह कराएँ और इन पर निगाह भी रखें :

- किसी विशेष अवसर पर अन्य राज्यों के जीवन से संबंधित कोई लोक गीत, नृत्य, नाटक आदि का कार्य-क्रम बच्चे स्कूल में प्रस्तुत करें।
- अलग-अलग धर्मों के मुख्य त्यौहारों को स्कूल में सीधे सादे ढंग से मनाएँ और ऐसे अवसरों पर बच्चे अपने मित्रों व अध्यापकों को शुभकामना संदेश के पत्र भेजें। जैसे :–दीवाली की शुभकामनाएँ, ईद मुबारक, क्रिसमस कार्ड, नव-वर्ष बधाई पत्र आदि।
- स्कूल की बाल-सभा में या अन्य किसी अवसर पर बच्चे एक फैन्सी शो में भाग लें और इस तरह अन्य राज्यों के लोगों की वेष-भूषाओं की जानकारी प्राप्त करें और उनकी सराहना करना सीखें।

ऊपर बताई गई क्रियाओं द्वारा बच्चों का मूल्यांकन तो शायद कुछ सीमा तक ही हो पाएगा लेकिन इस तरह, बच्चों को अपने देश के लोगों के जीवन की विविधता और संपन्नता को निकट से देखने, समझने, सीखने, सराहने और इस पर गर्व अनुभव करने के बेजोड़ अवसर मिलेंगे और बच्चों में राष्ट्रीयता का उचित भाव पैदा होगा। शिक्षक के नाते आपका कर्तव्य है कि इस भाव को पनपने और विकसित होने के अधिक-से-अधिक अवसर दें और साथ-साथ इसका मूल्यांकन भी करते रहें।

-----

६. कुछ दर्शनीय स्थान

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

दिल्ली नगर में बहुत-से दर्शनीय स्थान हैं। इनमें से कुछ स्थान आपके स्कूल के पास-पड़ौस में होंगे और इनके बारे में बच्चे कक्षा २ में ही जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। इस पाठ में दिल्ली के पाँच मुख्य दर्शनीय स्थानों (राजघाट, नेहरू संग्रहालय, बुद्ध पार्क, चिड़िया घर और बाल भवन) का वर्णन है। राजघाट और नेहरू संग्रहालय हमारे देश के

दो बड़े राष्ट्रीय नेताओं (गांधीजी व नेहरूजी) की यादगार है और लोग यहाँ पर श्रद्धा भाव से जाते हैं। शेष तीन स्थानों का मनोरंजन और शिक्षा की दृष्टि से बड़ा महत्त्व है। इन सभी स्थानों के बारे में जानना बच्चों के लिए बड़ा रुचिकर होगा। इस पाठ को पढ़कर

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. राजधानी की एक विशेषता इसके दर्शनीय स्थान हैं।
२. देश-विदेश के हजारों लोग दिल्ली के सार्वजनिक दर्शनीय स्थानों को देखने आते हैं।
३. नगर के सभी सार्वजानिक दर्शनीय स्थान हमारी राष्ट्रीय संपत्ति हैं।
४. हम इस राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा और रख-रखाव करने में अपनी सरकार को सहयोग देते हैं।

पढाने के लिए कुछ सुझाव

इस पाठ के लिए दिल्ली नगर के बहुत महत्त्वपूर्ण दर्शनीय स्थानों में से केवल पाँच स्थानों को ही विभिन्न प्रकार के महत्त्व के अनुसार विशेष रूप से चुना गया है। आप यदि आवश्यकता समझें तो और भी स्थान अपने पाठ में जोड़ सकते हैं। राजघाट दिल्ली का राष्ट्रीय महत्त्व का स्थान है। दिल्ली आने वाले विदेशों के बड़े-से-बड़े नेता आदि सभी पहले राजघाट जाते है और गांधीजी की समाधि पर फूल चढ़ाते हैं। पत्र-पत्रिकाओं में अक्सर राजघाट के चित्र और समाचार छपते हैं। आप ऐसे ही किसी ताज़ा या दस-पाँच दिन पुराने समाचार या चित्र आदि का प्रयोग करते हुए इस पाठ को कक्षा में प्रारंभ करें।

नेहरू संग्रहालय के बारे में पढ़ाने के लिए भी आप यही विधि काम में ला सकते हैं। इन दोनों स्थानों के बारे में पढ़ाते हुए बच्चों को महात्मा गांधी और पं० जवाहरलाल नेहरू के जीवन और देश की आज़ादी की लड़ाई पर अवश्य प्रकाश डालें। गांधीजी और चाचा नेहरू पर बच्चों से छोटी-छोटी सुंदर कविताएँ याद कराएँ। कुछ बच्चे इनके चित्र भी एकत्र कर सकते हैं। यदि आप इन स्थानों के बारे में २ अक्टूबर, १४ नवंबर, ३० जनवरी, आदि के अवसरों से लाभ उठाकर पढ़ाएँ तो और भी रुचिकर होगा।

बुद्ध पार्क के बारे में पढ़ाते हुए आप पुस्तक में दिए गए चित्र पर बच्चों से बातचीत करना न भूलिए।

शेष दो स्थान चिड़ियाघर और बाल भवन बच्चों के लिए विशेष रूप से रुचिकर होंगे। चिड़ियाघर के पशुओं के बहुत-से चित्र पुस्तक में दिए गए हैं। बाल भवन में बच्चों की रेल का एक विशेष चित्र भी पाठ में दिया गया है। आप इन चित्रों का अध्ययन बच्चों से खूब कराइए और उनको अपने विचार प्रकट करने के अवसर दीजिए। कुछ बच्चे चिड़ियाघर के पशुओं के नाम, भोजन, स्थान, चित्र आदि के संबंध में व्योरा तैयार करें तो और भी अच्छा होगा।

हो सकता है कि आप की कक्षा के कुछ बच्चे बाल भवन के सदस्य हों, या वे इन सभी स्थानों के बारे में थोड़ी बहुत जानकारी रखते हों। आप ऐसे बच्चों के अनुभवों से अवश्य लाभ उठाएँ। यदि बहुत कठिन न हो तो बच्चों को इन सभी या इनमें से कुछ स्थानों की सैर कराएँ। आप इस सैर का आयोजन पाठ ६ और ७ को पढ़ाते हुए या पढ़ाने के बाद कर सकते हैं। अपने कार्यक्रम में सभी मुख्य स्थानों व स्मारकों को शामिल करें। कुछ स्थान सप्ताह में एक दिन बंद रहते हैं। अतः इसके बारे में पहले से जानकारी प्राप्त करलें।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. दिल्ली के बड़े-बड़े दर्शनीय स्थानों की सूची बनाना और उनके चित्र एकत्र करना।
२. बाल भवन में कराई जानेवाली क्रियाओं की सूची बनाना। यदि संभव हो तो कुछ बच्चे बाल भवन के सदस्य भी बन सकते हैं। इसमें आप उनकी मदद कीजिए।

३. गांधीजी व नेहरूजी पर कुछ अच्छी कविताएँ, लेख आदि याद करना और बाल-सभा या अन्य किसी अवसर पर सुनाना ।
४. 'गांधी जयंती,' 'नेहरू जयंती,' (बाल दिवस) के अवसर पर अपनी कक्षा या बालसभा आदि के लिए कार्यक्रम बनाना और इसमें भाग लेना ।

मूल्यांकन

बच्चों की जानकारियों की जाँच आप पुस्तक में दिए गए अथवा इनसे मिलते-जुलते कुछ प्रश्नों के आधार पर करें ।

प्रस्तावित कुशलताओं और भावनाओं का मूल्यांकन करने के लिए आप निम्नलिखित बातों का निरीक्षण कीजिए

- राजघाट, शांतिवन, नेहरू संग्रहालय आदि स्थानों पर बच्चे किस प्रकार सम्मान प्रकट करते हैं ?
- गांधी जयंती, नेहरू जयंती, आदि से संबंधित आयोजनों में बच्चे किस रुचि, श्रद्धा और सम्मान से भाग लेते हैं ?
- दर्शनीय स्थानों आदि की सैर का कार्यक्रम बनाने और इसे सफल बनाने में बच्चे किस प्रकार सक्रिय भाग लेते हैं, अपना-अपना उत्तरदायित्व निभाते हैं, मिलकर काम करते हैं, बाँटकर खाते हैं और मनोरंजन करते हैं ?

यह ध्यान रहे कि उपरोक्त बातों का निरीक्षण और मूल्यांकन करने का एकमात्र उद्देश्य बच्चों के व्यवहार में उचित परिवर्तन लाना ही है । अतः आप इस दिशा में जागरूक रहें और बच्चों के व्यवहार में सुधार लाने के प्रयत्न करते रहें ।

---

७. दिल्ली के कुछ स्मारक

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

बच्चे अच्छी तरह जानते हैं कि दिल्ली एक बहुत पुराना नगर है । यह कई बार उजड़-उजड़ कर बसा है । यहाँ पर पुराने समय की कितनी ही इमारतें और उनके खँडहर मिलते हैं । इस नगर की कहानी हमारे पूरे देश के इतिहास से भी जुड़ी हुई है । इस पाठ में बच्चे पुराने समय की कुछ प्रसिद्ध इमारतों के बारे में पढ़ेंगे । इन इमारतों का हमारे देश के इतिहास से गहरा संबंध है । इस पाठ का उद्देश्य इन स्मारकों के द्वारा बच्चों में राष्ट्रीयता की भावना को सुदृढ़ करना ही है । सारे स्मारकों को न लेकर यहाँ केवल चार बड़े स्मारकों का ही वर्णन है । इस पाठ को पढ़कर

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. दिल्ली के पुराने स्मारकों से हमें देश के इतिहास के विषय में जानकारी मिलती है ।
२. हम ऐसे सभी स्मारकों का आदर करते हैं ।
३. देश-विदेश के हजारों लोग राजधानी के स्मारकों को देखने आते हैं ।

४. हम इन स्मारकों की राष्ट्रीय-संपत्ति के रूप में सुरक्षा और रख-रखाव करने में अपनी सरकार को सहयोग देते हैं ।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

यह पाठ पिछले पाठ से बहुत कुछ मिलता-जुलता है । आप इन दोनों पाठों को साथ-साथ पढ़ा सकते हैं । कुतुबमीनार, लाल किला, हुमायूँ का मकबरा आदि स्मारकों के बारे में बताते हुए इस बात पर बल दें कि इन इमारतों का दिल्ली नगर और भारत के इतिहास से गहरा संबंध है । ये स्मारक हमारे देश के इतिहास और वास्तुकला के प्रतीक हैं । ये सब हमारी राष्ट्रीय संपत्ति है । हमारी सरकार इस संपत्ति की रक्षा और देखभाल करती है । हमें इसमें सहयोग देना चाहिए ।

इस पाठ में आने वाले कुछ कठिन शब्दों की अच्छी तरह व्याख्या करें और इनको बच्चों से अधिकाधिक प्रयोग कराएँ, जैसे स्मारक, दरगाह, मकबरा, पच्चीकारी, दीवान-ए-खास, दीवान-ए-आम, तख्त-ए-ताऊस आदि ।

यदि बहुत कठिन न हो तो बच्चों को इन सभी स्मारकों की सैर अवश्य कराएँ । इससे बड़ा लाभ होगा । अपन कार्यक्रम में सभी संबंधित स्मारकों और दर्शनीय स्थानों को शामिल करें । लाल किला संग्रहालय में बच्चों को मुगल बादशाहों के समय के हथियार, पोशाकें, तस्वीरें, सिक्के आदि दिखाएँ । सभी स्मारकों और अन्य वस्तुओं को प्रत्यक्ष रूप में देखकर बच्चों को पुराने समय के लोगों के रहन–सहन और इमारतें आदि बनाने की कला के बारे में अच्छी जानकारी होगी ।

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के बारे में बताते हुए आप सामाजिक अध्ययन के कुछ अत्यंत महत्त्वपूर्ण उद्देश्यों की ओर बच्चों का ध्यान आकृष्ट करा सकते हैं, जैसे :

- परस्पर प्रेम, सहयोग और मेल-मिलाप की भावना ।
- सभी धर्मों और वर्गों के प्रति आदर और सहनशीलता की भावना ।

हज़रत निज़ामुद्दीन के उर्स का एक चित्र पाठ में दिया गया है । यह चित्र बच्चों के लिए विशेषकर रुचिकर होगा । आप ऐसे ही कुछ ताज़ा चित्र भी बच्चों को दिखाइए और इन पर बातचीत कीजिए ।

हुमायूँ के मकबरे में हर साल दिल्ली के स्कूलों के बालचर और सिंह बच्चों के शिविर लगते हैं । यदि आपकी कक्षा में या स्कूल की अन्य कक्षाओं में कुछ बच्चों ने इन शिविरों में भाग लिया हो तो ऐसे ही किसी बच्चे के अनुभवों से लाभ अवश्य उठाएँ और मकबरे की इमारत के बारे में बातचीत करें ।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. दिल्ली के बड़े–बड़े स्मारकों की सूची बनाना और उनके चित्र एकत्र करना ।

२. कुतुब मीनार, लाल किला, हुमायूँ का मकबरा आदि के मिट्टी या कागज़ के माडल बनाना । यह आवश्यक नहीं है कि ये माडल पैमाने के अनुसार बने हों ।

३. लाल किले में होने वाला (सां एत् लुमेरी) ध्वनि व संगीत पर आधारित कार्यक्रम देखने जाना ।

४. हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह में होने वाले उर्स को देखने जाना अथवा इससे संबंधित रेडिओ कार्यक्रम सुनना ।

५. हजरत निज़ामुद्दीन औलिया की जीवन कथा किसी पुस्तक से पढ़ना अथवा कोई भजन या कव्वाली सामूहिक रूप से कक्षा में सुनाना ।

मूल्यांकन

पुस्तक में दिए गए प्रश्नों के अतिरिक्त पाठ ६ में दिए गए सुझावों को दृष्टि में रखते हुए ही आप बच्चों का मूल्यांकन करें। अपनी आवश्यकतानुसार आप कुछ अन्य प्रश्न स्वयं सोच सकते हैं।

कुछ अच्छे बच्चे मित्र के नाम एक पत्र लिखें, जिसमें वें दिल्ली के दर्शनीय स्थानों और स्मारकों के नाम आदि देते हुए अपने मित्र को दिल्ली आने का निमंत्रण दें। यदि आप बच्चों को स्मारकों की सैर कराने ले जा रहे हैं तो इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि उनमें सार्वजनिक संपत्ति के प्रति सुरक्षा और सम्मान का भाव सुदृढ़ हो। इस संबंध में आप उनके व्यवहार का निरीक्षण करें और धीरे-धीरे इसमें सुधार लाएँ।

---

८. नगर के बाज़ार और व्यापारिक केन्द्र

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

दिल्ली एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र है। यहाँ पर बहुत से छोटे-बड़े बाज़ार और मंडियाँ हैं। इनसे लोगों को अनेक प्रकार की वस्तुएँ और सेवाएँ प्राप्त होती हैं। नगर के बाजारों में बिकनेवाली ये सभी वस्तुएँ कहाँ से आती हैं ? पड़ौसी राज्यों और आसपास के गाँवों के लोग और शहर के लोग किस प्रकार बहुत-सी वस्तुओं के लिए एक दूसरे पर निर्भर हैं ? इस पाठ में ऐसी बातों पर विचार किया गया है। इस पाठ को पढ़कर

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. लोगों की सुविधा के लिए दिल्ली शहर की प्रायः सभी बस्तियों में अलग-अलग बाजार है।
२. नगरवासियों और पड़ौसी गाँवों व राज्यों के लोगों की सुविधा के लिए दिल्ली में कई बड़ी मंडियाँ और विशेष बाज़ार हैं।
३. इन बाज़ारों और मंडियों के कारण दिल्ली नगर एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र बन गया है।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

इस पाठ को एक छोटी-सी कहानी के रूप में लिखा गया है। इसके पात्र बच्चों के जाने पहचाने नवीन, कमल और उनके दादाजी हैं। आप इस पाठ को कक्षा में मौन रूप से और फिर ज़ोर-ज़ोर से पढ़वाएँ। नवीन, कमल और दादाजी का वार्तालाप बच्चों के लिए बहुत रुचिकर होगा। पाठ में आने वाले कुछ नए शब्दों और कठिन धारणाओं की व्याख्या साथ-साथ करते जाएँ, जैसे :

- रोज़ काम आने वाली चीज़ें क्या होती हैं ? यहाँ बच्चों को बोलने का अवसर दें। वे स्वयं सोचकर बारी-बारी से कुछ चीज़ों के नाम बताएँगे।
- तुम रोज काम में आने वाली चीज़ें कहाँ से प्राप्त करते हो ? यहाँ बच्चों से उनकी बस्ती और पास-पड़ौस के बाज़ारों के बारे में बातचीत की जाए। पुस्तक में दिए गए स्थानीय बाज़ार के चित्र पर भी बच्चों से

प्रश्न करें। रोज काम में आनेवाली चीज़ों की एक सूची आप श्यामपट पर साथ-साथ बनाते जाएँ। प्रत्येक चीज़ के सामने उससे प्राप्त करने के स्थान या दुकान का नाम भी लिखें।

– बाज़ारों में बिकने वाली इतनी सारी वस्तुएँ कहाँ से आती हैं ?

बच्चे पाठ ५ में पढ़ चुके हैं कि दिल्ली में अनाज, दूध, फल, सब्जियाँ आदि बहुत-सी चीज़ें पड़ौसी गाँवों व राज्यों से आती हैं। अतः यहाँ पर आप बच्चों के पूर्वज्ञान से लाभ उठाएँ और गाँवों से शहर आनेवाली और शहर से गाँवों को जानेवाली चीज़ों की अलग-अलग सूचियाँ श्यामपट पर बनाएँ। इस प्रकार बच्चे दिल्ली नगर और पड़ौसी गाँवों व राज्यों के घनिष्ठ संबंधों को अच्छी तरह समझ सकेंगे।

पाठ में बड़े रूप से तीन प्रकार के बाज़ारों का वर्णन है : (१) स्थानीय बाजार—जो प्रत्येक बस्ती में होते हैं और जहाँ से साधारणतया उसी बस्ती के लोग अपनी रोज काम में आनेवाली चीज़ें और अन्य सेवाएँ प्राप्त करते हैं। (२) बड़े बाज़ार—जहाँ पर अनेक प्रकार की वस्तुओं का बड़े पैमाने पर थोक और फुटकर व्यापार होता है। (३) विशेष बाज़ार व मंडियाँ—जहाँ पर थोक व्यापार होता है और साधारण रूप से एक ही प्रकार की वस्तुएँ बिकती हैं। चाँदनी चौक, कनॉट प्लेस, दरीबा कलाँ, सब्ज़ी मंडी आदि का वर्णन इसी बात को समझाने के लिए विशेष रूप से किया गया है। आपके पास-पड़ौस में यदि ऐसा ही कोई बाज़ार या मंडी है तो आप इसके बारे में बच्चों से बातचीत करें और श्यामपट पर एक सूची बनाकर तीनों प्रकार के बाज़ारों को गिनाएँ। प्रत्येक बाज़ार के सामने वहाँ बिकने वाली मुख्य चीज़ों के नाम भी लिखें।

पुस्तक में दिए गए चाँदनी चौक, सुपर बाज़ार आदि के चित्रों तथा ऐसे ही कुछ अन्य चित्रों पर बच्चों से बातचीत करें। ऐसे चित्रों के द्वारा आप बड़े बाज़ारों में मिलने वाले जलपान-गृह, सिनेमाघर, बैंक, दफ्तर, वर्कशाप आदि के बारे में भी बच्चों को समझा सकते हैं।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. अपने माता-पिता के साथ चाँदनी चौक, कनॉट प्लेस, सुपर बाज़ार, अजमलखाँ रोड मार्केट, सब्ज़ी मंडी, नई सड़क आदि बड़े बाज़ारों की सैर करना।

२. आकाशवाणी दिल्ली से प्रसारित होने वाले दिल्ली के विभिन्न बाज़ारों में रोज़ काम में आने वाली वस्तुओं के भाव सुनना और उनका ब्योरा रखना।

मूल्यांकन

पाठ के अंत में दिए गए प्रश्नों के अतिरिक्त आप निम्नलिखित अभ्यास श्यामपट पर लिखकर बच्चों से कराइए:

(क) श्री प्यारेलाल को अपनी पुत्री के विवाह के लिए नीचे लिखी वस्तुओं की आवश्यकता है। प्रत्येक वस्तु के सामने दिल्ली के उस बाज़ार का नाम लिखो जहाँ से वे ये वस्तुएँ थोक में सस्ते दामों पर खरीद सकते हैं :

१. सूती, ऊनी, रेशमी कपड़ा ....

२. पीतल के बर्तन ....

३. सोने, चाँदी के गहने ....

४. रेडियो ....

५. घड़ी ....

६. सब्ज़ियाँ और फल ....

(ख) अपने स्कूल में एक सहकारी स्टोर खोलने का एक कार्यक्रम सामूहिक रूप से बनाना। इसके लिए बच्चों की रोज़ की ज़रूरत की चीज़ों की एक सूची बनवाएँ और उन बाज़ारों की जानकारी भी प्राप्त करें जहाँ से ये वस्तुएँ सस्ती मिल सकती हैं।

खंड ३

दिल्ली में नागरिक सुविधाएँ

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

पिछले दो खंडों में बच्चे पढ़ चुके हैं कि दिल्ली एक बहुत बड़ा शहर है। यहाँ की नई-पुरानी बस्तियाँ दूर तक फैली हुई हैं। नगर की निरंतर बढ़ती हुई जन-संख्या तो अब तीस लाख से भी अधिक हो गई है। इतने बड़े शहर और इतने अधिक लोगों की बहुत-सी ज़रूरतें होती हैं। दिल्ली नगरनिगम इनमें से बहुत-सी ज़रूरतों को पूरा करता है। इस खंड के पहले पाठ में दिल्ली नगरनिगम के चुनाव, कार्य, आय के साधन आदि का संक्षिप्त वर्णन है। शेष पाठों में दिल्ली शहर में प्राप्त कुछ मुख्य नागरिक सुविधाओं जैसे बिजली, पानी, परिवहन, शिक्षा, आग सेवा आदि की अलग-अलग विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है। इस खंड के पाठों को पढ़कर

(क) बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. सामान्य नागरिक सुविधाओं के प्रबंध के लिए नगर के लोग स्थानीय समितियाँ बनाते हैं। दिल्ली नगरनिगम एक ऐसी ही संस्था है।
२. दिल्ली नगरनिगम अनेक प्रकार से जनता की सेवा करता है।
३. नागरिक जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए हम निगम के कार्यों में सहयोग देते हैं।

(ख) बच्चे निम्नलिखित कुशलताएँ सीख लेंगे :

१. सभा की कार्यवाही में भाग लेना, अपने विचार प्रकट करना और दूसरों के विचार ध्यान से सुनना।
२. चुनाव में ठीक ढंग से मतदान करना।
३. सड़क पर सावधानी से चलना और ट्रैफिक चिह्नों को पहचानना।
४. समीप के छोटे बिजलीघर, डाक-तार-घर, आग-सेवा-केन्द्र तथा आग-सूचक खंबों की जानकारी और पहचान।

(ग) बच्चों में निम्नलिखित भाव जाग्रत होंगे :

१. नागरिक सेवाओं में काम करने वाले सभी लोगों के प्रति आदर, प्रेम, सहानुभूति और सहयोग की भावना।

२. पानी, बिजली, परिवहन, शिक्षा आदि सेवाओं के उचित प्रयोग की भावना।
३. जिम्मेदारी निभाने और साझे के कामों में सहयोग देने का भाव।
४. अपने अध्यापकों के प्रति आदर और श्रद्धा का भाव।

पढ़ाने के लिए कुछ सामान्य सुझाव

१. पाठ ९ एक प्रकार से इस खंड के शेष सभी पाठों की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करता है। अतः इस खंड का आरंभ आप पाठ ९ में दिए गए प्रोजेक्ट के सुझावों को ध्यान में रखते हुए करें। जब तक आप इस खंड के पाठों को पढ़ाएँ, यह प्रोजेक्ट चलता रहे। इस बात का ध्यान रहे कि सभी बच्चों, को इस प्रोजेक्ट में सक्रिय रूप से भाग लेने के अवसर मिलें।

२. कक्षा २ में बच्चे पंचायत के बारे में कुछ बातें पढ़ चुके हैं। नगरनिगम और नगरपालिका का भी वे थोड़ा सा ज्ञान रखते हैं। निगम के कामों का एक चार्ट पाठ ९ में दिया गया है। आप इसी से मिलता-जुलता एक बड़ा चार्ट बनाकर कक्षा में दिखाएँ और बच्चों के पूर्वज्ञान को बातचीत का आधार बनाते हुए नगरनिगम और नागरिक सुविधाओं के बारे में पढ़ाना आरंभ करें।

---

९. दिल्ली नगरनिगम

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

प्रत्येक छोटे बड़े शहर के रहने वालों की कुछ ज़रूरतें होती हैं। इन ज़रूरतों को पूरा करने के लिए शहरी लोग स्थानीय समितियों का चुनाव करते हैं। दिल्ली नगरनिगम और नई दिल्ली नगरपालिका ऐसी ही दो स्थानीय समितियाँ हैं। जो दिल्ली में नागरिक सुविधाओं का प्रबंध करती हैं। इस पाठ में दिल्ली नगरनिगम के चुनाव, कार्य, आय के साधन आदि की संक्षेप में चर्चा की गई है। इस पाठ को पढ़कर बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. सामान्य नागरिक सुविधाओं के प्रबंध के लिए दिल्ली के लोग दिल्ली नगरनिगम का चुनाव करते हैं।
२. दिल्ली नगरनिगम शहर में बिजली, पानी, परिवहन, शिक्षा, स्वास्थ्य, आग सेवा आदि आवश्यक नागरिक सुविधाओं का प्रबंध करता है।
३. नई दिल्ली के कुछ निर्धारित क्षेत्र में इन नागरिक सुविधाओं का प्रबंध नई दिल्ली नगरपालिका करती है
४. नागरिक सुविधाओं के प्रबंध में हम दिल्ली नगरनिगम और नई दिल्ली नगरपालिका को सहयोग देतें हैं।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

बालसभा, पंचायत, नगरपालिका के नाम, काम, चुनाव आदि के बारे में कुछ साधारण बातें बच्चे कक्षा १ और २ में जान चुके हैं। अब दिल्ली नगरनिगम के चुनाव, आय के साधन और सेवाओं के बारे में विस्तार से समझाने के लिए आप अपनी कक्षा में एक छोटा सा प्रोजेक्ट चलाएँ। यदि आपके स्कूल में कक्षा ३ के कई विभाग हैं,

तो अपने साथी अध्यापकों से मिलकर कार्यक्रम बनाएँ और कक्षा ३ के सभी विभागों के बच्चों को इस प्रोजैक्ट में शामिल कर लें।

कक्षा ३ के सभी छात्र-छात्राएँ मिलकर एक 'कक्षा निगम' या 'कक्षा नगरपालिका' बनाएँ। प्रत्येक विभाग में दो-दो, या तीन-तीन 'वार्ड' निश्चित किए जाएँ। प्रत्येक 'वार्ड' से बच्चे अपना एक-एक प्रतिनिधि चुनें जो इस 'कक्षा निगम' का सदस्य हो। चुनाव का तरीका अपने देश में प्रचलित गुप्त मतदान प्रणाली से मिलता-जुलता होना चाहिए। आप इसे बच्चों के लिए कुछ सरल अवश्य बनादें। चुने हुए सदस्य मिलकर अपने नेता (महापौर), उपनेता (उप-महापौर) आदि का चुनाव करें।

इस प्रकार चुने हुए 'कक्षा निगम' की एक खुली बैठक आप किसी दिन सब बच्चों की उपस्थिति में कराएँ। महापौर इस बैठक की अध्यक्षता करें। आप कुछ बच्चों को छोटी-मोटी समस्याएँ पहले से ही लिखवा दें। वे उन्हें सब के सामने बैठक में पढ़ें। एक सदस्य इन सब बातों को नोट करता रहे।

'कक्षा निगम' की अन्य बैठकों में इन समस्याओं पर विचार किया जाए। अधिक से अधिक बच्चे सुझाव दें। जिस सुझाव को कक्षा निगम सर्व-सम्मति या बहुमत से स्वीकार करे, उसका पालन सभी बच्चे करें। कक्षा निगम के सामने कुछ इस प्रकार की समस्याएं आ सकती हैं :

- कुछ बच्चे रद्दी कागज के टुकड़े, टूटे कलम, दवात आदि खिड़कियों से बाहर फेंक देते हैं और कमरों के पीछे और बरामदों में कूड़ा इकट्ठा हो जाता है।
- कुछ बच्चे स्कूल की दीवारों पर पैंसिल या स्याही से बेकार बातें लिख देते हैं या शक्लें बना देते हैं। इससे दीवारें खराब होती हैं और गंदी लगती हैं।
- १२ बजे के बाद स्कूल के नलों में पानी आना बंद हो जाता है और इसके बाद बच्चों को पानी नहीं मिल पाता।

इस प्रकार की कुछ और समस्याएँ भी हो सकती हैं। वास्तव में समस्याएँ आपके अपने स्कूल की होनी चाहिए। ऐसी सभी समस्याओं पर बच्चों को सोचने दें। वे 'कक्षा निगम' की बैठक में बारी-बारी अपने सुझाव सुनाएँ। आप कुछ सुझाव बच्चों को बता सकते हैं। बहुमत से स्वीकृत सुझावों का सभी पालन करें। सुझाव इस प्रकार हो सकते हैं :

- बरामदों में कूड़े के ढोल रखे जाएँ और सब बच्चे इनमें ही कूड़ा-करकट डालें।
- कुछ दिनों तक प्रति सप्ताह 'सफ़ाई प्रतियोगिता' की जाए। सभी कक्षाएं इसमें भाग लें। सभी कमरों की सफ़ाई का प्रतिदिन निरीक्षण किया जाए। पूरे सप्ताह तक जिस कक्षा का कमरा सबसे अधिक साफ़ पाया जाए उसे कोई सामूहिक पुरस्कार दीजिए। यह पुरस्कार प्रति सप्ताह के निरीक्षण के परिणामस्वरूप एक से दूसरी कक्षा को मिलता रहेगा।
- पानी के नल बंद होने से पहले हर रोज़ कुछ मटकों, बाल्टियों आदि में पानी भर कर रख लिया जाए।

कक्षा निगम का यह प्रोजैक्ट आप कई सप्ताह तक अपनी कक्षा में चला सकते हैं। इससे बच्चों को बड़ा अच्छा प्रशिक्षण मिलेगा। सभा में भाग लेने, अपने विचार प्रकट करने, दूसरों के विचार सुनने, जिम्मेदारी निभाने, नेतृत्व करने, बहुमत से स्वीकृत बातों का पालन करने और सहयोग देने की अच्छी आदतें बच्चों में पैदा होंगी। दिल्ली नगरनिगम और इसके चुनाव व कार्य आदि के बारे में 'कक्षा निगम' के माध्यम से पढ़ना और जानना उनके लिए बड़ा अर्थपूर्ण और स्थायी होगा।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. दिल्ली नगरनिगम या नई दिल्ली नगरपालिका की बैठक अपने अध्यापक या माता-पिता के साथ देखने जाना ।

२. नगरनिगम के कार्यों और आय के साधनों की सूची एक चार्ट पर चित्रों सहित बनाना ।

मूल्यांकन

सुझावों में बताए गए प्रोजैक्ट के अंतर्गत इस पाठ का मूल्यांकन भी देर तक चलेगा । अतः आप विशेष रूप से जाँच करते रहें कि आपके बच्चों में नीचे लिखी आदतें और जानकारियाँ पैदा हो रही हैं या नहीं :

- सभा में ठीक तरह बोलकर अपने विचार प्रकट करना ।
- दूसरों के विचार ध्यान से सुनना और उनका आदर करना ।
- सभा की कार्यवाही चलाना तथा इसे चलाने में सहयोग देना ।
- बहुमत से स्वीकृत निर्णय पर चलना और नियमों का पालन करना ।
- नेतृत्व करना तथा अपनी जिम्मेदारी निभाना ।
- 'कक्षा निगम' आदि के चुनाव में ठीक ढंग से मतदान करना ।

वर्तमान दिल्ली नगरनिगम के चुनावों, कार्यों, पदाधिकारियों आदि के बारे में बच्चों के ज्ञान की जाँच आप कुछ अन्य प्रश्नों द्वारा करें ।

---

१०. दिल्ली में पानी का प्रबंध

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

हमें हर स्थान पर हर समय अनेक कामों के लिए पानी की आवश्यकता रहती है । गाँव के लोग अधिकतर कुओं से पीने का पानी प्राप्त करते हैं । दिल्ली शहर की बस्तियों में यह पानी अधिकतर यमुना नदी से आता है । इस पानी को साफ़ करने और घरों तथा अन्य स्थानों तक पहुँचाने के लिए सैकड़ों लोग काम करते हैं । वे सब हमारे मददगार हैं । इस पाठ में शहर की इसी जल-व्यवस्था को विस्तारपूर्वक समझाया गया है । इस पाठ को पढ़कर

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. पानी हमारी एक मूलभूत आवश्यकता है ।

२. विभिन्न स्थानों के लोग विभिन्न ढंगों से पीने का पानी प्राप्त करते हैं ।

३. नगरनिगम का जल-विभाग शहर में पीने के पानी की व्यवस्था करता है ।

४. जल-विभाग में काम करने वाले सैकड़ों लोग हमारे अच्छे सहायक हैं ।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

नीचे एक समाचार-पत्र में छपी खबर की नकल दी जा रही है :

पानी बंद रहेगा

दिल्ली, २७ दिसंबर। ओखला जलाशय पर वार्षिक सफ़ाई के कारण कालकाजी, मालवीय नगर, हौज़ खास, फ्रैण्ड्स कॉलोनी, लाजपत नगर, महारानी बाग, जामिया मिलिया, और ग्रेटर कैलाश क्षेत्रों में पानी के नल कल प्रात: १० बजे से सायं ५ बजे तक बंद रहेंगे।

प्रात: ९ बजे से ६ बजे तक रमेश नगर, राजौरी गार्डन, सुभाष नगर, अशोक नगर, तिलक नगर, प्रेम नगर, टैगोर गार्डन, जे० जे० कॉलोनी, राजा गार्डन तथा बसई दारापुर में नलों को जोड़ने वाले बड़े पाइप की मरम्मत के कारण पानी बंद रहेगा।

स्थानीय दैनिक पत्रों में ऐसी सूचनाएँ आए दिन छपती रहती हैं। इस पाठ को कक्षा में प्रस्तुत करने के लिए आप एक ताज़ा समाचार-पत्र कक्षा में ले जाएँ। इस सूचना को कक्षा में पढ़कर सुनाएँ और कुछ बच्चों से भी पढ़वाएँ। फिर इस सूचना का शीर्षक श्याम-पट पर लिखकर बच्चों के सामने एक समस्या रखें :

आज पानी बंद रहेगा। ———— क्यों ?

इस समस्या पर विचार करने और नगर में पानी की व्यवस्था के बारे में जानने के लिए बच्चों में बहुत अधिक रुचि पैदा होगी। आप इस पर बच्चों से बातचीत करते हुए अपने पाठ को विकसित करें।

दिल्ली क्षेत्र में यमुना नदी के किनारे पर स्थित 'वज़ीराबाद' और 'ओखला' के बारे में बच्चे पाठ १ में ही पढ़ चुके हैं। इस पाठ को पढ़ाते हुए दिल्ली क्षेत्र का ऐसा मानचित्र काम में लाएँ जिसमें ये दोनों स्थान और शहर की कुछ मुख्य बस्तियाँ दिखाई गई हों। वज़ीराबाद और ओखला में ही शहर के दोनों बड़े पंपिंग स्टेशन हैं। यहीं पर यमुना का पानी बाहर निकाल कर साफ़ किया जाता है और फिर शहर की बस्तियों तक पहुँचाया जाता है।

यमुना के पानी को साफ़ करने की क्रिया के बारे में पाठ में कोई जानकारी नहीं दी गई है। यदि आपकी कक्षा में यह प्रसंग आए और बच्चे उत्सुक हों तो आप पानी को साफ़ करने और पीने योग्य बनाने की क्रिया संक्षेप में बच्चों को समझाएं। यह क्रिया कुछ इस प्रकार है :

"जालीदार पाइपों द्वारा नदी से पानी बाहर निकालते हैं और इसे कुछ पक्के तालाबों में एकत्र करते हैं। यहाँ कुछ देर बाद पानी में मिली रेत, मिट्टी आदि धीरे-धीरे नीचे बैठ जाती हैं और पानी निथर जाता है। इस निथरे हुए पानी को दूसरे तालाब में ले जाते हैं। इस तालाब में रेत की तह बिछी होती है। रेत की इस तह में से गुज़ार कर पानी को तीसरे तालाब में ले जाते हैं, इस प्रकार पानी के कीटाणु आदि मर जाते हैं और पानी साफ़ हो जाता है। अब इस पानी को चौथे तालाब में ले जाकर जमा करते हैं। यह पानी साफ़ और पीने योग्य होता है। घरों में सप्लाई करने से पहले इस पानी की सफ़ाई की पूरी जाँच भी की जाती है।"

पंपिंग स्टेशन पर पानी साफ़ करने की क्रिया को अच्छी तरह स्पष्ट करने के बाद आप बच्चों को समझाएँ कि :

- नगर में बहुत-से स्थानों पर पानी की ऊँची-ऊँची टंकियाँ बनी हुई हैं।
- धरती के अंदर बिछाई गई पाइप-लाइन द्वारा पानी पंपिंग स्टेशन से इन टंकियों तक लाया जाता है।
- फिर इसी प्रकार इन टंकियों से यह पानी सभी घरों और ज़रूरत के अन्य स्थानों तक पहुँचाया जाता है।

बच्चों को यह बात समझाना बहुत जरूरी है कि दिल्ली के दोनों पंपिंग स्टेशनों पर दिन-रात काम होता है और यह प्रयत्न किया जाता है कि शहर में हर स्थान पर हर समय पीने का पानी पहुँचता रहे।

पाठ में दिए गए चित्रों की सहायता से यह स्पष्ट करें कि नगर की जल-व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए बहुत से लोग काम करते हैं। अपनी-अपनी जगह पर सब का काम बहुत महत्त्वपूर्ण है और वे सभी हमारे अच्छे सहायक हैं। यदि पास-पड़ौस में पानी की टंकी हो अथवा पानी के पाइप बिछाए जा रहे हों या मरम्मत आदि हो रही हो तो बच्चों को वहाँ लेजाकर सब चीज़ें दिखाएँ।

कभी-कभी किसी कारणवश शहर में जल-संकट उपस्थित हो जाता है अथवा शहर की कुछ बस्तियों में नलों में पानी आने का समय निर्धारित कर दिया जाता है। ऐसे साधारण प्रसंगों पर बातचीत करते हुए आप यह बात अच्छी तरह बच्चों को समझाएँ कि पीने का पानी बड़ी कठिनाई से हम तक पहुँचता है और इस काम में सैकड़ों लोग हर समय जुटे रहते हैं। अतः हमें पानी का नल कभी बेकार ही खुला नहीं छोड़ना चाहिए और पानी का सदा उचित प्रयोग करना चाहिए। इस संबंध में आप स्कूल में बच्चों के व्यवहार पर निगाह रखें और उनमें पानी के उचित प्रयोग की आदतें पैदा करने की कोशिश करें।

इस पाठ में केवल पीने के पानी से संबंधित जानकारी दी गई है। दिल्ली में बिना साफ़ किए हुए पानी के नल भी लगे हैं। यह पानी घास के मैदानों और बाग-बगीचों की सिंचाई और छिड़काव आदि के काम आता है। यदि कक्षा में इसका प्रसंग आ जाए या आप ज़रूरत समझें तो इसके बारे में भी बच्चों को बताएँ।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. (यदि आप के पड़ोस में हों तो) वज़ीराबाद या ओखला पंपिंग स्टेशन देखने जाना।

२. कुछ अच्छे बच्चे नीचे लिखी अधूरी कहानी को पूरी करके लिखें या सुनाएँ :

रवि को प्यास लगी। वह भागा-भागा नल पर गया और नल खोल कर पानी पीने लगा। पानी पीने के बाद उसने नल खुला छोड़ दिया और वापस जाने के लिए मुड़ गया। अभी उसने एक कदम ही रखा था कि आवाज़ आई :

"ज़रा ठहरो, रवि भाई, तुम नहीं जानते कि तुमने नल खुला छोड़ कर कितनी बड़ी भूल की है। पहले नल बंद करो, फिर मैं तुम्हें बताऊँगा कि मैं कितनी कठिनाई से यहाँ तक पहुँचता हूँ।" रवि ने यह बात सुनी तो तुरंत नल बंद कर दिया और पानी की कहानी सुनने लगा। नल के अंदर से पानी की महीन-सी आवाज़ आने लगी, "मैं पंद्रह मील की यात्रा करके यमुना नदी से यहाँ आया हूँ————————।"

मूल्यांकन

नगर की जलव्यवस्था से संबंधित ज्ञान के अतिरिक्त इस पाठ के द्वारा आप बच्चों में नागरिकता की भावना और पानी के उचित प्रयोग की आदत पैदा करने का प्रयत्न करेंगे। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आप स्कूल में कुछ विशेष अवस्थाओं में बच्चों के व्यवहार का निरीक्षण करें और उनमें उचित सुधार लाने पर बल दें। ऐसा करते हुए आप निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखें :

- क्या आपके छात्र पीने के पानी का उचित प्रयोग करते हैं ?
- क्या आपके छात्र पानी पीने के बाद नल बंद कर देते हैं ?
- स्कूल में पानी का नल खराब होने पर क्या आपके छात्र आपको सूचित करते हैं ?
- आपके छात्र पानी का दुरुपयोग तो नहीं करते हैं ?

'कुछ करने को' में बच्चों से पानी की यात्रा की कहानी कापी पर लिखने के लिए कहा गया है। यदि यह क्रिया आपके बच्चों के लिए कुछ कठिन हो तो आप श्याम-पट पर इस कहानी को जगह-जगह पर खाली स्थान छोड़ते हुए लिख दें। फिर बच्चों से ये खाली स्थान भरवाएँ। इसके बाद बच्चे पानी की यात्रा की कहानी स्वयं भी लिख सकेंगे। यह क्रिया पाठ पढ़ाते अथवा मूल्यांकन करते समय कभी भी कराई जा सकती है।

---

११. घरों और सड़कों के लिए बिजली

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

बिजली से सभी बालक परिचित हैं। बिजली से होने वाले कामों की भी उन्हें थोड़ी बहुत जानकारी है। आजकल दिल्ली क्षेत्र के बहुत-से गाँवों और दिल्ली शहर की सभी बस्तियों में बिजली पहुँच चुकी है। यह बिजली कहाँ और किस प्रकार तैयार होती है? घरों, सड़कों और ज़रूरत के अन्य स्थानों तक बिजली पहुँचाने के लिए किस प्रकार सैकड़ों व्यक्ति काम करते हैं? इस पाठ में दिल्ली की इसी बिजली-व्यवस्था पर प्रकाश डाला गया है। इस पाठ को पढ़कर

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. हम विभिन्न कामों के लिए बिजली का प्रयोग करते हैं।
२. नगरनिगम का बिजली विभाग शहर के सभी मकानों, बस्तियों और सड़कों पर बिजली की व्यवस्था करता है।
३. बिजली विभाग में सैकड़ों लोग दिनरात काम करते हैं।
४. बिजली विभाग के सभी कर्मचारी हमारे अच्छे सहायक हैं।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

इस पाठ को पढ़ाने के लिए भी आप पाठ १० में दिए गए सुझाव काम में ला सकते हैं। समाचार-पत्र में छपी कोई सूचना या समाचार लेकर बच्चों के सामने इस प्रकार एक समस्या प्रस्तुत करें कि वे आज के जीवन में बिजली के महत्त्व, नगर की बिजली व्यवस्था और बिजली बंद रहने से होने वाली हानियों आदि के बारे में जानने के लिए उत्सुक हो उठें। इस संबंध में आप निम्नलिखित प्रश्नों को श्यामपट पर लिखें और इनके बारे में बातचीत करते हुए पाठ को विकसित करें :

"आज बिजली बंद रहेगी"

– आज बिजली क्यों बंद रहेगी ?
– बिजली बंद रहने से घरों, सड़कों, दुकानों, दफ्तरों, कारखानों आदि पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?
– बिजली से शहर में क्या-क्या काम होते हैं ?
– समाचार-पत्रों में बिजली बंद रहने की सूचना क्यों छपती है ?

आज के बच्चों के लिए बिजली एक अत्यंत साधारण चीज़ है। वे अपने घर, स्कूल और पास-पड़ौस में बिजली के तार, खंभे, मोटर, बल्ब, बिजली से होने वाले अनेक काम और बिजली से चलने वाली अनेक वस्तुएँ देखते हैं। अतः आप बच्चों के पूर्व-अनुभवों से अवश्य लाभ उठाएँ, और नीचे दिए गए प्रश्नों की मदद से पाठ आगे बढ़ाएँ।

- दिल्ली नगर में बिजली कहाँ और किस प्रकार तैयार होती है ?
- बिजली हमारे घरों, सड़कों, कारखानों आदि ज़रूरत के स्थानों पर किस प्रकार पहुँचती है ?
- नगर की बिजली व्यवस्था को सुचारु रुप से चलाने के लिए किस प्रकार बहुत-से लोग दिनरात काम करते है ?

पुस्तक में दिल्ली के बड़े बिजलीघर का चित्र और कुछ अन्य चित्र हैं। आप इसी प्रकार के कुछ अन्य चित्र भी काम में ला सकते हैं।

शहर की सभी बस्तियों और गाँवों में स्थानीय बिजलीघर होते हैं। यदि राजघाट के बड़े बिजलीघर पर बच्चों को ले जाना कठिन हो तो अपनी बस्ती के छोटे बिजलीघर की सैर बच्चों को अवश्य कराएँ। इस सैर के बीच में बच्चों को जगह-जगह बिजली से होने वाले काम दिखते जाएँ, जैसे आटा पीसने की चक्की, पंखे, मशीनों आदि का बिजली से चलना। शहर के सभी बिजलीघर इसीलिए हर समय खुले रहते हैं। बिजली के तारों तथा बिजली से चलनेवाली चीज़ों के प्रयोग में सावधानी बर्तने के बारे में बच्चों से चर्चा करना न भूलिए।

इस पाठ के तीसरे अनुच्छेद में राजघाट बिजलीघर का वर्णन करते हुए यह बताया गया है कि वहाँ बिजली किस प्रकार तैयार की जाती है। यह बड़ा बिजलीघर यमुना के किनारे क्यों बनाया गया है ? इस प्रश्न का उत्तर पाठ में स्पष्ट न करके, बच्चों के सोचने के लिए छोड़ दिया गया है। आप भी इस अनुच्छेद को कक्षा में पढ़ाते समय इस प्रश्न का उत्तर बच्चों को सोचने दें।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. राजघाट का बिजलीघर या इसके पास का दूसरा बिजलीघर देखने जाना।

२. बिजली से होने वाले कामों की सूची बनाना।

मूल्यांकन

'कुछ करने को' में दी गई बिजली की यात्रा की कहानी को आप खाली स्थान भरवाकर भी पूरा करा सकते हैं। इससे आपकी कक्षा के उन कमज़ोर बच्चों को लाभ होगा, जो पहली ही बार में इस कहानी को ठीक तरह से नहीं लिख सकते।

बस्ती का स्थानीय बिजलीघर कहाँ है ? इसका पता बच्चों को होना चाहिए। घर या स्कूल की बिजली खराब होने की अवस्था में वे बस्ती के छोटे बिजलीघर पर जाकर मौखिक या लिखित सूचना दे सकें, इस योग्यता को बच्चों में पैदा करें और इसकी जाँच करने के अवसर भी निकालें।

'अब बताओ' के प्रश्नों का बच्चों के प्रतिदिन के जीवन से और अधिक सीधा संबंध जोड़ने के लिए आप इन प्रश्नों की भाषा आदि कुछ बदलकर पूछें। उदाहरण के लिए आप प्रश्न १ को इस प्रकार भी पूछ सकते हैं।

यदि पूरे दिल्ली शहर की बिजली एक दिन के लिए बंद हो जाए तो कौन-कौन से काम रुक जाएँगे ?

इस प्रश्न के उत्तर में बच्चे स्वाभाविक रूप से उन कामों को ही गिनाएँगे जिनको वे प्रतिदिन बिजली से होता हुआ देखते हैं। इन सब कामों के नाम श्यामपट पर लिखते जाएँ। यही उन कामों की सूची होगी जिनमें बिजली का प्रयोग होता है।

---

१२. स्थानीय परिवहन

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

बच्चे अब तक अच्छी तरह जान चुके हैं कि दिल्ली शहर दूर तक फैला हुआ है। शहर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाने के लिए बीस-बीस और पच्चीस-पच्चीस किलोमीटर की यात्रा करनी पड़ती है। शहर में एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने-आने के लिए कई प्रकार की सवारियाँ मिलती हैं, लेकिन अक्सर लोग बस द्वारा यात्रा करते हैं। यह पाठ शहर की स्थानीय बस-सेवा के बारे में ही है। इस पाठ को पढ़कर

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. शहर में आने-जाने के लिए दिल्ली के लोग विभिन्न सवारियों का प्रयोग करते हैं।
२. शहर में एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने-आने के लिए नगरनिगम का परिवहन विभाग स्थानीय बसें चलाता है।
३. परिवहन विभाग में काम करने वाले सभी कर्मचारी हमारे अच्छे सहायक हैं।
४. ट्रैफ़िक के नियमों का पालन करने से हम दुर्घटनाओं से बच सकते हैं।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

यह पाठ बच्चों के प्रतिदिन के जीवन से बहुत निकट से संबंध रखता है। अतः आप इसे पढ़ाने के लिए साधारण बातचीत से लेकर दिल्ली परिवहन के किसी बस-डिपो की सैर कराने तक कोई भी ढंग अपना सकते हैं। कक्षा में बातचीत आरंभ करने के लिए आप कुछ इस प्रकार के प्रश्न बच्चों से करें :

– तुम्हारे पिताजी या भाई साहब किस दफ्तर या कारखाने में काम करते हैं ?
– वे अपने काम के स्थान तक किस तरह जाते-आते हैं ?

(पैदल, साइकिल पर, बस द्वारा, रेल द्वारा आदि)

अधिक से अधिक बच्चों को इस बातचीत में भाग लेने दें। इस तरह बच्चे स्थानीय यातायात के सभी साधनों के नाम लेंगे। आप यहाँ पर यह स्पष्ट करें कि दिल्ली जैसे बड़े शहर में स्थानीय यातायात की अच्छी व्यवस्था होना बहुत ज़रूरी है। इसे समझाने के लिए कुछ प्रश्न पूछे जा सकते हैं। इसके लिए आप दिल्ली नगर या दिल्ली क्षेत्र का एक बड़ा मानचित्र काम में लाएँ जिसमें कुछ बस्तियाँ और मुख्य-मुख्य स्थान दिखाए गए हों, जैसे दिल्ली रेलवे स्टेशन, लाल किला, राजघाट, कनाट प्लेस, केंद्रीय सचिवालय, बुद्ध पार्क रामकृष्णपुरम, कुतुब, कालकाजी, ओखला, करोलबाग, सब्ज़ी मंडी आदि। इस मानचित्र और इस पर बातचीत की सहायता से आपके बच्चे स्थानीय बस-सेवा के महत्त्व को अच्छी तरह समझ सकेंगे।

दिल्ली परिवहन विभाग के बारे में पा १२ में थोड़ी-सी जानकारी दी गई है । इस पाठ में आप 'दिल्ली परिवहन' के बारे में विस्तार से पढ़ाएँ । इस संबंध में निम्नलिखित बातों पर अधिक बल दें :

– कंडक्टर और ड्राइवर का काम बड़ी मेहनत का काम है और वे हमारे अच्छे सहायक हैं ।

– हमें कंडक्टर और ड्राइवर को सहयोग देना चाहिए और बस में टिकट अवश्य खरीदना चाहिए ।

– हमें सड़क पर सावधानी से चलना चाहिए और ट्रैफ़िक के नियमों का पालन करना चाहिए ।

पुस्तक में दिए गए चित्रों पर बातचित करते हुए यह बताना कदापि न भूलें कि शहर में बस-सेवा का प्रबंध करने के अलावा नगरनिगम सड़कों की मरम्मत करता है, सड़कों पर नाम के बोर्ड लगवाता है और जगह-जगह पर सड़क पर चलने, सड़क पार करने आदि के नियम भी लिखवाता है ।

दिल्ली जैसे शहर में आए दिन सड़क दुर्घटनाएँ होती हैं और सभी बच्चों को घर और स्कूल के बीच आते-जाते हुए कई सड़कों और चौराहों को पार करना पड़ता है । अतः इस पाठ को पढ़ाते हुए यह बहुत जरूरी है कि आप बच्चों को सड़क पर सावधानी से चलना, सड़क पार करना और ट्रैफ़िक के अन्य नियमों का पालन करना सिखाएँ । इस संबंध में उचित आदतें डालने और अभ्यास कराने के लिए आप बच्चों को "चौराहे का खेल" खिलाएँ । खेल के मैदान में लाइनें खींचकर चार सड़कें बनाएँ जो एक चौराहे पर आकार मिलती हों । दो बच्चे ट्रैफ़िक पुलिस के सिपाही बनकर ट्रैफ़िक का नियंत्रण करें । कुछ बच्चे अलग-अलग तरह की सवारी (बस, कार, साइकिल, टक्सी, स्कूटर, ताँगा आदि) का काग़ज़ का बना बोर्ड गलें में लगा कर सड़कों पर विभिन्न दिशाओं में ट्रैफ़िक के संकेतों पर चलें या दौड़ें । कुछ बच्चे पैदल सड़क पार करें । शेष बच्चे तमाशा देखें, ट्रैफ़िक के नियमों का उलंघन करने वालों और गलत ढंग से सड़क पार करने वालों को पकड़ें । इस खेल में सभी बच्चे बारी-बारी से भाग लें ।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. स्कूल के आस-पास के किसी ऐसे चौराहे पर जहाँ काफी ट्रैफ़िक चलता हो, बच्चों को ले जाना और ट्रैफ़िक का निरीक्षण कराना । यदि मौका हो तो उचित समय पर सड़क पार करने का अभ्यास कराना ।

२. समिप क दिल्ली परिवहन के बस-डिपो या किसी बड़े बस-स्टाप को देखने जाना ।

३. दिल्ली परिवहन की बसों का टाइम-टेबिल देखना सिखाना ।

मूल्यांकन

इस पाठ का मुल्यांकन करते समय आप दो बातों का ध्यान रखें :

– बच्चों को स्थानीय परिवहन सेवा तथा इसकी आवश्यकता से संबंधित जानकारी होना । इसका मूल्यांकन पाठ के अंत में दिए गए प्रश्नों के आधार पर करें ।

– सड़क पर सावधानी से चलना सीखना, ट्रैफ़िक के नियमों को सीखना और उनपर चलने की आदत का अभ्यास करना ।

दूसरे उद्देश्य की पूर्ति और मूल्यांकन आप कुछ वास्तविक स्थितियों के आधार पर करें । जब कभी आप बच्चों को दूर या पास के किसी स्थान के भ्रमण के लिए ले जाएँ अथवा उन्हें आपके साथ बस में यात्रा करने का अवसर मिले तो निचे लिखी बातों पर ध्यान दें और बच्चों की आदतों में सुधार लाने की कोशिश करें :

– क्या आपके बच्चे सड़क पर सावधानी से चलते हैं ?

– क्या आपके बच्चे सावधानी से सड़क पार करते हैं ?

– क्या आपके बच्चे बस में चढ़ने के लिए स्वेच्छापूर्वक 'क्यू' में खड़े होते हैं ?
– क्या आपके बच्चे टिकट लेने के लिए कंडक्टर से शिष्टतापूर्वक अनुरोध करते हैं ?
– क्या आपके बच्चे ट्रैफ़िक पुलिस के सिपाही के संकेतों को समझते हैं और उन पर चलते हैं ?

---

१३. डाक-तार और टेलिफोन

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

डाक-तार और टेलिफोन सेवाएँ हमारे लिए बहुत आवश्यक हैं। दिल्ली जैसे बड़े शहर में तो इन सेवाओं की अच्छी व्यवस्था होना और भी आवश्यक है। डाक, तार और टेलिफोन सेवाओं का प्रबंध भारत सरकार के हाथ में है। 'डाकिया' और 'पत्र की यात्रा' के बारे में बच्चे कक्षा २ में ही पढ़ चुके हैं। अब वे डाक-तार और टेलिफोन विभाग की अन्य सेवाओं के बारे में पढ़ेंगे। इस पाठ को पढ़कर

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. डाक-तार और टेलिफोन विभाग शीघ्र संदेश भेजने और प्राप्त करने में हमारी सहायता करते हैं।
२. बढती हुई डाक, तार और टेलिफोन सेवाओं से राजधानी के अधिकाधिक लोग लाभ उठाते हैं।
३. डाक, तार और टेलिफोन विभागों में काम करने वाले सभी लोग हमारे अच्छे सहायक हैं।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

इस पाठ में बच्चों को राजधानी के एक ऐसे स्थान की सैर पर ले जाया गया है जहाँ डाक, तार और टेलिफोन के तीनों विभाग हैं। डाक विभाग के बारे में बच्चों को थोड़ा-सा ज्ञान है। कक्षा २ में वे 'डाकिया' और 'पत्र की यात्रा' की कहानी पढ़ चुके हैं। उनके इसी पूर्व-ज्ञान के आधार पर आप उन्हें डाक-विभाग की अन्य सेवाओं जैसे रजिस्ट्री-पत्र, पार्सल, मनीआर्डर, बचत-बैंक आदि के बारे में समझाएँ। इसके लिए आप बच्चों को कार्ड, लिफाफे, डाक टिकट, मनीआर्डर फार्म आदि कक्षा में लाकर दिखाएं।

'डाक-छटाईघर' के बारे में जानना बच्चों के लिए बड़ा रुचिकर होगा। डाक विभाग के काम को अच्छी तरह समझाने के लिए आप कक्षा में कुछ दिनों की एक सामूहिक योजना (प्रोजेक्ट) चलाइए। इसकी रूपरेखा कुछ इस प्रकार हो सकती है :–

– सब बच्चे पोस्ट कार्ड की आकृति के एक-एक या दो-दो मोटे कागज़ काट कर तैयार करें।
– इन कार्डों पर एक ओर सभी बच्चे अपने किसी सहपाठी मित्र या अध्यापक के घर का पता साफ़-साफ़ लिखें। यह ध्यान रहे कि कक्षा के अधिकांश बच्चे एक या दो-चार बच्चों के पते ही न लिख दें। हर बच्चे के नाम कम-से-कम एक पत्र अवश्य लिखा जाए।
– पत्र के दूसरी ओर बच्चे अपने मित्र के नाम नव-वर्ष की बधाई, दीपावली की शुभकामनाएं, ईद मुबारक, गणतंत्र दिवस की बधाई आदि के संक्षिप्त संदेश लिखें। संदेश यदि पाने वाले बच्चे के धर्म और भेजने के समय या अवसर से मेल खाता हो तो और भी अच्छा होगा।

– कुछ बच्चे मिलकर लेटरबक्स का गत्ते का एक माडल बनाएँ और इसे सामाजिक अध्ययन के कोने में रखें। अपने-अपने बधाई-पत्र सब बच्चे इस लेटरबक्स में डालें।
– लेटरबक्स को खोल कर कुछ बच्चे इन पत्रों को निकालें, आलू या लकड़ी की बनाई 'डाकघर कक्षा ३' की मोहर सब पत्रों पर लगाएँ और पते पढ़-पढ़ कर इनकी छटाई करें। पत्रों को पाने वालों तक पहुँचाने के लिए कुछ बच्चे डाकिया का काम करें।
– ऐसे पत्र जिन के पते अशुद्ध हों या न पढ़े जा सकें, भेजने वालों को वापस दिए जाएँ और वे बच्चे दोबारा सही पते लिखकर पत्र डालें।
– आप चाहें तो इस प्रोजैक्ट में मनीआर्डर, तुरंत-पत्र, रजिस्ट्री-पत्र और तार भेजने का खेल भी शामिल कर लें, लेकिन इनके बारे में आवश्यक बातें बच्चों को पहले समझा दें। स्कूल के प्रधानाध्यापक और अन्य अध्यापकों को कुछ बच्चे एक्सप्रेस-पत्र या तार द्वारा बधाई भेज सकते हैं। कुछ साफ़, शुद्ध और सुंदर ढंग से लिखे पत्रों पर बच्चों को शाबाशी दें और उनके पत्र, माडल आदि को सामाजिक अध्ययन के कोने में सजाकर रखें।

बच्चों को स्थानीय डाकघर की सैर कराने की योजना अवश्य बनाएँ। टेलिफ़ोन के बारे में समझाने के लिए आप 'टेलिफ़ोन' का एक छोटा 'माडल' कक्षा में लाकर दिखा सकते हैं। दिल्ली जैसे बड़े शहर में टेलिफ़ोन की सुविधा के महत्व को अच्छी तरह समझाएँ और सार्वजनिक ओर अन्य टेलिफ़ोन में अंतर भी स्पष्ट करें। वास्तविक टेलिफोन का नंबर मिलाना सीखना भी बच्चों के लिए बड़ा रुचिकर होगा।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. मनीआर्डर फार्म भरना सीखना।
२. टेलिफोन का नंबर मिलाना सीखना।
३. देश-विदेश के पुराने डाक-टिकट एकत्र करना।
४. हिन्दी में 'तार' लिखना सीखना।

मूल्यांकन

इस पाठ से संबंधित मूल्यांकन में आप मुख्य रूप से नीचे लिखी बातों को ध्यान में रखें :

१. क्या आपके छात्र डाक, तार और टेलिफोन से संबंधित निम्नलिखित शब्दों और चीज़ों के अर्थ और अंतर समझने की योग्यता रखते हैं।
लेटरबक्स, कार्ड, जवाबी-कार्ड, अंतर्देशीय-पत्र, लिफाफा, डाक-टिकट, रजिस्ट्री-पत्र, बुक-पोस्ट, पार्सल, डाकघर, बचत-बैंक, डाक-छटाईघर, छटाईकार, डाकपाल (पोस्ट मास्टर), मनीआर्डर, तुरंत-पत्र, तार, तारघर, चलता-फिरता डाकघर, टेलिफोन, सार्वजनिक टेलिफोन आदि।

२. क्या आपके छात्र नीचे लिखे कार्य कुशलतापूर्वक कर सकते हैं ?
(अ) डाकघर से अपनी ज़रूरत की चीज़ें जैसे कार्ड, लिफाफे, अंतर्देशीय-पत्र, डाक-टिकट आदि खरीदना।
(आ) पत्रों पर ठीक ढंग से पते लिखना और छोटे-छोटे बधाई संदेश आदि के पत्र लिखना।
(इ) लेटरबक्स में पत्र डालना।
(ई) हिन्दी में मनीआर्डर फार्म भरना और 'तार' लिखना।
(उ) टेलिफोन का नंबर मिलाना और बातचीत करना।

१४. दिल्ली में शिक्षा

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

बच्चे पिछले दो-ढाई वर्ष से स्कूल में पढ़ रहे हैं । वे स्कूल में होने वाले खेल-कूद और अन्य सभी कार्य-क्रमों में भाग लेते हैं और अन्य बच्चों को भाग लेते हुए देखते हैं । वे अपने स्कूल के बहुत-से छात्रों और अध्यापकों से अच्छी तरह परिचित हैं । उनकी इसी पृष्ठभूमि को बढ़ावा देकर इस पाठ में बच्चों को दिल्ली के स्कूलों और शिक्षा संबंधी अन्य कार्यक्रमों के बारे में बताया गया है और यह समझाया गया है कि शिक्षकों और शिक्षा संस्थाओं का हमारे जीवन में बड़ा महत्त्व है । इस पाठ को पढ़कर

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. राजधानी के बहुत-से स्कूलों, कालिजों आदि में लाखों बालक-बालिकाएँ शिक्षा पाते हैं ।
२. शिक्षा संस्थाओं द्वारा हम जीवन में काम आनेवाली अनेक बातें और अच्छी आदतें सीखते हैं ।
३. स्कूलों और अन्य शिक्षा संस्थाओं में पढ़ाने वाले अध्यापक हमारे सबसे अच्छे सहायक हैं ।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

दिल्ली क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षा का प्रबंध दिल्ली नगरनिगम या नई दिल्ली नगरपालिका के अधीन है । आप शायद किसी प्राथमिक या माध्यमिक पाठशाला में पढ़ाते होंगे । इस पाठ को पढ़ाते हुए आप सबसे पहले बच्चों से अपने ही स्कूल के बारे में इस प्रकार की बातचीत शुरू करें :

- तुम्हारे स्कूल का क्या नाम है ?
- तुम्हारे स्कूल में कितने अध्यापक हैं ? कितनी कक्षाएँ हैं ?
- तुम स्कूल में कौन-कौन-से विषय पढ़ते हो ?
- पढ़ाई-लिखाई के अतिरिक्त तुम स्कूल में कौन-कौन-सी क्रियाओं में भाग लेते हो ? (बाल-सभा, नाटक, खेल-कूद आदि) ।
- क्या तुम अपनी शिक्षा के लिए कोई फीस देते हो ?
- तुम्हें स्कूल आना क्यों अच्छा लगता है ?
- तुम्हारे स्कूल का प्रबंध कौन चलाता है ?
- इस स्कूल की पढ़ाई समाप्त करने के बाद तुम किस स्कूल में पढ़ोगे ?
- तुम्हारे बड़े भाई या बहिन किस स्कूल या कालिज में पढ़ते हैं ?

इस तरह की बातचीत करते हुए आप बच्चों को समझाएँ कि शिक्षा हमारे लिए बहुत आवश्यक है । दिल्ली में बहुत-से स्कूल, कालिज हैं जिनमें हज़ारों लड़के-लड़कियाँ पढ़ते हैं । स्कूलों और कालिजों में अध्यापक हमें जीवन में काम आनेवाली बहुत-सी बातें सिखाते हैं । इसीलिए हम उनका माता-पिता की तरह आदर करते हैं ।

दिल्ली के अन्य बड़े-बड़े स्कूलों, कालिजों और दिल्ली विश्वविद्यालय आदि के बारे में अधिक विस्तार से बताने की आवश्यकता नहीं है । हाँ, यदि आप और आपके छात्र उत्सुक हों तो अपनी बस्ती या इसके निकट के किसी अन्य प्राथमिक स्कूल या उच्च माध्यमिक स्कूल या कालिज को देखने के लिए पैदल भ्रमण पर

जाएँ। इसके लिए उस स्कूल या कालिज के प्रधानाचार्य के साथ पहले से कार्यक्रम बना लें। यदि आप किसी प्राथमिक स्कूल में ही जा रहे हैं तो अपने छात्रों को उस स्कूल की तीसरी कक्षा के बच्चों से मिलने का अवसर अवश्य दीजिए। बच्चे एक दूसरे से परिचय प्राप्त करें और अपने-अपने स्कूल की पढ़ाई, खेल-कूद और अन्य क्रियाओं के बारे में बातचीत करें। इस प्रकार के भ्रमण और बातचीत से बड़ा लाभ होगा। आपके बच्चे बातचीत द्वारा और देखकर बहुत-सी बातें सीखेंगे और उनमें आत्मविश्वास पैदा होगा।

प्राथमिक स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय से उपाधि प्राप्त करने तक शिक्षा की विभिन्न सीढ़ियों को दर्शाने वाला एक बड़ा चित्र इस पाठ में दिया गया है। आप इसकी सहायता लेकर बच्चों को शिक्षा की सभी अवस्थाओं और संस्थाओं आदि के बारे में समझाएँ।

'खेल के पीरियड' के चित्र पर बच्चों से बातचीत करें और स्कूलों में कराए जाने वाले खेल-कूद, व्यायाम और शारीरिक शिक्षा के महत्त्व को समझाएँ।

इस पाठ में 'बाल-दिवस' के अवसर का भी एक चित्र है। इसमें 'चाचा नेहरू' बच्चों के बीच में दिखाए गए हैं। इस चित्र पर बातचीत करें और बच्चों को 'बाल-दिवस' और 'अध्यापक-दिवस' का महत्त्व समझाएँ। 'बाल-दिवस' पर हम बच्चों को अपनी प्यार और दुलार दिखाते हैं और 'अध्यापक-दिवस' पर हम अपने अध्यापकों के प्रति आदर, श्रद्धा और कृतज्ञता प्रकट करते हैं। आप अपनी कक्षा के कुछ बच्चे 'बाल-दिवस' और 'अध्यापक-दिवस' के कार्यक्रम में भाग लेने के लिए विशेष रूप से तैयार करें।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. अपनी बस्ती या पास-पड़ौस का अन्य स्कूल, कालिज आदि देखने जाना।
२. अध्यापक-दिवस, बाल-दिवस, आदि के अवसर पर किसी कार्यक्रम में भाग लेना।
३. दिल्ली क्षेत्र के शिक्षा विभाग का चार्ट बनाना। इसमें शिक्षा निदेशक, शिक्षा अधिकारी, प्रधानाध्यापक आदि के नाम और पद क्रमवार लिखे जाएँ।

मूल्यांकन

– क्या आपके छात्र अपने स्कूल तथा स्कूल में होने वाली क्रियाओं से संबंधित प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं ?
– क्या आपके छात्र अपने बराबर के बच्चों और बड़े लोगों से बातचीत करने का उचित ढंग सीख गए हैं ?
– क्या आपके छात्र आपका और स्कूल के अन्य अध्यापकों का उचित आदर करते हैं ?

उपरोक्त बातों के आधार पर आप अपने छात्रों की जानकारियों, कुशलताओं और भावनाओं का मूल्यांकन कर सकते हैं।

१५. आग बुझाने का प्रबंध

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

दिल्ली जैसे बड़े शहर में आग-दुर्घटनाओं की संभावना हर समय बनी रहती है। शहर में ऐसी आग-दुर्घटनाओं की रोक-थाम के लिए दिल्ली नगरनिगम का 'आग-सेवा-विभाग' काम करता है। इस पाठ में यही जानकारी दी गई है कि शहर में विभिन्न आग-सेवा केन्द्र हैं और आग-सेवा विभाग एक महत्त्वपूर्ण विभाग है। सूचना मिलने पर आग-सेवा दल (फायर ब्रिगेड) के कर्मचारी तुरंत आग लगने के स्थान पर पहुँच जाते हैं और आग बुझा देते हैं। वे हमारी जान और माल की रक्षा करते हैं। इस पाठ को पढ़कर

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. दिल्ली जैसे बड़े शहर में आग बुझाने के अच्छे प्रबंध की आवश्यकता है।
२. नगरनिगम का आग-सेवा-विभाग शहर में आग-दुर्घटनाओं की रोकथाम करने में हमारी सहायता करता है।
३. आग बुझाने के काम में बड़ी तत्परता की आवश्यकता होती है और जान जोखिम में भी डालनी पड़ती है।
४. शहर में विभिन्न दमकल-केन्द्रों में काम करने वाले सभी लोग हमारे अच्छे सहायक हैं।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

यह पाठ एक छोटी-सी कहानी के रूप में गूँथा गया है। इसके पात्र हैं बच्चों के वही पुराने परिचित नवीन, कमल और उनके दादाजी। आप देखेंगे कि इस कहानी को बड़े साधारण किन्तु नाटकीय ढंग से आरंभ किया गया है। उचित स्थानों पर पाँच अलग-अलग चित्र भी दिए गए हैं। इस पाठ को पढ़ाने के लिए आप भी एक नाटकीय ढंग अपनाएँ।

पाठ पढ़ने के लिए आप बच्चों को पहले से तैयार न करें। दो वाक्यों में पाठ का संक्षिप्त परिचय देते हुए बच्चों से पुस्तकें खुलवाएँ और सहसा ही पाठ को आरंभ कर दें। कहानी को पहले आप स्वयं ही कक्षा में ज़ोर-ज़ोर से पढ़कर सुनाएँ। रुक-रुक कर, आवाज़ बदल कर और हाव-भाव के साथ पढ़ें। इस बात का ध्यान रखें कि बच्चों को बीच-बीच में सभी शब्दों और चित्रों के बारे में सोचने और अध्ययन करने का पूरा अवसर मिलता रहे। इस आयु के बच्चों की कल्पना-शक्ति बहुत तेज होती है। आपके पढ़ाने और व्याख्या करने का प्रभावपूर्ण ढंग पुस्तक के कथानक और चित्रों में अवश्य ही और अधिक जान डाल देगा। कक्षा में वास्तविकता का वातावरण पैदा हो जाएगा और अपनी प्रबल कल्पना-शक्ति के सहारे बच्चे अपने आपको घटना-स्थल पर पहुँचा हुआ पाएँगे। वे अनुभव करेंगे कि वे दर्शकों के बीच में खड़े हैं और आग लगने, बुझाने, चीखने चिल्लाने आदि की सभी घटनाएँ उनकी आँखों के सामने हो रही हैं। यही आपके पढ़ाने की सफलता होगी।

नीचे लिखे कुछ शब्दों के अर्थ बच्चों को अच्छी तरह समझाएँ :

दमकल-केन्द्र (फायर स्टेशन), आग-सूचक खंभा, बम्बे, कैनवस, होज़ पाइप, आग-सेवा-विभाग, आग-दुर्घटना।

ऊपर बताए गए ढंग से पाठ को कक्षा में पढ़ाने के बाद आप इस कहानी के बारे में बच्चों से कुछ बातचीत करें। बहुत से स्कूलों में रेत की बालटियाँ आदि आग बुझाने के लिए रखी रहती हैं। यदि आपके

स्कूल में आग बुझाने से संबंधित कुछ चीज़ें हैं, तो बच्चों से इनके बारे में बातचीत करना न भूलें। उन्हें ऐसी सब चीजों को दिखाएँ और इनका प्रयोग करना भी बताएँ। इसके आलावा नीचे लिखी बातों पर बल दें :

- आग एक बहुत भयानक चीज़ है। हमें सावधानी रखनी चाहिए कि कहीं आग लगने ही न पाए।
- शहर का आग-सेवा-विभाग हमारे लिए बहुत आवश्यक है और इस विभाग के सभी कर्मचारी हमारी और हमारे माल की रक्षा करते हैं।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. समीप के दमकल-केन्द्र के किसी अधिकारी को अपनी कक्षा में बातचीत के लिए बुलाना।

२. अपने समीप के दमकल-केन्द्र में जाकर आग-सेवा दल को आग बुझाने का अभ्यास करते देखना।

३. आग से बचने की सावधानियों और आग बुझाने के नियमों की एक सूची बनाना और स्कूल के भीति-पत्र में लगाना।

मूल्यांकन

मूल्यांकन के संबंध में आप निम्नलिखित बातों पर अपना ध्यान केन्द्रित करें। चाहे इन पर प्रश्न पूछें अथवा क्रियाएँ कराएँ।

- क्या आपके छात्र अपने स्कूल, बस्ती, पास-पड़ौस आदि में उपलब्ध आग संबंधी सेवाओं और आग से बचने के सामान आदि से परिचित हैं ?
- क्या वे आग लगने की छोटी-मोटी घटनाओं पर काबू पाने के उपाय जानते हैं या वे समीप के आग-सेवा-केन्द्र पर टेलिफोन द्वारा अथवा अन्य तरीकों से सूचना दे सकते हैं ? इस संबंध में आप आग से बचने और आग बुझाने के नियमों की सूची बनवाएँ।
- आग लगने की अवस्था में क्या वे अपनी रक्षा के लिए आवश्यक उपाय काम में ला सकते हैं ?
- क्या वे जानते हैं कि उनकी बस्ती में आग-सूचक खंभा कहाँ लगा हुआ है ? क्या वे आवश्यकता पड़ने पर इसका प्रयोग करना जानते हैं ?

खंड ४

दिल्ली के कारखाने और दस्तकारियाँ

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

दिल्ली नगर में छोटे-बड़े सैकड़ों कारखाने हैं। यहाँ पर कुछ ऐसे स्थान भी हैं जहाँ पर तरह-तरह के बहुत-से कारखाने एक ही जगह पर हैं। इनमें तरह-तरह की वस्तुएँ तैयार होती हैं। इस खंड में दिल्ली के

इन कारखानों और औद्योगिक क्षेत्रों की साधारण रूप से चर्चा की गई है। इसके अतिरिक्त दिल्ली की कुछ मुख्य दस्तकारियों के बारे में भी बताया गया है। इस खंड को पढ़कर

(क) बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. कल-कारखानों से समय और मेहनत की बचत होती है और चीज़ें सस्ती मिलती हैं।
२. हमारे दैनिक जीवन में काम आनेवाली बहुत-सी वस्तुएँ कारखानों में बनती हैं।
३. दस्तकारी की वस्तुएँ मशीनों से बनी वस्तुओं से भिन्न होती हैं और इनको बनाने में अधिक समय लगता है।
४. दस्तकारी की वस्तुएं हमारे देश की प्राचीन सभ्यता और कला का नमूना प्रस्तुत करती हैं।

(ख) बच्चे निम्नलिखित कुशलताएँ सीखेंगे :

१. दिल्ली के विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों को दिल्ली क्षेत्र के रेखा-मानचित्र में दिखाना।
२. दस्तकारी की सुंदर वस्तुओं की मदद से सजावट करना।

(ग) बच्चों में निम्नलिखित भाव जाग्रत होंगे :

१. औद्योगिक विकास और इसके फलस्वरूप होने वाले परिवर्तन के प्रति विश्वास और जागरूकता।
२. कारखानों, दस्तकारियों आदि में काम करने वाले सभी लोगों के प्रति आदर और समानता का भाव।
३. अपने देश की दस्तकारी, कला आदि के प्रति आदर और प्रशंसा का भाव।

पढ़ाने के लिए कुछ सामान्य सुझाव

१. इस खंड को आरंभ करने से पहले आप बच्चों को अपने स्कूल के निकट किसी छोटे या बड़े कारखाने या मिल की सैर कराएँ। यदि कोई कारखाना समीप नहीं है तो अपनी बस्ती या गाँव में लगी बिजली, तेल या भाप से चलने वाली कोई मशीन, आटा पीसने की चक्की, ट्यूबवैल, ट्रेक्टर आदि दिखाएँ। इस प्रकार बच्चे मशीनों को प्रत्यक्ष रूप से काम करते हुए देख सकेंगे। उनके इसी ज्ञान को आधार बनाकर आप इस खंड को पढ़ाएँ।
२. कारखानों में किस प्रकार काम होता है ? इस बात को समझाने के लिए कोई फिल्म कक्षा में दिखाने का प्रबंध करें। फिल्म दिखाने के बाद इसके बारे में बच्चों से बातचीत करें और इस खंड का पढ़ाना आरंभ कर दें।
३. दिल्ली में समय-समय पर उद्योग प्रदर्शनी, मेले आदि होते रहते हैं। यदि मौका हो तो इस खंड को आरंभ करने से पहले आप बच्चों को ऐसे ही किसी मेले या नुमाइश की सैर कराएँ। इसी प्रकार दिल्ली में कुछ ऐसे स्थान भी हैं जहाँ पर दस्तकार हाथी दाँत, पीतल, चाँदी, काँसा, मिट्टी आदि की वस्तुएँ बनाते हैं। ऐसे स्थान पर कारीगरों को काम करते हुए देखना बच्चों के लिए बड़ा रोचक होगा और इसके बाद आप सहज ही इस खंड को पढ़ाना आरंभ कर सकेंगे।

---

१६. दिल्ली के कारखाने

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

दिल्ली में बहुत से कारखाने हैं । आजकल यहाँ और अधिक कारखाने और नए-नए उद्योग स्थापित हो रहे हैं । इन कारखानों में तरह-तरह की चीज़ें तैयार होती हैं । इस पाठ में दिल्ली के इन सभी कारखानों और उद्योगों के बारे में बताना ज़रूरी नहीं समझा गया । यहाँ पर केवल कुछ बड़े उद्योगों और कारखानों में बनने वाली कुछ ऐसी अत्यंत साधारण वस्तुओं की चर्चा की गई है जिनको बच्चे प्रतिदिन देखते हैं , प्रयोग करते हैं, खाते-पीते हैं अथवा जिनसे वे खेलते हैं । इस पाठ को पढ़कर

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. हमारे घरों, स्कूलों, सड़कों आदि प्रत्येक स्थान पर मशीनों से बनी वस्तुएँ मिलती हैं ।
२. दिल्ली के छोटे-बड़े कारखानों में बहुत-से व्यक्ति काम करते हैं ।
३. कारखानों में वस्तुएँ बहुत तेज़ी से और अधिक संख्या में तैयार होती हैं और हमें सस्ती मिलती हैं ।
४. कारखानों में बनी चीज़ों का प्रयोग करने से हमारे रहन-सहन के ढंग में परिवर्तन आता है ।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

पहले कहा जा चुका है कि इस पाठ में बच्चों को दिल्ली के सभी कारखानों और उद्योगों के बारे में विस्तार से बताने की आवश्यकता नहीं है । आप यहाँ मशीनों से बनी केवल कुछ ऐसी चीज़ों के बारे में ही बच्चों को बताएँ जो उनके प्रतिदिन के जीवन से निकट संबंध रखती हैं । पुस्तक में पाठ के आरंभ में भी कुछ ऐसी ही साधारण वस्तुओं के नाम दिए गए हैं । बच्चे इनको हर रोज़ देखते हैं और प्रयोग भी करते हैं । इन वस्तुओं के बारे में बातचीत करते हुए आप बच्चों को यह स्पष्ट कीजिए कि :

- ये सभी वस्तुएँ छोटे-बड़े कारखानों में तैयार होती हैं ।
- कारखानों में वस्तुएँ मशीनों से बनाई जाती हैं ।
- कारखानों में बहुत-से लोग काम करते हैं ।
- मशीनें बिजली, तेल या भाप की शक्ति से चलती हैं और मनुष्य की अपेक्षा बहुत तेज़ी से काम करती हैं ।
- मशीनों से समय और मेहनत की बचत होती है और अधिक वस्तुएँ शीघ्रता से तैयार हो जाती हैं ।
- कारखानों से बनी अगणित वस्तुएँ बाज़ारों में सस्ती बिकती हैं और दूर व पास के अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचती हैं ।

यहाँ यह निष्कर्ष निकालना आवश्यक है कि तरह-तरह की वस्तुओं के अधिक उत्पादन से लोगों के रहने-सहने के ढंग में सुधार आता है और उनका रहन-सहन का स्तर ऊँचा होता है । किसी कारखाने की सैर से उपरोक्त बातें आसानी से स्पष्ट हो सकेंगी । यदि संभव हो तो आप कोई कारखाना बच्चों को अवश्य दिखाइए ।

कक्षा २ में बच्चों ने 'मैं हूँ कपास' नाम की एक कविता पढ़ी है और वे जुलाहे के बारे में भी जानते हैं । आप उन्हें बताएँ कि कारखानों में मशीनों की सहायता से किस प्रकार रुई से बारीक सूत काता जाता है । फिर मशीनों से ही कपड़ा बुना जाता है । पुस्तक में दिए गए कपड़ा मिल के चित्र पर बातचीत करें और बताएँ कि दिल्ली में ऐसी कई बड़ी-बड़ी 'कपड़ा मिलें' हैं । कपड़ा-उद्योग दिल्ली का बहुत बड़ा उद्योग है ।

पाठ पढ़ाते हुए आपकी कक्षा में कुछ अन्य प्रसंग आ जाएँ तो आप इन पर अवश्य बातचीत कीजिए, जैसे :

– मशीनें (या मशीनों के पुर्ज़े) बनाने के लिए भी मशीनों का प्रयोग होता है ।

– कुछ लोग नई-नई मशीनें बनाने की खोज करते हैं ।

– मशीनों से दुर्घटनाएँ भी हो जाती हैं ।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. दिल्ली के कुछ मुख्य औद्योगिक क्षेत्रों की सूची बनाना और इनको रेखा-मानचित्र में भरना । ओखला, नजफ़गढ, रामपुरा, मायापुरी, आज़ादपुर, नरायना, वज़ीरपुरा, झिलमिल आदि दिल्ली के कुछ मुख्य औद्योगिक क्षेत्र हैं ।

२. यदि आपकी कक्षा के किसी छात्र के पिता, भाई आदि किसी कारखाने में काम करते हैं तो उनमें से किसी एक को कक्षा में बुलाएँ । वह बच्चों को कारखाने में बननेवाली वस्तुओं और मशीनों आदि के बारे में कुछ बताए ।

मूल्यांकन

किसी कारखाने, औद्योगिक क्षेत्र या मशीन आदि को देखते हुए बच्चे किस प्रकार चीज़ों आदि का सूक्ष्म निरीक्षण करते हैं ? इस बात पर निगाह रखें । बाद में, कक्षा में आकर कारखाने में तैयार होने वाली चीज़ों, मशीनों और काम करनेवाले लोगों के बारे में कुछ प्रश्न करें । कुछ बच्चे बारी–बारी अपने अनुभवों को बयान करें । इस प्रकार बच्चों के अनुभवों की जाँच भी होगी और उनका ज्ञान भी पक्का होगा । इसके अतिरिक्त पाठ के अंत में दिए गए प्रश्नों को अच्छी तरह कराएँ ।

---

१७. हमारी दस्तकारियाँ

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

दिल्ली अपनी दस्तकारियों के लिए पुराने समय से ही प्रसिद्ध है । आज भी यहाँ के दस्तकार तरह-तरह की सुंदर वस्तुएँ बनाते हैं । वर्तमान मशीनी युग में उद्योगों का विकास होने के कारण दस्तकारियों को भारी क्षति पहुँची है, लेकिन दिल्ली में आज भी दस्तकारी की बहुत-सी वस्तुएं बनती हैं । इस पाठ में दिल्ली की केवल कुछ मुख्य दस्तकारियों पर ही प्रकाश डाला गया है । इस पाठ को पढ़कर

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. दस्तकारियों की कुछ वस्तुओं के लिए दिल्ली बहुत प्रसिद्ध है ।
२. दस्तकारी की सुंदर वस्तुएँ बनाने में दस्तकार को काफी समय लगता है ।
३. दस्तकारी की वस्तुएँ मशीन से बनी वस्तुओं से भिन्न होती हैं । वे आकर्षक और मंहगी होती हैं ।
४. हमारी दस्तकारियाँ हमारे देश की प्राचीन सभ्यता और कला का नमूना प्रस्तुत करती हैं ।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

इस पाठ को अच्छी तरह पढ़ाने के लिए यह बहुत ज़रूरी है कि बच्चे दस्तकारी की वस्तुओं और मशीन से बनी वस्तुओं का अंतर भली-भाँति जान जाएं । मशीनों से वस्तुएँ किस प्रकार तैयार होती हैं, यह वे पिछले पाठ में समझ चुके हैं । अब आप बच्चों को प्रत्यक्ष रूप से यह अनुभव कराएँ कि दस्तकारी की वस्तुएँ किस प्रकार बनती हैं । अपने पास-पड़ोस में काम करने वाले किसी दस्तकार को काम करते हुए देखकर शीघ्र ही वे निम्नलिखित बातें समझ जाएँगे :

- दस्तकारी की वस्तुएँ हाथ से बनाई जाती हैं ।
- हाथ से वस्तुएँ बनाने में बड़ी मेहनत, धीरज और लगन से काम करना पड़ता है ।
- दस्तकार अपनी इच्छा से प्रत्येक वस्तु की बनावट में हेर-फेर कर सकता है । मशीन ऐसा नहीं कर सकती ।
- दस्तकार को अपनी सुंदर वस्तुएँ बनाने में काफ़ी समय लगता है ।

इन सभी बातों को स्पष्ट कराते हुए आप बच्चों को दस्तकारी की सुंदर वस्तुओं के कुछ नमूने, चित्र आदि दिखाएँ । आप देखेंगे कि इस पाठ में दस्तकारी की अधिकतर उन वस्तुओं को चुना गया है जिनके लिए दिल्ली पुरानें समय से प्रसिद्ध है, जैसे हाथीदाँत का काम, सोने-चाँदी के गहने बनाने का काम, कढ़ाई, बुनाई और कशीदाकारी, मिट्टी और धातुओं से रंग-बिरंगे खिलौने, मूर्तियाँ, प्याले, तश्तरियाँ, फूलदान आदि सजावट की अनेक चीज़ें बनाने का काम । इस पाठ को पढ़ाते हुए आप भी दस्तकारी की ऐसी वस्तुओं पर ही अधिक बल दें ।

दिल्ली में दस्तकारी की वस्तुओं के बहुत-से इम्पोरियम हैं। यदि संभव हो तो आप बच्चों को ऐसे ही किसी इम्पोरियम या प्रदर्शनों में ले जाएँ । वहाँ वे दस्तकारी की अनेक वस्तुएँ सुंदर ढंग से सजी हुई देख सकेंगे ।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. दस्तकारी की सुंदर वस्तुओं के चित्र एकत्र करना ।
२. अपने माता-पिता आदि के साथ दस्तकारी की वस्तुओं की कोई स्थानीय दुकान, शिल्पकला केन्द्र अथवा प्रदर्शनी आदि देखने जाना ।
३. कक्षा में अथवा घर पर कढ़ाई, बुनाई का काम या मिट्टी और कागज़ की वस्तुएँ, जैसे खिलौने आदि बनाने का काम करना ।

मूल्यांकन

इस पाठ से संबंधित बच्चों की जानकारी की जाँच करने के लिए आप मुख्य रूप से पाठ के अंत में दिए गए प्रश्नों पर ही बल दें । इसके अतिरिक्त आप अगले पृष्ठ पर दिए गए कुछ प्रश्न बच्चों से पूछें :

- दस्तकार को अपनी वस्तुएँ बनाने में अधिक समय क्यों लगता है ?
- क्या दस्तकार अपनी बनाई हुई एक ही तरह की वस्तुओं में हेर-फेर कर सकता है ? मशीन ऐसा क्यों नहीं कर सकती ?

स्कूल में जब कभी कोई प्रदर्शनी आदि लगाने का अवसर आए तो बच्चों से काम कराएँ। वे ही सब चीज़ों को सुंदर ढंग से सजाएँ। आप इस संबंध में ज़रूरी आदेश देकर उनका मार्गदर्शन करें।

खंड ५

दिल्ली क्षेत्र के गाँव

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

दिल्ली क्षेत्र के एक बड़े भाग में दिल्ली शहर फैला हुआ है। शहर के लोगों के जीवन के बारे में बच्चे सभी बातें पिछले पाठों में पढ़ चुके हैं। दिल्ली क्षेत्र में बहुत-से गाँव भी हैं। गाँवों का जीवन शहर के जीवन से कुछ भिन्न है लेकिन शहर और गाँवों का परस्पर घनिष्ठ संबंध है। दिल्ली क्षेत्र के गाँवों में तो आजकल शहर की सी सभी सुविधाएँ भी सुलभ होती जा रही हैं। ग्राम-पंचायतों और सहकारी संस्थाओं के द्वारा सभी गाँव उन्नति कर रहे हैं। इस खंड में दिल्ली क्षेत्र के उन्नति करते हुए गाँवों का विवरण दिया गया है। इस खंड को पढ़कर

(क) बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. दिल्ली क्षेत्र के ग्रामवासियों का जीवन, शहरवालों के जीवन से कुछ भिन्न है, लेकिन कई बातों के कारण बदल रहा है।
२. पंचायतें गाँव वालों को उनकी समस्याओं को सुलझाने और परस्पर मेल-मिलाप से रहने में सहायता देती हैं।
३. दिल्ली क्षेत्र के गाँवों के रहनेवाले और दिल्ली शहर के लोग अपनी बहुत-सी आवश्यकताओं के लिए एक-दूसरे पर निर्भर हैं।
४. दिल्ली क्षेत्र के गाँवों पर शहरी जीवन की छाप पड़ रही है।

(ख) बच्चे निम्नलिखित कुशलताएँ सीख लेंगे :

१. पाठों पर आधारित अभिनय-वार्तालाप, भाषण आदि में भाग लेने की कुशलता तथा ध्यानपूर्वक देखने व सुनने का अभ्यास।

२. गाँव के भ्रमण आदि के बीच तथा कक्षा में आमंत्रित ग्राम-पंचायत के सदस्य आदि के साथ शिष्ट व्यवहार करना, उनका स्वागत करना और उन्हें धन्यवाद देना ।

३. 'कक्षा-पंचायत' की बैठक को सुचारू रूप से चलाना तथा उसे चलाने में सहयोग देना ।

(ग) **बच्चों में निम्नलिखित भाव जाग्रत होंगे :**

१. गाँवों के रहनेवालों के प्रति प्रेम और समानता का भाव ।

२. अपने उत्तरदायित्व को ईमानदारी से निभाने का भाव ।

३. उत्तरदायित्वपूर्ण नेतृत्व करने का भाव ।

४. दूसरे के विचारों और हितों का आदर करने का भाव ।

पढ़ाने के लिए कुछ सामान्य सुझाव

१. यदि आप दिल्ली क्षेत्र के किसी गाँव के स्कूल में पढ़ाते हैं तो इस खंड को आरंभ करने में आपको बड़ी सुविधा रहेगी । अपने गाँव के बारे में बातचीत करते हुए आप उस खंड के दोनों पाठों को सहज भाव से पढ़ा जाएँगे ।

२. यदि आप शहर की किसी ऐसी बस्ती में पढ़ाते हैं जिसके निकट में ही कोई गाँव भी है, तो इस खंड को पढ़ाने से पहले आप अपने पड़ोसी गाँव के भ्रमण की योजना बनाएँ । इस तरह आप बच्चों को गाँव के लोगों का रहन-सहन, मकान, पहनावा, भोजन, भाषा आदि के अध्ययन का अवसर देंगे । यदि हो सके तो भ्रमण का कार्यक्रम ऐसे दिन पर बनाएँ, जिस दिन 'ग्राम-पंचायत' की बैठक होनेवाली हो ।

३. यदि आपके स्कूल से गाँव बहुत दूर है और गाँव का भ्रमण करना आपके लिए संभव नहीं है, तो आप दिल्ली क्षेत्र के ग्रामीण जीवन से संबंधित कुछ चित्र, चार्ट आदि एकत्र करें अथवा बनाएँ और इन्हीं के द्वारा अपने पाठों को विकसित करें ।

---

१८. दिल्ली के एक गाँव की सैर

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

दिल्ली शहर के रहनेवालों के जीवन के बारे में बच्चे पिछले पाठों में विस्तारपूर्वक पढ़ चुके हैं । इस पाठ में दिल्ली क्षेत्र के एक काल्पनिक गाँव की झाँकी दिखाते हुए गाँववालों के जीवन, रहन-सहन, पहनावा, खान-पान, भाषा, धर्म, रीति-रिवाज, काम-धंधे आदि के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है । इस पाठ को पढ़कर

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. गाँवों में रहनेवालों का मुख्य धंधा खेती-बाड़ी है ।

२. दिल्ली क्षेत्र के गाँववाले बहुत-सी चीज़ें दिल्ली शहर को भेजते हैं और अपनी ज़रूरत की बहुत-सी चीज़ें दिल्ली शहर से मंगवाते हैं ।

३. दिल्ली क्षेत्र के गाँववालों का जीवन धीरे-धीरे बदल रहा है ।

४. गाँवों की उन्नति मिलजुल कर रहने और काम करने से होती है ।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

इस पाठ में बच्चों को दिल्ली नगर के एक काल्पनिक गाँव की सैर पर ले जाया गया है । पाठ को कक्षा में पढ़ाते हुए आप और आपके छात्र अनुभव करेंगे कि दिल्ली क्षेत्र के गाँववालों के रहन-सहन, खान-पान, पहनावा, काम-धंधे, भाषा, रीति-रिवाज, त्योहार आदि की अलग-अलग झलकियाँ आपकी आँखों के सामने आ रही हैं । पाठ्य-वस्तु पर आधारित आप कुछ अन्य चित्र प्राप्त करें अथवा स्वयं कुछ ऐसे चित्र, चार्ट आदि बनाएँ, जो इस कहानी से मेल खाते हों । यहाँ आप ग्राम जीवन से संबंधित कक्षा १ और २ के पोस्टरों की सहायता भी ले सकते हैं । यदि आप प्रत्येक अनुछेद के लिए अलग-अलग चित्र या चार्ट का प्रयोग करें तो और भी अच्छा होगा ।

ऊपर सुझाए गए चित्रों का प्रयोग करते हुए आप इस पाठ को कुछ बच्चों से कक्षा में बारी-बारी पढ़वाएँ । इसके बाद केवल चित्रों के आधार पर पाठ की पुनरावृत्ति करें । प्रत्येक चित्र और चार्ट पर अधिक से अधिक बातचीत और प्रश्न करें ।

यदि आप गाँव के स्कूल में पढ़ाते हैं तो कक्षा में बच्चों से उनके पिताओं के काम-धंधों के बारे में बातचीत अवश्य करें । इस प्रकार आपके बच्चे सहज ही इस निष्कर्ष तक पहुँच सकेंगे कि गाँवों के अधिकांश लोग खेती-बाड़ी करते हैं । इसी प्रकार आप बच्चों से उनके खेतों में पैदा होने वाली फसलों की चर्चा करें और यह समझाएँ कि गाँवों में पैदा होने वाली बहुत-सी वस्तुएँ शहर को भेजी जाती हैं । यह बात वे पहले ही जानते हैं कि शहर के कारखानों आदि में बनी बहुत-सी वस्तुएँ गाँवों में आती हैं । इस तरह आप गाँवों और शहर के परस्पर घनिष्ठ संबंधों के बारे में बच्चों की उचित धारणा बनाने में सफल होंगे । अपने वार्तालाप को रोचक बनाने के लिए बीच-बीच में चित्रों और चार्टों का प्रयोग अवश्य करते जाएँ ।

इस पाठ को पढ़ाते हुए आप दिल्ली के गाँवों के बदलते हुए जीवन और खेती के नए वैज्ञानिक तरीकों पर अधिक बल दें । गाँवों में आजकल बिजली पहुँच रही है । खेती के लिए ट्रैक्टरों का प्रयोग होता है । सिंचाई के लिए नलकूप लगाए गए हैं । गाँव-गाँव में लड़के-लड़कियों के स्कूल हैं । अधिकतर गाँव पक्की सड़क द्वारा दिल्ली शहर से मिले हुए हैं । गाँवों के बहुत-से लोग प्रतिदिन शहर में काम करने जाते हैं । इधर दूसरी ओर दिल्ली शहर भी बड़ा होता जा रहा है । बहुत-से गाँव तो अब शहर के बीच में ही आ गए हैं । इन गाँवों के जीवन में शहर की सी बहुत-सी बातें आ गई हैं । ये सभी बातें दिल्ली क्षेत्र के गाँवों की उन्नति की ओर संकेत करती हैं ।

उपरोक्त बातें बच्चों को अच्छी तरह समझाने के लिए चित्रों की सहायता लें । यदि संभव हो तो गाँव के किसी अच्छे किसान को बातचीत के लिए कक्षा में बुलाएँ ।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. दिल्ली क्षेत्र के ग्रामीण जीवन से संबंधित तरह-तरह के चित्र एकत्र करना।

२. बच्चों की कुछ टोलियों द्वारा 'गाँव' और 'शहर' का वार्तालाप तैयार करना और कक्षा में सुनाना।

३. शहर से गाँव आनेवाली और गाँव से शहर जानेवाली वस्तुओं की सूचियाँ बनाना।

मूल्यांकन

इस खंड के दोनों पाठों को पूरी तरह पढ़ाने के बाद आप अपने छात्रों की जानकारियों की जाँच करने के लिए उनसे निम्नलिखित चार्ट बनवाएँ और उचित खानों में सही निशान लगवाएँ :

क्र० सं०	वस्तुओं, संस्थाओं तथा प्राप्त सुविधाओं के नाम	दिल्ली शहर में है	तुम्हारे गाँव में है	गाँव और शहर दोनों में है	केवल कुछ गाँवों में है
१.	आग बुझाने का केन्द्र				
२.	अस्पताल				
३.	बिजली				
४.	डाकघर				
५.	ग्राम पंचायत				
६.	स्कूल				
७.	पानी के नल				
८.	नलकूप				
९.	दिल्ली परिवहन की बसें				
१०.	ट्रेक्टर से खेती				
११.	कारखाने				
१२.	पक्की सड़कें				

१९. ग्राम-पंचायतें

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

गाँववाले अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने और दैनिक समस्याओं को सुलझाने के लिए ग्राम–पंचायतों का चुनाव करते हैं। दिल्ली क्षेत्र के बहुत-से गाँवों में ऐसी ग्राम-पंचायतें हैं। ये पंचायतें गाँववालों के छोटे-मोटे आपसी झगड़ों का निपटारा करती हैं और ग्रामीण जनता की भलाई और उन्नति के लिए कार्य करती हैं। इस पाठ में मुख्य रूप से ग्राम-पंचायतों और पंचायती राज के द्वारा उन्नति करते दिल्ली के गाँवों की चर्चा है। इस पाठ को पढ़कर

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए दिल्ली क्षेत्र के गाँवों के लोग ग्राम-पंचायतों का चुनाव करते हैं।

२. ग्राम-पंचायतें गाँवों की भलाई के लिए काम करती हैं और गाँववालों के आपसी झगड़ों को निपटाकर-मेल-मिलाप और सद्भाव पैदा करने में सहायता देती हैं।

३. हम ग्राम-पंचायतों को सभी कामों में सहयोग और सहायता देते हैं।

४. पंचायती राज के द्वारा हमारे गाँव उन्नति कर रहे हैं।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

बच्चे खंड ३ में दिल्ली नगरनिगम और इसके विभिन्न कार्यों के बारे में विस्तार से पढ़ चुके हैं। वे जानते हैं कि शहरवाले अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए नगरनिगम या नगरपालिका का चुनाव करते हैं। इसी पूर्व-ज्ञान के आधार पर आप बच्चों को समझाएँ कि गाँव के लोग अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ग्राम-पंचायत का चुनाव करते हैं। यहाँ आप बच्चों के सामने एक समस्या प्रस्तुत करें और इसके समाधान के बारे में बच्चों को सोचने और विचार प्रकट करने का अवसर दें।

– किसी गाँव के रहनेवालों की क्या-क्या ज़रूरतें और समस्याएँ हो सकती हैं ?

– ग्राम-पंचायतें इन ज़रूरतों को पूरा करने तथा समस्याओं को हल करने के लिए क्या कर सकती हैं ?

पाठ को और भी रोचक बनाने के लिए आप एक और तरीका अपना सकते हैं। कक्षा के बच्चे पाँच सदस्यों की अपनी एक पंचायत का चुनाव करें। चुनाव में मतदान करने की विधि हमारे देश में प्रचलित 'गुप्त मतदान' से मिलती-जुलती होनी चाहिए। चुनाव के बाद सरपंच और अन्य सभी पंच बच्चों की भलाई के लिए काम करने की शपथ साधारण रूप से लें। इसके बाद एक दिन सभी बच्चे अपनी-अपनी ज़रूरतें और समस्याएँ 'कक्षा पंचायत' के सामने रखें। एक सदस्य सभी शिकायतों को नोट करे। फिर पंचायत की खुली बैठक में इन समस्याओं पर विचार किया जाए और उनका हल ढूंढा जाए। यह खेल बच्चों के लिए बहुत ही रोचक, लाभप्रद और अनुभवपूर्ण होगा। बच्चे अपने आपको कुछ होने, सोचने, करने और सीखने की सच्ची स्थिति में पाएँगे। इसके अतिरिक्त आपके बच्चों में नेतृत्व करने की क्षमता पैदा होगी और वे भारतीय लोकतंत्र के ज़िम्मेदार नागरिक बनने का उचित प्रशिक्षण भी प्राप्त करेंगे।

यदि आपको किसी गाँव या गाँव के पड़ोस के स्कूल में पढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त है, तो आप एक दिन अपनी कक्षा के छात्रों को ग्राम-पंचायत की बैठक में अवश्य ले जाएँ। इसके लिए आप ग्राम-पंचायत के सरपंच या सैक्रेटरी आदि से मिलकर कार्यक्रम बना लें और पंचायत की उस दिन की बैठक में होनेवाली कार्यवाही के बारे में कुछ बातें बच्चों को पहले से ही बता दें। बैठक समाप्त होने के बाद बच्चे सरपंच और अन्य पंचों से पंचायत के कामों, आय के साधनों तथा गाँव की भलाई की चालू योजनाओं के बारे में प्रश्न पूछें।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. कक्षा में 'ग्राम-पंचायत' की बैठक का अभिनय करना। गाँव के लोगों के कपड़ों तथा अन्य बातों की जानकारी के लिए पुस्तक में दिए गए चित्रों से सहायता लें।

२. ग्राम-पंचायत के किसी पंच, सरपंच, ग्रामसेवक अथवा पंचायत अधिकारी को कक्षा में बातचीत के लिए बुलाना।

३. धरती पर एक 'आदर्श गाँव' का माडल सामूहिक रूप से बनाना।

मूल्यांकन

पंचायती राज हमारे लोकतंत्र की एक मजबूत और महत्त्वपूण कड़ी है और हमारे देश के ग्रामीण जीवन में ग्राम-पंचायतों का बड़ा महत्त्व है। अतः केवल इस पाठ में दिए गए ज्ञान के आधार पर बच्चों की जाँच करना काफी नहीं होगा। इस पाठ को पढ़ाने के लिए 'पंचायत का अभिनय' तथा 'कक्षा पंचायत' का चुनाव आदि करने के सुझाव दिए गए हैं। आप अधिक से अधिक बच्चों को इनमें अधिक से अधिक भाग लेने को उकसाएँ और उन्हें लोकतंत्र का व्यवहारिक प्रशिक्षण दें। साथ ही साथ उनकी विभिन्न उपलब्धियों की जाँच करते रहें। नीचे लिखे कुछ प्रश्नों से छात्रों की कुशलताओं, जानकारियों और भावनाओं का मूल्यांकन करने में आपको कुछ सहायता मिलेगी :

- क्या आपके छात्र अपने उत्तरदायित्व को ठीक तरह से निभाते हैं ?
- क्या आपके छात्र दूसरों के विचारों और हितों का आदर करते हैं ?
- क्या आपके छात्र स्कूल में और स्कूल के बाहर उचित और शिष्टतापूर्ण व्यवहार करते हैं ?
- क्या आपके छात्रों में नेतृत्व करने के अच्छे गुण हैं ?
- क्या आपके छात्र 'कक्षा-पंचायत' आदि की बठक सुचारु रूप से चलाते हैं, या इसमें सहयोग देते हैं ?

खंड ६

दिल्ली के पड़ोसी राज्य

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

उत्तर प्रदेश, हरियाना, पंजाब और राजस्थान दिल्ली क्षेत्र के पड़ोसी राज्य हैं। उत्तर प्रदेश और हरियाना की तो सीमाएँ दिल्ली क्षेत्र को छूती हैं। अब तक के पाठों में बच्चे दिल्ली क्षेत्र के गाँवों और दिल्ली शहर के बारे में विस्तार से पढ़ चुके हैं। इस खंड के दो पाठों में वे अपने दो पड़ोसी राज्य हरियाना और उत्तर प्रदेश की भौगोलिक स्थिति, लोगों का जीवन, मुख्य उपज, कारखाने और दिल्ली के साथ इन राज्यों के घनिष्ठ पारस्परिक संबंधों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। इस खंड को पढ़कर

(क) बच्चें निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. दिल्ली क्षेत्र की तरह हरियाना और उत्तर प्रदेश भी हमारे विशाल देश भारत के अंग हैं।
२. हरियाना और उत्तर प्रदेश के लोगों का जीवन यहाँ की भूमि की अलग-अलग प्राकृतिक बनावट, जलवायु, वर्षा आदि से प्रभावित होता है।
३. पड़ोसी राज्य हरियाना और उत्तर प्रदेश के लोगों का जीवन दिल्ली क्षेत्र के लोगों के जीवन से बहुत कुछ मिलता-जुलता है।
४. दिल्ली क्षेत्र तथा पड़ोसी राज्य हरियाना और उत्तर प्रदेश का आपस में घनिष्ठ संबंध है।

(ख) बच्चे निम्नलिखित कुशलताएँ सीखेंगे :

१. उत्तर प्रदेश और हरियाना के मानचित्रों को पहचानना।
२. उत्तर प्रदेश और हरियाना के मानचित्र में निम्नलिखित की स्थिति पहचानना और भरना : हरिद्वार, कानपुर, मथुरा, लखनऊ, फैज़ाबाद, वाराणसी, इलाहाबाद, आगरा, हिमालय पर्वत-माला, गंगा, यमुना, गोमती, चंडीगढ़, अंबाला, कुरुक्षेत्र, फरीदाबाद, आदि।
३. मानचित्र में चार मुख्य दिशाओं का ज्ञान।
४. दो या अधिक राज्यों के लोगों के जीवन की तुलना करना और उससे निष्कर्ष निकालना।

(ग) बच्चों में निम्नलिखित भाव जाग्रत होंगे :

१. भारत के सभी राज्यों के रहनेवालों तथा उनके रहन-सहन के ढंगों के प्रति सम्मान, प्रेम और भाईचारे की भावना।
२. विभिन्न राज्यों के लोगों के जीवन में विभिन्नताओं के होते हुए भी राष्ट्रीय एकता और गौरव की भावना।

पढ़ाने के लिए कुछ सामान्य सुझाव

१. राजधानी में गणतंत्र दिवस पर भारत के विभिन्न राज्यों की झाँकियाँ निकाली जाती हैं। इन झाँकियों के चित्र कई दिनों तक पत्र-पत्रिकाओं में छपते रहते हैं। आप बच्चों से उत्तर प्रदेश और हरियाना की झाँकियों के चित्र विशेष रूप से एकत्र कराएँ। इन दोनों राज्यों से संबंधित और पुस्तक में दिए गए चित्रों से मिलते-जुलते कुछ बड़े-बड़े चित्र भी प्राप्त करें। इन सभी चित्रों

और दोनों राज्यों के मानचित्रों की सहायता से आप इस खंड को पढ़ाएँ । हमारा अनुमान है कि पुस्तक के क्रमानुसार आप इस खंड को फरवरी मास से पहले नहीं पढ़ा पाएँगे । अत: २६ जनवरी के साथ इस खंड का समन्वय अत्यंत स्वाभाविक होगा ।

---

२०. उत्तर प्रदेश

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

दिल्ली क्षेत्र के पूर्व में स्थित उत्तर प्रदेश हमारा एक सीमावर्ती राज्य है । यह एक बहुत बड़ा राज्य है । यहाँ के लोगों का जीवन दिल्ली क्षेत्र के लोगों के जीवन से बहुत कुछ मिलता-जुलता है । इस पाठ में उत्तर प्रदेश की भूमि की बनावट, नदियाँ, जलवायु, उपज, कारखाने, प्रसिद्ध नगर और लोगों के जीवन आदि के विषय में संक्षेप में बताया गया है । इस पाठ को पढ़कर

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. उत्तर प्रदेश दिल्ली क्षेत्र का एक पड़ोसी राज्य है और हमारे विशाल देश भारत का एक अंग है ।
२. उत्तर प्रदेश के लोगों का जीवन दिल्ली क्षेत्र के लोगों के जीवन से बहुत कुछ मिलता-जुलता है ।
३. उत्तर प्रदेश और दिल्ली क्षेत्र के लोग अपनी बहुत-सी आवश्यकताओं के लिए एक-दूसरे पर निर्भर हैं ।
४. उत्तर प्रदेश में सभी धर्मों, वर्गों और भाषाओं के लोग आपस में मिलजुलकर रहते हैं ।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

आपके छात्र अब तक दिल्ली क्षेत्र के बारे में सभी मुख्य-मुख्य बातें विस्तार से पढ़ चुके हैं । वे दिल्ली क्षेत्र के पड़ोसी राज्य उत्तर प्रदेश और हरियाना के नाम भी जानते हैं । इस पाठ को पढ़ाते हुए आप उत्तर प्रदेश के मानचित्र को प्रयोग में अवश्य लाएँ । उत्तर प्रदेश दिल्ली क्षेत्र के पूर्व में है । इस बात को समझाने से पहले आप बच्चों को मानचित्र में दिशाएँ मालूम करना बताएँ, क्योंकि अभी तक उन्हें मानचित्र में दिशाओं का विधिवत् ज्ञान नहीं है । इसके लिए आप दिल्ली क्षेत्र और उत्तर प्रदेश के दो बड़े मानचित्र काम में लाएँ । इन्हें दीवार पर लटका कर आप मानचित्रों में दिशाएँ मालूम करना अच्छी तरह समझा सकेंगे । इसी ज्ञान के आधार पर हिमालय पर्वत और गंगा, यमुना, गोमती, चंबल आदि मुख्य नदियों की स्थिति भी स्पष्ट करें और यह समझाएँ कि ये नदियाँ किस दिशा से किस दिशा की ओर बहती हैं ।

उत्तर प्रदेश के लोगों के रहन-सहन, पहनावा, मुख्य काम-धंधे और खेती-बाड़ी व सिंचाई के तरीकों के बारे में समझाने के लिए कुछ अच्छे चित्रों या चार्टों का प्रयोग करें । पुस्तक में उत्तर प्रदेश के खेतों के दृश्य का एक चित्र है जिसमें गन्ने की फसल और गुड़ बनाते हुए किसान दिखाए गए हैं । इस चित्र पर बातचीत करते हुए आप राज्य की उपज आदि के बारे में समझाएँ ।

मुख्य नदियों के किनारे मथुरा, आगरा, लखनऊ, इलाहाबाद, कानपुर, हरिद्वार, वाराणसी आदि राज्य के मुख्य औद्योगिक और प्रसिद्ध नगर स्थित हैं । पाठ में इन सभी स्थानों का बड़ा रोचक वर्णन दिया

गया है । इलाहाबाद के प्रसिद्ध कुंभ मेले और लखनऊ के एक पुराने इमामबाड़े के दो चित्र भी दिए गए हैं। पाठ को अधिक रोचक बनाने के लिए आप कुछ अन्य चित्रों का प्रयोग भी करें, जैसे मथुरा, वृंदावन, हरिद्वार, वाराणसी आदि के मेलों, मंदिरों के चित्र और आगरे के ताजमहल और इलाहाबाद के आनंद-भवन के चित्र।

दिल्ली क्षेत्र और उत्तर प्रदेश के लोगों के रहन-सहन, पहनावा, खान-पान, भाषा, काम-धंधे, उपज, कारखाने, जन-संख्या क्षेत्रफल आदि की तुलना करना बच्चों के लिए बहुत रोचक होगा । दिल्ली क्षेत्र के बारे में बच्चे पहले ही बहुत-सी बातें जानते हैं । दोनों राज्यों में पाई जाने वाली एक जैसी बातों और भिन्नताओं को वे अच्छी तरह समझ सकेंगे । अतः आप इस पाठ को तुलनात्मक दृष्टि से पढ़ाएँ, लेकिन दोनों राज्यों के लोगों के जीवन की विभिन्न बातों की तुलना करते या कराते हुए बच्चों में किसी भी राज्य या इसके लोगों के प्रति हीनता का भाव या हास्यास्पद भाव पैदा न होने पाए ।

पड़ोसी राज्य होने के नाते दिल्ली क्षेत्र और उत्तर प्रदेश के घनिष्ठ पारस्परिक संबंधों को यथोचित प्रकाश में लाएँ और देश की एकता पर बल दें ।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. उत्तर प्रदेश के रेखा मानचित्र में कुछ प्रसिद्ध स्थान, नदियाँ आदि भरना ।

२. उत्तर प्रदेश के कुछ लोक गीत सीखना और सामूहिक रूप से कक्षा में या स्कूल में किसी अवसर पर प्रस्तुत करना ।

३. उत्तर प्रदेश के रहनेवाले किसी बड़ी कक्षा के छात्र, अध्यापक अथवा अभिभावक को कक्षा में बातचीत के लिए बुलाना ।

मूल्यांकन

पाठ के अंत में दिए गए प्रश्नों के साथ-साथ आप बच्चों की निम्नलिखित जानकारियों, कुशलताओं आदि की जाँच कीजिए :

१. मानचित्र में दिशाओं का ज्ञान ।

२. उत्तर प्रदेश के रेखा मानचित्र में हिमालय पर्वत, मुख्य नदियाँ तथा उनके किनारे पर स्थित कुछ प्रसिद्ध नगरों को भरने की कुशलता ।

---

२१. हरियाना

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

हरियाना दिल्ली क्षेत्र का निकटतम पड़ोसी राज्य है । इसकी सीमाएँ तीन ओर से दिल्ली क्षेत्र से मिलती हैं । अतः दिल्ली क्षेत्र से इस राज्य का घनिष्ठ संबंध है । इस पाठ में हरियाना के लोगों के जीवन, यहाँ की उपज, कारखानों आदि के बारे में संक्षिप्त ब्यौरा दिया गया है । इस पाठ को पढ़कर

बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. दिल्ली क्षेत्र का पड़ोसी राज्य हरियाना हमारे विशाल देश भारत का एक अंग है ।

२. हरियाना के लोगों का जीवन दिल्ली क्षेत्र के लोगों के जीवन से बहुत कुछ मिलता-जुलता है ।

३. हरियाना और दिल्ली क्षेत्र के लोग अपनी बहुत-सी आवश्यकताओं के लिए एक दूसरे पर निर्भर हैं ।

४. हरियाना में सभी धर्मों, वर्गों और भाषाओं के लोग मिल-जुलकर रहते हैं ।

पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

उत्तर प्रदेश की तरह हरियाना के पाठ को पढ़ाते हुए भी आप इस राज्य के मानचित्र का प्रयोग करें । मानचित्र में दिशाएँ मालूम करना बच्चों ने पिछले पाठ में सीखा है । इस पाठ में आप बच्चों के इस ज्ञान का प्रयोग कराएँ । पुस्तक में दिए गए हरियाना के मानचित्र में सभी पड़ोसी राज्यों के नाम दिए गए हैं । आप बच्चों से इस मानचित्र का अध्ययन कराएँ और इस प्रकार के प्रश्न पूछें :

– हरियाना राज्य के पश्चिम में कौन-सा राज्य है ?

– हरियाना राज्य के पूर्व में कौन-सा राज्य है ?

– हरियाना राज्य के दक्षिण में कौन-सा राज्य है ?

– हिमाचल प्रदेश हरियाना से किस दिशा में है ?

इस तरह से बच्चे मानचित्र का अध्ययन करना सीखेंगे, मानचित्र में दिशाएँ मालूम करने और बताने का उनका ज्ञान पक्का होगा और वे भारत के कई अन्य राज्यों के नामों और स्थिति आदि से भी परिचित होंगे ।

दिल्ली क्षेत्र, उत्तर प्रदेश और हरियाना के लोगों का रहन-सहन, खान-पान, पहनावा, भाषा, काम-धंधे, रीति-रिवाज आदि बहुत कुछ मिलते-जुलते और लगभग एक-जैसे ही हैं । उनके बारे में पढ़ाने में आपको कठिनाई नहीं आएगी । अतः आप ये बातें पाठ २० में दिए गए सुझावों के अनुसार ही पढ़ा दें, लेकिन निम्नलिखित बातों पर अधिक बल दें :

१. भाखड़ा बाँध, इसकी नहरों और बिजली से हरियाना को लाभ ।

२. खेती के बदलते हुए तरीके—ट्रेक्टरों, नलकूपों आदि का प्रयोग—गाँव-गाँव में बिजली—हरियाना का पशुधन ।

३. राज्य के बढ़ते हुए कारखाने और औद्योगिक नगर ।

४. दिल्ली क्षेत्र और हरियाना के घनिष्ठ संबंध ।

५. हरियाना और पंजाब दोनों ही राज्यों की राजधानी चंडीगढ़ ।

मानचित्र की सहायता से समझाएँ कि तीन बड़ी सड़कें और तीन बड़े रेल-मार्ग हरियाना के बड़े-बड़े शहरों को दिल्ली से मिलाते हैं । दूध, अंडे, सब्ज़ियाँ आदि कितनी ही चीज़ें प्रतिदिन हरियाना से दिल्ली आती हैं और इसी प्रकार बहुत-सी चीज़ें दिल्ली से हरियाना के शहरों और गाँवों को जाती हैं ।

पुस्तक में दिए गए चित्रों पर बच्चों से प्रश्न करें । भाखड़ा बाँध और राजधानी चंडीगढ़ से संबंधित कुछ अन्य चित्र प्राप्त करके बच्चों को दिखाएँ ।

इतिहास की कहानियों को छोड़कर यह पाठ इस पुस्तक का अंतिम पाठ ही कहा जाएगा । अतः आप बच्चों को दिल्ली क्षेत्र, उत्तर प्रदेश और हरियाना राज्यों का तुलनात्मक अध्ययन कराएँ । यह बात अच्छी

तरह स्पष्ट करके बच्चों के मस्तिष्क में बिठा दें कि सभी राज्य भारत के अंग हैं और सभी राज्यों के रहनेवाले आपस में भाई-भाई हैं, सभी भारतीय हैं।

अन्य संभव क्रियाएँ

१. हरियाना राज्य के जीवन से संबंधित तरह-तरह के चित्र एकत्र करना।
२. हरियाना राज्य के रहनेवाले किसी उच्च कक्षा के छात्र, किसी अध्यापक अथवा अभिभावक को बातचीत के लिए कक्षा में बुलाना।
३. हरियाना राज्य के कुछ लोकगीत सीखना और कक्षा में अथवा स्कूल में किसी अवसर पर सामूहिक रूप से प्रस्तुत करना।

मूल्यांकन

अब तक आपके छात्र दिल्ली क्षेत्र के बारे में विस्तार से और उत्तर प्रदेश तथा हरियाना के बारे में संक्षेप में बहुत-सी बातें जान चुके हैं। अतः बच्चों की जानकारियों, कुशलताओं और भावनाओं आदि के मूल्यांकन के लिए पाठ के अंत में दिए गए प्रश्नों के अतिरिक्त निम्नलिखित चार्ट तैयार कराएँ। उसे भरने में आप बच्चों की सहायता अवश्य कीजिए। आँकड़े आप ही एकत्र कीजिए। जब चार्ट बन जाए तो उसपर बातचीत कीजिए। इसका प्रसंग तुलनात्मक होगा।

क्र० सं०	संबंधित बातें	दिल्ली क्षेत्र	उत्तर प्रदेश	हरियाना
१.	क्षेत्रफल			
२.	जनसंख्या			
३.	पर्वत			
४.	नदियाँ			
५.	मुख्य उपज			
६.	मुख्य कारखाने			
७.	राजधानी			
८.	प्रसिद्ध नगर			
९.	दर्शनीय स्थान, स्मारक			
१०.	लोगों के मुख्य धंधे			
११.	खान-पान			
१२.	कपड़े			
१३.	भाषा			

इतिहास की कहानियाँ

पृष्ठभूमि और उद्देश्य

कक्षा १ और २ में बच्चों ने बहुत-सी छोटी-छोटी कहानियाँ सुनी हैं । इनमें से अधिकांश पशु-पक्षियों, जंगली जानवरों, परियों आदि की काल्पनिक कहानियाँ थीं । कुछ कहानियाँ पौराणिक कथाओं पर आधारित साहसी आदर्श बालकों की थीं । इस पुस्तक में दी गई सभी कहानियाँ हमारे देश के इतिहास से ली गई हैं । इन कहानियों से छात्रों को देश के पुराने इतिहास की थोड़ी जानकारी होगी और

(क) बच्चे निम्नलिखित बातें जान लेंगे :

१. इतिहास के अध्ययन से हम पुराने समय के लोगों के जीवन और रहन-सहन के बारे में बहुत-सी बातें सीखते हैं ।

२. हमारे ऐतिहासिक और धार्मिक स्मारक हमारे प्राचीन वैभव की झलक प्रदर्शित करते हैं ।

(ख) बच्चे निम्नलिखित कुशलताएँ सीख लेंगे :

१. कुछ ऐतिहासिक स्मारकों, इमारतों, मंदिरों, तथा उनके चित्रों को पहचानना ।

२. पढ़ी हुई कहानियों को संक्षेप में सुनाना ।

३. पढ़ी हुई कहानियों पर आधारित कुछ घटनाओं के अभिनय या वार्तालाप में भाग लेना ।

(ग) बच्चों में निम्नलिखित भाव जाग्रत होंगे :

१. देश के प्राचीन गौरव के प्रति आदर ।

२. ऐतिहासिक स्थानों व स्मारकों के सदुपयोग और रख-रखाव में सहयोग करने की भावना ।

पढ़ाने के लिए कुछ सामान्य सुझाव

१. कहानी सुनने और पढ़नें में बच्चों को स्वाभाविक रुचि होती है । अतः आप इन कहानियों को स्वतंत्र रूप से कक्षा में पढ़ा सकते हैं लेकिन इस बात का ध्यान रखें कि बच्चों को विधिवत् रूप से इतिहास पढ़ाना आपका उद्देश्य नहीं है । जहाँ तक हो सके इन कहानियों को रुचिपूर्ण ढंग से कक्षा में पढ़ाएँ ।

२. इस पुस्तक में दी गई लगभग सभी कहानियों का संबंध पुस्तक के अन्य पाठों से है, इसलिए आप यदि कहानियों को अन्य पाठों से समन्वय करते हुए पढ़ाएँ तो पाठन अधिक प्रभावकारी सिद्ध होगा । उदाहरण के लिए 'महाभारत' और 'पृथ्वीराज चौहान' की कहानी आप उसी समय पढ़ा दें जबकि आप खंड १ और २ में पांडवों के इंद्रप्रस्थ और दिल्ली के बार-बार बसने और उजड़ने की बात कहते हैं । इस प्रकार बच्चों में कहानी पढ़ने की रुचि को बढ़ावा

मिलेगा और आपका शिक्षण सजग, सरस और अर्थपूर्ण हो जाएगा। कक्षा १ और २ की सामाजिक अध्ययन दर्शिका में कहानी पढ़ाने के सुझाव विस्तार से दिए गए हैं। कृपया इन सुझावों को आप अवश्य देख लें।

इस खंड की कहानियों को पढ़ाने के कुछ अलग-अलग सुझाव आपकी सुविधा के लिए नीचे दिए जा रहे हैं :

रामायण की कहानी

इस पुस्तक के पाठ ४ में रामलीला का उल्लेख किया गया है। नवीन और कमल अपने दादाजी के साथ रामलीला देखने के लिए रामलीला मैदान आते हैं। इस कहानी में केवल नई पुरानी बस्तियों और दिल्ली शहर की बढ़ती हुई जन-संख्या का वर्णन ही किया गया है। बच्चों को शायद कुछ ऐसा भी मालूम पड़े कि उन्हें रामलीला मैदान तो ले जाया गया लेकिन रामलीला नहीं दिखाई गई। इस कहानी को पढ़ते-पढ़ते उनके मन में रामलीला देखने और इसके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने की तीव्र उत्सुकता पैदा होगी। आप इसका लाभ उठाएँ और रामायण की कहानी पढ़ने व सुनने का अवसर बच्चों को दें। आपकी कक्षा के कई बच्चे रामायण की कहानी या इसके कुछ मुख्य पात्रों के नाम आदि पहले से ही जानते होंगे। आप बीच-बीच में ऐसे बच्चों की जानकारी से लाभ उठाइए। पुस्तक में दी गई कहानी में रामायण के जो प्रसंग नहीं दिए गए हैं, उन्हें प्रश्नों द्वारा बच्चों से ही निकलवाइए।

बच्चों की सहायता से धीरे-धीरे आप पूरी कहानी संक्षेप में कक्षा में सुना दीजिए। पाठ ४ और पाठ २१ में रामलीला और रामायण से संबंधित कुछ चित्रों पर बच्चों से अवश्य बातचीत करें। 'सीता स्वयंवर,' 'भरत मिलाप' 'राम राज्याभिषेक' आदि का संक्षिप्त अभिनय कराना अच्छा रहेगा। इसके लिए हल्के-फुल्के संवाद आप स्वयं बच्चों के लिए तैयार कर दें। कुछ अच्छे बच्चों को तुलसीकृत रामायण के किसी कांड के कुछ दोहे और चौपाइयाँ लयपूर्वक गाना सिखाएँ और कक्षा में सुनवाएँ।

महाभारत की कहानी

एक विश्वास के अनुसार सबसे पहले, पांडवों ने इंद्रप्रस्थ (दिल्ली) को बसाया था। पाठ २ में 'महाभारत,' 'इंद्रप्रस्थ' का संक्षिप्त ज़िक्र भी आया ह। इसकी कुछ अधिक व्याख्या करते हुए आप वहीं पर बच्चों को 'महाभारत की कहानी' पढ़ने और जानने के लिए उत्साहित करें।

कक्षा २ में बच्चों ने 'अर्जुन का निशाना' शीर्षक की कहानी सुनी है। वे युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम दुर्योधन, द्रोणाचार्य आदि के नामों से अच्छी तरह परिचित हैं। महाभारत की कहानी सुनाते हुए इस छोटी घटना को अवश्य बीच में लाएँ। आप चाहें तो इसी घटना को आधार मानकर इस पाठ को पढ़ा सकते हैं। गीता के उपदेश के बारे में अधिक गहराई में जाने की आवश्यकता नहीं है। वह बच्चों की समझ से बाहर की चीज़ है। आप केवल इतना ही कहें कि गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अन्याय और झठ के विरोध में युद्ध करने का उपदेश दिया।

महाभारत की कथा से ली गई कुछ छोटी-छोटी घटनाओं को अभिनय या वार्तालाप के रुप में कक्षा में कराएँ। इनमें 'युधिष्ठिर का पाठ,' 'अर्जुन का निशाना,' 'कर्ण का दान' आदि बच्चों के लिए उचित और रोचक रहेंगी।

अशोक महान

पुस्तक में इस पाठ का प्रारंभ राष्ट्रीय झंडे के बीच में बने अशोक चक्र से किया गया है। साथ ही अशोक की दो लाटों और हमारे राष्ट्र-चिह्न के चित्र भी दिए गए हैं। आप इन्हीं के बारे में बातचीत करते हुए अशोक की कहानी पढ़ाएँ। दिल्ली में भी फ़ीरोज़शाह कोटला और जीतगढ़ के पास अशोक के समय की दो लाटे हैं। शहर के दर्शनीय स्थानों और स्मारकों के भ्रमण पर आते समय आप इनमें से एक लाट बच्चों को अवश्य दिखाएँ। इससे उनकी उत्सुकता बढ़ेगी और उनका ज्ञान पक्का होगा।

महात्मा बुद्ध और बौद्धधर्म के बारे में इस पाठ में पूरी जानकारी नहीं दी गई है। बच्चों की आयु और उत्सुकता को ध्यान में रखते हुए आप इस संबंध में संक्षेप में बता दें। साँची स्तूप का चित्र और 'ब्राह्मी लिपि' का नमूना बच्चों के लिए बहुत रोचक होंगे। इन पर अवश्य बातचीत करें। कुछ बच्चे पाठ में दिए गए अशोक के उपदेशों को एक चार्ट पर सुंदर ढंग से लिखें।

'कलिंग युद्ध के बाद अशोक का हृदय परिवर्तन किस प्रकार हुआ ?' इस विषय पर छोटा-सा नाटक या वार्तालाप आप बच्चों को लिखा दें। बच्चे इन्हे बुद्ध-जयंती आदि के अवसर पर स्कूल में प्रस्तुत करें। कुछ बच्चे अशोक की लाटों के चित्र कापी पर बनाएँ या मिट्टी, कागज़ आदि के माडल तैयार करें।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य

पाठ के आरंभ में दिए गए चित्र में चंद्रगुप्त विक्रमादित्य का दरबार दिखाया गया है। यह चित्र उस समय का है जब सम्राट चंद्रगुप्त ने श्रीलंका के एक बौद्ध-भिक्षु को भारत में एक बौद्ध मंदिर बनाने की आज्ञा दी थी। वह स्वयं हिन्दू थे, किन्तु बड़े उदार थे और अन्य धर्मों का आदर करते थे। उन्होंने इस बौद्ध मंदिर के निर्माण के लिए राजकोष से धन भी दिया था। इस चित्र के बारे में ये सब बातें बच्चों को समझाएँ और फिर चीनी यात्री फाह्यान का उल्लेख करते हुए इस पाठ को पढ़ाएँ।

चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के न्याय और वेष बदलकर घूमने के बारे में कई कथाएँ प्रचलित हैं। ऐसी ही कोई रोचक घटना सुनाना बच्चों के लिए बड़ा रुचिकर होगा। महरौली के लौह-स्तंभ को बहुत लोग विक्रमादित्य के समय का ही बताते हैं। पाठ में इसका चित्र देकर उल्लेख भी किया गया है। खंड २ को पढ़ाते हुए जब आप बच्चों को कुतुबमीनार की सैर कराएँ तो इसके बारे में बताना न भूलें। आपके छात्र उत्सुक हों तो इस कहानी को उसी समय पढ़ा दें।

हर्षवर्धन

इस कहानी का आरंभ हर्षवर्धन के समय में होने वाले प्रयाग के मेले का नाटकीय विवरण देते हुए किया गया है। इसी समय का एक काल्पनिक चित्र भी कहानी के शुरु में है। इसमें राजा हर्ष गरीबों को दान देने के बाद अपनी बहिन से पुराने कपड़े माँग कर पहन रहा है। पाठ २० में प्रयाग में आज-कल होने वाले कुंभ मेले का उल्लेख आया है और इसका एक वास्तविक चित्र भी वहाँ दिया गया है। हर्षवर्धन की कहानी प्रभावपूर्ण ढंग से पढ़ाने के लिए आप इन दोनों पाठों में समन्वय स्थापित करें। कुंभ मेले का संबंध हर्षवर्धन के समय में होने वाले मेले से जोड़ना तो ऐतिहासिक दृष्टिकोण से शायद ठीक न होगा, लेकिन इन दोनों मेलों में समानता अवश्य मिलती है। उत्तर प्रदेश का पाठ पढ़ाते हुए आप पहले बच्चों को प्रयाग के कुंभ मेले के बारे में विस्तार से पढ़ाएँ। इसके बाद जब आप हर्षवर्धन की कहानी पढ़ाएँगे तो आप अपने छात्रों को सैकड़ों वर्ष पहले होनेवाले इस प्रयाग के मेले के संबंध में सहज ही समझा सकेंगे।

बौद्धधर्म के बारे में आप अशोक की कहानी में पढ़ा चुके हैं। चीनी यात्री ह्यून-साँग के बौद्ध धर्म की शिक्षा पाने और तीर्थयात्रा करने के बारे में अच्छी तरह बताएँ। राजा हर्ष के सुंदर हस्ताक्षर बच्चों के लिए दिलचस्प होंगे।

प्रयाग के मेले में हर्षवर्धन द्वारा दान देने की घटना का छोटा-सा नाटक अवश्य कुछ बच्चों से कक्षा में कराएँ।

राजेन्द्र चोल

हमारे देश के इतिहास में चोल वंश के राजाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आज से लगभग एक हज़ार वर्ष पहले उनका राज्य दक्षिणी भारत के एक बड़े भाग में फैला हुआ था। राजेन्द्र चोल इस वंश का प्रसिद्ध राजा हुआ है। देश के दक्षिणी भाग के इतिहास के बारे में भी बच्चों को जानकारी होना आवश्यक है। इसी विचार को लेकर यह पाठ विशेष रूप से इस पुस्तक में शामिल किया गया है।

आप इस पाठ को अनुमानत: वर्ष के अंत में वार्षिक परीक्षा से कुछ सप्ताह पहले अपनी कक्षा में पढ़ाएँगे। अत: यह अच्छा होगा कि आप इस पाठ को पढ़ाते समय भारत के दक्षिणी भाग का सादा मानचित्र काम में लाएँ। इस मानचित्र की सहायता से आप बच्चों को नीचे लिखी बातें सरलता से समझा सकेंगे :

- तंजोर, मद्रास आदि शहरों की स्थिति।
- मद्रास व बंगाल राज्य की स्थिति।
- गंगा नदी व हिन्द महासागर की स्थिति।

पुस्तक में राजेन्द्र चोल के एक जहाज़ का चित्र दिया गया है। इस चित्र और भारत के बड़े मानचित्र की सहायता से आप राजेन्द्र चोल की जल-सेना और विदेशों के साथ व्यापार आदि के बारे में समझाएँ।

तंजोर के मंदिर और 'नटराज' की मूर्ति को बातचीत का विषय बनाकर आप बच्चों को चोल राजाओं के समय में हुई कला की उन्नति पर प्रकाश डाल सकते हैं।

पृथ्वीराज चौहान

महाभारत की कहानी की तरह आप इस कहानी को भी दिल्ली शहर की पुरानी कहानी के साथ-साथ ही पढ़ाएँ। पृथ्वीराज चौहान के ज़माने की दिल्ली महरौली के आसपास बसी हुई थी। इसके निशान आज भी पाए जाते हैं।

खंड १ और २ के पाठों को पढ़ाते हुए आप बच्चों को दिल्ली शहर के पुराने स्मारकों, इमारतों आदि के बारे में पढ़ाएँगे। इनमें से कुछ का भ्रमण भी आप अवश्य ही बच्चों को कराएँगे। इसी के साथ-साथ किला राय पिथौरा और दिल्ली के प्रसिद्ध राजा पृथ्वीराज चौहान के बारे में जानने और पढ़ने की उत्सुकता बच्चों में पैदा कर सकते हैं।

प्रसिद्ध कवि चंद बरदाई और 'पृथ्वीराजरासो' के बारे में संक्षेप म बताएँ। इनके नाम याद कर लेना ही उनके लिए काफी होगा। बड़ी कक्षाओं में जाकर वे इनके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करेंगे।

कहानियों का मूल्यांकन

बच्चों के ज्ञान की जाँच करने के लिए प्रत्येक कहानी के अंत में कुछ प्रश्न और क्रियाएँ दी गई है। इन सबको तो आप कराएँगे ही, लेकिन मूल्यांकन के संबंध में निम्नलिखित बातों पर अवश्य ध्यान रखें :

- क्या आपके छात्र कहानियों को ठीक-ठीक पढ़ सकते हैं ?
- क्या वे पढ़ी हुई कहानियों को अपने शब्दों में सुना सकते हैं ?
- क्या वे कहानियों से संबंधित राजाओं, स्मारकों, मंदिरों, लिपियों आदि के चित्रों को पहचानते हैं ?
- क्या वे कहानियों से संबंधित अभिनय, वार्तालाप आदि में भाग लेते हैं ?
- क्या वे कहानियों से संबंधित सामग्री जैसे चित्र, माडल, डाक-टिकट आदि एकत्र करने में रुचि लेते हैं ?
- क्या कुछ अच्छे बच्चे इन कहानियों को अन्य पुस्तकों से पढ़ते हैं ? या पढ़ना चाहते हैं ?

यदि कुछ बच्चे उत्सुक हों, तो आप उन्हें रुचिकर कहानियों की पुस्तकें पढ़ने को दें। बाद में वे इन कहानियों को कक्षा में सुनाएँ।

प्रस्तुत पुस्तकमाला राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन विभाग द्वारा तैयार किए गए सामाजिक अध्ययन के विस्तृत पाठ्यक्रम के अनुसार लिखी गई है। घर, पाठशाला, पास-पड़ोस और राज्य से लेकर पूरे देश और संसार का क्रम-बद्ध विवरण प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों की आयु और विकास के अनुसार दिया गया है। शिक्षक संस्करण में शिक्षण संबंधी सुझाव विस्तार से दिए गए हैं। इस पुस्तकमाला में निम्नलिखित पुस्तकें हैं :

सामाजिक अध्ययन दर्शिका	*शिक्षक संस्करण (कक्षा १ व २ के लिए)*
हमारी दिल्ली	*तीसरी कक्षा के लिए*
हमारी दिल्ली (दर्शिका सहित)	*शिक्षक संस्करण*
हमारा देश—भारत	*चौथी कक्षा के लिए*
हमारा देश—भारत (दर्शिका सहित)	*शिक्षक संस्करण*
भारत और संसार	*पाँचवीं कक्षा के लिए*
भारत और संसार (दर्शिका सहित)	*शिक्षक संस्करण*